HINDI

B.A./B.Com./B.Sc./B.B.M. First Year, Paper - I

Lesson Writers :

Sri P.S. Datta Prasad
Head, Dept. of Hindi
Hindu College,
Guntur

Dr. P. Prema Kumar
Lecturer in Hindi,
Hindu College,
Guntur

Sri R. Bhaskara Rao
Lecturer in Hindi
J.K.C. College, Guntur

Sri. T. Srinivas
Lecturer in Hindi
J.K.C. College, Guntur

Sri N. Venkateswarlu
Head, Dept. of Hindi
A.C. College, Guntur

Dr. P. Neeraja
Lecturer, Dept of Hindi
A.C. College, Guntur.

Dr. K. Vasantha Kumari
Reader in Hindi
S.S.N. College, Narasaropet.

Editor
Prof. Tella Satyavathi, M.A., Ph.D.
Dept. of Telugu & Oriental Languages
Acharya Nagarjuna University

Academic Advisor
Prof. G.V. Prabhavathi Devi M.A., Ph.D.
Dept. of Telugu & Oriental Languages
Acharya Nagarjuna University

Director
Prof. P. Sankara Pitchaiah
M.Sc., Ph.D., M.A., Ph.D., (Psy), PGDHRM

CENTRE FOR DISTANCE EDUCATION
Acharya Nagarjuna University
Nagarjuna Nagar - 522 510

Ph : 0863 - 2293299, (08645) 211023, 211024, Cell : 98482 85518
E-mail : info@anucde.ac.in
Website : anucde.ac.in (or) www.anucde.info

B.A./B.Com.,/B.Sc.,/B.B.M., 1st Year Hindi (Second Lanuage)

Syllabus

Prose Text : Gadya Gaurav : Edited by Dr. Ajaya Kumar Patnaiak published by : Sonam Prakasham, Cuttak
Non-detailed Text : Charchit Kahaniya : Edited : Dr. Ghulam M.Khan published by Shabnam Pustak Maha Cuttak.
Grammar Pertaining to the following Topics :
Rewriting of sentences as directed based on Case, Gender, Number, Tense, Voice Correction of sentences
Usage of words into sentences
Karyalay Hindi : Administrative terminology (Prashasanik shabdavali), official designations in Hindi (padnam)
Sandhi Vichehhed & Identifying the Samas
Letter Writing : Personal letters, Letters of orders, Application for Appointment, letter of complaint.

Books Recommended :
Sarala Hindi Vyakaran : Part I, II & III (Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha, Hyderabad. Samanya Hindi by Dwij Ram Yadav Sanjaya Book Centre, Varanasi
Hindi Roop Rachana, Published by Lokbharati Prakashan, Allahabad.

Gadya Gavrav :
Ommitted Lessons :
1. Lajja our glance
2. Sona Hiranee
3. Bajar Darshan
4. Apane meri Rachana Padhee
5. Maree Rumal Kho gayee
6. Jaha Akash Nahee Dikhee Deta

Selected Lessons :
Kavi our Kavitha
Earshya too Na gauee mere dilse
Bharateeya Sahitya Kee Ekhatha
Atithi
Adhunikathe our Sahitya
Neela Kanth
Nondetail book is Charchit Kahaniya

Stories Omitted :
Aadami ka Bacha
Lal pap kee begum
Sadachar ka taveej
Har

Stories Selected :
Usne Kaha tha
Puraskar
Thakur ka kuva
Roj
Chur hi da vat

CONTENTS

गद्य - गौरव (Prose)

1.	अतिथि	1.1.9
2.	ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से	1.2.20
3.	आपने मेरी रचना पढ़ी	1.3.11
4.	भारतीय साहित्य की एकता	1.4.11
5.	कफन	1.5.10
6.	कवि और कविता	1.6.8

चर्चित कहानियाँ (Nondetailed)

1.	ठाकुर का कुआँ	2.1.18
2.	उसने कहा था	2.2.12
3.	हार की जीत	2.3.10
4.	चीफ की दावत	2.4.8
5.	पुरस्कार	2.5.8
6.	रोज	2.6.6

तीसरा विभाग

1.	शुद्ध कीजिए, संधि, समास	3.1.26
2.	वचन	3.2.4
3.	लिंग	3.3.7
4.	वाच्य	3.4.5
5.	कारक	3.5.6
6.	काल	3.6.7
7.	वाक्य प्रयोग	3.7.11
8.	कार्यालयी हिन्दी	3.8.14
9.	पत्र लेखन	3.9.23

प्रथम विभाग

गद्य विभाग

गद्य - गौरव (Prose)

1.	अतिथि	-	राम विलास शर्मा
2.	ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से	-	रामधारी सिंह दिनकर
3.	आपने मेरी रचना पढी	-	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
4.	भारतीय साहित्य की एकता	-	नंद दुलारे वाजपेयी
5.	कफन	-	प्रेमचन्द
6.	कवि और कविता	-	महावीर प्रसाद दूिवेदी

Lesson - 1

अतिथि

इकाई की रुपरेखा :-

- उद्‌देश्य
- प्रस्तावना
- निबंधकार का परिचय (रामविलास शर्मा)
- अतिथि का परिचय
- सारांश
- शब्दावली
- कुछ उपयोगी पुस्तकें
- बोध प्रश्न
- संदर्भ सहित व्याख्या

I. उद्देश्य :-

इस इकाई के अतंर्गत आप अतिथि नामक विचारात्मक निबंध को पढने जा रहे हैं। निबंध के लेखक - रामविलास शर्मा हैं। इसका अध्ययन करने के बाद आप

निबंध का सार अपने शब्दों में लिख सकेंगे। निबंध में आए हुए कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे। अतिथि का अर्थ, लक्षण, चतुराई समझ सकेंगे। अतिथि के आगमन से होनेवाले अनर्थों का और उसके मनोविजन को समझ सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना :-

आप इस इकाई के अतंर्गत विचारात्कक निबंध अतिथि पढ़ने जा रहे है। आप को ज्ञात हो गया होगा कि हिन्दी गद्य साहित्य अतिथि एक महत्वपूर्ण रचना हैं।

इस निबंध का लेखक श्री. रामविलास शर्मा हैं। इसमें अतिथि का विचारात्मक विश्लेषण अच्छे ढंग से शर्माजी ने किया। भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है। हमारी संस्कृति में एक विशिष्टता हैं। धर आये हुए अतिथि हमारे लिए भगवान के समान हैं। व्यक्ति चाहे भारतीय या पाश्चात्य हम उसे आसानी से अपना बना लेते हैं। हमारी संस्कृति में अतिथि को उन्नत दर्जा दिया है। वह जितने रहे किसी भी समय में आवे हम उसके साथ मर्यादापूर्वक व्यवहार करते रहते है। लेकिन इस निबंध में शर्माजीने असमय में आ धमकनेवाले अतिथियों के कारण साधारण मानव जीवन में होनेवाले अनर्थों का सुंदर चित्रण किया है।

1.2 निबंधकार रामविलास शर्मा का परिचय (10.10.1912 - 30.5.2000) :-

श्री. रामविलास शर्मा प्रगतिवादी समालोचक तथा निवंधकार के रूप में प्रसिध्द हैं। आप का जन्म 'उत्तरप्रदेश' के 'वैसवादा' के 'उन्नाव' जनपद में 10.10.1912 में हुआ। आप अंग्रेजी साहित्य के प्राध्यापक थे। आप स्वाध्याय से हिन्दी भाषा और साहित्य के अधिकारी विद्वान वने। आपने लकनऊ विश्वविधालय और आग्रा के वि. आर कालेज में अध्यापन का कार्य किया। आपने के. ए.क. मुंशी हिन्दी संस्यान के निर्देशक पद से अवकाश ग्रहण किया।

रामविलास शर्मा प्रगतिशील लेखक संय से धनिष्ट संवंध था। आप मार्क्सवाद विचार धारा समालोचक चे। आप ने सह्रदयता से निराला के साहित्य समीक्षा की थी। आप विचार - प्रधान और व्यक्ति व्यंजक निंवधकार के रूप में प्रसिध्द है। आपकी मृत्यु ता. 30.5.2000 को हुई। मृत्यु के कुछ दिन आपको सरस्वती सम्मान प्राप्त हुआ। रामविलास शर्मा की प्रमुख रचनायें इस प्रकार हँ -

कविता	=	रूपतरंग, सदियों के सोचे हुए जाग उठे
आलोचना	=	निराला की साहित्य साधना (तीन खंड), भारतेंदु युग प्रेमचंद और उनका चुग, मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य युगवोध और कविता
निबंध	=	विराम चिह्न
संस्मरण आत्मकथा	=	पंचरत्न, बडेभाई, अपनी धरती अपने लोग (तीन खंड)
उपन्यास	=	चार दिन

1.3 'अतिथि' का परिचय :-

अचानक और असमय पर अतिथियों के आगमन से उप्रन्न होनेवाली समस्याओं, बिगडनेवालो कार्यक्रमों, करर्चक्रमों के बिगडने से उत्पन्न होनेवाले दुष्परिणामों का विवरण इस निंबध में दिया गया, ऐसे समय में उप्रन्न होनेवाले क्रोध को शिष्टतावश हम न निगल पाते और न निकल पाते।

1.4 सारांश :-

अतिथि से लेखक का मतलब उन लोगों से नही जो बिना बताये आप के घर भोजन कलिए आते हँ। इस जमाने में आतिध्य केवल चाय - पानी तक रहगया हैं। इस महँगाई जमाने में लोग भोजन केलिए घर बुलाना हुश्किल हँ। पुराने जमाने में अतिथि का आदर - सत्कार अच्छी तरह से करते रहते थे। आज जमाना बदल गया। आधुनिक मानव हमेशा व्यस्त रहता है। इसे अपना खाना खाने केलिए समय नहीं हँ। इस समय में वह अतिथि का आदर कैसे कर सकता है। यदि हमारे यजमान भोजन केलिए बुलाते तो उसको तृप्त करने केलिए इनका अतिथि बनना पडता है। कुछ लोग मीठे मीठे बातें पकडे आपसे भोजन केलिए ऐसा आग्रह करे जैसे वह आप केलिए इंतजार कर रहा है। और आपके बिना उसका भोजन विष - तुल्य हो जायेगा। इसका मतलब आप पर कोई भारी पीडा आनेवाली है। आप लेखक हो और मेहमान जी प्रकाशक है तो इसने दालदा की पूडियाँ और कद्दू की तरकारी खिलाकर वह आपसे मुफ्त लेख लिखाना चाह्ता है। इस काल के अतिथि सत्कार से ब्राह्मण सावधान रहना चाहिए।

अतिथि का मतलब इन लोगों से है जो 'तिथिं', 'धडी', 'पल', 'धंट', 'पहर', का ध्यान न रखते हुए एकदम अयाचित आ धमकते हैं। आप सोचिये, चौबीस धंटों में ऐसा कौन - सा धंटा या मिमिट है जब कभी न कभी किसी अतिथि ने आकर अपना काम न रोक दिया है। वे वोग धन्य है जिन्हें बान्ह से चार तक यानी शत वे समय इन मेह्मानों से मुक्ति मिली हो।

कालेज का अध्यापक अगर लेखक भी थे तो इसके लिए अतिथि की आवाज यमदूत के संदेश के समान है। सबेरे चाय - पानी या दूध - बादाम पीकर स्वस्थ मन से वह कालेज का किताब लेकर बैठे तो कोई अतिथि आकर कहेंगे - आप शायद काम कर रहे थे। मै थोडी ही दूर बैठूँगा। क्रमशः दस बज गये। आप की उदासीनता, अंगडाइयाँ, इधर उधर देखना, खामोश रहना - वह्सभी कुछ ब्यर्थ करते रहे। आखिर वे आपकी परेशानी का पूरा मजा लेकर उठे। इसका समय नष्ट करने केलिए खेद प्रकट किया। अंत मे चलते समय इसे असली काम याद आगया जिसके लिए वह आयाथा। आप जन्दी उसे बाहर भेजने का प्रयास करने पर भी वह सीटी पर एक पैर रखकर जम गये। दस मिनिट के बाद इसने नमस्ते भी किया। लेकिन आपको अंदर चलने का मौका न देकर अपना पुनः व्यवहार प्रांरभ करता है। आपको इससे बातें करने का समय नहीं है लेकिन वह जात्ता नहीं।

भोजन के उपरांत अखवार पढ़ते पढ़ते कहीं आप झपकी लेने लगे तो अतिथि का आवाज गूँज उठता है। हमें (अपको) स्वप्न और सत्य एक सा दिखाने देने जगता है। हमारी हृदय वीणा झनझना उठते हैं।

सैभाग्य से नींद पूरी करके, हाथ - मुँह धोकर प्रसन्न मन से बहुत दिनों के बाद पत्रों का जवाब लिखते बैठे तो अतिथि महोदय आ पधारते हैं । यदि छुट्टियाँ हुई तब तो अतिथि को छूट ही मिल जाती है। यदि हम इसे किसी काम का जिक्र किया तो वह इस प्रकार कहता है अबभी [illegible] फुरसत ही कुरसत है कह्कर हमें छोडते नहीं ।

रात में हम निश्चितं होकर लिखने बैठे तो अतिथि महोदय पधारते है और इस प्रकार कहता है - दिन में आप से मिलना ठीक नहीं। रात में खुद अपने काम का नुकसान करके आपको कृतार्थ करने आये है। इन अतिथि महोदय के कारण हिन्दी भंड़ार कितने रत्नों से वंचित रह जाता है। ऐसे लोग हमारे रचना क्रम में आधात पहुँचाते हैं। कुछ लिखने केलिए भोजन और स्नान धोडकर हम आलोचन बनने के अध्ययन में रहते हैं। लेकिन अभिशाप की बात यह है कि प्रशंसा सुननी पडती है। लेकिन हमारे दर्द को पह्चाननेवाले कोई नहीं।

अंत मे लेखक इस प्रकार कहता हैं - इस लेख को मै अपने कमरे में टाँग दूँ तो आप क्या समझते। अतिथि महोदय इस लेख की प्रशंसा करने के बहाने जम जायेंगे।

प्राचीन काल में माता, पिता गुरु के बाद अतिथि - का उचित स्थान दिया गया। व्यक्ति चाहे अमीर हो या गरीब घर आये अतिथि का विनयपूर्वक कर सकते थे। पुराने जमाने ते स्त्री इतनी पढी - लिखी नहीं है। इसलिए धर आये हुए अतिथि का स्वागत, सत्कार बहुतखुशी से किया करती थी। लेकिन आधुनिक समाज स्त्री और पुरुष दोनों पढे लिखे होने के कारण कहीं न कहीं नौकरी करते रहते हैं। स्त्री को घर का काम, बच्चों का लालन - पालन के साथ बाहरी दुनिया में कामकरना पड रहा है। पुरुष भी दफ्तरों में। बैंकों में, सरकारी या प्रैवेट विभाग में काम करते समय बहुत दूर जाना पडता है। वह शाम को धर लौट कर आराम लेना चाहते तो उसी समय अतिथि का आगमन उसे आराम नहीं मिलती है। आधुनिक समाज में चावल, आट, से लेकर हर वस्तु का दाम बहुत बढ़ गया है। नगर परिवेश में मध्यवर्ग परिवार बहुत छोटे छोटे घर में रहता है। ऐसे समय में घर आये हुए अतिथि

को अलग समय देना बहुत मुश्किल है। इस पाठ को पढ़ने के बाद हमे ऐसा लगता है। अतिथि देवो भवः नहीं अतिथि राक्षसी भवः जैसा दिखाई देता हँ।

सारांश :-

यह एक व्यंग्य प्रधान कहानी है। इसमें निबंधकार अतिथि के नाम पर आनेवाले व्यक्ति के कारण होनेवाले अशांति का सुंदर वर्णन किया।

इसमें निबंधकार संस्कृत और अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया।

इसमें रोचकता और सजीवता है।

1.5 शब्दावली :-

शरीक	=	शामिल
अयाचित	=	अतिथि
जजमान	=	यजमान, मालिक
नजात	=	मुक्ति
मेहमान	=	अतिथि
सीटा	=	आसन
दम साधकर	=	प्राण लगाकर
झिडकियाँ	=	गालियाँ
नवाज	=	दयावान
दोहरा	=	दुगुना
निठल्ला	=	बेकार

1.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें :-

बृहत् निबंध भारस्कर	=	वचनदेव कुमार
हिन्दी रुप रचना	=	लोकभारती प्रकाशन , अलाहाबाद
सामान्य हिन्दी	=	द्विजराज पाहग, सानिया बुक सेंटर, वारणासी

1.7 बोध प्रश्न :-

1. अतिथि निबंध का सारांश लिखिए ?
2. अतिथि निबंध की रचना में लेखक का उध्देश्य क्या है ?
3. अतिथि का लक्षण क्या है ?
4. अतिथि निबंध की समीक्षा कीजिए ?

1.8 संदर्भ सहित व्याख्या :-

किसी भी साहित्यक रचना नें कुछ ऐसी पंक्तियाँ होती है जो उसे रचना के केंद्रीय भाव को स्पष्ट करने में अधिक सहायक होती है। कुछ ऐसी पंक्तियां है जिनमे लेखक अपने विचार को प्रस्तुत करता है। जिन्हें अधिक व्याख्यायित करने की आवश्यकता होती है। इस इकाई के अतंर्गत अतिथि के कुछ महत्वपूर्ण अंशों की संदर्भ सहित व्याख्या करने जा रहा है। पहले संदर्भ लिखना चाहिए। लेंखक कौन है, किस रचना से लिया गया, विशिष्टता व या है, केंद्रीयभाव क्या है। ये चार बातें संक्षेप में लिखी जानी चाहिए।

1. **"यदि मीठी बातें करके वह आपसे भोजन केलिए ऐसे आग्रह करे, जैसे वह आपकी बाट ही जोह रहा था। और आपके बिना उसका भोजन विष - तुल्य हो जायेगा। तो आप निश्चय जानिये कि उसने कोई मारी दाव सोच रखा है।"**

प्रसंग :- ये वाक्य श्री राम विलास शर्मा 'अतिथि' नामक पाठ से दिये गये हैं।

रामविलास शर्मा प्रगतिवादी समालोचक तथा निबंधकार के रुप में प्रसिध्द हैं। आपका जन्म १९१२ में उत्तरप्रदेश के बौंसवाए जिले के उन्नाव नामक गाँव में हुआ। आप स्वाध्याय से हिन्दी साहित्य ने पंडित बने। आप अज्ञेय द्वारा संपादित तांर सप्तक के कवि थे आपकी मृत्यु 1912 में हुई। उनकी रचनाओं में रस तरंग, निराला की साहित्य साधना, भारतेंदु युग प्रेमचंद और उनका युग आदि प्रमुख है। यहाँ शर्माजी अचानक और असमय में आनेवाले अतिथियों का वर्णन है।

संदर्भ :- आधुनिक जमाने में स्वार्थी लोग अति थि के रुप में आकर किस प्रकार उपकार प्राप्त कर रहे है उसका सुंदर वर्णन है।

व्याख्या :- यदि मालिक हमें घर पर खाने केलिए बुलाते तो उसका घर जाना ही पडता है। मीठी बातों से वह आपको स्वागत करते हुए इस प्रकार कहे तो मैं तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ। आप के बिना भोजन मेरे लिए विष - तुल्य हो जायेगा। इसका भाव यह है कि हम कोई बडी विपत्ति आनेवाला है। यदि हम लेखक है और मेहमान साहब प्रकाशक है तो, हमे खूब खिला - पिला कर मुफ्त में लिखाना चाहता है। इसलिए लेखक इस प्रकार कहता है - इस काल के अतिथि - सत्कार से सब लोग सावधान रहना चाहिए।

टिप्पणी - यहाँ मेहमानों की स्वार्थपरता का सुंदर चित्रण मिलता है।

2. **'खैर ऐं दस मिनिट के बाद उन्होंने नमस्ते भी किया, लेकिन आपको घूमकर चलते का मौका न देकर उन्होंने अपना 'पुनश्च' फिर आरंभ कर दिया। यहाँ एक एक क्षण खतम हो रहा है यह किसी को क्या मालूम**

प्रसंग :- यह वाक्य अतिथि नामक पाठ से दिया गया है। लेखक श्री रामविलास शर्मा है।

रामविलास शर्माजी का जन्म उत्तर प्रदेश के बैंसवाडा जिलो के उन्नाव नाम गाँव में १९१२ में हुआ। आप स्वाध्याय के बल पर हिन्दी साहित्य के विद्वान बने। आपने लखनऊ विश्वविधालय और आगरा के बि. आर. कालेज में अध्यापन का कार्य किया। आप प्रगतिवादी समालोचन तथा साहित्य की समीक्षा की थी। आपकी मृत्यु 30.5.2000 को हुई। आपकी रचनाओं में रुप तरंग, सदियों के सोच जाग उठे, निराला की साहित्य साधना, भारतेदुं युग, प्रेमचंद और उनका युग, चार दिन आदि प्रमुख है।

संदर्भ :- अतिथि महाशय किस प्रकार अपने रिस्ते दारों को सताता है इसका सुन्दर चित्रण है।

व्याख्या :- यदि कालेज का अध्यापक लेखन कार्य भी करे तो उसके लिए अतिथि की आवाज यमदूत के समान है। उसे कालेज में अध्यापन कार्य में व्यस्त रहना पडता है। यदि वह लेखक भी है तो अतिथि - की वजह से उसे (बहुत) अधिक समस्या का सामना करना पडता है। सबेरे चाय या दूध - बादाम पीकर कालेज की किताबे लेकर बैठे तो अतिथि के आगमन से उसके काम रुकावट आयेगा। आपकी उदासीनता, बांते नहीं करना देखकर भी वह उठता नहीं। अतं में उसे याद आता है कि वह किस काम केलिए आया है। वह सीढ़ियों पर पैर रखकर जम गये है। लेकिन हमे घूमकर चलने का मौका न देकर वह पुनः व्यवहार प्रारंभ करता है। हमारे लिए एक एक क्षण कल्प हो रहा है।

दिप्पणी :- अतिथि हमें कैसे सताते है इसका सुंदर वर्णन है।

3. **"समय पर भोजन, स्नान के बदले, आलोचक बनने से अभिशाप स्वरुप निठल्ले कवियों से कविता और उन्ही मे मुँह उसकी प्रशंसा सुननी पडती है। लेकिन इस दर्द को कोई क्या समझे ?**

प्रसंग :- ये वाक्य अतिथि नामक पाठ से दिये गये हैं। इसके लेखक श्रीरामविलास शर्मा है।

रामविलास शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के बैसवाडा जिले बे उन्नाव नामक गाँव में 1912 को हुआ। आप समालोचक और निबंधकार है। आपने स्वाध्याय के बल पर हिन्दी के विद्वान बने। आप अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' के कवि थे। आपकी मृत्यु 2000 मई में हुई। उसकी प्रमुख रचनायें इस प्रकार है - रुपतरंग, सदियों के सोचे जाग उठे, निराला की साहित्य - साधना, भारतेंदु युग, प्रेमचंद और उनका युग, युगबोध और कविता आदि।

संदर्भा :- कालेज के अध्यापक को यदि छुट्टियाँ है तो अतिथि महोदय छुट्टियों में भी आकर उसे किस प्रकार सताते है यहाँ बताया गया है।

व्याख्या :- अध्यापक रात में निश्चितं रुप से कुछ लिखने केलिए बैठे तो अतिथि - महोदय आधमके, और इस प्रकार कहते हैं - दिन में आपके मिलने का ठीक नही रहता। रात में खुद अपने काम का नुकसान करके आपके पास आया

हूँ। समय पर भोजन, स्नान के बदले आलोचक बनने से बेकार कवियों से कविता, उन्हीं के मुँह उसकी प्रशंसा सुननी पडती है। लेकिन इस दर्द को समझनेवाला कोई नहीं।

टिप्पणी :- अतिथि किस प्रकार दूसरों के जीवन में कदम रखकर कितनी समस्याओं का कारण बन रहा है इसका सुंदर वर्णन है।

4. **आप सोचिए, चौबीस धंटों में ऐसा कौन सा धंटा या मिनिट है, जब कभी न कभी अतिथि ने आपका काम न रोक दिया है। वे लोग धन्य है जिन्हे बारह से चार तक कम जे कम रात के समय इस मेहमानें से नजात मिली हो।**

ये वाक्य अतिथि नामक पाठ से दिये गये हैं। इसका लेखक श्रीराम विलास शर्मा है।

रामविलास शर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश बैसवाडा के उन्नाव नामक गाँव में 1912 अक्तूबर को हुआ। आप पहले अंग्रेजी साहित्य के प्राध्यापक थे। आप प्रगतिवादी आलोचक तथा निबंधकार के रुप में प्रसिध्द है। लेकिन उन्होंने अथक परिश्रम करके हिन्दी भाषा और साहित्य के पंडित बने। आप आगरा के बि. आर कालेज और लखनऊ विश्वविद्यालय में अध्यापक के रुप में काम किया। आप के एक मुंशी हिन्दी संस्थान मे निर्देशक पद पर रहे।

आप अज्ञेय द्वारा संपादित तारसप्तक के कवि थे। आप मार्क्सवादी विचारधारा के समालोचक थे। आपने सहृद्ययता से महान कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साहित्य की समीक्षा की थी। आपकी मृत्यु 30 मई, 2000 को हुई। मृत्यु के पहले आप को सरस्तती सम्मान प्राप्त हुआ। वे गद्य और पद्य दोनों में पंडित थे। आपकी रचनाओं में रुपतरंग, सदियों के सोचे जाग उठे, निराला की साहित्य साधाना (तीन खंड) भारतेदुं युग, प्रेमचंद और उनका युग, मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य विराम चिह्न पंचरत्न, बडे भाई आदि प्रमुख है।

संदर्भ :- कुछ लोग अचानक, बेवक्त आकर हमे परेशान करते रहते है।

व्याख्या :- यहाँ लेखक कुछ लोगों के घरों में अतिथि के रुप में आकर उसे कैसें सताते है इसका सुन्दर वर्णन है। चैबीस धंटो में हर धंटा या मिनिट मेहमान आकर हमारा काम रोकते रहते हैं। वे लोग धन्य है जिन्हें रात के बारह बजे से लेकर चार बजे तक इन लोगों से नजात मिली हो। बारह बजे से चार बजे तक गहरी नीदं से सकते हैं। ऐसे समय में मेहमान आते तो हम ठीकतरह से नही सो सकते हँ।

टिप्पणी :- यहाँ लेखक ने हमारे काम में अडंगा डांलने वाले अतिथियों का वर्णन किया। यदि हमें सोने के लिए समय नहीं मिलते तो अपना काम ठीक से नहीं कर सकते हैं।

5. **अगर इस लेख को मैं अपने कमरे में टाँग दूँ तो क्या आप समझते हैं। इन को स्थिरता में अथवा जडता में कोई अतंर आ जायेगा ? वे इस लेख की प्रशांसा करने के बहाने ही जम जायेंगे और फिर से दस पाँच मिनिट में उठनेवाला कोई और ही होंगे।**

प्रसंग :- यह वाक्य श्री. रामविलास शर्मा के अतिथि नामक पाठ से दिया गया है।

श्री. रामविलास शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के बैंसवादा जिन्तें मे उन्नाव नामक गाँव में 10 अक्टूबर 1912 को हुआ। आप अंग्रेजी साहित्य के प्राध्यापक थे। लेकिन हिन्दी के प्रति विशेष रुचि रहे। वे स्वाध्याय से हिन्दी भाषा और साहित्य मे अधिकारी विद्वान बने। आपने लखनऊ विश्वविध्यालय और आगरा के बि. आर. कालेज मे अध्यापक का कार्य किया। आपने के. एम . मुंशी हिन्दी संस्थान के निर्देशक पद पर रहे।

आप मार्म्सवादी विचारधारा के समालोचक थे। आप अज्ञेय द्वारा संपादित तारसप्तक के कवि थे। आपने सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के साहित्य की समीक्षा की थी। आप विचार - प्रधान और व्यंक्ति व्यजक निबंधकार के रुप में भी प्रसिद्ध है। आपकी मृत्यु 30 मई 2000 को हुई। मृत्यु के कुछ पहले आपको सरकति सम्मान प्राप्तुध्आ। आपकी प्रमुख रचनाओं में रुपतरंग, सदियों के सोचे जाग उठे, निराला की साहित्य साधना, भारतेदु युग, प्रेमचंद और उनका युग, मार्क्सबाद और प्रगतिशील साहित्य, विराम चिह्न चार दिन पंचरत्न बडे भाई आदि प्रमुख हैं।

संदर्भ :- वक्त और बेवक्त आकर हमें परेशान करनेवाले अति थियों की निंदा करके के संदर्भ में हॅं।

व्याख्या :- अगर लेखक अपनी इस लेख को कमरे में टाग तो इस लेख की प्रशंसा करने के बहाने अतिथि महोदय आकर जम जायेगें और दस पाँच मिनिट में उठनेवाले कोई नहीं होंगे।

टिप्पणी :- यहाँ अतिथि किस प्रकार अपने मित्रों या सगे संबंधियों के घर जाकर उसे सता रहा है इसका सुंदर वर्णन बडी रोचक ढंग से चित्रण किया गया हॅं।

बोध प्रश्न :-

1. संपादक चिट्ठी लिखते है, फिर तार भेजते हैं, पत्रों के उत्तर न पानेवाले गालियाँ लिखकर भेजते है।
2. मैं पहले कह चुका हूँ कि अतिथि से मेरै मतलब उन लोगों से नहीं जो तिथि से बात दूर, घडी, प ल, घंटा, पः का ध्यान न रखे हुए दम आयाचित आ धमकते हैं।
3. उन्हें क्या मालूम उनके कारण हिन्दी का भंडार कितने रत्नों से वंचित रह जाता है। कितने ही महान ग्रंथों की रचना का विचार इन महान पुरुषों का ध्यान आते हो तज देना पड़ता है।

उपसंहार :-

अतिथि मानक पाठके द्वारा लेखक यह बताना चाहा है कि आधुनिक मानव हमेशा व्यस्त रहता है। वह तनावपूर्ण जीवन बिता रहा है। चाहे धर में हो या दफतर या कालेज जहाँ वह यह कहता है। ऐसे समय में अति थियों का समय, असमय में आना, उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पडता है। उनके कार्यक्रम बिगडजाते है। परिणाम् स्वरुप उसे अनेक दुष्परिणामों का सामना करना पडता है। ऐसे समय में उत्पन्न होनेवाले क्रोध को हम बाहर न निकाल पाते है और न निगल पाते हैं। इस प्रकार लेखक श्री. रामविलास शर्मा ने हास्य और व्यंग्य शैली का प्रयोग करते हुए एक महत्वपूर्ण निबंध को प्रस्तुत किया।

2)

Dr. P. Neeraja
A.C. College

Lesson - 2

निबंध: ईर्ष्या: तू न गयी मेरे मन से
(श्री रामधारी सिंह "दिनकर")

इकाई की रुपरेखा :-

2.1 उद्देश्य
2.2 पाठ का परिचय
2.3 साहित्य - पारिभाषा - उद्देश्य, भारतीय - साहित्य
2.4 निबंध - परिभाषा
2.5 हिन्दी साहित्य में निबंध का विकास
2.6 निबंध के प्रकार
2.7 लेखक - परिचय
2.8 लेखक की रचनायें
2.9 मूल पाठ
2.10 कठिन शब्दार्थ
2.11 निबंध का सारांश
2.12 निष्कर्ष
2.13 कुछ नमूने प्रश्न
2.14 संदर्भ सहित व्याख्यायें
2.15 सहायक ग्रंथ

2.1 उद्देश्य :-

1. ईर्ष्या की परिभाषा, "ईर्ष्या" का परिचय मिलेगा।
2. मानव के मन में 'ईर्ष्या' पैदा होने का कारण - समझेंगे।
3. "ईर्ष्या' के सगे का परिचय और उनके गुणों का परिचय मिलेगा।
4. 'ईर्ष्या' से संबंधित अन्य गुणों का विवरण मिलेगा।
5. क्या? ईर्ष्या में कोई अच्छा गुण है? विदित करेगा।
6. मानव जीवन की उन्नति के लिए और जीने के लिए मूल कारण "आनंद" को पाने का राह मिलेगा।
7. मानव सभ्यता के विकास को समझाते हुए ईर्ष्या को छोडंने का उपाय सुझाना ही इस पाठ का उद्देश्य है।

2.2 पाठ का परिचय :-

यह पाठ "ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से" श्री. रामधारी सिंह का श्रेष्ठ निबंध है।

मानव जन्म से अच्छा है। क्यों कि 'परमात्मा' का एक अंश "आत्मा" उनके हृदय में निवास करती है। परन्तु दिन प्रति दिन सयानी होता है मानव। समाजं की परिस्थितियों को ग्रहण कर समाजं से भी आगे बढ़ने के लिए उसका मन तरसेगा। बुरे गुणों को अपनाने के लिए न गुरु की आवश्यकता और न शिक्षा की जरुरत। वह अपने मित्रों की सहायता से बहुत आसानी से पा सकता है। ऐसे बुरे गुणों की तालिका में "ईर्ष्या" एक है। उसमे जो बुरे लक्षण हैं उनको त्यागकर, मानव विकास के लिए और जीवन लक्ष्य "आनंद" को प्राप्त करने के लिए इसी ईर्ष्या में मौजूद रचनात्मक प्रेरणा को पाने का विधान इस पाठ के अंत में लेखक के द्वारा परिचय कराया गया है।

2.3 साहित्य - भारतीय साहित्य :-

सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ साथ साहित्य की रचना और उसके अध्ययन के प्रति मानव की उत्सुकता भी बढ़ती रही है। श्रेष्ठ साहित्य में मानव कल्याण की भावना का समावेश रहता है।

"सहितस्य भावः साहित्यम्" अर्थात् जिसमें हित की भावना सन्निहित होती है उसे साहित्य" कहते हैं। साहित्य का हित चिन्तन विश्व - कल्याण की भावना पर आधारित होताहै। कहने का तात्पर्य है कि - समष्टिगत हित - चिन्तन प्राप्त होता है वही साहित्य है। इसलिये विद्वानों ने "ज्ञान शशि" के संचित कोष का नाम साहित्य" कहा है। प्रत्येक युग का श्रेष्ठ साहित्य अपने युग के प्रगतिशील विचारों द्वारा किसी न किसी रुप में अवश्य प्रभावित होता है।

साहित्य -

1. हमारी कौतूहल और जिज्ञासावृत्ति को शांत करता है।
2. ज्ञान की जिज्ञासा को तृप्त करता है। और
3. मस्तिष्क की क्षुधा पूर्ति करता है।

जिस 'देश और जाति के पास जितना उन्नत और समृद्धिशाली साहित्य होगा वह देश और वह जाति उतनी ही अधिक उन्नत और समृद्धिशाली समझी जायेगी।

केवल साहित्य के द्वारा ही राष्ट्रीय इतिहास, देश की गौरव गरिमा, प्राचीन रीति - रिवाज, रहन - सहन, परंपरा, शताब्दियों पहले भाषा का संचार, वेष - भाषा, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों के बारे में विस्तृत विचार होगा। वाल्मीकि की वाणी, तुलसीदास का अमर काव्य "रामचरित मानस" कालिदास के "रघुवंश" आदि महान् साहित्य स्रोतों के द्वारा भारत देश की महिमा जानने का अवकास मिला। कहने की बात है कि - समाजं के विचार, भाव, परिस्थितियों का प्रभाव इस समय के साहित्य पर पडेंगा। अतः समाज का दर्पण है सहित्य। यह स्वाभाविक ही है। साहित्य अपने समय का प्रंतिबिम्ब है।

द्विवेदी जी ने साहित्य को समाज का दर्पण कहा। कई विद्वानों ने साहित्य की भिन्न - भिन्न परिभाषाएँ दी जैसे साहित्य जीवन से अभिन्न है।

साहित्य जीवन की समीक्षा है।

साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है।

इन सब का मूल भाव है कि - जीवन के तथ्थों का चित्र उपस्थित कर भावी पीढी के लिए उसे सुरक्षित रखना ही साहित्य का उद्देश्य है।

सामान्य वस्तुओं के विवरण से लेकर मानव के उदात्त भावों की अभिव्यक्ति तक के लिखित रुप कां साहित्य के अंतर्गत ले सकते हैं। किन्तु आज साहित्य का अर्थ समाज और मानव से संबंधित कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता, निबंध, यात्रा, वर्णन, जीवन चरित्र आदि सब कुछ माने जाते हैं।

इस साहित्य के दो उद्देश्य हैं -

1. लौकिक उद्देश्य और
2. आध्यात्मिक उद्देश्य

साहित्य का लौकिक उद्देश्य :-

वर्तमान पीढीं साहित्य में सुरक्षित अतीत के अनुभवों से लाभ उठाकर अपने वर्तमान जीवन को सुखमय और शांतिपूर्ण बनाने का प्रयास करना है। आज की भौतिक उन्नति का रहस्य साहित्य में प्राप्त किया गया है। जीवन की सुख सुविधा को बढांने के साधन साहित्य से खोजंकर निकाले गये। अतः क्रमिक विकास का मूलमंत्र साहित्य में सुरक्षित निधियों से ही प्राप्त होता है।

साहित्य का आध्यात्मिक उद्देश्य :-

मानव शाश्वत सुख और आनंद को पाने के लिए आध्यात्मिक साहित्य का गहरा अध्ययन करना है जिससे जीवात्मा और परमात्मा के रुप और संबंध को जानकर ब्रह्मानंद को प्राप्त करने कां प्रयत्न कर सकता है।

इसके अलावा मानव में स्थित दैवी शक्तियाँ और आसुरी शक्तियाँ इन दोनों में प्रतिद्वंदिता होगी। आसुरी शक्तियों पर दैवी शक्ति विजय पाना ही चाहिरा। इसकेलिए भौतिकता का विकास और अनैतिकता का पतन होना है। इसको पाने के लिए आध्यात्मिक साहित्य आधार बनाता है। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि - नैतिकता का प्रचार करना इस आधायात्मिक साहित्य का दूसरा उद्देश्य है।

उपर्युक्त दोनों के अलावा सहित्य समाज के सभी पक्षों का प्रतिबिम्बन करता है। इच्छायें और प्रवृत्तियाँ संस्कारगत होती हैं। अतः संस्कार बनाने या सुधारने का कार्य साहित्य द्वारा सपन्न होता है। कहने की बात है कि - साहित्य का उद्देश्य है - सुख का साधन जुटाने तथा दुःख दूर करने के उपायों में मदद देना। इस प्रकार साहित्य मनुष्य के व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को उठाने का मार्ग प्रदर्शित करता है।

भारतीय साहित्य :-

साहित्य कलाकार का अपना ही जीवन दर्शन होता है। इसलिए जो कुछ भी साहित्य है वह साथ ही साथ स्वयं कलाकार का प्रतीक भी है। साधारण अस्थि - चर्म की काया पाकर एक साहित्यकार जहाँ जीवन के एक - एक - वर्ष खोता है वहीं अपने यशः शरीर का एक - के अंग मूर्त और विकसित करता जाता है। इसलिए एक दिन साधारण देह के समाप्त हो जाने पर भी वह उस यशः शरीर में जीवित रहाता है। यह उनकी आयु शताब्दियों के मापदण्डं से नापी जाती है और इसमें जरा और मरण का भी भय नहीं रहता। हमारी भारतीय परंपरा के साहित्यकार का यही आदर्श था। और इसी विशाल आदर्श की परंपरा हमारे साहित्यकारों मे - जो स्वयं ऋषि भी होते थे - भी पा ली थी। यह उन्हीं का निर्मिन विधान था।

2.4 निबंध - परिभाषा :-

"निबंध" गाध गद्य की एक विशिष्ट विधा है जिसमें किसी विशेष अनुभव अथवा विचार धारा का स्पष्ट रीति से प्रतिपादन किया जाये। इसका उद्भव और विकास आधुनिक युग की देन है। वस्तुतः जिस विधा को हम निबंध कहते हैं वह अंग्रेजी शब्द " Essay " का पर्यायवाची है। Essay के आदि लेखक मान्तेन (Montaigne) माने जाते हैं। हम तक आते आते पहले की मान्यताओं में बहत कुछ परिवर्तन हो चुका। फलतः निबन्ध का वर्तमान रुप इतना विकसित और परिष्कृत है कि - इसे एक नयी शैली विधा के रुप में स्वीकार किया जाने लगा।

अंग्रेजी Essay की तरह हिन्दी निबंधों में कई करवटें बदली है। दिन - प्रति दिन संवरता हआ निबंध आज नई ही सज - धज के साथ हमारे सामने है। इसमें साहित्य सृजन की मूल प्रवृत्ति और साहित्यकार का आत्म प्रकाशन विद्यमान है। इसमें लेखक के विचार और विश्वास, अनुभूतियाँ एवं आस्थाएँ आदि विद्यमान रहती हैं। लेखक इन सब का प्रकाशन समाज को गतिशील बनाने तथा उसे आनंद प्रदान करने के लिए करता है। इसलिए निबंध की परिभाषा देते हुए निबंध के आदि जनक फ्रान्सीसी साहित्यकार मान्तेन (Montaigne) ने कहा -

"These essays are attempt to communicate a soul."

अर्थात् निबन्ध आत्म - प्रकाशन अथवा आत्माभि व्यक्ति का एक प्रयास है।

<u>**अंग्रेजी**</u> के प्रसिध्द निबन्धकारों के अनुसार निबंध की परिभाषाएँ इस प्रकार हैं -

1) प्रसिध्द निबन्धकार (Johnson) **जान्सन** के अनुसार -

It is a loose sally of mind and a regular indigested piece, not a regular and orderly performance.

अर्थात् - निबन्ध मस्तिष्क के विचारों की एक तरंग है तथा नियमबध्द एवं व्यवस्थापूर्ण न होकर एक अव्यवस्थित अपच शिथिल रचना - मात्र है।

2) **हड्सन** की परिभाषा इस प्रकार है -

The essay then may be reguarded as a compostition on any topic, the chief native features of which are comparative brevity and comparative want of exhaustiveness.

अर्थात् निबन्ध किसी विषय पर एक ऐसी रचना है जिसकी मुख्य विशेषताएँ हैं - अपेक्षाकृत संक्षेप तथा विस्तार का प्रभाव हो।

3) **बेन्सन** ने लिखा है -

It must concern it self with something jolly. His (essayists) charm depends upon giving the sense of a good humour gracious and reasonable personality as to establish a sort of pleasant friendship with the readers.

भारतीय आलोचकों के अनुसार निबंध की परिभआषाएँ -

1) **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** की परिभाषा है -

" यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है। "

2) **डा. श्यामसुन्दर दास** के अनुसार -

निबन्ध इस लेख को कहना चाहिए जिसमें किसी गहन विषय पर विस्तार पूर्वक और पाण्डिंत्य पूर्ण विचार किया गया हो।

3) **डा. गुलाबराय** के अनुसार -

निबन्ध उस गद्य रचना को कहते हैं जिसमें किसी एक सीमित आकार के भीतर किसी विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और सम्बध्दता के साथ किया गया हो।

इन परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि - निबंध का तात्पर्य - उस कला पूर्ण गद्यकृति से है जिसमें समाज, संस्कृति, राजंनीति, साहित्य और किसी अन्य विचार धारा को व्यक्तिगत दृष्ठिकोण से प्रतिपादित किया गया हो। और जो अपने संक्षिप्त आकार में स्वयं पूर्ण हो। वास्तव में पाठक मौलिक विचारों की प्राप्ति के लिए निबंध का अध्ययन करते हैं। निबंध - लेखक की सफलता इस बात में है कि - वह उसमें गंभीर विचारों को भी व्यक्त करें कि - शैली गंभीर न होने पाये।

2.5 हिन्दी साहित्य में निबंध का विकास :-

संक्षिप्त गद्य रचना है निबंध। उसमें लेखक विषय का वर्णन मात्र न करके एक ओर अपने ज्ञान को भी प्रकट करता है और दूसरी ओर यथास्थान अपने व्यक्तित्व के समावेश के लिए भी स्वतंत्र रहता है।

भारतेन्द युग :-

इसे हिन्दी गद्य का प्रारंभिक युग भी कहते हैं क्यों कि - भारतेन्द युग से ही निबन्ध साहित्य का आरंभ और विकास हुआ। आधुनिक युग से पूर्व के विद्वानों की परिभाषाएँ उपलब्ध नहीं होती। 19 वी शताब्दी के उत्तरार्ध को हिन्दी साहित्य में भारतेन्द् युग कहा जाता है।

इस युग में हिन्दी गद्य को पौराणिक वातावरण से निकालकर सामान्य जीवन से संबंधित विषयों पर साहित्य लिखा जाने लगा। राष्ट्रीय जागरण की उत्साह पूर्ण भावना, सामाजिक अंध विश्वास, व्यक्ति स्वातंत्र्य, देश - प्रेम तथा समाचार पत्रों के प्रकाशन आदि से निबंध साहित्य का विकास हुआ। भाषा की गतिशीलता तथा अभिव्यंजना शक्ति में विकास हुआ।

पं प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बाल मुकुंद गुप्त, भारतेन्दु, बद्री नारायण चौधरी आदि लेखकों ने निबंध रचना की लेखकों में प्रसिध्द हैं।

द्विवेद्री युग :-

हिन्दी गद्य के सभी क्षेत्रों का विकास तथा परि मार्जन द्विवेदीजी ने ही किया। 1903 ई.में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने "सरस्वती" पत्रिका का संपादन भार लिया। पं. कामता प्रसाद गुरु के द्वारा व्याकरण का निर्माण हुआ। निबंध - क्षेत्र व्यापक हुआ। द्विवेदी एक सफल निबंध कार थे। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक दृष्टियों से परिष्कार का युग था और गम्भीर युग था। द्विवेदी जी ने नये विषयों पर निबंध लिखने की प्रेरणा दी। अंग्रेजी लेखकों के निबन्धों का अनुवाद भी हुआ।

माधव प्रसाद मिश्रा, गोविन्द नारायण मिश्रा, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, जगन्नाथ चतुर्वेदी, डा. श्यामसुंदर दास आदि प्रमुख लेखक हैं।

शुक्ल जी का युग :-

इस युग में द्विवेदी युगीन निबंधों के अभावों की पूर्ति की गयी। जैसे - मनो वैज्ञानिक विषयों का सूक्ष्म निरीक्षण, मनोवृत्तियों का स्वाभाविक विश्लेषण आदि। शुक्ल, स्यामसुंदर दास आदि विद्वानों ने पूर्ण किया। पं, माधव प्रसाद मिश्रा गुलेरी जी ने सांस्कृतिक निबंधों की रचना की। डा. गुलाबराय ने सर्वोत्तम कथा तथा हास्य रस के द्वारा हाथ दिया। मिश्र बन्धु भी प्रसिध्द हैं।

छायावादी युग :-

छायावाद को मध्य वर्गीय चेतना का विद्रोह कहा गया है। इस युग के लेखकों ने भाषा में दृढ़ता, भावों में गांभीर्य, शैली में प्रौढ़ता का परिचय दिया।

प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, उग्र, डा. रामकुमार वर्मा, नंद दुलारे वाजपेयी, बाबूराम कृष्णदास, माखनलाल चतुर्वेदी इस युग के मुख्य लेखक हैं।

वर्तमान युग :-

इस युग में कलात्मकता को बढ़ाने का प्रयोग किया जा रहा है। इस युग के निबंधों में कहानी की संवेदना और जिज्ञासा, नाटक की अभिनेयता, महाकाव्य की गरिमा आदि समन्वित रुप में प्राप्त होते हैं। इस युग के निबन्ध कारों में कल्पना और अनुभूतियों का अपूर्व मिश्रण मिलता है।

प्रमुख निबन्ध कार हैं :-

हजारीप्रसाद द्विवेदी, नगेन्द्र, गुलाबराय, जैनेंद्र कुमार, दिनकर, बाबू राय कृष्ण दास आदि।

निबंध के प्रकार :-

निबंध की विषय सामग्री में प्रस्तुत तत्व तथा निबंधकार की विवेचन पध्दति के आधार पर भेद होते हैं। मुख्य रुप से निबंध दो प्रकार के हैं।

1. व्यक्ति प्रधान निबंध
2. वस्तु प्रधान निबंध

1. **व्यक्ति प्रधान निबंध :-**

इसमें मिबंधकार की निजी भावनाएँ हर्ष - विवाद, वेदना सुख आदि का वर्णन विवेचन होता है।

2. **वस्तु प्रधान निबंध :-**

इसमें निबंधकार अपने को अलग रखकर संसार के पदार्थों का विवेचन - विश्लेषण करता है।

निबंध का वर्गीकरण इस प्रकार है -

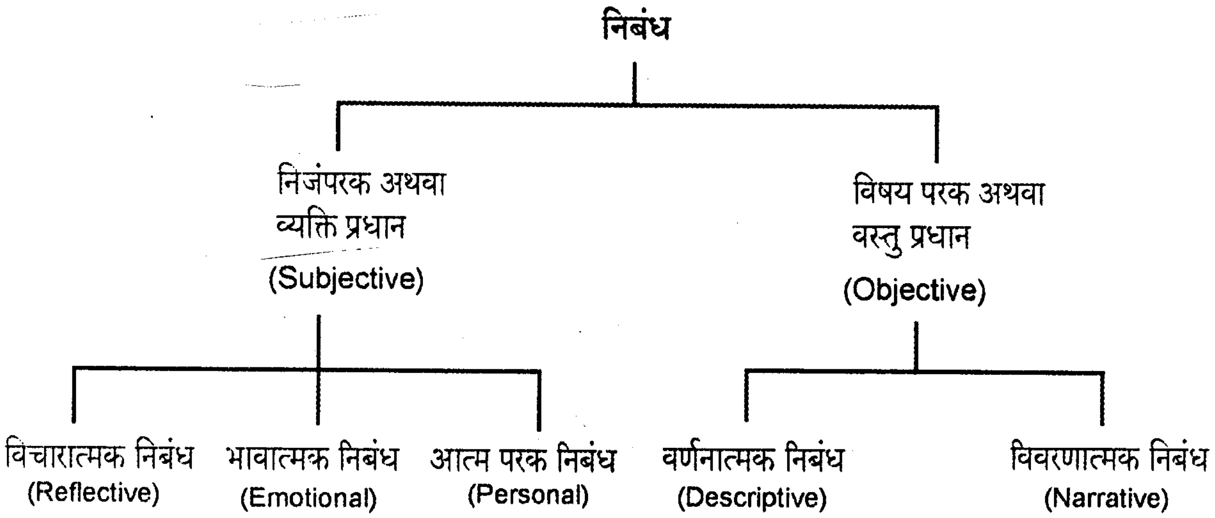

लेखक - परिचय :-

आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय, सांस्कृतिक चेतना का शंखनाद करनेवाले तथा युग - चारण नाम से विख्यात श्री. रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 - 9 - 1908 को बिहार के मुँगेर जिले के "सिमिरिया धाट" नामक गाँव में हुआ था। वे किसान परिवार के थे। दो वर्ष की आयु में ही उनके पिता का देहान्त हुआ। तदनन्तर उनका पालन - पोषण का भार उनकी माता पर पडा।

"दिनकर" रामधारी सिंह का उपनाम है। आधुनिक हिन्दी कविता में अपना विशेष स्थान रखते हैं। दिनकर का बचपन कठिनाइयों में बीता। प्रारंभिक शिक्षा को प्राप्त करने के हेतु उन्हें भिक्षाटन भी करना पडा। इनकी शिक्षा मोकामा घाट के स्कूल तथा फिर पटना कालेज में हुई। उन्होंने "इतिहास" विषय लेकर बी. ए. (आनर्स) की परीक्षा उत्तीर्ण की।

बचपन से ही कविता के प्रति उनकी रुचि थी। अपने छात्रजीवन में वे दहाती गीतों की रचना किया करते थे। यही कारण है कि - उनकी कविता में हृदय को अंकित करने की अत्यधिक क्षमता है। दिनकर के स्कूल जीवन से ही राष्ट्रीय गीत, कविता, सवैया और समास्यापूर्ति के छंद तत्कालीन पत्रिकाओं में छपने लगे। "युवक" नामक पत्रिका में उनकी रचनाएँ बराबर छपी थी। दिनकर की प्रवरता उनकी कविता में दिखाई देती है। वे कवि ही नहीं बल्कि सुंदर निबंधकार भी हैं।

दिनकर के काव्य का आरम्भ प्रगतिवादी दृष्टिकोण को लेकर होता है। सामाजिक "वैषम्य के प्रति उन्होंने सर्वत्र आक्रोश प्रकट किया। शोषितों के प्रति उनकी सहानु भूति है और धनवानों के प्रति विद्रोह का प्रखर स्वर धारण करते हुए प्रतीत होते हैं।

श्वानों को मिलता दूध वस्त्र भूखे बालक अकुलाते हैं
माँ की हड्डी से चिपक ठिठुर जाडों की रात बिताते हैं
युवती के लज्जा बसन बेच जन व्याज चुकाये जाते हैं
मालिक जब तेल फुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहाते है
पापी महलों का अहंकार देता तब मुझ को आमंत्रण।

इस आर्थिक वैषम्य को उलटने केलिए उत्तरोत्तर कवि की ललकार प्रखर होती जाती है। और उसे विश्वास है कि - एक दिवस अवश्य यह विषमता बदलेगी। लेकिन तब, जब विध्वंस की ज्वाला मुखी फटकर वर्तमान व्यवस्था को भस्मीभूत कर देगा। प्रलय का आह्वान ही भारत माता को शांति दे सकता है।

दिनकर मोकामा घाट हाईस्कूल के प्रधानाचार्य, बिहार राज्य सरकार में सब रिजिस्ट्रार, जन संपर्क विभाग के उपनिदेशक, 1950 में मुजफ्फर पुर विश्व विद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष, 1964 में भागलपुर विश्व विद्यालय के कुलपति बने।

भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार पद पर रहकर उन्होंने अपनी प्रशासनिक योग्यता का परिचय दिया। साहित्य सेवा ओं के लिए उन्हें विश्वविद्यालय ने डी. लिट् की मानद उपाधि मिली।

विभिन्न संस्थाओं ने उनकी पुस्तकों पर साहित्य अकाडमी के द्वारा पुरस्कार तथा,
1974 में उनकी सर्वश्रेष्ट कृति 'ऊर्वशी' के लिए ज्ञान पीठ पुरस्कार और
भारत सरकार ने पद्मभूषण की उपाधि प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया।

वर्षों तक वे संसद के सदस्य रहे और एक संसद - सदस्य को संस्कृति का जितना अच्छा ज्ञान हो सकता है उतना अच्छा ज्ञान दिनकर को भी है।

दिनकर ने कविता से बहुत काम लेना चाहा। सेवा की है। वह दुःख में आँसू, सुख में हँसी और समर में तलवार बनकर मनुष्यों के साथ रही है। मनुष्य की चेतना को ऊर्ध्व मुखी रखने में कविता का बहुत प्रबल हाथ रहा है। स्वयं कवि ही पारिजात

का वह पुष्प है जो स्वर्ग का संदेश लेकर पृथ्वी पर उतारा है। कवि जड विश्व को अपने स्वज के रंग से रंगनेवाला चित्रकार है। संसार उसकी कल्पना में अलौकिकता प्राप्त करता है। सफल कवि दृश्य और अदृश्य के बीच का वह सेतु है जो मानवता को देवत्व की ओर ले जाता है। (मिट्टी की ओर से संग्रहित)

कवि दिनकर भारत के अतीत गरिमा का स्मरण करके वेदना प्रकट करते हैं। आपकी कविताओं में राष्ट्रीय भावना अच्छी तरह दिखाई पडती है। राष्ट्र प्रेम दिनकर की कविता का प्राण है। दिनकर की वाणी में ओजं का बाहुल्य है। वे युवक हृदयों के कवि हैं।

दिनकर की कविताएँ उपदेशात्मक बन गयी हैं। अपनी आलोचनाओं में भी वे इसी की वकालत करते हैं। वेलिखते हैं -

सच तो यह है कि ऊँची कला कोशिश करने पर भी अपने को नीति और उद्देश्य के संसर्ग से बचा नहीं सकती जीवन का अनुकरण किये बिना जी नहीं सकती (मिट्टी की ओर से - उद्धृत है)

इनका स्वर्गवास 25 - 4 - 1974 को हुआ।

लेखक की रचनाएँ :-

दिनकर प्रगतिवादी और राष्ट्र कवि हैं। उनकी कविता में हृदय के अंकित करने की अत्यधिक क्षमता है।

दिनकर की रचनाओं की तालिका इस प्रकार हैं -

काव्य कृतियाँ :-

कुरुश्रेत्त - प्रबन्ध काव्य है (तीन पुरस्कार मिले)
ऊर्वशी - प्रवंध काव्य है (ज्ञान पीठ पुरस्कृत है)
हुँकार - (कविता संग्रह)
नील कुसुम - (कविता संग्रह)
रेणुका - (कविता संग्रह)
इतिहास के आँसू - (कविता संग्रह)
कोयला और कवित्व - (कविता संग्रह)
द्वंद्वगीत
रश्मि रथी
परशुराम की प्रतीक्षा
हारे को हरिनाम
आत्मा की आँखें
मृत्ति तिलक

बापू

सामधनी

धूप - छाँह

सीपी और शंख

नये सुभाषित

चक्रवाल

दिल्ली

दिनकर कवि ही नहीं सुन्दर गद्यकार भी हैं। उनकी **गद्य रचनाएँ** इस प्रकार हैं -

संस्कृति के चार अध्याय (साहित्य अकाडमी से पुरस्कृत)

हिन्दी गद्य में आलोचना

अर्थ नारीश्वर

मिट्टी की ओर

हमारी सांस्कृतिक एकता

रेती के फूल

प्रसाद, पंत और मैथलीशरण गुप्त

काव्य की भूमिका

शुध्द कविता की खोज

मेरी यात्रायें

साहित्य मुखी

भारत की सांस्कृतिक कहानी

आधुनिक बोध

वेणु वन

चेतना की शिख

भारतीय एकता

लोकदेव नेहरु

विवाह की मुसीबतें

राष्ट्र भाषा और राष्ट्रीयं एकता

इनके अतिरिक्त -

बाल साहित्य एवं आलोचना संबंधी साहित्य काभी प्रणयन किया।
संस्मरण और श्रध्दांजलियाँ
हेराम (एकांकी संग्रह)
दिनकर की डायरी।

मूल पाठ : "ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से"

मेरे धर के दाहिने एक वकील रहते हैं, जो खाने पीने से अच्छे है. दोस्तों को भी खूब खिलाते हैं और सभा सोसाइदियों में भी काफी भाग लेते हैं। बाल बच्चों से भरा - पूरा परिवार। नौकर भी सुख देनेवाले और पत्नी भी अत्यंत मृदभाषिणी। भला एक सुखी मनुष्य को और क्या चाहिए ?

मगर वे सुखी नहीं हैं। उनके भीतर कौन - सा दाह है, इसे मैं जो भली भांति जानता हूँ। दर - असल उनकी बगल में जो भीमा ऐजेण्ट है, उनके विभव की वृद्धि से वकील साहब का कलेजा जलता रहता है। वकील साहब को भगवान ने जो कुछ दे रखा है, वह उनके लिए काफी नहीं दीखता। वे इस चिन्ता में भुने जा रहे हैं कि काश, ऐजेण्ट की मोटर, उसकी मासिक आय और उसकी तडक - भडक भी मेरी हुई होती।

ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या धर बना लेती है, वह उन चीजों सें आनंद नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद हैं, बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास है। वह अपनी तुलना दूसरों के साथ करता है और इस तुलना में अपने पक्ष के सभी अभाव उसके ह्रदय पर दंश मारते रहते हैं। दंश के इस दाह को भोगना कोई अच्छी बात नहीं है। मगर ईष्यालु मनुष्य करे भी तो क्या ? आदत से लाचार होकर उसे यह वेदना भोगनी पडती है।

एक उपवन को पाकर भगवान् को धन्यवाद देते हुए उसका आनंद नहीं लेना, और बराबर चिंता में निमग्न रहना कि इससे भी बडा उपवन क्यों नहीं मिला, एक ऐसा दोष है जिससे ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भी भयंकर हो उठता है। अपने अभाव पर दिन - रात सोचते - सोचते वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोडकर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है।

ईष्या की बडी बेटी का नाम निंदा है। जो व्यक्ति ईष्यालु होता है, वही व्यक्ति बुरे किस्म का निंदक भी होता है। दुसरों की निंदा वहं इसलिए करता है कि इस प्रकार, दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जायेंगे और तब जो स्थान रिक्त होगा, उस पर अनाव्यास मैं ही बिठा किया जाऊँगा।

मगर, ऐसा न आजं तक हुआ है और न आगे होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निंदा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण अपने ही भीतर के सद्गुणों का हास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दुसरों की निंदा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाये तथा अपने गुणों का विकास करें।

ईर्ष्या का काम जलाना है, मगर, सबसे पहले वह उसी को जलाती है जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी एसे बहुत - से लोगों को जानते होंगे जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूति है और जो बराबर इस फिक्र में ही रहते हैं कि कहाँ सुननेवाले मिले कि अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामफोन बजाने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक - एक काण्डं इस ढ़ंग से सुनाते हैं, मानो, विश्व - कल्याण को छोडकर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। मगर, जरा उनके अपने इतिहास कोभी देखिये और समझने की कोशिश कीजिए कि जब से उन्होंने इस सुकर्म का आरंभ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि अगर वे निंदा करने के समय और शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज उनका स्थान कहाँ होता। चिंता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचण्ड चिंता मे पकड लिया है, उस बेचारे की जिन्दगी ही खराब हो जाती है। किन्तु ईर्ष्या, शायद चिन्ता से भी बढ़तर चीज है, क्यों कि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही,कुंठित बना डालती है। मृत्यु शायद, फिर भी श्रेष्ठ है बनिस्पत इसके कि हमें अपने गुणों को कुं ठित बनाकर जीना पडे। चिन्ता - दग्ध मनुष्य समाज की दया का पात्र है। किन्तु ईर्ष्या से जला भुना आदमी जहर की एक चलती - फिरती गठरी के समान है जो हर जगह वायु को दूषित करती फिरती है।

ईर्ष्या मनुष्य का चारित्रिक दोष ही नहीं है, प्रत्युत, उससे मनुष्य के आनंद में भी बाधा पडती है। जब भी मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है, सामने का सूर्य उसे मद्धिम - सा दीखने लगता है, पक्षियों के गीत में जादू नहीं रह जाता और फूल तो एसे हो जाते हैं, वे देखने के योग्य ही नहीं हो।

आप कहेंगे कि निंदा के बाग से अपने प्रतिद्वंदियों को बेधकर हँसने में एक आनंद है। और यह आनंद ईर्ष्यालु व्यक्ति का सबसे बडा पुरस्कार है। मगर यह हँसी मनुष्य की नहीं, राक्षस की हँसी होती है और यह आनंद भी दैत्यों का आनंद होता है।

ईर्ष्या का संबंध प्रतिद्वंदिता से होता है, क्यों कि भिखमंगा करोडपति से ईर्ष्या नहीं करता। यह एक ऐसी बात है जो ईर्ष्या के पक्ष में भी पड सकती है, क्यों कि प्रतिद्वंदिता से भी मनुष्य का विकासं होता है। किन्तु, अगर आप संसारव्यापी सुयश चाहते हैं तो आप रसेल के मतानुसार, शायद नपोलियन से स्पर्श करेंगे। मगर याद रखिये कि नेपोलियन भी सीजर से स्पर्धा करता था और सीजर सिकिन्दर से तथा सिकिन्दर हरकूलस से, जिस हरकूलस के बारे में इतिहासकारों का यह मत है कि वह कभी पैदा ही नहीं हुआ।

ईर्ष्या का एक पक्ष, सचमुच ही लाभदायक हो सकता है, जिसके अधीन हर आदमी, हर जाति और हर दल अपने को अपने प्रतिद्वंदिता का समकक्ष बनाना चाहता है। किंतु, यह तभी संभव, जबकि ईर्ष्या से जो प्रेरणा आती है, वह रचनात्मक हो। अक्सर तो ऐसा ही होता कि ईर्ष्यालु व्यक्ति यह महसूस करते हैं कि कोई चीजं है, जो उसके भीतर नहीं है, कोई वस्तु है, दूसरों के पास है। किन्तु वह यह नहीं समझ पाता है कि इस वस्तु को प्राप्त कैसे करना चाहिए और गुस्से में आकर वह अपने किसी पडोसी मित्र या समकालीन व्यक्ति को अपने से श्रेष्ठ मानकर उससे जलने लगता है, जब कि वे लोग भी अपने - आपसे, शायद वैसे ही असंतुष्ट हों।

आपने यह भी देखा होगा कि शरीफ लोग अक्सर, यह सोचते हुए अपना सिर खुजलाया करते हैं कि फलाँ आदमी मुझसे क्यों जलता है, मैंने तो उसका कुछ नहीं बिगाडा और अमुक व्यक्ति इस कद मेरी निंदा में क्यों लगा हुआ है ? सच तो यह है कि मैं ने सबसे अधिक भलाई उसीकी की है।

ये सोचते है - मैं तो पाक - साफ हूँ, मुझमें किसी भीव्यक्ति के लिए दुर्भावना नहीं है, बल्कि, अपने दुश्मनों की भी मैं भलाई ही सोचा करता हूँ। फिर ये लोग मेरे पीछे क्यों पडे हुए हैं ? मुझमें कौन - सा वह ऐब है, जिसे दूर करके मैं इन दोस्तों को चुप कर सकता हूँ ?

ईश्वर चन्द्र विद्या सागर जब इस तजुर्बे से होकर गुजरें तब उन्होंने एक सूत्र कहा, तुम्हारी निन्दा वही करेगा, जिसकी तुमने भलाई की है और नीत्से जब इस कूचे से होकर निकला, तब उसने जोरों का एक ठहाका लगाया और कहा कि यार, ये तो बाजार की मक्खियाँ हैं, जो अकारण हमारे चारों ओर भिन भिनाया करती हैं। ये सामने प्रशंसा और पीछे पीछे निंदा किया करती हैं। हम इनके दिमाग पर बैठें हुए हैं ये मकिखियाँ हमें भूल नहीं सकती और चूँकि ये हमारे बारे में बहुत सोचा करती हैं। इसलिए ये हमसे डरती हैं और हम पर शंका भी करती हैं। ये मक्खियाँ हमें सजा देती हैं हमारे गुणों के लिए। ऐब को तो ये माफ कर देंगी, क्यों कि बडों के ऐब को माफ करने में भी एक शान है, जिस शान का स्वाद लेने को ये मक्खियाँ तरस रही हैं। जिनका चरित्र उन्नत है, जिनका दृदय निर्मल और विशाल है वे कहते हैं इन बेचारों की बातों से क्या चिढ़ना ? ये तो खुद ही छोटे हैं, मगर, जिनका दिल छोटा और दृष्टि संकीर्ण है वे मानते हैं कि जिनती भी बडी हस्तियाँ हैं, उनकी निंदा ही ठीक है और जव हम उनके प्रति उदारता और भलमनसाहत का बर्ताव करते हैं, तब भी वे यही समझते हैं कि हम उनसे धृणा कर रहे हैं और हम चाहे उनका जितना उपकार करें, बदले में हमें अपकार ही मिलेगा।

दर - असल, हम जो उनकी निंदा का जवाब नहीं देकर चुप्पी साधे रहते हैं, इसे भी वे हमारा अहंकार समझते हैं। खुशी तो उन्हें तभी हो सकती है, जब हम उनके धरातल पर उतरकर उनके छोटेपन के भागीदार बन जायँ।

सारे अनुभवों को निचोडकर नीत्से ने एक दूसरा सूत्र कहा, 'आदमी में जो गुण महान् समझे जाते हैं, उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं'।

तो ईर्ष्यालु लोगों से बचने का क्या उपाय है ? नीत्से कहताहै कि 'बाजार की मक्खियों को छोडकर एकांत की ओर भागो। जो कुछ भी अमर तथा महान् है उसकी रचना और निर्माण बाजार तथा सुयश से दूर रहकर किया जाता है। जो लोग नये मूल्यों का निर्माण करनेवाले हैं, वे बाजारों में नहीं बसते, वे शोहरंत के पास भी नहीं रहते हैं। जहाँ बाजार की मक्खियाँ नहीं भिनकतीं वह जगह एकांत है।

यह तो हुआ ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय। किन्तु ईर्ष्या से आदमी कैसे बच सकता है ? ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है। जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा जगेगी उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

कठिन शब्दार्थ :-

दाहिना	=	दक्षिण
दाह	=	शोक, दःख, ईर्ष्या
कलेजा	=	हृदय

कलेजा जलना	=	तप्त हृदय
तडक - भडक	=	चमकीला जीवन, शान
ईर्ष्या	=	द्वेष, हसद मानव की अवनति के लिए उनके पास छः बुरे गुण होते हैं। वे इस प्रकार हैं - काम क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य। इनको ही अरिषड वर्ग कहते हैं। 'मत्सर' का दूसरा नाम है "ईर्ष्या"।
आदत	=	टेव, स्वभाव
उघम करना	=	प्रयत्न करना
ह्रास	=	क्षीण, कम होना
चरित्र	=	आचरण
निन्दनीय	=	निंदा करने येग्य
किस्म	=	ढङ्ग पद्धति
रिक्त	=	खाली, शून्य
कोशिश	=	प्रयत्न
महसूस	=	ज्ञात होना, अनुभव
जिज्ञासा	=	तहकीकात
काण्ड	=	विषय विभाग, कार्य विभाग पेड की आयु को जाँचने के लिएं काण्ड उपयुक्त होते हैं। महाग्रंथ रामायण का विभाजन काण्डों में हुआ। ईर्ष्यालु अपने कथन को महाग्रंथ जैसा समझता है। इसलिए प्रत्येक घटना को काण्ड - सा सोचता है।
दंश	=	दाँत से काटना
लाचार	=	मजबूर
चिंता, फिक्र	=	विचार
सूर्य	=	नवग्रहों में प्रथम तथा ग्रहों के अधिपति पुराणों में सूर्य चंद्र को भगवान के नेत्र माने गये हैं। सूर्य प्रजापति कश्यप तथा दक्षपुत्री अदिति का पुत्र है। ये आकाश का देवता है।
आनंद	=	मन को उत्साह देने की घटना है। यह दो प्रकार हैं। 1. मानवानंद 2. राक्षसानंद

गुबार	=	द्वेष, मन में बसा क्रोध
कुण्ठित	=	मंद, बेकाम
वायु को दूषित करना	=	वायु प्रदूषण (पर्यावरण प्रदूषणों में एक है)
राक्षस	=	कोई प्रत्येक रुप "माधव" बनता है और वही बुरे गुणों से "राक्षस" बनता है।
पुरस्कार	=	तोहफा (तोफा)
बनिस्पत	=	अपेक्षा
जादू	=	तिलस्म, टोना
भिख माँगा	=	भिक्षुक
संसार	=	दनिया
तजुरबा	=	अनुभव, ज्ञान की परीक्षा।
प्रेरणा	=	किसी काम के लिए उत्साह।

2.15 पाठ का सारांश :-

इस पाठ का आरंभ प्रथम पुरुष में होता है। स्वयं लेखक दिनकर अपने मंजिल में पडोसी के गुणों का वर्णन करना चाहता है। इसलिए पडोसी के जीवन का वर्णन शुरु में करता है। वह पडोसिन एक वकील है। उसका जीवन - विधान प्रथम श्रेणी का है। अर्थात् खाने - पीने का अभाव नहीं। मित्र वृँद भी कम नहीं। अक्सर उनको भी खिला - पिलाते हैं। समाज में उसको बडा नाम है। वे अक्सर सामाजिक कार्यों मे भाग लेते है। नौकर - चाकर बहुत हैं। खूबसूरत और मृदभाषिणी पत्नी और बाल - बच्चों से उनका परिवार भरपूर है। चारों ओर सुखी जीवन है। एक साधारण गृहस्थ के लिए इससे बढ़कर और कुछ नहीं चाहिए।

लेकिन यहाँ परिस्थिति अलग बना। वह वकील अशांति से रहा। अशांति का कारण खुद लेखक जानता है। लेखक का विचार है कि - वकील के पडोस में एक बीमा एजन्ट रहता है। वह बहुत मेहनत करता है और अपने जीवन को दिन दगुना रात चौगुनी बनाता है। उस ऐजणट के पास एक स्कूटर है और मेहनत के अनुसार आमदनी भी ज्यादा है। इसे देखकर वकील साहब मन ही मन जलता है। इसी जलने को कहते है "ईर्ष्या"। ईर्ष्या जिस आदमी के ह्दय में बसता है वह आदमी आनंद से नहीं रहता है। वह सदा अपने पास जो चीजं है उसे छोडकर दूसरों के पास स्थित चीजों से दु:खी होता है। ईर्ष्यालु अपने को दूसरों से तुलना करता है और अपने पास उसके अभाव की भावना ही उसे सडियल बनाता है। इर्ष्यालु इस गुण से वेदना को भोगना पडता है। इससे ज्यादा कुछ नहीं कर पाता।

मानव अपने जीवन में जिसका अनुभव करता है वह सब केवल भगवान की देन है। भगवदत्त उनको स्वीकार कर भगवान् के प्रति कृतज्ञता को व्यक्त करने के बदले और ज्यादा मिलेगा तो .... इस प्रकार दुश्चिंता में पड रहा है। फलतः वह शांति को खो बैठता है। उनका चरित्र भी अति भयंकर होता है। अभाव पर चौबीस धण्टे चिंता में डूबगा। इसलिए वह अपने जीवन - यात्र में आगे बढ़ने के बजाय पीछे जाने का मार्ग साफ करेगा। अपनी भलाई के बारे में छोडकर दूसरों तक हानि पहुँचाने के बारे में ही वह गोते लगाते रहेगा जिसे वह अपना धर्म समझेगा।

प्रेम चन्द ने ''मानसरोवर'' में लिखा कि - ईर्ष्या अग्नि है। परन्तु अग्नि का गुण उसमें नहीं। वह हृदय को फैलाने के बदले और भी संकीर्ण कर देती है। (मौत कहानी)

''निंदा'' ईर्ष्या की बडी बेटी है'। ईर्ष्यालु ही दूसरों की निंदा करने के लिए उत्सुक होता है। दूसरों की निंदा करके समाज की दृष्टि में उसे गिराकर उनके स्थान में ईर्ष्यालु खुद बैठने को सोचेगा। परन्तु यह उलट होकर खुद अपने पैरों पर कुल्हाडी मारना ही है। समाज की दृष्टि से मानव गिर जाने का कारण खुद सद्गुणों का ह्रास ही है। मानव की महानता उसके चरित्र में छिपी रहती है। चरित्र - विकास ही मानवोन्नति के लिए मुख्य कारण है।

''ईर्ष्या'' की छाया है ''द्वेष''। ईर्ष्या का काम है जलाना। पहली बार जहाँ वह पैदा होती है उसको जलाती है। ईर्ष्यालु अपने मन के गुबार को किसी दूसरे के सामने ग्रामफोन जौसा बजाना चाहता है। बडी चाव से एक एक काण्ड सुनाना चाहता है। फलतः उसका चरित्र पुरोगमन के बदले तिरोगमन होगा। इस तरह अपनी सारी शक्ति को व्यर्थ खो बैठता है। दूसरों के बारे में हमेशा सोचने से चिंतामग्न होता है। इस चिंता के बारे में लेखक ने बहुत अच्छी तरह लिखा जो लोक विदित है।

संस्कृत में एक श्लोक है जो सुपरिचित है -

चिता चिंता द्वयोर्मध्ये
चिंता नाम गरीयसी।
चिता दहति निर्जीवं
चिंता नामयुतं वपुः॥

यहाँ चिंता मग्न मानव - जीवन कितनी दयनीय है वर्णन है कि - मानव के हृदय में चिंता का प्रवेशा नहीं होना है। क्यों कि - वह इतना भयानक है कि - चिता एक प्राण हीन शरीर को अर्थात - लाश को भस्म करता है। परन्तु चिंता प्राण धारी शरीर का दहन करता है।

ईर्ष्यालु एक विषभरी व्यक्ति है - मानो ज्वालामुखी हो जो चलते चलते समाज का सर्वानाश करता है। प्रदूषण के द्वारा मानव जीवन को कितनी हानि पहँचती है उससेभी ज्यादा इस ईर्ष्यालु व्यक्ति से हो रहा है।

मानव समाज निर्माण को यह ईर्ष्या कुंठित बना देता है। ईर्ष्या के कारण मानव जीवन भर आनंद रुपी फूल से बहुत दूर पर रहता है। संपूर्ण रुप आनंद को खो जाता है। ईर्ष्यालु ईर्ष्या रुपी चक्षुओं के कारण सूरज को नहीं देख पाता है और अपनी आयु को बढ़ाने वाला प्रकृति सौंदर्य का अनुभव भी नहीं पा सकता है।

अभिमान धनी इस समाज में सब कुछ सह सकता है परन्तु निंदा रुपी बाणों को नहीं सह सकता। निंदा के बाण बहुत शक्तिमान है कि - मानव को जीते जी घुल घुल कर मृत्यु तक ले जाते हैं।

आनंद मानव की आयु को बढ़ाता है। लेकिन यही आनंद व्यक्ति से व्यक्ति तक बहुत भिन्न है। ईर्ष्यालु के लिए यह आनंद एक पुरस्कार है। जब प्रतिद्वंदी निंदा के बाणों से क्षुब्ध होता है तब उसे देखकर ईर्ष्यालु आनंद मग्न होता है जिसे राक्षसानंद कहते हैं। ईर्ष्या का सबंध प्रतिद्वंदिता से होता है जो नरीह नहीं। उससे भी मानव का विकास होता है।

ईर्ष्या एक दुर्गुण ही नहीं, सुगुण भी है। ईर्ष्या के दो पक्ष हैं जैसे - अच्छा और बुरा। ईर्ष्या से जब रचनात्मक प्रेरणा आती है वही समाजं - कल्याणकारी होगी। ईर्ष्यालु दूसरों को देखते ही उनसे अपने आपको छोटा समझकर सामनेवाले को श्रेष्ठ समझता है उस समाय अनजान ही उसका मन जल जाता है। फलतः चिंता, दुःख, और असंतोष का केन्द्र बनता है।

कभी - कभी शरीफ लोग भी अपने अमूल्य समय को व्यर्थ करते हैं जैसे - दुश्मनों का उद्धार के लिए कटि बद्ध होकर मदद करते हैं और समाजोद्धारक बनते हैं। लेकिन जो लोग उपकार पाकर आगे बढ़ते हैं वे ही इन शरीफ लोगों की पीछ्छा कर उनकी खिल्ली उड़ाने के लिए भी नहीं हिचकिचायेंगे।

लोक प्रसिद्ध ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने कहा कि "तुमने जिसकी भलाई की है वही तुम्हारी निंदा करेगा"। यह सदा और सर्वदा स्मरणीय है। हमारे आगे प्रशंशा कर पीछे निंदा करने वाले कृतघ्नऔर बाजार की मक्खियाँ हैं। ऐसे लोगों से अपने आपको चिढ़ाना नहीं बल्कि उनसे दूर और बहुत दूर पर रहना ही अक्लमन्दों का कार्य है। छोटा दिल और संकीर्ण दृष्टि बालों के साथ उदार और सज्जनता दिखाना व्यर्थ है।

ईर्ष्यालु लोगों को उपकार कर एवज में हम अपकार ही पायेंगे। ऐसे अधम लोगों के सामने चुप बैठना भी हमें अपशकुन है। वे हमें घमण्डी समझेंगे। ईर्ष्यालु का उद्देश्य है - सामने खडा आदमी दुनिया को छोडकर अपने से भागीदार बनना है। तभी ईष्यालु प्रसन्न होगा।

इन सभी परिस्थितियों को लांघकर, अनुभवों को निचोडकर "नीत्से" ने कहा कि - गुण संपन्न व्यक्ति को देखते ही उनके मुताबिक चलते लोग ही उससे जलते हैं।

दर - असल सज्जन आनंद पाने का एक ही मार्ग है - बाजार की मक्खियों को छोडकर समाज से बहुत दूर पर जाकर एकांत में रहना है। वहीं नये मूल्यों का निर्माण करना चाहिए। यही "नीत्से" का सुव्यवस्थित विचार है।

शराफत की बात है कि - नव - समाज - निर्माता सज्जन लोग ईर्ष्यालु और बाजार की मक्खियों से दूर एकांत जगत में जीना है।

"मानसिक अनुशासन" भी और एक मार्ग है। रचनात्मक प्रेरण के द्वारा ही अपने आपको, इस जाति को, इस समाजं को और इस संसार को ईर्ष्या से बचा सकते हैं।

कुछ नमूने प्रश्न :-

1. "ईर्ष्याः तू न गयी मेरे मन से " निबंध का सारांश लिखिये।
2. मानव के मनोविकारों में "ईर्ष्या" एक है - विचार कीजिए।
3. "ईर्ष्या" के कथ्य का परिचय दीजिए।

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए :-

" उन्नति तो तभी होगी, जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाये तथा अपने गुणों का विकास करें।"

लेखक - परिचय :-

यह वाक्य "ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से" नामक गद्य भाग से लिया गया है। इस निबंध के लेखक श्री. रामधारी सिंह दिनकर हैं।

आधुनिक हिन्दी कविता क्षेत्र में मूर्धन्य स्थान पर दिनकर बैठे हैं। "रामधारी सिंह" मूल नाम है। "दिनकर" उनका "उपनाम" है। 23.9.1908 को बिहार के सिमरिया नामक एक छोटे गाँव में पैदा हुए। उनका बचपन कई कष्टों में काटा। अपनी पढ़ाई के लिए स्वयं भिक्षाटन भी किया।

दिनकर बचपन से ही कविता रचना किया करते थे। स्कूल जीवन से ही तत्कालीन पत्र पत्रिका ओं में उनकी राष्ट्रीय गीत, सवैया, कविता तथा समास्यापूर्ति के छंद छपने लगे।

"ऊर्वशी" काव्य के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार "संस्कृति के चार अध्याय" गद्य रचना के लिए साहित्य अकाडमी का पुरस्कार मिला।

उनकी गद्य, पद्य, विचार संबंधी प्रत्येक रचना एक एक अनमोल मोती है।

उनका निधन 25-4-1974 को हुआ।

संदर्भ :-

लेखक दिनकर ने ईर्ष्यालु के अवगुणों के बारे में कह रहे हैं। उस समय मानव को सचेत करने के लिए उपर्युक्त वाक्य को लेखक ने पाठकों से कहा।

भावार्थ :-

व्यक्ति हमेशा दूसरों के अवगुणों के बारे में कहने से कुछ नहीं मिलेगा। अपनी उन्नति के लिए खुद अपने चरित्र को सुधारना है। अपने गुणों के विकास के लिए प्रयत्न करना है।

विशेषतायें :-

मानव की उन्नति और अवनति के लिए न समाज सब कुछ है। परन्तु मानव भी दूसरों पर आरोप करने के भाव को छोडकर अपनी गुनाहों को अपने मन रुपी क्षेत्र से उखाडने का प्रयास करना है। धीरे - धीरे गुणों का विकास और सीढ़ी पर सीढ़ी चढ़कर उन्नति की ओर चलेगा।

मानव की दृष्टि अपने मन और गुण - दोषों पर जब केन्द्रित होती है तब दूसरों के बारे में कभी नहीं सोचेगा। अपने बारे में सोच विचार कर जीवन में बहुत आगे बढ़ जाना है।

मानव का जीवन एक पुष्प है। चरित्र रुपी पानी जब निर्मल होगा तब गुण रुपी पंखुडियाँ अच्छी तरह विकसित होंगे।

चरित्र को निर्मल बनाना अर्थात् मानव जीवन के लिए मूल है "**चरित्र**"। चरित्र के बिना जीवन अधूरा है। "**चरित्र**" का अर्थ है - अरिषड वर्गों को दूर करना, विनयी होना, उदारता से जीना, लालची न होना, धैर्य, सह कारिता, सच बोलना, कर्तव्य - परायणता आदि गुणों का संकलन ही है।

तभी मानव - जीवन की खुश्बू चारों ओर फैलकर जीवन सार्थक बनेगा जो "सोलह आना सच है"।

2. "जहाँ बाजार की मक्खियाँ नहीं भिनकती वह जगह एकांत है।"

लेखक - परिचय :-

संदर्भ :-

ईर्ष्या भरित समाज के बारे में कहकर अंत में लेखक 'ईर्ष्या' से बचाने का उपाय कह रहे हैं। उस संदर्भ में लेखक ने उपर्युक्त वाक्य को पाठकों से कहा।

भावार्थ :-

बाजार माने सभी चीजों का केन्द्र है। उन चीजों से शत प्रतिशत मक्खियाँ आकर्षित होते हैं। इनके कारण मानव ही क्या? - सारी प्राणिकोटि बीमार पडते हैं। उनसे बचाने के लिए ओढ़ने की चेष्टा करते हैं। समाजं में ठहरे ईर्ष्यालु मक्खियों से हम स्वयं बचजाने के लिए उन लोगों से बहुत दूर जाकर .... जहाँ तक वे न पहुँच जाय, वहाँ जाकर एकांत में रहना है।

विशेषतायें :-

महर्षि गण , महान लोग एकांत को चाहते हैं। परन्तु मक्खियाँ निर्जन प्रदेश की ओर विमुख है। एकांत में बैठने से उद्विग्नता दूर होगी और सद् भावों का जन्म होता है। बहुत सारे ग्रंथो का आविर्भाव एकांत में ही हुआ। एकांत में बैठनेसे उद्विग्नता कम होगी। बुद्धि का विकास होगा और समाज - विकास के लिए नये मूल्यों का निर्माण भी करने का समय है।

एकांत में बैटने से तन और मन के लिए आराम और शांति मिलेगी। मन निर्मल - स्वच्छ मोती के जैसे चमकेगा।

एकांत में बैठकर तुलसी ने मानस और वाल्मीकि ने रामायण की रचना की। एकांत में रहने से अपना मन तुरंत कार्योन्मुख होगा। इन गुणों के कारण यहाँ लेखक ने एकांत के लिए उत्तम स्थान दिया जिसकी महिमा अद्वितीय है।

कुछ मुख्य संदर्भों की सूची है यहाँ जो व्याख्या के लिए अनुकूल हैं।

1. नौकर भी सुख देनेवाले और पत्नी भी अत्यंत मृदु भाषिणी।
2. वह उन चीजों से आनंद नहीं उठाता, जो उसके पास मौजूद है, बल्कि उन वस्तु ओं से दुःख उठाता है, जो दूसरों के पास है।
3. वह सृष्टि की प्रक्रिया को भूलकर विनाश में लग जाता है और अपनी उन्नति के लिए उद्यम करना छोडकर वह दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रोष्ठ कर्तव्य समझने लगता है।
4. दुसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती।
5. ईर्ष्या शायद चिन्ता से भी बढ़तर चीज है क्यों कि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुंठित बना डालती है।
6. ईर्ष्या से जला भुना आदमी जहर की एक चलती - फिरती गठरी के समान है।
7. भिखमँगा करोडपति से ईर्ष्या नहीं करता।
8. प्रति द्वंदिता से भी मनुष्य का विकास होता है।
9. तुम्हारी निंदा वही करेगा जिसके तुमने भलाई की है।
10. उसने जोरों का एक ठहाका लगाया और कहा कि यार ये तो बाजार की मक्खियाँ हैं।
11. ऐब को तो ये माफ कर देंगी, क्यों कि - बडों के ऐब को माफ करने में भी एक शान हैं।
12. आदमी में जो गुण महान् समझे जाते हैं उन्हीं के चलते लोग उससे जलते भी हैं।

कुछ संदर्भ ग्रंथ :-

1. आधुनिक हिन्दी निबंध - सुरेशचन्द्र गुप्ता
2. आधुनिक हिन्दी निबंध - भुवनेश्वरी चरण सक्सेना
3. साहित्य मुखी - रामधारी सिंह "दिनकर"
4. शुद्ध कविता की खोज - रामधारी सिंह "दिनकर"
5. भारत की सांस्कृतिक कहानी - रामधारी सिंह "दिनकर"

Dr. K. Vasantha Kumari
Reader
S.S. & N. College,
Narasarao Pet.

Lesson - 3

आपने मेरी रचना पढ़ी? इकाई की रुप रेखा

इकाई की रुपरेखा :-

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 निबंधकार आचार्य हजारीप्रसाद त्रिववेदी का परिचय

3.4 आपने मेरी रचना पढ़ीं ? निबंध

3.5 निबंध का सारॉंश और विशोषताएँ

3.6 कठिन शष्दार्थ

3.7 संदर्भ सहित व्याख्याएँ

3.8 कुछ स्मरण रखने योग्य बातें

3.9 कुछ संभावित उध्दरण

3.10 बोध - प्रश्न

3.11 सहायक ग्रन्थ सूची

3.1 उद्देश्य :-

इस इकाई में आप आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी से लिखी गई निबंध आपने मेरी रचना पढ़ी का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

1. सुप्रसिध्द हिन्दी समीक्षक आचार्य हजारी प्रसाद दूिवेदी जी का परिचय और उनकी रचनाओं के बारे में जान सकेंगे।
2. युगीन परिवेश और मानवीय मूल्यों की महानता को जान सकेंगे।
3. आप यह भी जान सकेंगे कि कुछ कवि अपने रचनाओं को उत्तम मानते है और इसे प्रामाणित करने की चिंता में डूबे रहते हैं।
4. ऐसे कवि वास्तव में ढ़ोंगी साहित्यकार है।
5. चिंताविहीन और आडंबरपूर्ण रचनाओं की अनावश्यकता के बारे में जान लेंगे।

3.2 प्रस्तावना :-

इस संग्रह में हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का 'अपने मेरी रचना पढ़ी' नामक निबन्ध संकलित है। यह व्यंग्यात्मक शैली में लिखा गया है। इसमें द्विवेदी ने साहित्यकारों की गम्भीरता पर व्यंग्य कसा है। उन्होंने चिन्ता प्रकट की है कि धीरे - धीरे

साहित्यकारों के व्यक्तित्व से विनोद की मात्रा घट रही है। उन्होंने बताया है कि स्वस्थ परम्परा की स्थापना तभी होगी जब लेखक स्वस्थ साहित्य लिखे और आलोचक ईमानदारी से अपने दायित्व को निभायें।

3.3 निबंधकार आचार्य हजारी प्रसाद दिूवेदी जी का परिचय :-

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। वे बहुमुखी प्रतिभासंपन्न व्यक्ति थे। वे उपन्यासकार, आलोचक एवं शोधकर्त्ता थे। उनका जन्म उत्तरप्रदेश के बलिया जिले के ओझबलिया गाँव में ता. 19-08-1907 को हुआ था। उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविधालय में संस्कृत एवं ज्योतिष शास्त्र में एम. ए. किया। अध्यापक के रुप में उनकी नियुक्ति विश्वभारती, शान्ति निकेतन में हुई। बीस साल वहाँ रहे। फिर वे काशी हिन्दू विश्वविद्यलय में हिन्दी विभागाध्यक्ष बने। इसके बाद वे पंजाब विश्वविधालय में हिन्दी के प्रोफेसर बने, बाद में वे रेक्टर बनकर बनारस विश्वविधालय लौटे, उनकी योग्यता से प्रभावित होकर लखनऊ विश्वविद्यालय ने उन्हें सम्मानित डी. लिद. की उपाधि प्रदान की तो राष्ट्रपति ने उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मनित किया।

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भारतीय संस्कृति, इतिहास, साहित्य, ज्योतिष तथा विभिन्न धर्मों का गम्भीर आध्ययन किया। वे जीवन - भर शोध - कर्त्ता रहे। उन्होंने कई रचनायें की हैं।

यथा -

इतिहास सम्बन्धी :-

हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी साहित्य का आदिकाल और हिन्दी साहित्य।

निबन्ध - संग्रह :-

अशोक के फूल, कल्पलता, विचार - प्रवाह कुटज, आलोक पर्व आदि।

अनुसंधान तथा आलोचना सम्बन्धी :-

सूर साहित्य, कबीर, नाथ - सम्प्रदाय, साहित्य - सहचार, कालिदास की लालित्य योजना आदि।

उपन्यास :-

बाण भट्ट की आत्मकथा, चारुचन्द्र लेख तथा अनामदास का पोचा।

संपादित ग्रन्थ :-

नाथ सिद्धों की बाणियाँ, सन्देश रासक, पृथ्वीराज रासो आदि।

द्विवेदी जी की आलोचना गम्भीर, संयत, व्याख्यात्मक, गवेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक है। उनकी भाषा शुद्ध साहित्यक हिन्दी है। उन्होंने सरल तथा किलष्ट तत्समों का प्रयोग किया है। उन्होंने सन्दर्भानुसार व्यास - शैली, धारा - शैली, व्योग्य - शैली आदि का प्रयोग किया है। उनकी मृत्यु ता 19-05-1971 को हुई।

3.4 आपने मेरी रचना पढ़ी ? निबंध ? :-

हमारे साहित्यकारों की एक भारी विशेषता यह है कि जिसे देखो, वही गम्भीर बढ़ना है, गम्भीर तत्ववाद पर बहस कर रहा है और जो कुछ भी वह लिखता है, उसके विषय में निश्चित धारणा बनाये बैठा है कि वह एक क्रांतिकारी लेखक है। जब आये दिन एसे ख्यात - अख्यात साहित्यिक मिल जाते हैं जो छूटते ही पूछ बैठते हैं, "आपने मेरी अमुक रचना तो पढ़ी होगी ?" तो उनकी नीरस प्रवृत्ति था विनोद प्रियता का अभाव बुरी तरह प्रकट हो जाता है। एक फिलोसफर ने कहा है कि विनोद का प्रभाव कुछ रासायनिक - सा होता है। आप दुर्दान्त डाकू के दिल में विनोद - प्रियता भर दीजिए, वह लोकतन्त्र का लीडर हो जायगा।

आप समाज - सुधार के उत्साही कार्यकर्त्ता के हृदय में किसी प्रकार विनोद का इजेक्शन दे दीजिए वह अखबार - नवीक्ष हो जायगा और छपि कठिन है, फिर भी युक्ति से उदीयमान छायावादी कवि की नाडी में थोड़ा विनोद भर दीजिए, वह किसी फिल्म कम्पनी का नामी अभिनेता हो जायगा। एक आधुनिक चीनी फिलोसफर को दिनरात यह चिन्ता परेशान करती रही थी कि आखिर प्रजातन्त्र के नताओं और डिक्टेटरों में अन्तर क्या है ? यदि आप सचमुच गम्भीरतापूर्वक छान - बीन करें तो रुजबेल्ट और स्टालिन में कोई मौलिक अन्तर नहीं मिलेगा। या दूर की बात छोडिए। गाँधी और जिन्ना में कोई अन्तर नहीं है .... जहाँ तक शाक्ति प्रयोग का प्रश्न है। गाँधी की बात भी काँग्रेस के लिए कानून है और जिन्ना की बात भी मुस्लिम लीग के लिए वेदवाक्य है, फिर भी एक डेमोक्रेट हैऔर दूसरा डिक्टेटर। क्यों ? चीनी फिलोस्फर ने चार वर्ष की निरन्तर साधना के बाद आविष्कार किया कि डेमोक्रेट हँसना और मुस्कशंना जानता है, पर डिक्टेटर हँसने की बात सोचते भी नहीं। आप जहाँ भी देखें उनकी भृकुटियाँ तनी हुई है, मुट्ठियाँ बँधी हुई है - ललाट कुंचित है, अथरोष्ठ दाँतों की उपान्त रेखा के समानान्तर जमा हुआ है - मानो ये दुनियाँ को भस्म कर देना चाहते हैं। अगर इस शक्तिशाली डिक्टेटरों में हँसने का थोडा - सा भी माद्दा होता तो दुनिया आज कुछ और हो गई होती।

जब - जब मैं कलकत्ते के चिडियाधर में गया हूँ, तब - तब मुझे ऐसा लगता है कि संसार के जीवों सें सबसे अधिक गम्भीर और चिन्तामग्न चेहरा उस चिडियाधर में रखे हुए एक वनमानुष का है। उसको देखते ही जान पडता है कि संसार की समस्त वेदना को वह हस्तामलक की भाँति देख रहा है और अपनी सुदूरपातिनी दृष्टि से इन आने - जाने वाले दर्शकों के करुणा भविष्य को वह प्रत्यक्ष देख रहा है। मैने बाद में पढा है कि अफ्रीका के हबशियों में यह विश्वास है कि वनमानुष मनुष्य की बोली बोल भी सकते हैं और संसार के रहस्य को भली भाँति समाझ भी सकते हैं, परन्तु इस डर से बोलते नहीं कि कहीं लोग पकडाकर उन्हें गुलाम न बना लें। यह तब तक मुझे नहीं मालूम थी, तब तक मैं समझता था कि यह कलकत्ते वाला वनमानुष ही बहुत गम्भीर और त्तवचिन्तक लगता है, अब मैने अपनी राय में सशोधन कर लिया है। वस्तुतः संसार के सभी वनमानुष गम्भीर और तत्वदर्शी दिखाई देते हैं।

मैं कभी - कभी सोचता हूँ कि आदिम युग का मनुष्य - जब वह बानरी योनि से मानवी योनि में नया - नया आया था - कुछ कलकतिये वन मानुष की ही भाँति गम्भीर रहा होगा। मगर यह भी कैसे कहूँ ? जेब्रा और जेडा भी मुझे कम गम्भीर नहीं लगते तथा गधे और ऊँट भी इस सूची से अलग नहीं किये जा सकते। फिर भी इनकी तुलना वनमानुष से नहीं की जा सकती।

अन्तत : गधे और वनमानुष की गम्भीरता में मौलिक भेद है। गधा उदास होता है और इसलिए नकारात्मक है: पर वनमानुष सोचता हुआ - सा रहता है और इसलिए उसकी गम्भीरता में कुछ तत्व है, कुछ सार है। गधे की गम्भीरता प्रोलितारियत की उदासी है और वनमानुष की गंभीरता वग्रवादी मनीषी की। दोनों को एक श्रणी में नहीं कहा जा सकता।

परन्तु इसे अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि आदि मानव कुछ गम्भीर, कुछ तत्व - चिन्तक और कुछ उदास जरुर था और उसकी उदासी वग्रवादी विचारक की उदासी की जाति की ही रही हो, ऐसा भी हो सकता है। सच पूछिए तो शुरु - शुरु में मनुष्य कुछ साम्यवादी ही था। हँसना - हँसाना तब शुरु हुआ होगा, जब उसने कुछ पूँजी इकट्टी कर ली होगी और संचय के साथ न जुटा लिए होंगे। मेरा निश्चित मत है कि हँसना - हँसाना पूँजीवादी मनोवृत्ति की उपज है। इस युग के हिन्दी साहित्यक जो हँसना नापसन्द करते है, उसका कारण शायद यह है कि पूँजीवादी बुर्जुआ मनोवृत्ति को मन - ही - मन करने लगे हैं। उनकी युक्ति शायद इस प्रकार हैं - चूँकि संसार के सभी लोग थोडा - बहुत रो सकते हैं, इसलिए रोना ही वास्तविक धर्म है। फिर भी अधिकांश साहित्यक रोते नहीं, केवल शनी सूरत नये रहते हैं, जिसे थोडा - सा भी गणित सिखाया गया हो, वह बहुत आसानी से - इस आचरण की युक्ति - युक्तता समझ सकता है। मैं समझा रहा हूँ।

यह तो स्वयंसिद्ध बात है कि दुनिया में दुःख सुख की अपेक्षा अधिक है, अर्थात् रोदन हास्य से अधिक है। अब सारी दुनिया के रोदन को बराबर - बारबर बाँट दीजिए और हँसी को भी बराबर -बराबर बाँट दीजिए। स्पष्ट है कि सबको रोदन हास्य घटा दीजिए। कुछ रोदन ही बच रहेगा। इसका मतलब यह हुआ कि जो कुछ मिलेगा, उससे फूट - फूट कर तो नहीं रोया जा सकता ; पर चेहरा जरुर रुआँसा बना रहेगा। यह युक्ति तो मुझे ठीक जँचती है।

लेकिन युक्ति का ठीक जँचना साहित्य की आलोचना के क्षेत्र में सब समय प्रमाणस्वरुप ग्रहण नहीं किया जाता। रहस्यवादी आलोचक यह नहीं मानते कि युक्ति और तर्क में ही सब कुछ है। मैने आलोचक शब्द के विशेषण के लिए रहस्यवादी शब्द कैसी को चौंका देने की मंशा से व्यवहार नहीं किया है। बहुत परिश्रम के बाद मैने यह निष्कर्ष निकाला है कि हिन्दी में वस्तु तः रहस्यवादी कवि हैं ही नहीं। यदि कोई रहस्यवादी कहा जा सकता है तो वह निश्चय ही एक श्रेणी का आलोचक है। जहाँ तक हिन्दी बोलनें वालों का सम्बन्ध है, रहस्यवादी साधु और फकीर तो बहुत हैं, पर वे सब साधना की दुनिया के जीव हैं साहित्य की दुनिया में रहस्यवादी जीव यदि कोई है तो वे निश्चय ही एक तरह के आलोचक हैं और जब कभी मैं रहस्यवादी शब्द की बात सोचता हूँ तो काशी के भदैनी मुहल्ले की सडक पर साधना करने वाला रहमत अली फकीर मन, वचन और कर्म तीनों से विशुद्ध रहस्यवादी था। 'अनिकेत' वह जरुर था, पर उसके बडे - से - बडे निन्दक को भी यह कहने में जरुर संकोच होगा कि वह 'स्थिर - मति' भी था।

सो, मैने एक दिन देखा कि वह रहमत अली शून्य की ओर आँखें उठाये हुए किसी अदृश्य वस्तु पर निरंतर प्रहार कर रहा है। लात, मक्के, धूँसे - एक दो, तीन .... लगातार। दर्शक तो वहाँ बहुत थे, कुछ सहमे हुए कुछ अभियुक्त कुछ योंही से' और कुछ गम्भीर। एकाध मुस्करा भी रहे थे। इन्हे देखकर ही मुझे रहस्यवादी आलोचकों की याद आई। सारा काण्ड कुछ ऐसा अजीव था कि विनोद की एक हल्की रेखा के सिवा तत्वज्ञान तक पहुँचा देने का और कोई साधन ही नहीं था। तब से जब मैं देखता हूँ कि कोई शून्य की ओर आँखें उठाये हैं और किसी अदृश्य बस्तु पर निरंतर प्रकार कर रहा है, तब मुझे रहस्यबाद की याद आये बिना नहीं रहती। तो यह रहस्यवादी दल युक्ति नहीं माना करता। युक्ति शब्द में ही किसी वस्तु से योग का सम्बन्ध है और यह मान लिया गया है कि योग दृश्य वस्तु से ही स्थापित किया जा सकता है। अदृश्य के साथ योग कैसा ?

आसमान में निरन्तर मुक्का मारने में कम परिश्रम नहीं है और मैं निश्चित जानता हूँ कि रहस्यवादी आलोचना लिखना कुछ हँसी खेल नहीं है। पुस्तक को हुआ तक नहीं और आलोचना ऐसी लिखी कि त्रैलोक्य विकम्पितः। यह क्या कम साधना है ? आये दिन साहित्यकों के विषय में विचार होता ही रहता है और इन विचारों पर विचार होता ही रहता है और इन विचारों पर विचार लिखने वाले बुद्धिमान लोग गम्भीर भाव से सिर हिलाकर कहते है - आखिर साहित्यक कहे किसे। बहसें होती हैं अखबार रँगे जाते हैं, मेरे जैसे आलसी आदमी भी चिन्तित हो और ए अन्त मे सोचता हुँ कि 'साहित्यिक' तो साहित्य के सम्बन्धी को ही कहती है न ? सो सम्बन्ध तो कई तरह के है। वादरायण एक है। आपके घर अगर बेर के फल है, मेरे घर बेर के पेड, तो इस समबन्ध को पुराने पण्डित 'बादारायणा' सम्बन्ध कहेंगे। साहित्य से सम्बन्ध रखने वाले जीव पाँच प्रकार के है - लेखक, पाठक, सम्पादक, प्रकाशक और आलोचक, सबके क्षेत्र अलग - अलग है। पढ़ने वाला आलोचना नही करता, आलोचना करने वाला पढता नही - यही तो उचित नाता है। एक ही आदमी पढे भी और लिखे भी था पढे भी और आलोचना भी करे या लिखे भी इत्यादि - इत्यादि, तो साहित्य में अराजकता फैल जाए। इसलिए जब एक लेखक दूसरे लेखक से पूछता है कि आपने मेरी अमुक रचना पढ़ी है, तब जी में आता है कि कह दूँ, "डाक्टर के पास जाओ। तुम्हारे दिमाग में कुछ दोष है। 'पर डाक्टर क्या करेगा ?

विनोद का इन्जेक्शन किसी फैक्टरी ने अभी तक तैयार नही किया। इसलिए मुस्कराकर चुप लगा जाता हूँ। मेरे एक होमियोपैथ मित्र का दृढ मत है कि विनोद की कमी दूर करने के लिए कोई इन्जेक्शन तैयार किया जा सकता है। वे इस बात का प्रयत्न भी कर रहे है कि किसा हँसेड की छाया किसी तरह अलकोहल में घुलाकर उस पर से विनोद की दवा तैयार करे और चिकित्सा की और साहित्य की दुनिया मे एक ही साथ क्रान्ति कर दे पर वह अभी प्रयोगावस्था में ही है। तब तक मुझे भी सब सहना पडेगा और सहे भी जा रहा हूँ।

3.5 निबंध का सारांश और विशेषताएँ :-

लेखक कहते है कि हमारे साहित्यकार हमेशा गंभीर बने रहते है। वे अपने को क्रांतिकारी लेखक समझते है और अपनी रचनाओं के संबन्ध मे उन्हे निशिचत धारणा रहती है कि उनकी रचना श्रेष्ठ है और अन्य नहीं। साहित्यकारो कि दर्शन जहाँ भी हो, वे तुरन्तु पूछते है कि क्या आप ने मेरी रचना रढी ? इस प्रश्न को सुनते ही सब को उनकी नीरस - प्रवृतिं और विनोद - शून्यता का परिचय हो जाता है। एक दार्शनिक ने बताया कि विनोद - प्रियता का प्रभाव व्यापक होता है। इससे एक भयानक डाकू पश्चात् नेता बन सकता है और समाज - सुधारक भी हो सकता है। लेखक द्विवेदी जी छायावादी कवियों का उपहास करते हूए कहते है कि अगर छायावादी कवि विनोदप्रिय बन जाते, तो वे भविष्य मे सिनेमाओं के नामी अभिनेता भी बन जायेंगे।

एक चीनी दार्शनिक प्रजातंत्र के नेताओं और क्रूर नियंताओं के स्वभाव के अंतर को समझते और समझाने के प्रयत्नों मे लगे रहे है। रुजवेल्ट और स्टालिन के बीच जो अंतर है उसे आज भी हम समझ नहीं सके। हमारे देश के गान्धी और जिन्ना में भी लेखक को कोई अंतर स्पष्टतः दिखायी नहीं देता। गान्धी जीकी बातें कांग्रेस केलिए कानून के समान है तो जिन्ना की बातें मुस्लिमलीग को। गाँधी को हम डेमोक्राट समझते हैं। चार साल के अनुसंधान के बाद चीनी दार्शनिक ने बताया कि प्रजातंत्र के नेता हँसना जानता है और डिक्टेटर हँसने की बातमें बहुत दूर, हमेशा अपनी दृष्टि से संसार को भस्म करने की मुद्रा मे दिखार्य

देता है, जिसे देखते ही सब को डर लगता है। अगर ये शक्तिशाली नियंता भी थोडी देर हँसने का प्रयत्न करते तो दुनिया की हालत आज कुछ और हो जाती। पर ऐसा कभी नही हुआ।

लेखक द्विवेदी जी एक बार कलकत्ते के चिडियाघर में गये। वहाँ चिता - ग्रस्त वन मानुष का चेहरा सब से अधिक गंभीर दिखायी पडा। संसार भर की वेदना वह भोग रहा था। दर्शकों के करुण - भविष्य को वह अपने गंभीरमुद्रा से देख सकता था। लेखक को बाद यह भी ज्ञात हुआ कि वन मानुष मानवों की बोली बोल सकता है और संसार के रहस्य को वह खूब जानता है। यह आफ्रिका मे रहनेवाला हबशियों का विश्वास है। यह सचाहो या झूठ, लेखक को वन - मानुष बहुत गंभीर और दार्शनिक सा लगा है।

लेखक का विश्वास है कि आदिम मानव और कलकत्ते के वनमानुष मे समानता है। जीब्रा ; ऊँट भी कम गंभीर नही है। गधा भी गंभीर ही रहता है। पर वनमानुष की गंभीरता से कुछ भिन्नता होती है। वनमानुष की गंभीरता वर्गवादी बुद्धिमान की गंभीरता से कुछ भिन्नता होती है। वनमानुष की गंभीरता वर्गवादी बुद्धिमान की गंभीरता की लगती है। लेखक के अनुसार प्राचीन मानवों मे साम्यावाद की अधिकता थी। जब उसने हँसना शुरु किया, तब उसे पूँजी इकट्ठाकरने की बात ज्ञात नही थी। पूँजीवादी मनोवृति से हँसना - हँसाना मानव ने जान लिया।

द्विवेदी यहाँ कहते हैं कि हिन्दी साहित्यक हँसना भी पसन्द नहीं करते। वे हँसी को दोष या पाप मानते हैं। उनके अनुसार रोना ही वास्तविक धर्म है। शायद इसलिए अधिकांश साहित्यक रोनी - सूरत बनाये रहते हैं। लेखक फिर कहते हैं कि संसार में सुख से दुख ही अधिक होता है। इसलिए संसार में दुख की कहानियाँ ज्यादा सुनाई पड्ती हैं। परन्तु रहस्यवादी समालोचक युक्ति और तर्क में भेद को नहीं मानते। लेखक कहते हैं कि हिन्दी में वास्तव में रहस्यवादी कवि नहीं है। रहस्यवादी साधु और फकीर होते है, पर कवि तो एकाध ही है। तुरन्त उन्हें काशी में रहनेवाला 'रहमत आली' फकीर याद आथा। लेखक ने एक दिन देखा कि फकीर रहमव आली शून्य की ओर देखते हुए किसी अद्दश्य चीज पर प्रहार कर रहा था दर्शक, जो सामने बैठे हुए थे भयभीत होकर इसका अवलोकन कर रहे थे। कुछ तो मुस्कुरा रहे थे। इस द्दश्य को देख कर द्विवेदी जी का ध्यान रहस्यवादी आलोचकों की ओर गया। इनके पास वास्तव में तत्वज्ञान तक पहुँचाने का कोई साधन - नहीं था। एक शून्य की ओर संकेत कर रहा है। तो दूसरा शून्य पर प्रहार कर रहा था। हम द्दश्य वस्तु के साथ संबन्ध स्यापित कर सकते हैं पर अद्दश्य से संबन्ध था योग कैसा हो सकता है ?

लेखक बताते हैं कि रहस्यवादी आलोचना लिखना सुलभ नहीं है। पुस्तक को देखे बिना ही कुछ लेखक बडे बडे आलोचना ग्रन्थ लिख डालते हैं और उस में तीनों लोगों से संबन्ध भी जोडते हैं। भविष्य में विचारों पर भी विचार लिखनेवाले बुद्धिमान लोगों से डरने के बिना हमारे पास और कोई रास्ता ही नहीं है। इनकी चर्चाओं से अखबार भरे रहते हैं पढनेवाला सिर पकड कर बैठने के सिवा कुछ नहीं कर सकता। बादरायण संबंन्धके बिना रहस्यवादी आलोचना में कुछ नहीं पाकर साधारण लोग भ्रम में पड जाते हैं। लेखक से लेकर आलोचक तक सबका क्षेत्र भिन्न होता है। पढनेवाला आलोचना नहीं करता और आलोचना करनेवाला पढना नहीं है। इससे साहित्य में अराचकता फैल जाती है। अगर कोई पूछता है कि आपने मेरी रचना पढी ? तो हमें तुरन्त डाक्टर के पास जाने के बिना और 'कोई रास्ता नहीं है। डाक्टर भी वया कर सकता है ? 'विनोद का न्जेक्षन' होता तो बहुत अच्छा होता। जब तक ऐसा न हो तब तक सब को इस प्रश्न को सुनना और मौन रहना ही पडता है। हम क्या कर सकते हैं।

विशेषताएँ :-

प्रस्तुत निबंध 'आपने मेरी रचना पढी' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का प्रसिद्ध निबन्ध है। द्विवेदी जी का हास्य - व्यंग्य की प्रवृत्ति का स्पष्ट दर्शन इस में हम करते है। आधुनिक युगं में साहित्य के क्षेत्र में जो अराजकता फैली है। उसपर वे परोक्ष रुप से कडी आलोचना करते हैं। हर एक अपने को बडा साहित्यक मानता है और वे सिर पैर की बातों से हजारों पन्ने भर कर पाठकों को पढने बाध्य करता है। जो पराजित आदमी मिले, तो उनका पहला प्रश्न यही होता है कि क्या आप ने मेरी रचना पढी ? इसका उत्तर देना कितना कठिन होता है, वही जानता है, जिसे इसका प्रत्यक्ष अनुभव है। रहस्यवादी आलोचना में द्विवेदी जी के अनुसार इस की बडी अधिकता है। सरस और विनोदपूर्ण शैली में लेखक ने इस लधु निबन्ध में साहित्य संबन्धी अपने मंतव्य प्रकट किया है। भाव को समझना साधारण पाठकके लिए भी सुलभ है। यह उत्तम निबन्धों में एक है।

3.6 कठिन शब्दार्थ :-

बहस करना	=	चर्चा करना
क्रांति	=	विप्लव
क्रांतिकारी	=	विप्लवात्मक
ख्यात	=	प्रसिद्ध
दुर्दांत	=	भयानक
उदीयमान	=	प्रसिद्ध
छान बीन करना	=	खोजना
भृकुटियाँ तनना	=	क्रोधित होना
माघा	=	मूलत्तव
हब्शी	=	नीग्रो जाती का आदमी
जुटाना	=	इकट्ठा करना
गुनाह	=	पाप
जँचना	=	प्रतीत होना
ग्रहण करना	=	स्वीकार करना
मंशा	=	उद्देश्य
सहमना	=	डरना
मुक्का मरना	=	मुट्ठी से मारना
वहम	=	भ्रम
दिमाग	=	बुद्धि

3.7 संदर्भ सहित व्याख्याएँ :-

1. **युक्ति से उदीयमान छायावादी कवि की नाडी में थोडा विनोद भर दीजिए, वह किसी फिल्म कंपनी का नामी अभिनेता हो जायेगा।**

प्रस्तावना :- यह उद्धरण गद्य - गौरव के आप ने मेरी रचना पढी? नामक लेख से लिया गया है। इसके लेखक श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं। द्विवेदी जी हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार निबन्ध लेखक तथा समालोचक हैं। आपकी रचनाएँ बडी सरस और भावुकता से भरी रहती हैं। गंभीर विषयों के विश्लेषण भी आप हास्य और व्यंग्य के द्वारा रसमय बना देते हैं। आप की भाषा बडी सजीव, सरस एवं प्रभावपूर्ण होती है। भारत सरकार ने आप को पद्म - भूषण की उपाधि देकर सम्मानित किया है। प्रस्तुत निबन्ध में द्विवेदी जी हिन्दी साहित्य में अहंकारी लेखकों के द्वारा व्याप्त अराजकता पर कटु - प्रहार करते हैं।

संदर्भ :- प्रसंग के वाक्य लेखक द्विवेदी जी स्वंय कहते हैं हिन्दी साहित्य में विनोद प्रियता की कमी पर आक्षेप करते हुए आप इनकी आवश्यकता पर बल देते हैं।

व्याख्या :- लेखक कहते हैं कि हमारे साहित्यकार सदा गंभीर बने रहते हैं। अपनी रचनाओं के बारे में उनकी निश्चित धारणा है कि ऐसी रचना रहले किसी से भी लिखी नहीं गयी। अकसर वे अन्य साहित्यक मित्रों से यही प्रश्न करते हैं कि क्या आप ने मेरी रचना पढी ? प्रश्न से ही उनका स्वभाव मालुम होता है। इस पर लेखक द्विवेदी जी कहते हैं कि हँसने से मन हलका होता है और वह एक प्रकार की रसायनिक प्रक्रिया है। विनोद - प्रियता हो तो डाकू भी प्रजातंत्त में नेता बन सकता है। हिन्दी के छायावादी कवियों के स्वभाव की आलोचना करते हुए द्विवेदी जी बताते हैं कि छायावादी कवियों के रागों में थोडा विनोद भर सकते हैं तो वे सिनेमाओं के बडे आभिनेता बन सकते हैं। उनकी प्रसिद्धि कविता एवं अभिनय दोनों क्षेत्रो में अपने आप हो जायेगी।

प्रसंग के द्वारा हिन्दी के साहित्यकारों में व्याप्त नीरसता और अनावश्यक गंभीरता पर वे तीक्षण प्रहार करते हैं। द्विवेदी जी के अनुसार विनोद - प्रियता के अभाव में साहित्य नीरस और शुष्क बन जाता है।

2. **चीनी फिलासफर ने चार वर्ष की निरंतर साधना के बाद आविष्कार किया कि डेमोक्राड हँसना और मुस्कुराना जानता है, पर डिक्टेटर हँसते की बात सोचते भी नहीं।**

प्रस्तावना :- यह उद्धरण गद्य - गौरव के आप ने मेरी रचना पढी? नामक लेख से लिया गया है। इसके लेखक श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं। द्विवेदी जी हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार निबन्ध लेखक तथा समालोचक हैं। आपकी रचनाएँ बडी सरस और भावुकता से भरी रहती हैं। गंभीर विषयों के विश्लेषण भी आप हास्य और व्यंग्य के द्वारा रसमय बना देते हैं। आप की भाषा बडी सजीव, सरस एवं प्रवाहपूर्ण होती है। भारत सरकार ने आप को पद्म - भूषण की उपाधि देकर सम्मानित किया है। प्रस्तुत निबन्ध में द्विवेदी जी हिन्दी साहित्य में अहंकारी लेखकों के द्वारा व्याप्त अराजकता पर कटु - प्रहार करते हैं।

संदर्भ :- प्रजांतत्र के नेताओं और डिक्टेटरों के स्वभाव में जो अंतर है, उसकी विवेचना इसमें की गयी है। यह एक चीनी दार्शनिक अनुसंधान पर आधारित है।

व्याख्या :- एक चीनी दार्शनिक ने चार वर्ष के अनुसंधान के बाद बताया है कि प्रजांतत्र के नेता हँसना जानते है। लेकिन डिक्टेटर इस के बारे में कल्पना भी नहीं करते। उदाहरण में द्विवेदी जी गाँधी और जिन्ना के स्वभावों को लेते हैं। गान्धीजी हमेशा हँसने और मुस्कुराते रहते हैं। कांग्रेसवाले उनकी बातों को वेदवाक्यों की तरह मानते है और अनुसरण भी करते है। इधर जिन्ना का प्रभाव भी कम नहीं है। मुस्लिमलीग के लिए जिन्ना के कथन बडे प्रभावपूर्ण होते है और उनकी बातों को मानने में सदा तत्पर रहते है। मगर जिन्ना साहब के स्वाभाव में गंभीरता की अधिकता दिखायी देती है। यही अंतर रुजवेल्ट और स्टालिन के स्वभावो में भी देखा जा सकता है। निष्कर्ष में लेखक यही बताते है कि शक्तिशाली डिक्टेटर भी हँसना जानते और उन के स्वाभाव मे गंभीरता के बदले कोमलता होती तो दुनिया का इतिहास ही बदल जाता। पर ऐसा नहीं हुआ।

3. **गधे और वनमानुष की गंभीरता मे मौलिक भेद है। गधा उदास होता है और इसलिए नकारात्मक है। वनमानुष सोचता हुआ सा रहता है। इसलिए उसकी गंभीरता मे कुछ तत्व है, कुछ सार है।**

प्रस्तावना :- यह उद्धरण गद्य - गौरव के आप ने मेरी रचना पढी? नामक लेख से लिया गया है। इसके लेखक श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं। द्विवेदी जी हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार निबन्ध लेखक तथा समालोचक हैं। आपकी रचनाएँ बडी सरस और भावुकता से भरी रहती हैं। गंभीर विषयों के विश्लेषण भी आप हास्य और व्यंग्य के द्वारा रसमय बना देते हैं। आप की भाषा बडी सजीव, सरस एवं प्रवाहपूर्ण होती है। भारत सरकार ने आप को पद्म - भूषण की उपाधि देकर सम्मानित किया है। प्रस्तुत निबन्ध में द्विवेदी जी हिन्दी साहित्य में अहंकारी लेखकों के द्वारा व्याप्त अराजकता पर कटु - प्रहार करते हैं।

संदर्भ :- कलकत्ते के चिडियाघर बन्द वनमानुष में अधिक ग को दिखायी पडी। इस प्रसंग में उसकी गंभीरता के संबन्ध में अपने मनोभाव लेखक व्यक्त करते है।

व्याख्या :- लेखक द्विवेदी जी कहते है कि चिडियाघर में अन्य जानबरों के साथ बनाकर रखे गये वनमानुष की गंभीरता में उसकी वेदना व्यक्त हो रही है। वह सोचता है कि भविष्य में सारे मानव इन जानवरों के समान कांक्षाओं की अधिकता के कारण दुखी बन जायेंगे। आफ्रिका के लोग समझते है कि वनमानुष्य संसार के रहस्य को जानते हैं। इस में सत्य हो न हो लेखक कहते है कि वनमानुष की तरह गधा भी गंभीर होता है। उसकी गंभीरता में उदासीनता और नकारात्मकता दिखायी वेती है। पर वनमानुष की गंभीरता में कुछ सार तत्व है। वह अपने भविष्य के साथ संसार के भविष्य के बारे में भी सोचता है। वर्गवादी मनीषी की गंभीरता की समानता वनमानुष की गंभीरता से होती है। संसार से वेदना को दूर करने पर यह गंभीरता अपने आप दूर हो जायेगी। लेखक के अनुसार हास्य और विनोद प्रियता के द्वारा इस प्रकार की गंभीरता को इस हल्का बना सकते है।

4. **यह स्वयंसिद्ध बात है कि दुनिया में दुख सुख की अपेक्षा अधिक है अब सारी दुनिया के रोदन को बराबर बांट दीजिए और हँसी को भी बराबर बाँट दीजिए। स्पष्ट है, सब को रोदन हास्य से ज्यादा मिलेगा।**

प्रस्तावना :- यह उद्धरण गद्य - गौरव के आप ने मेरी रचना पढी? नामक लेख से लिया गया है। इसके लेखक श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जी हैं। द्विवेदी जी हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार निबन्ध लेखक तथा समालोचक हैं। आपकी रचनाएँ बडी सरस और भावुकता से भरी रहती हैं। गंभीर विषयों के विश्लेषण भी आप हास्य और व्यंग्य के द्वारा रसमय बना देते हैं। आप की भाषा बडी सजीव, सरस एवं प्रवाबपूर्ण होती है। भारत सरकार ने आप को पद्म - भूषण की उपाधि देकर सम्मानित किया है। प्रस्तुत निबन्ध में द्विवेदी जी हिन्दी साहित्य में अहंकारी लेखकों के द्वारा व्याप्त अराजकता पर कटु - प्रहार करते हैं।

संदर्भ :- प्रसंग के वाक्य लेखक स्वयं कहते है। वे कहते है कि दुनिया के सारे लोग हँस नही सकते। क्योंकि संसार के अधिकांश लोग आज दुखी है।

व्याख्या :- लेखक कहते हैं कि अधिकांश हिन्दी साहित्यक हँसना नही जानते। जब वे स्वयं नही हँसते, तब अपनी रहनाओं के द्वारा हँसाने की बात उनके मन में पैदा ही नही होती। वास्तव में हँसी कोई पाप नही है, पर भी हिन्दी के साहित्यक हँसी को नापसंद करते है। द्विवेदी जी इस पर अपना मंतव्य इस तरह प्रकट करते है कि संसार में सुख कम है और दुख ही अधिक है। सुख - दुख को बराबर बाँट देने पर सब को दुख ही अधिक मात्रा में मिलेगा और सुख नाम मात्र के लिये। किंतु हमेशा ख्आसा बैठना ठीक नहीं है।

3.8 कुछ स्मरण रखने योग्य बातें :-

1. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और समीक्षक है।
2. आप काशी विश्वविद्यालय और पंजाब विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रुप में काम किया ?
3. अपने मेरी रचना पढ़ी द्विवेदी जी के निबंधों में प्रसिद्ध है।
4. इस निबंध में लेखक ने ऐसे साहित्यकारों की अवहेलना की है जो अपनी रचनाओं को उत्तम मानते हैं। इसे प्रामाणित करने की चिंता में डूबे रहते हैं।
5. द्विवेदी जी इस निबंधमें चिंतन - हीन और आडंबरपूर्ण रचनाओं की आवश्यकता बडी सरस शैली में व्यक्त करते है।

3.9 "कुछ संभावित अन्य उद्धरण" :-

1. 'अगर इन शाक्तिशाली डिक्टेटरों से हँसने का थोडा सा भी माद्दा होता तो दुनिया आज कुछ और हो गयी होती'।
2. 'वह फकीर मन, वचन और कर्म तीनों में विशुद्ध रहस्यवादी था 'अनिकेत' वह जरुर था पर उसके बडे बडे से निदंक को भी यह कहने में संकोच हेगा कि वह स्यिरमति भी था'।

3. 'पुस्तक को छुआ तक नहीं और आलोचना ऐसी लिखी, कि तैलोक्य विकंपित। यह क्या कम साधना है ?

4. 'बादरायण एक है। आप के घर अगर बेर के फल हैं मेरे घर बेर के पेड तो इस संबन्ध को पुराने पंडित बादरायण संबन्ध कहेंगे'।

3.10 बोध प्रश्न :-

1. आपने मेरी रचना पडी ? निबंध का लेखक परिचय दीजिए ?

2. आपने मेरी रचना पडी निबंध का सारांश लिखकर उसकी विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

3. "कुछ कवि अपनी रचनाओं को उत्तम मानते है और इसे प्रामाणित करने की चिंता में डूबे रहते है" - इस व्याख्यान पर एक भावगर्भित लेख लिखिए।

3.11 सहायक ग्रंथ सूची :-

1. असाध्मसाधक - आचार्य ध्जारी प्रसाद दिविवेदी - 'परेश' - पंजाब प्रकाशात - चण्डीगढ

2. हिन्दी साहित्य काइतिहास - डां - नगेन्द्र

Sri R. Bhaskara Rao

Lesson - 4

भारतीय साहित्य की एकता

इकाई की रुपरेखा :-

उद्देश्य

प्रस्तावना

निबंधकार का परिचय

पाठ का सारांश

निबंध की विशेषताएँ

कठिन शप्दों के अर्थ

सन्दर्भ सहित व्याख्या

बोध प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

इस इकाई के अंतर्गत आप 'भारतीय साहित्य की एकता' नामक विचारात्मक निबंध को पढने जा रहे हैं। निबंध का लेखक आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी जी हैं। इसका अध्ययन करने के बाद आप निबंध का सार अपने अपने शब्दों में लिख सकेंगे। निबंध में आए हुए कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे। निबंध का अध्ययन करने से यह स्पष्ट विदित होगा कि प्राचीन काल से आधुनिक काल तक भारतीय भाषाओं के साहित्य में व्याप्त और प्राप्त मूल भूत एकता क्या है ? इतना ही नहीं यह स्पष्ट होगा कि भिन्नत्व में एकत्व का जीता जागता उदाहरण भारत देश है।

प्रस्तावना :-

आप इस इकाई के अंतर्गत विचारात्मक निबंध 'भारतीय साहित्य की एकता' पढने जा रहे है। आप को स्पष्ट होगया होगा कि नन्ददुलारे वाजपेयी जी से रचित श्रेष्ठ निबंधों से यह एक है।

इस निबंध में लेखक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी ने भारतीय साहित्य की एकता का विचारात्मक विश्लेषण अच्छे ढंग से किया है। भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है। इनका साहित्य भी अत्यंत प्राचीन है। विशाल भारत में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। हर एक भाषाका अपना साहित्य है, फिर भी सार रुप में हमें उस में एक ही प्रवृत्ती दिखायी देती है। विभिन्न प्रदेशों की सांस्कृतिक विशेषताएँ इन भाषाओं के साहित्य में अपना प्रभआव दिखाती है। 'राष्ट्रीय एकता' में साहित्य की एकता एक महत्व पूर्ण अंश है। नवीन साहित्य के निर्माण में प्राचीन साहित्य आधार वनता है। इन अंशों को लेखक ने उदाहरण सहित स्पष्ट किया है।

निबंध कार आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी का परिचय (4-9-1906 to 21-8-1967) :-

आचार्य नन्दुलारे वाजपेयी जी हिन्दी के प्रख्यात पँडित तथा श्रेष्ठ साहित्य - समालोचक है। आप उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के 'ममरैल' नामक गाँव में सन् 1906 अ ई.में पैदा हुए और निधन 1967 ई.में. हुआ। उन्होंने अध्ययन की समाप्ति के बाद काशी विश्वविधालय में प्राध्यापक का काम किया। इसके बाद वे सागर विश्व विधालय के विभागाध्यक्ष बने। फिर थोडे समय के लिए विक्रम विश्वविधालय के कुलपति का कार्यभार उन्होंने सुचारु रुप से निर्वहण किया।

नन्ददुलारे वाजपेयी शुक्लोंत्तर युग के श्रेष्ठ समीक्षक माने जाते है। वे स्वच्छंदतावादी साहित्य - समीक्षा के प्रवर्तक है। आपने भारतीय एवं पाश्चात्य समीक्षा - सिद्धांतों का समन्वय करके साहित्य - समीक्षा केलिए एक नया मार्ग प्रशस्त किया। उनका विचार है कि जो साहित्यकार किसी 'वाद' से बद्ध होता है, उसकी प्रतिभा कुण्ठित होती है। वें मानते है कि उच्चकोटि के साहित्यकार केलिए उच्च कोटि की आस्था और नैतिक चेतना आवश्यक हैं। वे समीक्षा के क्षेत्र में किसी निश्चितवाद का समर्थन नहीं करते थे। युग चेतना को वाजपेयी जी प्राथमिकता देते थे और सभी पद्धतियों के समन्क्य में साहित्य एवं समाज का हित देखने थे। वे हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ समालोचक तथा निबन्धकार के रुप में हिन्दी जगत में प्रसिद्ध हुए।

नन्द दुलारे वाजपेयी जी की कृतियाँ -

1. हिन्दी साहित्य की बीसवीं सदी
2. आधुनिक साहित्य
3. नया साहित्य नये प्रश्न
4. हिन्दी साहित्य
5. राष्ट्रीय साहित्य
6. नयी कविता
7. जयशंकर प्रसाद
8. कवि निराला
9. प्रेमचन्द
10. साहित्य विवेचन

भारतीय साहित्य की एकता - पाठ का सारांश :-

लेखक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी कहते हैं कि जब हम भारतीय साहित्य की एकता की चर्चा करते हैं तब हमारा आशय भारतवर्ष की भिन्न भिन्न भाषाओं की साहित्यिक समाश्रयता से होता है। हिन्दी, बेंगाली, मराठी तथा दक्षिण भारत की भाषाओं के साहित्य का अनुशीलन करने पर हमें उस में सार रुप में एक ही प्रवृत्तियाँ दिखायी देती हैं। विभिन्न प्रदेशों और जन पदों की सांस्कृतिक विशेषताओं की छाप इन साहित्यों में प्राप्त होती है, जो स्वाभाविक है। पर भी उनमें व्याप्त मूलभूत एकता एक ही प्रकार की है। यद्यपि यह सत्य है कि किसी भआषा में कोई एक विशिष्ट शाखा उन्नति में है तो अन्य भाषा में

और एक साहित्य - शारवा का प्रचार अधिक हुआ है। उदाहरण के लिए आज के मराठी साहित्य में नाटकों की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक अच्छी है, वैयक्तिक निबंध भी उनकें यहाँ अधिक परिमाण में लिखे जा रहे हैं। यह उन्की प्रासंगिक विशेषता है। इसी प्रकार अन्य प्रांतीयभाषाएँ भी अपनी - अपनी अनन्यपरता रखतीहै। परन्तु इन विभिन्नताओं के भीतर एक मूलभऊत एकता है, जिसे हम भारतीय साहित्य की एकता कह सकते हैं।

कभी कभी यह भी देखा जाता है कि किसी प्रदेस - विशेष के साहित्य में जो विशेषताएँ दस - बीस या पचास वर्ष पहले या पीछे आरम्भ हुई थी या हुई हैं। उदाहरण केलिए बंगाल में रवीन्द्रनाथ का काव्य, वंकिमचन्द्र के उपन्यास और द्विजेन्द्रराय के नाटक बीसवीं शताब्दी के आरंभ से ही प्रचलित हो चुके थे, हिन्दी में उन्हीं भावना ओं और शैलियों की रचना कुछ काल पश्चात् आरम्भ हुई। इससे स्पष्ट है कि भारतीय साहित्य में आदान प्रदान का काम प्राचीनकालसे आज तक होता ही रहा है और विभिन्न प्रान्तों के साहित्य अपने सहयोगी प्रान्तों की रचनाओं का आवश्यकतानुसार उपयोग करते रहते हैं। यह तय्य भी मूलतः भारतीय साहित्य की एकता का ही लक्ष्य है।

कुछलोग प्रश्न करते हैं कि आज विश्वसाहित्य की बात नहीं कहकर केवल भारतीय साहित्य की एकता के बारे में सोचते की आवश्यकता क्या है ? क्या विश्वभर के साहित्य की एक इकाई नहीं है? इन प्रश्नों का उत्तर दो द्दष्टियों से देना होगा। एक तो यह है कि भारतीय समाज की एक विशिष्टसत्ता है। भारतीय साहित्य का विकास निशिचित स्थिति तक पहुँच गया है तथा इस देश के सांस्कृतिक और दार्शनिक आदर्श अन्य देशों में भिन्न हैं। इस कारण से भारतीय भाषाओं के साहित्य में जो एकता पायी जाती है, वह अन्य देशों के साहित्य में प्राप्त नहीं है।

यही एक प्रश्न हमारी साहित्यिक परंपरा का भी उठता है। कोई भी देश अपनी साहित्यिक परंपरा से नाता नहीं तोड सकता। अतीत का प्रभाव वर्तमान पर पडता ही है। इसके साथ ही उल्लेखनीय बात यह है कि भारतीय परंपरा प्राचीन और समृद्ध है। ऐसी स्थिति में हम अपनी सारी विरास्त को छोडकर अन्य देशों की परंपराओं का अनुकरण या अनुसरण करना हमारेलिए नाश कारक होता है। कहा जा सकता है कि प्रगति की दौड में संसार के साथ रहने के लिए विदेशी साहित्य से परिचय तो आवश्यक है। फिर भी अंधानुकरण हितकर नहीं है। हम आँख मूँदकर नवीनता के नाम पर क्षीयमान संस्कृतियों वाले साहित्य को अपनाकर कोई लाभ नहीं उठा सकते।

प्रत्येक देश को अपना विकास अपनी विशिष्ट परम्परा के अनुसार ही करना पडता है। एसा न होने पर जो आमूल परिवर्तन या क्रांति होगी वह हमारे देश केलिए श्रेयस्कर नहीं कही जा सकती। प्रगति के दो ही मार्ग हैं, स्वाभाविक विकास का अथवा क्रान्ति का। इनमें से क्रान्ति का मार्ग सर्वत्र खतरेवाला हुआ करता है और क्रान्ति के परिणाम भी प्रायः अनिश्चित होते हैं। क्रमिक और सहज विकास से परिणाम सदा अच्छे निकलते हैं।

भारतीय साहित्य की एकता पर जोर देने की आवश्यकता इसलिए है कि आज संसार के समक्ष भविष्य की स्थिति कुछ अन्श्चित सा दिखायी देता है। विनाशकारी शक्तियाँ मजबूत बनगयी हैं। नई सभ्यता के इस संक्रान्तिकाल में भारतवर्ष अपना संतुलन खोना भविष्य केलिए अच्छा नहीं है। अपने साहित्य अपनी कला और अपने जीवन - दर्शन से संसार को मार्ग दिखाने का प्रयत्न करना भारत का कर्तव्य है। इसलिए नई प्रगति को दौडकर अपनाने की अपेक्षा अपने प्राचीन साहित्यिक वैभव की ओर द्दष्टिपात करना अधिक अच्छा होगा।

हम अपने देश के प्राचीन साहित्य को देखें तो उसमें एक मूलभूत एकता दिखाई देगी, इसका एक बडा प्रमाण यह है कि हमारे कतिपय महान् साहित्यकारों के जन्म स्थान का पता न होने परभी समस्त प्रान्तों में उनका प्रचलन है उन्हें समान सम्मान प्राप्त है। हमारे देश के व्यास, वाल्मीकि आदि सारे देश के हैं। किसी प्रांत विशेष के नहीं। कालिदास भी सारे भारत के कवि हैं। हमारे देश में प्राचीनकाल से विविधता में एकता लाने के प्रयत्न चलते रहें हैं। इस कार्य में हमारे साहित्यकारों ने विशेष योग दिया है। वैदिक साहित्य के द्वारा सारे देश में एक सी धार्मिकभावना, एक - सी यज्ञ पद्धति और एक - सा दार्शनिक आचार प्रतिष्ठित हुआ है। आजभी भारतीय गृहों में वैदिक संस्कार विधियाँ प्रचलित हैं। रामायण, भारत आदि की कथाएँ सारे देश में लोगों को मार्ग दिखाती है। रामायण में राम के चरित्र की गरिमा, और महत्ता एक आदर्श मानव की ही गरिमा और महत्ता है। केवल राजनीति के ही क्षेत्र में नहीं - मानव जीवन के सभी विशिष्ट क्षेत्रों में आज भी भारतीय नागरिक राम के चरित्र को आदर्श मानते हैं और उससे प्रभावित होते हैं। राम का चरित्र उत्तर और दक्षिण में समान रुप से मान्य और पूज्य बना है। राम इसलिए महान् नही हैं कि उनका जन्म अयोध्या में हुआथा और रावण इसलिए कदर्य नहीं है कि वह लंका का राजा था। इन एतिहासिक और भौगोलिक तथ्यों का हमारी संस्कृति अतिक्रमण कर गई है। हमारी संस्कृति जिन मूल्यों पर प्रतिष्ठित हुई है वे बहुत अधिक स्थायी मूल्य हैं।

कलिदास और भवभऊति भारतीय वैभव युग के प्रतिनिधि कवि हैं। एक इस वैभव की प्रारंभिक स्थिति की संपूर्ण आशावादिता और उत्कर्ष से समन्वित है तथा दूसरा उस वैभव के परिपाक की चरमावस्था का प्रतिनिधि है। भवभूति की भाषा में संस्कृत की चरम प्रगल्भता सन्निहित है। कालिदास और भवभूति का सम्पूर्ण प्रदेश भारतीय वस्तु है, वह किसी प्रदेश का उत्तराधिकारी नहीं।

वर्जिल के महाकाव्यों में जिस प्रकार ग्रीक - रोमन सभ्यता का चरम उत्कर्ष पाया जाता है, वैसे ही माघ, भारवि जैसे कवियों की कृतियाँ प्रकाश में आयी जिसमें भारत के वैभव का समग्र दर्शन व चित्रण मिलता है। शैली का सौन्दर्य इनमें चरम कोटि का मिलेगा किन्तु भावोत्कर्ष बहुत कुछ क्षीण होने लगा है। भाषा का सर्वोत्तम परिष्कार इन कृतियों में परिलक्षित होता है। एक - एक श्लोक के पाँच - पाँच, सात - सात अर्थ जिस निपुणता से निकाले जाते हैं, वे भाषा की चरम सिद्धि के परिणाम है। भट्टि काव्य इसका एक नमूता है जिसे लोग साहित्य का ग्रन्थ भी मानते हैं और व्याकरण का ग्रंथ भी मानते हैं।

महाकाव्यों के इस निर्माण - काल के पश्चात् गेय काव्यों की परंपरा चली। जयदेव की मधुर - प्रगीतों की शैली ने सारे देश को संगीत की मधुरिमा से आप्लावित बनादिया। उन्ही के पश्चात् भारतीय लोकभाषाएँ अपने साहित्यों की समृद्धि करने में तत्पर हुई और एक साथही बंगाल में चंडीदास, मिथिला में विद्यापति, उत्तर भारत में कबीर, तुलसी और सूर, महाराष्ट्र में ज्ञानदेव, गुजरात में नरसी मेहता और राजस्थान में मीराबाई के गेय पदों की महान् परम्परा चल निकली, दक्षिणी भाषाओं में भी आलवार संतों ने भक्ति - काव्य की रचनाएँ प्रस्तुत की। सारा देश इन भक्तों और संतों की सहज भावमयी वाणी से आप्यायित हो उठा। ये सभी कवि एक ही प्रेरणा से परिचालित हुए हैं जिसे हम धार्मिक प्रेरणा कह सकते हैं। प्रतिभा का उत्कर्ष साहित्य में ही अवलोकन कर सकते हैं। चौदहवीं से सत्रहवीं शताव्दी तक समस्त देश में एक ही साहित्यिक ध्वनि गूँज रही थी और वह थी एक लोकातिक्रान्त शक्ति में चरम विश्वास रखनेवाली सशक्त और बलवती ध्वनि।

उन्नति और विकास, अथवा प्रौढता और परिपुष्टता के युगों में ही नहीं, ह्रास और अवरोह के युगों में भी भारतीय साहित्य अपनी एकता की साक्ष्य देता है। मुसलमानी साम्राज्य और फारसी साहित्य के प्रभाव से हिन्दी में रीति काव्यों की

परंपरा चली, वह भी किसी प्रदेश तक सीमित नहीं था। दरबारी कवियों का काव्य भारत के विभिन्न प्रान्तों में तैयार हुआ। श्रृंगार - कविता और नायिकाभेद की रचनाएँ यत्र - तत्र सर्वत्र प्रस्तुत की गयी। यही नहीं, चित्रकला और संगीत के क्षेत्रे में भी बहुत कुछ समान सी प्रगति सारे देश में होती रही, शैलियों में भिन्नता होने पर भी सारे देश में संगीत और साहित्य में मूलभूत एकता ही रही है। आज जिसे हम उत्तर का संगीत और दक्षिण का संगीत कहकर दो खंडों में विभाजित करते हैं, इसमें भी समानता के बहुत से उपकरण है। हिन्दी का कवि भूषण, दक्षिण के सम्राट शिवाजी की प्रशस्ति गाने में तत्पर हुआ। उसी प्रकार गुजरात, महाराष्ट्र और बंगाल के कवि व्रजभाषा में कृष्णलीलाओं का गान कर रहे ये। प्रादेशिक भिन्नता का भाव इस देश की प्रकृति में नहीं रहा। अंग्रेजों के राज्य में सारे देश में राष्ट्रीय - भावनायें बलवती बनीं। राष्ट्रीय पुनरुत्थान केलिए कवियों ने अपनी कृतियों से नव - जागरण को संदेश दिया।

आज हमारे देश की विभिन्न भाषाओं के साहित्यक और विद्वान इस बात से थोडे - बहुत शंकित हो रहे हैं कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा हो जाने से उनकी प्रादेशिक भाषा या साहित्य को क्षति पहुँचेगी, परन्तु भारतीय इतिहास इस शंका को निर्मूल सिद्ध करता है। वास्तव में भाषा या साहित्य विधटन कारण कभी नहीं रहे। काव्य - विविधता में अन्तर्निहित एकता इस देश की संस्कृति की प्रमुख विशेषता रही। हमारा प्राचीन साहित्यिक विकास इसका निर्देशक है। भविष्य में भी यह एकता प्रतिष्ठित होगी और स्थिर होकर रहेगी। इसमें संदेह नहीं। इतिहास स्पष्ट यह बताता है कि कभी हमारे देश में भाषा और साहित्य की यह संयोजक शक्ति कम हुई है, और पृथकता तथा विदेशी प्रभावों का प्राबल्य हुआ है। तब तब सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में संकट आया है और हमें राष्ट्रीय दुर्दिन देखने पडे हैं। भारतीय साहित्य की एकता का आदर्श सदैव हमारी राष्ट्रीय - एकता केलिए अक्षण प्रेरणा - स्रोत रहा है और रहना चाहिए।

विशेषताएँ :-

यह निबंध - ''भारतीय साहित्य की एकता'' हिन्दी के श्रेष्ट निबन्धों में एक है। प्रसिद्ध विद्वान तथा लेखक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी से इसमें स्पष्ट बताया है कि भारतीय साहित्य में जो एकता है, वह राष्ट्रीय एकता में सहायक बनी है। हमारा साहित्य इतना समृद्ध एवं समुन्नत है कि अन्य देशों को इसी के द्वारा शांति और स्थिरता का संदेश प्राप्त होता है। निबन्ध की भाषा् साहित्यिक हिन्दी है, जो विषय केलिए बहुत उपयुक्त रही है। क्लिष्टता और दुरुहता निबन्ध की भाषा में न होने के कारण निबन्ध का सार स्पष्ट समझ में आता है।

कठिन शब्दों के अर्थ :-

प्रवृत्तियाँ	=	लक्षण
दाह	=	जलन, शोक
दर -असल	=	वास्तव में
क्षीयमान	=	नाश होने वाले
बगल में	=	पडोस में

कलेजा	=	दिल
अनोख	=	विचित्र
उध्यम करना	=	प्रयत्न करना
ह्रास	=	नाश
फिक्र	=	चिंता
डँवाडोल्	=	चंचल
संक्रान्तिकाल	=	संधिकाल
आलोक	=	प्रकाश
होशियारी	=	चतुरता, चलाकी
टोहलगान	=	ढूँढना
बेधना	=	काटना
के वनिस्पत	=	अपेक्षा
प्रतिद्वंद्विता	=	स्पर्धाकरना
प्रचलन	=	व्याप्ति
महसूसकरना	=	अनुभव करना
ऐब	=	दोष
यार	=	मित्र
भिन भिनता	=	भिनभिन आवाज करना
संकीर्ण	=	सीमित, संकुचित
चुप्पी साधना	=	मौन रहना
शोहरत	=	प्रसिद्धि
तरीका	=	पद्धति
इयत्ता	=	परिमाण

कदर्य	=	नीच
उत्कर्ष	=	संपन्नता
कलमें	=	वाक्य

संदर्भ सहित व्याख्या :-

1. **विभिन्न प्रदेशों और जनपदों की सांस्कृतिक विशेषताओं की छाप इन साहित्यों में प्राप्त होती है, जो स्वाभाविक है । साहित्य के विविध रुपों में से किसी भाषा में किसी रुप की विशिष्टता भी मिलती है ।**

प्रस्तावना :- प्रस्तुत संदर्भ गद्य - गौरव के "भारतीय साहित्य की एकता" नामक निबंध से दिया गया है। लेखक आचार्य नंदहुलारे वाजपेयी जी हैं। वाजपेयी जी शुक्लोत्तर युग के श्रेष्ठ समीक्षक मानेजाते हैं। वे स्वच्छंदतावादी साहित्य - समीक्षा के प्रवर्तक है। आप की समालोचना में भारतीय एवं पाश्चात्य रीतियों का समन्वय मिलता है। वस्तुतः वे भारतीयता की गरिमा के गायक है। उनका निश्चित उद्देश्य है कि संसार को सहीमार्ग दिखाने की क्षमता भारतीय संस्कृति और साहित्य में हैं। भारत के भिन्न प्रांतों की भाषाओं में जो विशेषताएँ और विभिन्नताएँ देखी जाती है, उसे वे बडे स्वाभाविक लक्षण मानते हैं। सब में वे एकता को ही परिलक्षित करते हैं।

संदर्भ :- वाजपेयी जी कहते हैं कि भारतीय साहित्य में मूलभूत एकता है। भारत देश विशाल है। विशालता के कारण उसे 'उपखंड' भी कहते हैं। विशाल भारत में भिन्न भिन्न भाषाएँ बोली जाती है। हर एक भाषा - साहित्य में अपनी अपनी अलग विशेषताएँ भी है। इन्ही के बारे में लेखक वाजपेयी जी इस अवतरण में अपने मनोभाव व्यक्त करते हैं।

व्याख्या :- वाजपेयी जी बताते हैं कि भारत वर्ष की सारी भाषाओं के साहित्य में एक मूल - भूत एकता हमें दिखायी देती है। यदि हम आज के हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती अपना दक्षिणी भआषाओं के साहित्य को देखें तो उनमें थोडा - बहुत अन्तर भी दिखेगा, परन्तु सार रुप में प्रवृत्तियाँ प्रायः एक सी पाई जाती हैं। विभिन्न प्रांतों की सांस्कृतिक विशेषताएँ वहाँ की भाषाओं के साहित्य में प्रतिबिंबित होती है। यह तो बडा सहज स्वभाव है क्यों कि साहित्य समाज का प्रतिबिंब है। उदाहरण केलिए वे कहते हैं कि बंगला मे उपन्यास एवं कहानी साहित्य संपन्न है तो मराठी भाषा में नाटक और निबंध साहित्य की अधिकता है। तो भी इस वैविध्य के अंदर जो एकता पायी जाती है, उसी को भारतीय साहित्य की एकता कहते हैं। यही लेखक के अनुसार भारतीय साहित्य की निजी विशेषता है।

2. **यह आवश्यक नहीं कि जो कुछ नया है वह सबका सब अभीष्ट भी हो। राष्ट्रीय संस्कृतियों के उत्थान और पतन के अवसर भिन्न हुआ करते हैं। हम आंख मूँद कर नवीनता के नाम पर क्षीयमान संस्कृतियों वाले साहित्य को अपना कर कोई लाभ - उठा सकते।**

प्रस्तावना :- प्रस्तुत संदर्भ गद्य - गौरव के "भारतीय साहित्य की एकता" नामक निबंध से दिया गया है। लेखक श्री. नंददुलारे वाजपेयी जी है। आप हिन्दी साहित्य के प्रख्यात समालोचक है। आप की समालोचना में भारतीय एवं पाश्चात्य रीतियों का समन्वय मिलता है। वस्तुतः वे भारतीयता की गरिमा के गायक है। उनका निश्चित उद्देश्य है कि

संसार को सही मार्ग देखाने की क्षमता भारतीय संस्कृति और साहित्य में है।, उसे वे बडे स्वाभाविक लक्षण मानते हैं। सब में वे एकता को ही परिलक्षित करते हैं।

संदर्भ :- लेखक कहते हैं कि नवीनता के नामपर अन्य देशों के साहित्य का व्यर्थ अनुकरण करना नहीं चाहते।

व्याख्या :- लेखक बताते हैं कि कोई भी देश अपनी साहित्यिक परंपरा से नाता नही तोड सकता क्यों कि अतीत का प्रभाव वर्तमान पर पडता है। इसके अलावा भारतीय परंपरा बहुत पुरानी तथा संपन्न है। इस संपन्न और श्रेष्ठ परंपरा को छोडकर अन्य देशों की परंपरा का अनुकरण करना उपयुक्त नहीं होता। कुछ लोग कहते हैं कि प्रगति की दौड में संसार के साथ रहने के लिए यह आवश्यक है कि हम विदेशों के नए से नए साहित्य का परिचय रखे और उसे अपनाएँ। शीघ्र उन्नति के लिए अन्य देशों के साहित्य से परिचय बहुत आवश्यक है। परिचय होने पर भी उसका पूरा सा पूरा अनुकरण लाभदायक या हितकर नहीं हैं।

जो नया है वह अच्छाहै और जो पुराना है वह सडा हुआ है, ऐसा सोचता ठीक नहीं है। आँखे मूँदकर संपन्न एवं उपयोगी पुरानी परंपरा को छोडकर चलना हानिकारक है। नवीनता के नाम पर क्षीयमान या शीघ्र ही मिटनेवाली संस्कृतियों के पीछे दौडना लाभदायक नहीं है।

लेखक का आशय है कि पुरानी भारतीय परंपरा के पालन से हमें लाभ मिलता है।

3. **नई सभ्यता के इस संक्रांतिकाल में भारत वर्ष अपना संतुलन खो दे, वह उचित न होगा।**

प्रस्तावना :- प्रस्तुत अवतरण 'भारतीय साहित्य की एकता' मानक निबंध से दिया गया है। लेखक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी है। आप शुक्लोत्तर युग के श्रेष्ठ समालोचक माने जाते हैं। उनका विचार है कि जो साहित्य कार किसी 'वाद' से बध्द होता है, वे मानते हैं कि उच्च कोटि के साहित्य कार के लिए उच्छ कोटि समालोचना में भारतीय एवं पाश्चात्य रीतियों का समन्वय मिलता है। वस्तुतः वे भारतीयता की गरिमा के गायक है। उनका निश्चित उद्देय है कि संसार को सही मार्ग दिखाने की क्षमता भारतीय संस्कृति और साहित्य में हैं। वे मानते हैं कि राष्ट्रीय एकता तभी सम्भव है जब साहित्य की एकता मिलती है। नवीन साहित्य के निर्माण में प्राचीन साहित्य आधार बनता है।

संदर्भ :- आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी इस अवतरण में कहते हैं कि संसार एक संक्रांतिकाल में से गुजर रहा है। भारत जैसे महान देश को इस संधिकाल में अपना संतुलन या संयम को खोना ठीक नहीं है। उस पर संसार को मार्ग दिखाने का कर्तव्य है।

व्याख्या :- लेखक श्री वाजपेयी जी इस अवतरण में कहते हैं कि संसार एक संक्रांतिकाल में से गुजर रहा है। प्राचीन परंपरा से नाता छोडना किसी भी देश केलिए हितकर नहीं है। नवीनता के नामपर दूसरे देशों के साहित्य का अन्धानुकरण उपयोगी नहीं होता। इसके अतिरिक्त आज संसार एक प्रकार के संक्रांतिकाल में से पल रहा है। विभिन्न देशों के मार्ग संधर्ष को बढावा दे रहे हैं एक निश्चित मार्ग किसी के देश के समक्ष दिखाई नहीं दे रहा है। अब भारत ही संसार को शांति एवं समन्वय के मार्ग को दिखाने की क्षमता रखता है। इस का जीवन - दर्शन, सांस्कृतिक विशेषताएँ संसार को सही

रास्ता बतला सकते हैं। इसलिए नवीनता के नाम पर अन्यों के अनुकरण करने के बदले हमें अपनी पुरानी संस्कृति की विशेषताओं के बल पर सब को उपयोगी संदेश देना है। संसार के बडे विचारक भी आज प्रकाश के लिए इधर - उधर टोह लगा रहे हैं। उनमें से कुछ की यह भी धारणा है कि भारतीय साहित्य और भारतीय जीवन दर्शन उन्हें नया मार्ग निर्देश दे सकते हैं। एसी स्थिति में नई प्रगति को दौडकर अपनाने की अपेक्षा अपने प्राचीन साहित्यिक वैभव की ओर दृष्टिपात करना आधिक अच्छा होगा।

4. **कालिदास और भव भूति का सम्पूर्ण प्रदेय भारतीयवस्तु है, वह किसी प्रदेश का उत्तराधि कारी नहीं।**

प्रस्तावना :- यह अवतरण गद्य - गौरव के भारतीय साहित्य एकता नामक निबंध से दिय गया है। इसे श्री नन्ददुलारे वाजपेयी ने लिखा है। आप हिन्दी साहित्य के प्रख्यात समालोचक हैं। आप की समालोचना में भारतीय एवं पाश्चात्य रीतियों का समन्वय मिलता है। वस्तुतः वे भारतीयता की गरिमा के गायक हैं। उनका निश्चित उद्देश्य है कि संसार को सही मार्ग दिखाने की क्षमता भारतीय संस्कृति और साहित्य में है। भारत के भिन्न भिन्न प्रांतों की भाषाओं में जो विशेषताएँ और विभिन्नताएँ देखी जाती है, उसे बडे स्वाभाविक लक्षण मानते हैं। सब में वे एकता को ही परिलक्षित करते हैं।

संदर्भ :- लेखक ये वाक्य स्वयं कहते हैं। व्यास, वाल्मीकि आदि मुनि एवं कविश्रेष्ठ किसी क प्रांत विशेष के नही हैं। उनके जन्म स्थान के बारे मे निश्चित मत नही है। उसी प्रकार कालिदासे एवं भवभूति के काव्य भी सारे देश की संपत्ति हैं।

व्याख्या :- लेखक बताते है कि भारतीय साहित्य के जो महकवि हुए है वे किसी प्रांत विशेष के न होकर सारे देश के लिए पूज्य और आदरणीय रहे हैं। वाल्मीकि, व्यास से कालिदास तक यही भावना प्रचलित है। इनको सारा देश अपने प्रांत का मानता है। कालिदास और भव्भूति के काव्यों में प्राचीन भारत का वैभव साकार हो उठा है। वे दोनों भारतीय वैभव - युग के प्रतिनिधि कवि हैं। एक उस वैभव की प्रारंभिक स्थिति की संपूर्ण आशावादिता और उत्कर्ष से समन्वित है, तथा दूसरा उस वैभव के परिपाक के चरमावस्था का प्रतिनिधि है। दोनों की कृतियों में ये दोनों पहलू अत्यधिक स्पष्ट हैं। संस्कृत भाषा का चरम विकास इनके काव्यों में पाया जाता हैं। उन्हें किसी प्रांत विशेष के काव्यों के रुप में हम नहीं देखते। अतः भारतीय साहित्य किसी भी भाषा में लिखित होने पर भी उसे अलग विशेषताओं से विलसित होने पर भी वह सारे देश के लिए अपनी निजी संपत्ति है। सारा देश उस से एक ही तरह प्रभावित होता रहा है।

5. **इन ऐतिहासिक और भौगोलिक तथ्यों का हमारी संस्कृति अतिक्रमाण कर गई है और तब जिन मूल्यों पर प्रतिष्ठित हुई है वे बहुत अधिक स्थायी मूल्य है।**

प्रस्तावना :- प्रस्तुत अवतरण 'भारतीय साहित्य की एकता' मानक निबंध से दिया गया है। लेखक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी है। आप शुक्लोत्तर युग के श्रेष्ठ समालोचक माने जाते हैं। उनका विचार है कि जो साहित्यकार किसी 'वाद' से बव्द होता है, उनकी प्रतिभा कुण्ठित होती है। वे मानते हैं कि उच्च कोटि के साहित्यकार केलिए उच्च कोटि की आस्था और नैतिक चेतना आवश्यक है। आपकी समालोचना में भारतीय एवं पाश्चात्य रीतियों का समन्वय

मिलता है। वस्तुतः वे भारतीयता की गरिमा के गायक है। उनका निश्चित उद्देश्य है कि संसार को सही मार्ग दिखाने की क्षमता भारतीय संस्कृति और साहित्यं हैं। वे मानते है कि राष्ट्रीय एकता तभी सम्भव है जब साहित्य की एकता मिलती है।

संदर्भ :- आचार्य नन्ददुलारेवाजपेयी जी इस अवतरण में कहते हैं कि संसार एक संक्रांतिकाल में से गुजर रहा है। भारत जैसे महान देश को इस संधिकाल में अपना संतुलन या संयम को खोना ठीक नहीं है। उस पर संसार को मार्ग दिखाने का कर्तव्य है। भारत की सांस्कृतिक एकता अत्यंत बलवती और परिपुष्ट है। हमारी सास्कृतिक मूल्यजो है स्थायी मूल्य है।

व्याख्या :- लेखक श्री वाजपेयी जी इस अवतरण में कहते हैं कि भारतीय परंपरा प्राचीन और समृध्द है। हमारे देश में विविधिता में एकता लाने की चेष्टा चिरकाल से की गई है और इस कार्य में हमारे साहित्यिकों ने विशेष योग दिया है। वैदिक साहित्य के द्वारा धार्मिक भावना, यज्ञ पद्दति, वौदिक संस्कार की विधियाँ सारे भारत में एक ही प्रकार प्रचलित है। रामायण, भारत आदिकी कथाएँ सारे देश में लोगों को मार्ग दिखाती है, दक्षिण में वाल्मीकि - रामायण का प्रचार उत्तर भारत से कम नहीं है, जो इस बात का द्योतक है कि भारत की सांस्कृतिक एकता अत्यन्त बलवती और परिपुष्ट है। राम इसलिए महान् नहीं कि उनका जन्म अयोध्या में हुआ था और रावण इसलिए कदर्य नहीं कि वह लंका का राजा था। इन ऐतिहासिक और भौगोलिक तथ्यों का हमारी संस्कृति अतिक्रमण कर गई है और तब जिन मूल्यों पर प्रतिष्ठित हुई है वे बहुत अधिक स्थायी मूल्य है। इससे स्पष्ट है कि हमारी संस्कृति मूल्यों पर आधारित है न कि अधिकर पर।

6. **जहाँ तक सांस्कृतिक प्रेरणा का प्रश्न है, ये सभी कवि एक ही प्रेरणा से परिचालित हुए हैं। उसे हम एक शब्द में धार्मिक - प्रेरणा कह सकते हैं।**

प्रस्तावना :- प्रस्तुत संदर्भ गद्य - गौरव के भारतीय साहित्य की एकता नामक निबंध से दिया गया है। लेखक आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी जी है। वाजपेयी जी शुक्लोत्तर युग के श्रेष्ठ समीक्षक माने जाते हैं। वे स्वच्छंदवादी साहित्य - समीक्ष के प्रवर्तक है। आप की समालोचना में भारतीय एवं पाश्चात्य रीतियों का समन्वय मिलता है। वस्तुतः वे भारतीयता की गरिमा के गायक है। उनका निश्चित उद्देस्य है कि संसार को सही मार्ग दिखाने की क्षमता भारतीय संस्कृति और साहित्य में हैं।

संदर्भ :- वाजपेयी जी कहते है कि भारतीय साहित्य में मूलभूत एकता है। अपने साहित्य, अपनीकला और अपने जीवन दर्शन से संसार को मार्ग दिखाने का प्रयत्न करना भारत का कर्तव्य है। प्रतिभा का उत्कर्ष साहित्य में ही अवलोकन कर सकते हैं। १४ वी से १७ वीं शताब्दी तक समस्त देश में एक ही साहित्यिक ध्वनि गूँज रही थी और वह थी एक लोकातिक्रान्त शक्ति में चरम विश्वास रखने वाली सशक्त और बलवती ध्वति।

व्याख्या :- महाकाव्यों के निर्माण - काल के पश्चात् नया प्रवर्तन जयदेव द्वारा किया गया, जिन्होंने मधुर प्रगीतों की शैली अपना कर भारतीय साहित्य को अपूर्व माधुर्य से भर दिया। उन्हीं के पश्चात् भारतीय लोक भाषाएँ अपने साहित्यों की समृध्दि करने में तत्पर हुई और एक साथ ही बंगाल में चंडीदास, मिथिला में विद्यापति, उत्तर भारत में कबीर, तुलसी और सूर, महाराष्ट्र में ज्ञानदेव, गुजरात में नरसी मेहता और राजस्थान में मीराबाई के गेय पदों की महान् परम्परा चल

निकली। दक्षिणी भाषाओं में भी आलवार संतों ने भक्ति - काव्य की रचनाएँ प्रस्तुत की। सारा देश इन भक्तों और संतों की सहज भावमयी वाणी से आप्लावित हो उठा। जहाँ तक सांस्कृतिक प्रेरणा का प्रश्न है, ये सभी कवि एक ही प्रेरण से परिचालित हुए हैं। उसे हम एक शब्द में धार्मिक प्रेरणआ कह सकते हैं।

7. **भारतीय साहित्य की एकता का आदर्श सदैव हमारी राष्ट्रीय एकता केलिए अक्षय स्रोत रहा है और रहना चाहिए।**

प्रस्तावना :- यह अवतरण गद्य गौरव के "भारतीय साहित्य की एकता" मानक निबन्ध से दिया गया। लेखक आचार्य नंददुलारे वाजपेयी जी है। वाजपेयी जी हिन्दी साहित्य के प्रख्यात समालोचक है। आप की समालोचना में भारतीय एवं पाश्चात्य रीतियों का समान्वय मिलता है। वसुततः वे भारतीयता की गरिमा के गायक हैं। उनका निश्चित उद्देश्य है कि संसार को सहीमार्ग दिखाने की क्षमता भारतीय संस्कृति और साहित्य में है। भारत के भिन्न भिन्न प्रातों की भाषाओं में जो विशेषताएँ और विभिन्नताएँ देखी जाती है, उसे वे बडे स्वाभाविक लक्षण मानते है। सब में वे एकता को ही परिलक्षित करते हैं।

संदर्भ :- लेखक वाजपेयी जी इस अवतरण में बताते है कि भारतीय साहित्य विघट्न कारी नहीं होकर लोगों के दिलों को आपस में जोडता ही रहा है। ये वाक्य वे स्वयं कहते हैं।

व्याख्या :- लेखक कहते है कि आज हिन्दी राष्ट्र भाषा पद पर स्थित है। इससे उन्य क्षेत्रीय भाषाओं के विद्वान संकोच करते हैं कि उनकी भाषाओं के साहित्य के विकास में बाधा आयेगी। इस संदेह को दूर करते हुए कहने है कि भारतीय साहित्य देश का विभाजक कभी नहीं रहा, वह सदा संयोजक का काम करता रहे, भविष्य में एसा ही होगा जब हमारे देश में साहित्य की संयोजक क्षेत्र में भी दुर्दिन आये। फिर लेखक स्पष्ट बताते हैं कि काव्य विविधता में अंतर्निहित एकता। इस देश की संस्कृति की प्रमुख विशेषता रही। हमारी प्राचीन साहित्यिक विकास इसका निर्देशक है। भविष्य में भी यह एकता प्रतिष्ठित होगी और स्थिर होकर रहेगी। भारतीय साहित्य की एकता का आदर्श सदैव हमारी राष्ट्रीय एकता केलिए अक्षय प्रेरणा - स्रोत रहा है और रहना चाहिए।

बोध प्रश्न :-

1. भारतीय साहित्य की एकता पाठ का साराश बताइए।
2. निबंधकार श्री. नन्ददुलारे वाजपेयी पर लेख लिखिए।
3. भरतीय साहित्य की एकता, राष्ट्रीय एकता का स्रोत है इस बात पर अपना मंतव्य प्रकट कीजिए

सहायक ग्रन्थ सूची :-

गद्य गौरव - (सं) अजयकुमार पटनायक - सोनम प्रकाशन कटक

ब्रहत निवंध भास्कर - वचनदेव कुमार

आधुनिक हिन्दी निबंध - भुवनेश्वरी चरण सक्सेना

हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्रशुक्ल

Dr. P. Prema Kumar

Hindu College

Lesson - 5

कफन

- प्रेमचन्द

इकाई की रुपरेखा :-

5.1 उद्धेश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 प्रेमचन्द - कहानीकार परिचय

5.4 कहानी परिचय - कफन

5.5 कफन कहानी का सारांश

5.6 कफन कहानी की विशेषताएँ

5.7 चरित्र - चित्रण

5.8 धीसू

5.9 माधव

5.10 बुधिया

5.11 कहानी का उद्धेश्य

5.12 संदर्भ सहित व्याख्याएँ

5.13 स्मरण रखने की बातें

5.14 बोध प्रश्न

5.15 सहायक ग्रन्ध सूची

5.1 उद्धेश्य :-

इस इकाई को पढने से आप उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द के बारे में संपूर्ण विषय जानकारी प्राप्त करेंगे। प्रस्तुत इकाई में कफन कहानी का सारांश दिया गया है।

कफन कहानी के प्रधान पात्रों का चरित्र चित्रण आप इस इकाई में प्राप्त कर सकेंगे। श्रेष्ठ कहानी के **प्रधान** तत्वों के आधार पर कहानी की विशेषताएँ आप जान सकेंगे। कहानीकार के उद्धेश्य को आप इस इकाई में समझ सकेंगे।

प्रस्तावना :- मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अनुपम तथा अद्वितीय है। कहानीकार प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य जगत के मूर्धन्य रचनाकार हैं। इनके उपन्यास और इनकी कहानियाँ सामान्य जनता के बीच अत्यन्त प्रसिद्ध हुयी। उन्होंने जीवन के यथार्थ को बहुत निकट से देखा और भोगा भी।

उनके साहित्य में राजनीतिक, सामाजिक और निम्नवर्गीय जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को लेकर आपने आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद को जन्म दिया है।

कफन कहानी इनकी एक श्रेष्ठ यथार्यवादी कहानी है। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में किसानों और मजदूरों की दयनीय दशा, समाज की कुरीतियाँ और सामाजिक बन्धनों में तडपती भारतीय नारी के अन्तर्मन का मार्मिक और सूक्ष्म चित्रण को किया है। धीसू और माधव के चरित्रों के आधार पर पूरी कहानी आगे बढती है। पाठक के मन में करुणा, सहानुभूति, कुंठा, क्रोध, दया, ममता, घृणा आदि विविध भावों का मिला हुआ रुप उत्पन्न होता है। कटु सत्य और सामाजिक विडम्बना को सामने रखते हुए कहानीकार ने कहानी को सुंदर कलात्मक रुप में प्रस्तुत किया है।

इस अध्याय में आप कहानी की वस्तु, विशेषताएँ, पात्रें का चरित्र - चित्रण, उद्देश्य, संदर्भ सहित व्याख्याएँ, बोधप्रश्न आदि प्राप्त कर सकेंगे।

5.2 कफन :-

श्री. मुन्शी प्रेमचंद - कहानीकार - परिचय

नवीन युग के हिन्दी साहित्यकार प्रेमचन्द का जन्म 31 जूलाई, सन 1880 को बनारस के पास लमही गाँव में हूआ। इनके पिता का नाम अजायबराय और माता का नाम आनंददेवी था। मुंशीगिरि पिता का पेशा था। प्रेमचन्द का बाल्यकालीन नाम धनपतराय था, लेकिन घर में इन्हें प्यार से नवाबराय के नाम से बुलाया जाता था। इन्हें साहित्य क्षेत्र में प्रेमचन्द के नाम से जाना जाता है। जब ये सात वर्ष के थे तभी इनकी माता का देहांत हो गया। पिता ने दूसरा विवाह कर लिया, पर बालक को विमाता का स्नेह प्राप्त नही हुआ। कुछ समयबाद पिता का देहांत हो गया।

अचानक घर का सारा भार प्रेमचन्द के कंधों पर आ पडा। अनेक कठिनाईयों को झेलकर उन्होंने सन 1919 ई.में. बी.ए. की परिक्षा पास की। प्रेमचन्द ने कुछ समय तक पुस्तक दूकान में काम किया। उन्होंने कुछ दिन अध्यापक के रुप में कार्य किया। सन 1908 में उनकी पदोन्नति डिप्टी इन्सपेक्टर आफ स्कूल के रुप में हूई। प्रेमचन्द हिन्दी के उपन्यास सम्राट माने जाते हैं। प्रेमा, वरदान, गोदान, गबन, सेवासदन, निर्मला, प्रेमाश्रम, कायाकल्प, कर्मभूमि रंगभूमि एवं मंगलसूत्र (अपूर्ण) आदि उनके प्रसिद्र्ध उपन्यास हैं। इनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ खण्डों में संग्रहीत हैं। पंचपरमेश्वर, नमक का दारोगा, परीक्षा, ईदगाह, शतरंज के खिलाडी, पूस की एक रात इनकी बहुचर्चित कहानियाँ है।

हिन्दी कहानी साहित्य में भी इनका नाम सर्वोपरि आता है। हिन्दी में कहानी को एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा के रुप में स्थापित करने के साथ - साथ पहले पहल उसे कलात्मक आधार भीभी प्रदान किया। वस्तु और शिल्प दोनों ही दृष्टियों से इनकी कहानियों को पूर्ण सफलता मिली। कफन कहानी की कथावस्तु को उन्होंने मनुष्य के जीवन, उसके दुःखों और सुखों से

जोडा। कहानी में पात्रों को कल्पना लोक से नीचे उतारकर जीवन के स्त्य तक पहुँचाया। प्रेमचन्द गाँधेयवादी है। प्रेमचन्द ने अपनी रचनाओं में शोषण, सामाजिक कुरीतियों, नारी की स्थिति, आर्थिक विषमताओं आदि का सुंदर चित्रण किया है।

प्रेमचन्द अपनी रचनाओं में मुहावरों और कहावतों का सुंदर प्रयोग किया है। भाषा की सरलता और संप्रेषणीयता के कारण ही प्रेमचन्द की रचनायें प्रसिद्द हुये। प्रेमचन्द असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। प्रेमचन्द की रचनाओं में मीण परिवेश का जितना सजीव और सुंदर चित्रण देखने को मिलता है वह अत्यन्त दुर्लभ है।

कफन प्रेमचन्द की ही नही संपूर्ण हिंदी कहानी साहित्य में सर्व श्रेष्ठ कहानी है।

5.3 कहानी परिचय :-

कफन प्रेमचन्द की ही नही बल्कि सम्पूर्ण हिन्दी कहानी साहित्य की सर्वा धिक महत्वपूर्ण रचनाओं में से एक है। यदि एक ओर यह व्यवस्था द्वारा अपने शिकंजे में आदमी को चूरकर डालने की कहानी है तो दूसरी ओर यह विचारधारा से मुक्ति की एक ऐसी कहानी है जो हमारे समय के खण्ड खण्ड में होते यथार्थ को गहराई के साथ सम्पूर्णता में पकडती है। वस्तुतः 'कफन' एक अत्याधुनिक कहानी है। इस मे सभी पुराने संस्कार, धार्मिक रुढियाँ, सम्वेदना का बना - बनाया ढाँचा टूटकर चकनाचूर हो जाता है।

कफन कहानी में प्रेमचन्द ने अपने समय के भारतीय समाज का वातावरण प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द का समय भारत में ब्रिटिश राज्य का समय था। ब्रिटिश शासन की शोषण मूलक - नीतियों के कारण समाज में निम्न वर्गों की स्थिति बहुत दयनीय हो जाती थी। प्रेमचन्द ने इस कहानी में बडी मार्मिकता के साभ एक ऐसा के भूख के आगे मनुष्य के प्रणों का भई कोई मूल्य नही रह जाता। इसके साथ ही इस में भारतीय समाज में प्रचलित पाखण्ड पूर्ण मर्यादाओं तथा धार्मिक अन्धविश्वासों पर भी चोट की गयी है।

5.4 कफन कहानी सारांश :-

कफन ' कहानी में मुख्यतः तीन पात्र हैं - धीसू, माधव और बुधिया। कहानी की कथाबस्तु ग्रामीण जीवन से संबंधित है। धीसू लग भग साठ वर्ष का बूढा है। उसका बेटा माधव है। वह समाज में निम्न वर्ग के अन्तर्गत जाति का है और मजदूरी उनकी वृत्ति है। बाप और बेटा दोनों कामचोर और आलसी हैं। गरीब होने पर भी मजदूरी करने नहीं जाते। अगर वे एक दिन काम करते तो तीन दिन आराम लेते। उसे धर - परिवार एवं सामाजिक मान मर्यादा आदि की चिन्ता नही है। दोनों ने दूसरों के खेत से फसल चुराकर या लकडियाँ तोडकर या कर्ज लेकर अब तक की जीवन काट लिये। किसी समय चार दिन फाके रहने पडते तो काम करने निकलते है। वह चिलम पीते हैं। कर्ज के कारण गालियाँ खाते और मार भी खाते हैं। दोनों जान बूझकर काम नही करना चाहते क्यों कि वे देखते हैं कि समाज में दिन - रात मेहनत करनेवालों को भी पेट भर खाना नही मिलता ऐसी स्थिति में मेहनत करके दूसरों को अपने शोषण का अवसर नहीं देना चाहते।

माधव को बुधिया नामक स्त्री से विवाह होती है। बुधिया गाँव में मजदूरी करके कुछ खाने केलिए लाकर अपने पति और ससुर को खिलाती थी। इस प्रकार मजदूरी करके दोनों को खूब खिलाने पर भी बुधिया के प्रति उनके मन में कोई सहानुभूति नही है। वह जाडों की रातथी। बाप - बेटा झोंपडे के द्वार पर एक बुझे हुए बुधिया प्रसव वेदना से कराह रही थी। लेकिन बाप और

बोटा दोनों में कोई भी उसकी हालत देखन नही जा रहा था। तब दोनों किसी के खेत से चुराकर लाये गये आलुओं को अलाव में भूनकर खाने की चिंता में रहते हैं। धीसू ने तब माधव से कहा कि अंदर जाकर देखो उसकी क्या दशा है। बेटा तब उत्तर देता है कि देखकर क्या करूँ ? मरना ही है तो जल्दी क्यों नहीं मर जाती। वास्तव में उसका डर इस विषय का है कि अगर बुधिया की हालत देखने अंदर गया तो घीसू सारे आलू खा लेगा।

बुधिया रात भर तडप तडपकर चल बसती है। माधव सबेरे झोंपडे के अंदर गया तो उसने देखा कि उसकी पत्नी मर गयी थी। बच्चा पेट में ही मर गया था। तब माधव घीसू के पास दौडता हुआ आया। दोनों जोर जोर से हाय - हाय करते छाती पीटने लगे। उनके रोदन सुनकर पडोसवाले दौडे हुए आये और उनको समझाने लगे। तब उन दोनों को कफन की चिंता होती है। घर में एक पैसा भई नही था। दोनों रोते हुए गाँव के जमींदार के पास गये। जमींदार उनकी कामों से जलते थे। उनकी विपत्ति की कहानी सुनकर बिना कुछ बोले, दो रुपये फेंक दिये। गाँव के लोगों ने भी शक्ति - भर सहायता की। एक घंटे में उनके पास पाँच रुपये और कुछ सामान जमा हो गये।

घीसू माधव को साथ लेकर कफन खरीद लाने बाजार जाते हैं। बाजार में दोनों इधर - उधर घूमते रहते हैं। घीसू ने एक हल्का - सा कफन खरीदना चाहा। बाप और बेटा उस वक्त ये रिवाज और पुराने आचारों की निंदा करने लगे। वे दोनों कफन की व्यर्थता पर बडी देर तक बहस करते हैं। तब घीसू इस प्रकार बोला - कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते - जी शरीर ढाँकने को चीथडा भी न मिले, उसे मरने पर नया कफन चाहिये। बाजार में दोनों बहुत समय तक इधर - उधर और एक दूकान से दूसरे दूकान जाने लगे। पर शाम हो गयी। लेकिन कहीं भी कोई कपडा खरीदा नहीं। वे समझते है कि महँगे कफन खरीदकर बुधिया की लाश में जलाने के बदले शराब खरीदकर पेट भर पीने से अच्छा होगा। इसी आलोचना में देवी प्रेरणा से यँत्र चालित पुतलों के समान एक मधुशाला के अंदर चले गये।

मधुशाला में शराब पीने लगे। मछली और माँस मँगायी और दोनोंने खूब पेट भर खाये। तब माधव बोला - बेचारी बडी अच्छी थी, मरी तो खूब खिलाती, पिलाती। घीसू ने और दो सेर पूडियाँ मँगायी। दोनों और भी खाने लगे। लेकिन माधव को कफन की चिंता सताने लगी। तब बाप ने विश्वास दिया कि - उसको कफन मिलेगा जरुर अच्छा कफन मिलेगा। नशा में वे सोचते हैं कि रात होने पर बुधिया की लाश ले जाकर श्मशान में जलाए तो किसी को पता नही लगेगा कि हम ने कफन खरीदी या नही। धीरे धीरे नशा अधिक हो जाता है। तब बाप ने कहा कि ये ही लोग फिर कफन केलिए पैसे जरुर देंगे, लेकिन इस बार पैसे हमारे हाथ न आएँगे।

माधव को अब पत्नी की याद आयी। तब बाप से बोलता है कि बेचारी ने जिन्दगी में बडा दुःख भोगा किसी को भी सताया नही। इसलिए वह जरुर वैकुण्ठ जायेगी। इस प्रकार कहता हुआ वह रोता है। तब बाप कहता है कि क्यों रोता है बेटा खुश हो कि वह इस मायाजाल से मुक्त हो गयी। तब नशा अधिक होते ही दोनों गाने लगे, नाचने लगे, उछलने लगे और कूदने लगे भी। भाव व्यक्तीकरण करते हुए अभिनय भी करने लगे। अंत में नशे से मदमस्त होकर वही गिर पडे।

5.5 कहानी की विशेषताएँ :-

'कफन' शीर्षक अत्यन्त सटीक और प्रभावशाली नाम है। यह सम्पूर्ण मानव मूल्यों, संवेदनाओं पर ओढा गया कफन है।

यह कहानी सांकेतिक और जीवन की सचाई से जोडनेवाली कहानी है।

मुंशी प्रेमचन्द आदर्शोन्मुख यथा र्यवादी रचनाओं केलिए प्रसिद्ध हैं परन्तु कफन कहानी यथार्य वादी कहानी है।

प्रेमचन्द की जीवन दृष्टि, भाषा और शिल्प का बदलाव इस कहानी में स्पष्ट रुप से दिखाई देता है।

पात्रों के संवादों को पढकर थोडी देर पाठक को हंसी आती है। लेकिन पीडा, करुणा, और दीनता के भावों से मिला यह प्रस्तुतीकरण पाठक के हृदय को गहरे तक छू लेता है।

कफन कहानी में निराशा पेट की भूख गरीबी, आलस्य से घीसू और माधव मन की कोमल भावनाओं पर हमेशा केलिए कफन ओढ चुके हैं।

इसलिए बुधिया की मृत्यु की प्रतीक्षा माधव और पाठक को आश्चर्य में डाल देता है।

कफन कहानी के पात्र सहज मानवीय कमजोरियों से युक्त है। कफन कहानी में कही शिथिलता नहीं आयी है। मनुष्य के अंतर मन तक जाने का प्रयत्न कहानीकार कहानी के अन्त तक करता चला जाता है।

डा. बचन सिंह के अनुसार प्रेमचन्द ने 'कहानी' में विदूषकत्व को रचनात्मक संदर्भ में रखा है जो समूचे समाज को नंगा करते हुए एक अर्थपूर्ण मूल्य दृष्टि को संकेतित करता है।

श्री. मोहन राकेश ने कफन को एक श्रेष्ठ, सांकेतिक, यथार्यवादी कहानी बताया है।

घीसू :-

घीसू प्रेमचन्द जी की 'कफन' कहानी का मुख्य पात्र है। वह चमार जाति का है। वह करीब साठ वर्ष का बूढ़ा है। वह आलसी, कामचोर और शराबी है। वह तीन दिन आराम लोता है और एक दिन काम करता है। उसे गाँव, परिवार की कोई चिंता नही है। कभी कर्ज लेकर, कभी लकडियाँ तोडकर और कभी फसल चुराकर अपने जीवन अब तक बिताया है। घीसूने अपने बेटे को भी अपने ही जैसा बना दिया है।

घीसू लोगों की गालियाँ सुनता और उनकी मार भी खाता। इस से उसे कोई चिंता नही। उसे अपनी बहू की मजदूरी की कमाई खाने में भी कोई लज्जा नही होता। घीसू कामचोर है, इसका कारण वह कहता है कि समाज में दिन रात मेहनत करने पर भी पेट - भर खाना नही मिलता इसलिए मेहनत करने की आवश्यकता क्या है ?

घीसू आलसी के साथ बडा स्वार्थी है। बहू प्रसव वेदना से कराहते समय भी झोंपडी के अंदर नही जाता है. उसका डर यह है कि अगर वह अंदर देखने जायेगा तो माधव आलू का अधिक हिस्सा खा जायेगा। घीसू व्यवहार कुशल होने के कारण बुधिया के मरने पर वह अत्यन्त बुद्धि कुशलता से जमींदार से पैसे माँगते हैं और गाँव के लोगों से पैसे माँगते हैं। इस प्रकार पाँच रुपये वसूल करते हैं।

घीसू की आलोचना में मरे हुए व्यक्ति केलिए कफन की आवश्यकता नही है। इसलिए वह समाज में जो आचार व्यवहार हैं. उसे निंदा करता है। यह कैसा बुरा रिवाज है कि जीते समय पहनने केलिए चीथडे भी न मिले, लेकिन मरने पर नया कफन

चाहिए। घीसू साठ वर्ष का अनुभवी है। दोनों बाप और बेटा कफन न खरीदकर खाने - पीने में पैसे खर्च करते हैं। बाद में माधव कफन खरीदने केलिए मन की चिंता प्रकट करता है। तब घीसू कहता है कि उसको जरुर कफन मिलेगा, बहुत अच्छा कफन मिलेगा। अब तक जो लोग पैसा दिये वे ही फिर भी देंगे। इस बार रुपये हमारे हाथ में न आयेंगे। नशा अधिक होने के बाद माधव पत्नी की याद करके रोता है तो बाप कहता है कि क्यों रोते हो बेटा खुशी से रहो कि वह इस मायाजाल से मुक्त हो गयी वह बडी भाग्यशाली थी। इस मायाजाल से मुक्त होकर स्वर्गलोक पहुँच गयी।

घीसू स्वार्थी होने पर भी उस में मानवता लोप नही हुयी है। वह मधुशाला में भिखारी को पूडियाँ खाने केलिए देता है। बुधिया की प्रंशसा करता है कि - किसी को सताया नही, बेचारी मरने के बाद भी हमारी जिन्दगी की सब से बडी लालसा पूरी कर दी है। इसी समय बाहयाडंबरों करनेवालों को निंदा करता है। घीसू यह भी कहता है कि वह वैकुण्ठ में न जायेगी तो पापी लोग जायेंगे, जो गरीबों को लूटकर पाप को धोने केलिए गंगा में नहाते हैं।

घीसू गाँव में निम्न जाति के प्रतिनिधि है। प्रेमचन्द जी के बिचार में घीसू जैसे लोगों को बनने में समाज की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ ही उत्तरदायी है।

माधव :-

माधव प्रेमचन्द की कफन कहानी का प्रमुख पात्र है। माधव अपने पिताजी घीसू की जैसे ही शराबी, आलसी और कामचोर है। अपने को स्वयं कोई व्यक्तित्व ही नही है। उसके पिता की बातों के अनुसार काम करता चलता है। स्वार्थ गुण पिता से इनको भी आयी है। माधव की पत्नी झोंपडी के अंदर प्रसव - वेदना से तडपती रहती है तो वह उसे देखने केलिए भी अंदर नही जाता है। माधव को डर यह है कि अगर झोंपडी के अंदर जायेगा तो उसके पिताजी आलूओं का बडा हिस्सा खा जायेगा। उसी वक्त बुधिया तडप तडपकर मर जाती है।

कफन खरीदने केलिए बाप और बेटा बाजार जाते हैं। वह पिता के साथ शराब - दूकान में प्रवेश हो जाता है। वहाँ दोनों खूब शराब पीकर भर - पेट खाते हैं। नशा अधिक होने के बाद माधव पत्नी की लाश केलिए कफन के बारे में सोचता है। इस लिए वह अपने पिता से प्रश्न करता है कि जब परलोक में बुधिया से भेंट होगी तो वह उसे इस व्यवहार केलिए क्या जवाब देगा ? इस प्रकार माधव के जीवन में पहली बार उत्तर दायित्व जाग उठी है। पत्नी मर जाने के बाद उस मे आदर्श गुणों को याद करके स्वर्गलोक ले जाने केलिए भगवान से प्रार्थना करता है।

माधव सारे जीवन में पत्नी बुधिया के प्रति लापरवाही से व्यवहार करता है। लेकिन मानवता का पूर्ण अभाव उस में नही है। इसलिए कहानी के अंत में पिता से कहता है कि - बेचारी ने जिन्दगी में बडा दुःख भोगा। कितना दुःख झेलकर मर गयी है।

बुधिया :-

भुधिया माधव की पत्नी है। घीसू और माधव की तरह नही वह अधिक परिश्रमी है। वह घर में आते ही संसार केलिए नयी व्यवस्था लाती है। वह उसी गाँव में और खेतों में मजदूरी करके घीसू और माधव का पालन - पोषण करती है। घर में

बुधिया प्रवेश होने के बाद घीसू और माधव सुख की साँस लेने लगते हैं। बाप और बेटा निश्चिंत होकर और अधिक आलसी बन जाते हैं। रात के समय में घीसू और माधव के निर्दयता के कारण प्रसव वेदना से तडप तडप कर मर जाती है।

इस वक्त कफन खरीदने केलिए दोनों बाजार जाकर खूब खाते और पीते। लेकिन दोनों में बुधिया के प्रति सद्भावना है। इसलिए घीसू भिक्षुक से बुधिया को आशिष देने केलिए कहता है। वह माधव से कहता है कि - "बेटा! बेचारी वैकुण्ठ में जायेगी। जीवन में वह किसी को दबाया नही, सताया नही। माधव भी अपनी पत्नी की याद करके कहता है - "बेचारी ने जिन्दगी में बडा दुःख भोगा, कितना दुःख झेलकर मरी"।

बुधिया श्रामिक महिला वर्ग की प्रतिनिधि है। भारत देश में बुधिया जैसी असंख्य महिलाएँ हैं। स्त्री की कमाई भोगकर आलसी बने हुए लोगों की अधिकता हमें मिलती है।

5.7 कफन कहानी का उद्धेश्य :-

कफन कहानी प्रेमचन्द की श्रेष्ठ कलात्मक कहानी है। अपने साहित्य में सोद्देश्यता पर बहुत बल देने के कारण से प्रेमचन्द महान कहानीकार बन गये। प्रेमचन्द ने अपने जीवन में दरिद्रता और पीडा को देखा और स्वयं उसको भोगा भी था।

मनुष्य के जीवन की समस्याओं, उसकी पीडा और कुँठा को उजागर करना उनका प्रमुख उद्धेश्य है। स्वार्थ कामचोरी और आलस्य मानव को कितना अधिक नीच बना सकती है उसे अत्यन्त सुंदर रुप से लेखक ने कहानी में चित्रित किया है।

घीसू और माधव अपनी कमजोरी को भली भाँति जानते हैं लेकिन उसको वे गलती के रुप में स्वीकार नही करते हैं। पत्नी की मॉत्यु से लडाई हो रही है लेकिन पति आालू खा रहा है। पत्नी के कफन के पैसों से शराब पीना, माँस और पूडियाँ खाना उनकी मानसिक रुग्णता का ही परिचायक प्रतीत होता है।

मनुष्य की स्वार्थ वृत्ति उन से निकृष्ठ से निकृष्ठ काम भी करा सकती है। स्त्री की मेहनत पर पेट पालनेवाले आलसी मानसिकता से ग्रसित घीसू और माधव धार्मिकता की आड में निर्दय और निंदनीय व्यक्तियों के रुप में सामने आते हैं।

संपूर्ण कफन कहानी सांकेतिकता वातावरण, भआषा, शैली, कहानी को अन्त वक रोचक बनाती है। नवीन शिल्प विधान और भआषा प्रयोग कहानी को और भी भधिक श्रेष्ट बनाती है। इसलिए ही कफन कहानी हिंदी साहित्य में अमर कहानी बन गयी है।

5.8 संदर्भ सहित व्याख्याएँ :-

1. **'तू बडा बे दर्द है बेटा! साल - भर जिसके साथ सुख - चैन से रहा, उसी के साथ इतनी बेवफाई ?'**

प्रसंग :- यह उद्धरण प्रेमचन्द कृत प्रसिद्ध कहानी 'कफन' से लिया गया है।

प्रस्तावना :- नवीन युग के हिन्दी साहित्यकारों में मुंशी प्रेमचन्द जी सर्व श्रेष्ठ उपन्यासकार, कहानीकार और कर्मठ क्रांतिकारी हैं। प्रेमचन्द का जन्म शनिवार, 31 जूलाई 1880 में काशी के निकट पाँडेपुर मौजे के लमही गाँव में हूआ था। उपन्यास तथा कहानी सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अद्वितीय है। आपके साहित्य में निम्न

वर्गीय, मध्य वर्गीय लोगों का सजीव चित्रण मिलता है। प्रेमचन्द जी भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को लेकर आपने आदर्शो न्मुखी को जन्म दिया। उन्होंने किसानों और मजदूरों की दशा पर यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने साहित्य में समाज की कुरीतियों तथा रुढियों का विरोध किया। भारतीय स्त्री सामाजिक बन्धनों में किस प्रकार तडपती है, उसके हृदय का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण अपने साहित्य में दिखाया है। अपने उपन्यासों और कहानियों में शोषित एवं दलित वर्ग के आंतरिक संवेदना पाठक को जागृत करती है।

प्रतिज्ञा, गबन, निर्मला, सेवासदन, रंगभूमि, कर्म भूमि, कायाक्लप गोदान, मंगलसूत्र (असंपूण) आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। अपने साहित्य में अधिक भाग को विश्व के प्रमुख भाषाओं में और अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित हुआ है। आपकी कहानियाँ मानसरोवर के आठ खण्डों में संकलित है।

संन्दर्भ :- मुन्शी प्रेमचन्द यहाँ घीसू और माधव के बीच वार्तालाप प्रस्तुत करते हैं। बुधिया झोंपडी के अंदर प्रसव - वेदना से तडपती रहती है। उस समय ये बातें घीसू माधव से कहता है।

व्याख्या :- झोंपडी के अंदर बुधिया प्रसव - वेदना से तडपती रहती है। रह - रहकर उसके मुँह से दिल हिला देने वाली आवाज निकलती है। घीसू और माधव उस रात के समय चोरी के आलू अलाव से लेकर भून - भू न कर जल्दी - जल्दी खाते हैं। झोंपडी से बीच बीच में बुधिया की चीख सुनाई देती है। तब घीसू माधव से कहता है कि बुधिया को बचाना मुश्किल है, इसलिए एक बार अंदर जाकर उसकी हालत देखकर आओ। तब बेटा बाप से कहता है कि "मै देखकर क्या कर सकता हूँ, अगर मरना ही है तो जल्दी ही क्यों न मर जाती ? घीसू पुत्र माधव से कहता है कि - तू बडा निर्दयी हो बेटा, बुधिया तुमको साल भर से सुख और शांति देती रही थी। आज उसके प्रति इस प्रकार निर्दय से व्यवहार करना अच्छा नही है।

विशेष :- यहाँ माधव को पत्नी के प्रति प्रेम भावना नही है, निर्दय भाव से व्यवहार करता है। माधव पत्नी की हालत को न देखकर वह समझता है कि बुधिया को देखने केलिए झोंपडी में जायेगा तो घीसू आलुओं में अधिक भाग जल्दी - जल्दी खा लेगा।

2. **घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम करता। माधव इतना कामचोर था कि आधा घंटे काम करता तो घंटे भर चिलम पीता।**

प्रसंग :- यह संदर्भ सहित व्याख्या प्रेमचन्द कृत कफन कहानी से लिया गया है।

प्रस्तावना :- नवीन युग के हिन्दी साहित्यकारों में मुन्शी प्रेमचन्द जी सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार कहानीकार और कर्मठ क्रांतिकारी है। प्रेमचन्द का जन्म शनिवार 31 जूलाई 1880 में काशी के निकट पाँडेपुर मौजे के लमही गाँव में हूआ था। उपन्यास तथा कहानी सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अव्दितीय है। आपके साहित्य में निम्न वर्गीय, मध्य वर्गीय लोगों का सजीव चित्रण मिलता है। प्रेमचन्द जी भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को लेकर आपने आदर्शो न्मुखी को जन्म दिया। उन्होंने किसानों और मजदूरों की दशा पर यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने साहित्य में समाज की कुरीतियों तथा रुढियों का विरोध किया। भारतीय स्त्री

सामाजिक बन्धनों में किस प्रकार तडपती है , उसके हृदय का सूक्ष्म एवं मार्मिक चित्रण अपने साहित्य में दिखाया है। अपने उपन्यासों और कहानियों में शोषित एवं दलित वर्ग के आंतरिक संवेदना पाठक को जागृत करती है।

प्रतिज्ञा, गबन, निर्मला, सेवासदन, रंगभूमि, कर्म भूमि, कायाक्लप गोदान, मंगलसूत्र (असंपूण) आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। अपने साहित्य में अधिक भाग को विश्व के प्रमुख भाषाओं में और अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित हुआ है। आपकी कहानियाँ मानसरोवर के आठ खण्डों में संकलित है।

संदर्भ :- कहानीकार प्रेमचन्द घीसू और माधव के चरित्र को प्रस्तुत करते है। इन वाक्यों के द्वारा दोनों की कामचोरी आलसी स्वभाव मालूम होता है। इस उद्धरण के व्दारा मन का स्वभाव मालूम होता है।

व्याखया :- प्रेमचन्द इस व्याख्या के व्दारा घीसू और माधव के बारे में बताते हैं। घीसू एक दिन काम करता, ती तीन दि आराम लेता। घीसू का आलसीपन हमें मालूम होता है। माधव आधा घंटा काम करता तो घंटे भर चिलम पीता है। इसलिए उनको उस गाँव में कहीं भी मजदूरी नही मिलती है। पिता - पुत्र का जीवन बडा विचित्र है। वे संसार की सारी चिन्ताओं से मुक्त हैं। पर, गाँव के लोगों से कर्ज से लदे हुए हैं। वे गालियाँ खाते हैं, मार भी खाते हैं, लेकिन कर्ज चुकाने का प्रयत्न ही नही करते। इन चिंताओं से उनको कोई दुःख नही है। यह घीसू और माधव का आलसी स्वभाव और कामचोरी को सहजरुप से प्रस्तुत किया है।

विशेष :- घीसू और माधव लज्जा विहीन लोग हैं। घीसू और माधव की कामचोरी बतायी गयी है। गालियाँ और मार गाँव के लोगों से खाने पर भी कोई प्रभाव उनपर नही पडता है।

3. **अब कोई क्या खिलायेगा ? वह जमाना दूसरा था। अब तो सब को किफायत सूजती है।**

प्रसंग :- यह उद्धरण प्रेमचन्द कृत प्रसिद्ध कहानी 'कफन' से लिया गया है।

प्रस्तावना :- नवीन युग के हिन्दी साहित्यकारों मं मुंशी प्रेमचन्द जी सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार, कहानीकार और कर्मठ क्रांतिकारी है। प्रेमचन्द का जन्म शनिवार 31 जूलाई 1880 में काशी के निकट पाँडेपुर मौजे के लमही गाँव में हूआ था। उपन्यास तथा कहानी सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में अव्दितीय है। आपके साहित्य में निम्न वर्गीय, मध्य वर्गीय लोगों का सजीव चित्रण मिलता है। प्रेमचन्द जी भारतीय साहित्य से आदर्शवाद को पाश्चात्य साहित्य से यथार्थवाद को लेकर आपने आदर्शो न्मुखी को जन्म दिया।

5.9 स्मरण रखने की मुख्य बाते :-

प्रेमच्नद हिन्दी साहित्य जगत में उप्नयास सम्राट और प्रमुख कहानीकार हैं।

'कफन' इनकी श्रेष्ठ य्थार्थवादी कहानी है, जो शैली और शिल्प की द्दष्टि से अन्य कहानियों से हटकर है।

कफ्न चरित्र प्रधान कहानी है, विद्वानों ने पहली 'नयी कहानी' भी कहा है।

ग्रामीण वातावरण का चित्रण करना इनकी रचनाओं की सर्वप्रमुख विशेषता है।

लेखक ने कहानी में कही भी किसी आदर्श की स्थापना करने की चेष्टा नहीं की है।

कफन केवल तीन गज कपडा ही नही जो मृतक के शरीर के टेकता हो वस्त्र जीवन के समस्त मानवीय मूल्यों पर ओढा गया कफन है।

5.10 बोध प्रश्न :-

कफन कहानी की कथावस्तु लिखते हुए कहानी की विशेषचाएँ लिखिए?

प्रेमचन्द के व्यकित्तव और कृतित्व पर प्रकाश डालिए ?

कफन कहानी का उद्धेश्य लिखिए।

घीसू अथवा माधव का चरित्र चित्रण कीजिए ?

कफन कहानी की समीक्षा कीजिए ?

5.11 सहायक ग्रन्थ सूची :-

प्रेमचंद का मूनर्मूल्यांकन - शंभुनाथ न/बूल पन्तिशिंग हाउस, दिल्ली

मानसरोवर - प्रेमचन्द

आधुनिक हिन्दी निंबंध - सुरेश चन्द्रगुप्त

Sri. T. Srinivas

Leturer in Hindi
J.K.C. College
Guntur - 6

Lesson - 6

कवि और कविता

इकाई की रुपरेखा :-

6.1 उध्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का परिचय

6.4 कवि और कविता का सारांश

6.5 मुख्य विशेषताएँ

6.6 संदर्भ सहित व्याख्याएं

6.7 कठिन शब्दावली

6.8 बोध - प्रश्न

6.9 सहायक ग्रन्थ सूची

6.1 उद्धेश्य :-

वास्तव में मानव से समाज बनता है। समाज से कवि बनता है। फिर वही कवि से नूतन समाज बनाया जाता है। ऐसे समाज को कवि अपनी कविता से जागृत करके खडा कर देता हैं। अतः कवि का सब से बडा गुण नयी - नयी बातों का सूझना है। उस केलिए कल्पना की बडी जरुरत हैं जिस में जितनी ही अधिक यह शक्ति होगी वह उतनी ही अधिक अच्छी कविता लिख सकेंगा। कविता केलिए उपज चाहिए, नये नये भावों की उपज जिसके हृदय में नही वह कभी अच्छी कविता नहीं लिख सतता। अतः यहाँ लेखक साफ घोषणा करते हैं कि केवल अभ्यास करने से कोई कविता लिख नही सकता। क्योंकि कविता हृदयगत वस्तु है जो अनायास निकलती है। इसी कारण से सादगी, असलियत, और जोहा - ये तीनों को कविता के गुण बताये गये हैं। परंतु असलियत के जोश का होना बहुत कठिन है। अतः कवि को असलियत का सब से अधिक ध्यान रखना चाहिए। ये ही विषय को स्पष्ठ करना ही निबंध का उद्धेश्य है।

6.2 प्रस्तावना :-

लेखक बताते हैं कि कविता करना मानव जीवन में एक वर है और वह जन्म सिद्ध ईस्वर दत्त महान लक्षण है। जिस इन्सान में कविता करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, वही कविता कर सकता है। सचमुच समाज में बडे - बडे विद्वान भी कविता लिख नहीं सकते। लेकिन अनपढ, और कम उम्र के लडके भी अच्छी कविता करते हैं। अतः कविता एक स्वाभाविक लक्षण है और ईश्वरदत्त वर हैं। क्योंकि कविता सहज सिद्ध होती है और समाज पर उसका प्रभाव भी होता है। उदाहरण केलिए भाट, चरण आदि की कविता के प्रभाव से समाज में वीरता का संचार होता है और उत्तर रामचरित के प्रसार से करुण रस का संचार होता है।

6.3 लेखक - श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी का परिचय :-

आधुनिक हिन्दी के निर्माताओं में पं महावीर प्रसाद 'द्विवेदी' जी का नाम उल्लेखनीय है। आपका जन्म उत्तरप्रदेश के दैलतपुर ग्राम में सन् 1864 को हुआ। शुरु में आपने जी. आई . पी. रेल्वे में क्लर्क के पद पर काम किया सन् 1903 में अपनी नौकरी को इस्तीफा दिया और 18 रुपये मासिक पर सरस्वती का संपादन शुरु किया सन् 1938 को आपकी मृत्यु हुयी। आप जीवन भर हिन्दी की सेवा में जगे रहे। आपने लडखडाती हिन्दी को संबल प्रदान किये। रघुवंश, हिन्दी महाभारत हिन्दी भाषा की उत्पत्ति का विकास आदि आपकी रचनाएँ हैं। आपने साहित्य के द्वारा समाज - सुधार एवं नैतिकता की स्थापना की। आप साहित्य में विकास और मृंगार की अधिकता का विरोध करते थे। द्विवेदी की भाषा प्रवाहपूर्ण, तत्सम प्रधान और चिंतन तथा विषय के अनुकूल रहती है। सुकवि संकीर्तन, साहित्य - सीकर, नैषध चरित चर्चा, कालिदास की निरंकुशता आदि आपकी प्रमिद्ध कृतियाँ हैं।

6.4 कवि और कविता का सारांश :-

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का यह निबंध कवि और कविता के अनुसार वे प्रस्तुत करते हैं कि इस समाज में हर एक शिक्षित आदमी कविता लिख नहीं - सकता। व्योंकि कविता अभ्यास से नहीं आती। कविता लिखना एक स्वाभाविक लक्षण है और वह ईश्वरदत्त है। अतः उत्तम कविता का प्रभाव समाज पर होता है। आर्थात् जिस व्यक्ति में कविता करने के प्रति सहज इच्छा व शक्ति रहे, वहीं अच्छी कविता लिख सकता है। ऐसी कविता का प्रभाव लोगों पर अवश्य रहता है अच्छी कविता सुनने से दुःख शोक करुण आदि भाव हमारे हृदय में अवश्य पैदा होते है और उनके अनुसार कार्य भी हम वीरता का संचार होता है तो उत्तर राम चरित आदि दृश्य - काव्यों का अभिनय देखकर करुण के भाव दिलों में लहराते हैं। यही अच्छी कविता का प्रभाव है।

लेखक का कथन हैं कि ऊपर दिखे आंडबर (बनावट) से कविता बिगड जाती है। उर्दू साहित्य में इस प्रकार की बनावटी कविता अधिक दिखती है। पुरस्कार की आशा से लिखित कविता में भावों का व्यक्ती करण सहज नहीं होता तब वह कविता नीरस और प्रभावहीन बन जाती है। अगर कवि को किसी बिषय पर लिखते समय कोई रोक या दबाव हो तो उस पर लिखना नही चाहिए। क्यों कि उस समय. उसकी उक्तियों में कोई प्रभाव नही रहता। लेकिन जब कवि के मनोभाव सहज रुप से कविता में व्यक्त होते तब वे भाव प्रभावपूर्ण तथा सब केलिए लाभदायक होते हैं।

समाज में लोगोंने आजकल कविता और पद्य को एक ही विषय समझ रखता है। लेकिन वह भ्रम है। वयोकि कविता और पद्य में वहीं भेद है जो अंग्रेजी की पोयट्री (Poetry) और वर्स में है। लेकिन गद्य और पद्य दोनों में कविता हो सकती है। क्यों कि कवि अपने मनो भावों को स्वाधीनता पूर्वक प्रकट करता है। कविता में प्रभावोत्पादक और मनोरंजन होते है। पद्य में तुली हुई मात्राएँ होती हैं। अतः चाहे कविता हो या पद्य पढने या सुनने से चित्त पर प्रभाव जरुर होता है। नपी - तुली शब्द स्थापना कविता कहलायी नही जाती।

कवि का सब से बडा गुण नई - नई बातों को सूझना है। अर्थात् कवि कल्पना के इस नई नई बातों का आविष्कार करता है। नये भाव प्रतिभा के सूचक हैं। प्रतिभा विहीन व्यक्ति कविता कर नहीं सकता और कवि नही होता। अतः कवि केलिए

प्रतिभा की बडी आवश्यकता हैं। प्रतिभा के कारण कवि भूत, भविष्य, और वर्तमान की सभी बातों से अवगत रहता है। प्रकृति के सभी दुख्यों को अपनी कविता में महान कवि सुंदरता से चित्रित करते हैं। कालिदास ने अपने रघुवंश में ईख की छाया में बैठकर धान की रखवाली करनेवाली स्त्रियों से महाराजा रघु का यशोगान करवाया है। प्रकृति के सभी रुपों का सूक्ष्म अनुशीलन इस मे दर्शित होता है जिससे कविता सहज और उत्कृष्ठ बन जाती है। हिंन्दी में बिहारी के दाहों में यह लक्षण देखा जाता है। प्रकृति के अनुशीलन से कवि में मानव मनो भावों का परिचय होता है। मानव के सुख - दूखों की कहानी ही कविता का प्राण है। जिस कवि को मानव के मनोभावों और प्रकृति की विविध बातों का ज्ञान होता है, वही कवि महान कविता लिख सकता है।

लेखक द्विवेदी अच्छी कविता केलिए आवश्यक गुणों के बारे में अंग्रेजी कवि मिल्टन के कथन का समर्थन करते हैं। प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि मिल्टन के अनुसार कविता में तीन गुण प्रधान हैं - सादापन, जोश से भरे रहना, असंगति से दूर रहना। सादगी का अर्थ यह है कि शब्द और भाव दोनों सहज रहे और कृत्रिमता या बनावट उस में नही रहे। कविता को पढने या सुनने से उसके भाव मन पर प्रभाव डालें तो वह कविता योग्य समझनी जाती है। वैसे ही प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि गोल्डस्मिथ कहते है कि जो कविता प्राकृतिक और स्वाभाविक होती है। वह प्रभावपूर्ण होती है। केवल नियमों के अनुसार लिखी गयी कविता प्रभाव शून्य रह जाती है। वह नीरस रह जाती है।

छन्दों नियमों को सामने रखकर कविता लिखने का प्रयास करना व्यर्थ है। स्वाभाविक रुप से जो कविता नई नई बातों को लेकर लिखी जाती है, वह समाज केलिए लाभ देती है। और शाश्वत रह जाती है।

लेखक कहते है कि कवियों का काम है कि प्रकृति के विकास पर पूरा ध्यान देना। क्योंकि छोटे से फूल में वह भगवान का विचित्र कौशल देखता है। लेकिन यह साधारण' मानव के लिए असंभव है। कवि अपनी सूक्ष्म दृष्टि से प्रकृति में व्याप्त अनेक विषयों को समझ कर शिक्षा ग्रहण करता है जिससे समाज को लाभ मिलता है। जिस कवि में प्राकृतिक दृश्यों को देखकर समझने की अधिक शक्ति होती है, वह उतना ही महान कवि बनने की योग्यता रखता है।

अंत मे लेखक बताते है कि कविता के मार्ग में सहजता और सरलता अत्यत प्रधान विषय हैं। परिचित और सरल शब्दों में भावों का व्यक्तीकरण भी कविता केलिए आवश्यक है। कविता के विषय को सचाही से दूर कभी नहीं होने देना तथा स्वाभाविकता के अनुरुप चित्रित करना भी अच्छी कविता के गुण मानेजाते हैं।

6.5 विशेषताएँ :-

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का यह निबंध "कवि और कविता" हिन्दी के ख्याति प्राप्त तथा प्रसिद्ध निबंधों में एक है। निबंध की भाषा सरल और विषय केलिए अनुरुप साहित्यक हिन्दी है। लेखकने तत्सम शब्दों के साथ उर्दू के प्रचलित शब्दों और मुहावरों का प्रयोग भी खुल कर किया है। कविता केलिए आवश्यक गुणों और लक्षणों का विश्लेषण लेखक ने प्रभावोत्पादक-शैली मे किया है। यहीनहीं लेखक साफ घोषण करतेहै कि अभ्यास करने से कोई कविता लिख नहीं सकता। क्योंकि कविता हृदयगत वस्तु है जो अनायास निकलती है। अतः सादगी असलियत और जोश कविता के गुण बताये गये हैं। कवि शिक्षा की दिशा में यह निबंध एक मानक निर्देश है। लेखक अंत में बताते है कि कवि धन्य है और कवि को जन्म देनेवाला देश भी धन्य है।

6.6 संदर्भ सहित व्याख्या :-

1. **यह बात सिद्ध समझी गयी है कि अच्छी कविता अभ्यास से नहीं आती। जिसमें कविता करने का स्वाभाविक माद्दा होता है, वही कविता कर सकता है।**

प्रस्तातना :- उपर्युतन पंक्तियाँ गद्य - गौरव के कवि और कविता नामक निबंध से दिया गया है। इसके लेखक श्री. महावीर प्रसाद द्विवेदी जी हैं। वे हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध निवंध - लेखक, सफल पत्रकार, संपादक व ख्याति प्राप्त साहित्य समालोचक हैं। वे प्रस्तुत निबंध में कवि और कविता के संबध में विशद विवेचन प्रस्तुत करते हैं।

(This is common for all the annotations of this lesson)

संदर्भ :- लेखक दि्वेदी जी इस अवतरण में बताते हैं कि अच्छी कविता वही कर सकता है जिस में कविता लिखने में स्वाभाविक शक्ति व इच्छा हो।

व्याख्या :- लेखक बताते हैं कि वास्तव मे मानव से समाज बनता है। समाज से कवि बनता है। वही कवि से नूतन समाज अपनी कविता के द्वारा खडा कर देता है। अर्थात कविता मानव केलिए एक वर है और वह जन्मसिद्ध ईश्वरदत्त महान लक्षण है। जिस में कविता करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, वही कविता कर सकता है। सचमुच बडे - बडे विद्वान भी लिख नहीं सकते। किन्तु अनपढ़ और कम उम्र के लड़के भी अच्छी कविता करते हैं। अतः कविता एक स्वाभाविक लक्षण है और वह ईश्वरदत्त वर है। उससे उस कवि को अनेक रुपों में लाभ होता है।

विशेषताएँ :-

1. कविता सहज सिद्ध होती है अतः समाज पर उसका प्रभाव भी अधिक होता है।

   उदाहरण केलिए भाट, चारण आदि की कविता के प्रभाव से समाज में वीरता का संचार होता है और उत्तर रामचरित मानस के प्रसार से करुण रस का संचार होता है।

2. इस इकाई में कविता ईश्वरदत्त बतायी गयी है। क्योंकि ईश्वरदत्त शक्ति से ही लोग कविता लिखते है।
3. कविता करना भी स्वाभाविक लक्षण बताया गया है। क्यों कि जिसमें कविता करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, वही कविता कर सकता है।
4. कविता का प्रभाव समाज पर जरुर होता है।

2. **"बनावट से कविता बिगड़ जाती है"**

or

जिस विषय पर शोक हो उस विषय पर कविता नहीं लिखनी चाहिए।

प्रस्तावना :- उपर्युक्त वाक्य के अनुसार लेखक द्विवेदी जी कहते हैं कि रोक से अच्छी कविता लिखी नहीं जा सकती। क्यों कि बनावट से कविता बिगड जाती है। किसी विषय पर कविता लिखते समय कवि के मनोभाव बिना किसी शोक के प्रकट होते है तो उस की कविता का प्रभाव ज्यादा होता है। लेकिन बनावटी से कविता नहीं लिखी जा सकती।

संदर्भ :- उप्रर्युत्त वाक्य के अनुसार लेखक द्विवेदी जी कहते हैं कि ऐक से अच्छी कविता लिखी नहीं जा सतती। क्यों कि बनावट से कविता बिगड जाती है। किसी विषय पर कविता लिखते समय कवि के मनोभाव बिना किसी रोक के प्रकट होते हैं तो उस की कविता का प्रभाव ज्यादा होता है। लेकिन बनावटी से कविता नहीं लिखी जा सकती।

व्याख्या :- लेखक का कथन है कि पुरस्कार की आशा से लिखित कविता में भावों का व्यक्तीकरण सहज नहीं होता। तब वह कविता नीरस और प्रभावहीन बन जाती है। अगर कवि पर किसी विषय पर लिखते समय कोई दबाव हो तो उस पर लिखना नहीं चाहिए। क्योंकि उस समय उसकी उक्तियों में कोई प्रभाव नहीं रहता। वास्तव में कवि अपनी स्वानूभुति को अपनी ढंग में व्यक्त करता है। तो किसी रोक से उसका उत्साह दब जाता है। अतः उसके मन पर किसी प्रकार का दबाव न हो। क्योंकि कवि सहृदयी होता है। धन या पद के लालच में पडकर कविता करे तो कविता का मूल्य नहीं रहता। कवि पर रातनीतिक, सामाजिक आदि कटु रोक हों तो वह कविता का सृजन कर नहीं सकता। कवि केलिए नदी, तालाब, वन, पर्वत, वृक्ष, पत्ती, सरदी आदि सब समान है। अतः वह सब का वर्णन सहज रूप से करता है।

विशेषताएँ :- उपर्युक्त पत्तियों के अनुसार लेखक बताते है कि कुछ रीतिकाल के कवि राजाओ, नवाबों के आन्रय में रहकर उनको खुश करने केलिए उनकी प्रशंसा में कविता करते हैं। वास्तविकता को छोडकर उनकी वीरता आदि के बारे में अतिशायोक्ति पूर्ण वर्णनों से कविता लिखते है। चाहे वे आनंद की प्राप्ति करते हो, साधारण पाठक या समाज उस कविता की प्रशंसा नहीं करते। उर्दू कविता में इस प्रकार की बनावटी कविता अधिक दीखती है।

3. **अपनी व्यर्थ-बनावटी बातों से देती - देवताओं तक को बदनाम करने से नहीं सकुचाते। फल यह हुआ कि कविता की असलियत काफूर हो गयी।**

संदभ :- लेखक बताते हैं कि यथार्थता व वास्तविकता का होना कविता केलिए आवस्यकता है। असंभव कल्पनाओं से कविता निर्जिव, हो जाती है।

व्याख्या :- लेखक कहते हैं कि कविता में नयापन, नई नई बातों पहचानना जरुर होना चाहिए। लेकिन उर्दू और फारसी की कुछ श्रृंगारिक कविताओं में अत्यृक्ति की अधिकता देखी जाती है। वियोग में प्रिय व प्रिया के द्वारा अपनी समाधि पर चिराग जलाना तक वर्णित हुआ है। इस में सचाई की मात्रा बहुत कम रह जाती है। कुछ कवि कृत्रिम व बनावटी बातों से देवी - देवताओं को भी बदनाम करते हैं। इस से कविता में वास्तविकता मिट जाती है। ऐसी कविता को पढने और सुनने से लोगों के मन में घृणा का भाव उप्पन्न होता है। यह समाज केलिए अच्छा नही हैं।

विशेषताएँ :-

1. उपर्युक्त पंक्तियों के अनुसार कविताओं में वास्तविकता जरुर - होनी चाहिए।
2. कुछ कवि बनावटी बातों से कविता लिखकर समाज को हानि पहुचाते है। अतः ऐसा न करना चाहिए।
3. कुछ कवि कृत्रिम बातों से देवी - देवताओं को भी बदनाम करते है। इससे कविता में - वास्तविकता मिट जाती है।

4. **जिस कवि में प्राकृतिक दृश्य और प्रकृति के कौशल को अधिक देखने और समझने की जितना अधिक ज्ञान होता है, उतनी ही वह बडा कवि बनता है।**

संदभ :- उपर्युक्त पंक्तियों के अनुसार लेखक यहाँ कवि के प्रकृति - चित्रण की प्रतिभा का बिवरण देते है।

व्याख्या :- ईश्वर ने मानव को मिट्टी से बना दिया। मिट्टी की महिमा अपार है। क्यों कि प्रकृति में मिट्टी का पात्र एकभाग है। अतः लेखक कहते है कि प्रकृति के विकास पर पूरा ध्यान देना कवियों का काम है। क्योंकि छोटे से फूल में वह भगवान का विचित्र कौशल देखता है। लेकिन यह साधारण मानव केलिए असंभव है। कवि अपनी सूक्ष्म दृष्टि से प्रकृति में व्याप्त अनेक विषयों को ग्रहण कर शिक्षा ग्रहण करता जिससे समाज को लाभ मिलता है।

जिस कवि में प्राकृतिक दृश्यों को देखकर समझने की अधिक शक्ति है, वह उतना ही महान कवि बनने की योग्यता रखता है। इसी संदर्भ में वे महाकवि कालिदास के रघुवंश काव्य से एक अच्छा उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं।

इक्षुच्छाया निषादिनथस्तस्य गोप्त गुंणोदयम्
आकुमारक योद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः ।। (रघुवंश)

उपर्युक्त श्लोक के अनुसार राजा रघु की दिग्विजय यात्रा के उपोदधात में शरत ऋतु का वर्णन करते हुए कवि कालिदास कहते हैं -

ईख की छाया में बैठी हुयी धान रखानेवाली स्त्रियों रघु का यश गाती है। शरत् काल में जब धान के खेत पकते हैं, तब ईख इतनी - इतनी बडी हो। जाती है कि उसकी छाया में बैठकर खेत र खा सकें ईख और धान के खेत भी प्रायः पास ही पास हुआ करते हैं।

विशेषताएँ :-

1. प्रस्तुत इकाई में प्रकृति - चित्रण की प्रतिभा का वर्णन किया गया है।
2. कवियों का काम मुख्यतः प्रकृति के विकास पर पूरा ध्यान देना चाहिए।
3. कवि अपनी कविता से समाज को जागृत करके लोगों को भला ही करना चाहिए।
4. जिस कवि में प्राकृतिक दृश्यों को देखकर समझने की अधिक शक्ति होती है, वह उतना ही महान कवि बनने की योग्यता रखता है।
5. कवि छोटे फूल में भगवान का विचित्र कौशल देखता है तो यह साधारण मानव केलिए असंभव हे।

5. **सादगी, असलियत, और जोश यदि ये तीनों गुण कविता में हों तो कहना हीं क्या ? परंतु बहुधा अच्छी कविता में भी इन एकाथ गुण की कमी पाई जाती है।**

संदभ :- उपर्युत्त पंक्यिों के अनुसार लेखक कि कविता के लक्षण यों बताते है जो प्रसिद्ध अंग्रेजी कवि मिल्टन से बताये गये हैं।

व्याख्या :- लेखक कहते हैं कि अच्छी कविता केलिए मिल्टन के अनुसार तीन गुणों की आवश्यकता है। वे है - सादगी, असलियत, जोश है कविता की भाषा और भाव दोनों का सरल होना चाहिए। कविता के विषय को कभीभी वास्तवित्ता से दूर होने देना नही चाहिए।

"जोश" के बिंना महान कविता लिखी नहीं जा सकती। यह भी देवदत्त प्रतिभा है। इन तीनों गुणों से पूर्ण कविता संसार केलिए उपयोगी बनती है। यही नही कवि को "असलियत" पर ज्यादा ध्यान रखना चाहिए। सची बातों से भरी कविता चिरकाल तक सजीव रहती है।

सादगी का अर्थ है स्वच्छ और सरल शब्द जिसमें प्रकृति का भी चित्रण हो। अस्पष्ठ शब्दों को छोड़ दो, सच्चे भाव की ललित अभिव्यक्ति केलिए सरस, सरल, और मुहाबरेदार। भाषा की आवश्यकता है। यही स्वाभाविकता और असलियत हैं

विशेषताएँ :-

1. उपर्युक्त निबंध के अनुसार लेखक बताते है कि - अच्छी कविता केलिए मिल्टन के अनुसार तीन गुणों की आवश्यकता है - वे है - सादगी, असलियत, जोश।
2. कविता की भाषा और भाव सरल होना चाहिए।
3. हर कोई कवि असलियत पर ज्यादा ध्यान रखना चाहिए।
4. कविता लिखते समय अ[illegible]ठ शब्दों को छोड देना चाहिए।
5. कविता के विषय को कभी भी वास्तविकता से दूर होने देना नही चाहिए।

6.7 शब्दावली :-

इस्तेदाद	:	शक्ति, रीति, कला
पाबन्दी	:	अधीनता
बनावट	:	कृत्रिम, नकली
परंतत्रता	:	गुलामी
खुशामद	:	झूठी प्रशंसा
आशिकता	:	प्रेम, कामुकता
बाज आना	:	वंचित होना
काफूर होना	:	अदृश्य होना
नादान	:	अज्ञान
भद्दा	:	कुरुप
नुक्ताचीनी	:	दोष जानना

बयान करना	:	वर्णन करना
ओर - छोर	:	अंत
ठाट	:	वैभव
लगाव	:	आकर्षण, आसक्ति
जोश	:	उत्साह
असलियत	:	यथार्थ
सतर	:	परदा
कल्पना	:	सोचना
हमवार	:	बराबर
सादगी	:	बनावटी न हो (simplicity)
कसर	:	लोप
टीला	:	छोटी पहाड़ी
कद्र	:	इज्जत
करामात	:	चमत्कार

6.8 बोध प्रश्न :-

1. लेखक महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का जीवन परिचय दीजिए।
2. कवि और कविता का सारांश लिखिए।
3. कवि और कविता की मुख्य विशेषताएँ बताइये।
4. कुछ संदर्भ - सहित व्याख्याएँ स्पष्ठ कीजिए।

6.9 सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. गद्य गौरव - (सं) अजयकुमार पटनायक - सोनम प्रकाशत कटक
2. आधुनिक हिन्दी निबंध - सुरेश चन्द्रगुप्त
3. ब्रहत्त निबंध भास्कर - वचन देव कुमार
4. सुहित्य का समाज शास्त्र - ए. बच्चन सिंह
5. साहित्यालोचना - डा. नगीनचन्द्र सहगल

Sri P.S. Datta Prasad

Lesson - 2(1)

द्वितीय विभाग
उपवाचक विभाग
चर्चित कहानियाँ
(NON - DETAILED)

1.	ठाकुर का कुआँ	-	प्रेमचन्द
2.	उसने कहा था	-	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
3.	हार की जीत	-	सुदर्शन
4.	चीफ की दावत	-	भीष्म सहानी
5.	पुरस्कार	-	जयशंकर प्रसाद
6.	रोज	-	अज्ञेय

कहानी - ठाकुर का कुआँ - प्रेमचन्द

पाठ का उद्धेश्य :-

1. इस कहानी में प्रेमचन्द की प्रसिद्ध कहानी "ठाकुर का कुआँ" पर विचार करना है।
2. इस कहानी के द्वारा उस समय समाज में स्थित कुछ विसंगतियों पर पूर्ण विचार मिलेगा।
3. समाज में व्याप्त ऊँच नीच जाति भेद पर स्पष्ट रुप पूर्ण विचार मिलेगा।
4. इस कहानी के द्वारा नारी की मानसिकता भी प्रकट होगी।

इकाई की रुपरेखा :-

- पाठ का उद्धेश्य
- कहानी की परिभाषा
- हिन्दी साहित्य में कहानी परंपरा
- कहानीकार का परिचय
- कहानीकार की रचनाएँ
- हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद का स्थान
- कहानीकारों का वर्गीकरण
- प्रेमचन्द स्कूल
- मूल - कहानी
- शब्दार्थ
- कथानक
- कहानी का सारांश
- कहानी तत्वों के आधार पर प्रस्तुत कहानी का विचार
    - कथावस्तु
    - चरित्र - चित्रण
    - देशकाल

उद्धेश्य

भाषा - शैली

शीर्षक

कुछ नमूने प्रश्न

कुछ उपयोगी पुस्तके

कहानी की परिभाषा :-

व्यक्ति की अनुभूतियाँ ही रचनाशील भावना से अनुरंजित होकर कहानी बन जाती है।

क्षण क्षण रुप बदलनेवाली वस्तु को भाषा के चौखट में बाँध रखना एक कठिन काम है। जिस तरह प्रेम, ईश्वर, कविता आदि की अबतक निश्चित परिभआषाएँ नहीं बन सकी है उसी तरह कहानी की भी एक सुनिश्चित परिभाषा नहीं बनायी जा सकती।

रवि बाबू का कथन है कि - जीवन का प्रति क्षण एक सार गर्भित कहानी है। कहानी क्या है ? उसका स्वरुप क्या है ? इन प्रश्नों पर विद्धानों के अलग अलग मत हैं। ''जितने मुँह उतनी बातें''

कहानी की परि भाषाएँ कुछ देश - विदेशी आलोचकों के अनुसार इस प्रकार हैं -

प्राश्चात्य देशों में एडगर एलन पो (Edgar Allen Poe) आधुनिक कहानी के जन्म दाता माने जाते हैं। हायर्न की कहानी "Twice told Lales" की आलोचना करते हुए उन्होंने लिखा है कि - A short story is a narrative short enough to be read in a single sitting, written to wake an impression on the reader excluding all that does not forward that impression, complete and final in it self.

अर्थात् - कहानी एक ऐसा आख्यान है जो इतना छोटा है कि - एक बैठक में पढा जा सके और जो पाठक पर एक ही प्रभाव के उत्पन्न करने के उद्धेश्य से लिखा गया हो। उसमें ऐसी सब बातों का बहिष्कार कर दिया जाता है जो उस प्रभाव को अग्रसर करने में सहायक न हो। उनके अनुसार किसी भी कहानी को समाप्त करने में कम - से - कम आधा घण्टा और अधिक से अधिक दो घण्टों का समय लगना चाहिए। इस प्रकार ''पो'' महाशय मे कहानी की संक्षिप्तता पर जोर दिया। आधुनिक कहानीकारों ने तो यह नियम सा बना लिया है कि - सफल और श्रेष्ठ कहानी लिखने के लिए कम - से - कम 100 शब्दों का और अधिक से अधिक 1500 शब्दों का व्यवहार होना चाहिए। अमेरिकन पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होनेवाली कहानियाँ एक पृष्ठ से अधिक लम्बी नहीं होती।

हिन्दी के कुछ कहानीकारों ने विषयगत और उद्धदेश्यगत परिभाषाएँ दी हैं। जिनमें प्रेमचन्द का स्थान सर्वोपरि है। कहानी की परिभाषा पर **प्रेमचन्द** का कहना है -

कहानी एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग था किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्धदेश्य

रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं।

प्रेमचन्द ने और कहा कि - कहांनी एक गमला है जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने समुन्नत रुप में दृष्टि गोचर होता है।

प्रेमचन्द ने "मानव - जीवन" शब्द का व्यवहारकर यह बतला दिया है कि - कहानी का चरम उद्धदेश्य जीवन के किसी एक पहलू या खण्ड का मार्मिक चित्रण करना है। कहानी हास्य की भांति संक्षिप्त हो। यह सही बात है। लेकिन उसमें जीवन के किसी गहनतम प्रश्न का उद्घघाटन होता है। यह भूलना चाहिए। वह अपने छोटे मुँह से बडी बात कहती है। यह सच है कि - कहानी पाठकों के मनोरंजन के लिए उचित सामाग्रियों का संग्रह करती है।

आरंभ में जहाँ कहानी की परिभाषा शैलीगत थी वहाँ आज विषयगत है। प्रेमचन्द ने एक स्थान पर लिखा है कि - वर्तमान कहानी का आधार मनो विज्ञान है। यह मनो - विज्ञान मानव - मन में पडी उलझी गाँठों को खोलने में अथक परिश्राम कर रहा है।

हिन्दी कहानी साहित्य के **दूसरे श्रेष्ट** कहानीकार **श्री. जैनेन्द्र कुमार** ने कहानी की परिभाषा अपने ढङ्ग पर की है। इनकी दृष्टि में कहानी मनुष्य के चिरंतन प्रश्नों, शंकाओं और चिन्ताओं के उचित समाधान की खोजं है।

श्री जैनेन्द्र के शब्दों में "कहानी तो एक भूख है जो निरन्तर समाधान पाने की कोशिश करती रहती है। हमारे अपने सवाल होते हैं, शंकाएँ होती हैं, चिन्ताएँ होती हैं और हमीं उनका समाधान खोजने का, पाने का सतत प्रयत्न करते रहते हैं। हमारे प्रयोग होते रहते हैं। उदाहरणों और मिसालों की खोज होती रहती है। कहानी उस खोज के प्रयत्न का एक उदाहरण है। वह एक निश्चित उत्तर तो नहीं दे देती है पर यह अलबत्ता कहती है कि - शायद उस रास्ते मिले। वह सूचक होती है, कुछ सुझा देती है और पाठक अपनी चिन्तन क्रिया के सहारे उस सूझ को ले लेते हैं।

हिन्दी साहित्य क्षेत्र में **तीसरे** श्रेष्ठ और कुशल कहानी कार **अज्ञेय** के अनुसार कहानी की परिभाषा इस प्रकार है -

कहानी जीवन की प्रतिच्छाया है और जीवन स्वयं एक अधूरी कहानी है, एक शिक्षा है जो उम्रभर मिलती है और समाप्त नहीं होती।

उन्होंने और कहीं लिखा है कि - कहानीकार एक प्रकार के मानसिक संघर्ष में जीता है। संधर्ष कला की जननी है। यह संघर्ष और परिस्थिति में चला करता है। संधर्ष प्रगति को जन्म देता है।

एक विद्वान कहानीकार "**श्री. चन्द्रगुप्त विद्यालंकार**" ने लिखा है कि - घटनात्मक इकहरे चित्रण का नाम कहानी है। और साहित्य के सभी अंगों के समान "रस" इसका आवश्यक गुण है।

कहानी परंपरा :-

विद्वानों का मत है कि पूर्व एवं पश्चिम के अन्य देशों में भी कथा - कहानियों की परंपरा भारत से ही गयी थी। ऋग्वेद मानवता का प्राचीनतम साहित्य माना जाता है। इसमें अधिक भाग कथोप कथन मिलते हैं। आगे चलकर ब्राह्मण एवं उपनिषद् ग्रंथों में विकास हुआ जो वैदिक कहानियों के रुप में प्रसिद्ध बने। इनमें उच्छतर साधना की और आग्रह होते हुए भी शरीरिक

प्रयोजनों से संबंधित मानवीय दर्वलता ओं के सुंदर संकेत है। क्रमश वैदिक साहित्य की कहानी परंपरा सहस्रमुखी होकर पुराणों में प्रकट हुई। क्रमशः जातक कथाओं का आविर्भाव हुआ।

ये कहानियाँ स्थूल रुप में तीन भागों में विभजित हैं जैसे - 1) मनो रंजक 2) उपदे शात्मक 3) काव्यात्मक।

1. मनोरंजक की कोटिमें - बृहत् कथा, सिंहासन द्वात्रिंशिका तथा वैताल पंचविंशतिका आते है।
2. उपदेशात्मक के अंदर - पंचतंत्र तथा हितोपदेश आते हैं।
3. काव्यात्मक के अंतर्गत वासवदत्ता, दशकुमार चरित आते हैं।

हिन्दी साहित्य में कहानी परंपरा :-

हिन्दी साहित्य में कहानियों का श्री गणेश वीर गाथा काल से ही प्राप्त होता है। पद्य शैली में ही उस समय कहती सुनती थी। बेताल पचीसी आदि कहानियों को लोग बडे चाव से सुनते थे। भवित काल में भक्तों की कथाओं का सग्रह किया - "चौरासी वैष्णवों की वार्ता", "दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता" बहुत प्रसिद्ध हुई। 1800 से खडीबोली में गद्य रचना का आरंभ हुआ। लल्लूलाल और सदल मिश्र ने संस्कृत कथाओं के आधार पर कहानियाँ लिखी जैसे -

लल्लू लाल ने - बत्तीसी, बेताल पचीस की रचना की

शनैः - शनैः फारसी तथा उर्दू से - किस्सा तोता - मैना, किस्सा साढे - तीन यार आदि अनूदित हुए। इसी समय देश में राष्ट्रीयता की भावनाएँ जग रही थी। देश सुधार की भावनाएँ लोगों में उठने लगी। बालकृष्णभट्ट आदि ने कथाएँ लिखीं। परन्तु नवीनता का अभाव था। इसी समय "इन्शा अल्ला खाँ" ने रानी केतकी की कहानी लिखी। राजा शिवप्रसाद ने राजा भोज का सपना लिखा।

आधुनिक कहानियें का आरंभ हुआ "जसे - 1) द्विवेदी युग 2) प्रेमचन्द युग 3) प्रसाद युग 4) जैनेन्द्रकुमार भुग.

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के कथनानुसार किशोरी लाल गोस्वामी की - "**इन्दुमति**" हिन्दी की सर्वपथम, मौलिक कहानी कहा। तदनंतर -

सुदर्शन	-	परिवर्तन, नगीना, पन घट, तीर्थयात्रा, गल्प मंजरी, सुप्रभात, चार कहानियाँ
कौशिक	-	ताई, अशिक्षित का हृदय, दबेजी की चिठ्ठियाँ
जय शंकर प्रसाद	-	प्रतिध्वनी, आकाश दीप, आँधी, इन्द्रजाल
उग्रजी	-	चिनगारियाँ, बलात्कार, सनकी अमीर (कहानी संग्रह)
शास्त्रीजी	-	राजकण, अज्ञात (कहानी संग्रह) दुःख वा कासो कहूँ मोरी सजंनी, भिक्षु राज, कंकडों की कीमत प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।
भगवती चरण वर्मा	-	खिलते फूल, दो वाँके, इन्स्टाल मेंट (कहानी संग्रह), सुप्रसिद्ध हैं।

विकास की दृष्टि से हिन्दी के कथा साहित्य की उन्नति हो रही है भारतीय कलाकारों ने आज विश्व की समस्त प्रचलित शैलियों को अपना लिया।

हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द का स्थान :-

हिन्दी में कहानी साहित्य का वास्तबिक प्रारंभ प्रेमचन्द से होता है। 1907 में प्रेमचन्द कहानियों के साथ साहित्य में आये। पहले उर्दू में, तदनन्तर हिन्दी में। उन्होंने जीवन की विभिन्न परिस्थितियों की मार्मिक विवेचना की। कल्पित कथानक और रोमांचकारी घटनाओं के स्थान पर जीवन और जगत की वास्तविकता का दर्शन कराया।

हिन्दी कहानी क्षेत्र में इन्होंने ही मौलिक कहानियों की सृष्टि की। जनता की रुचि को उन्नत बनाने तथा उसमें सामभिक ीवन के अनुकूल नवीन संस्कार भरने का अथक परिश्रम किया। हिन्दी के पाठकों के पुराने दृष्टि कोण को बदलने में प्रेमचन्द का तना ही हाथ है - जितना आधुनिक भारत के राजनीतिक दृष्किोण मे परिवर्तन लाने का श्रेय महात्मा गाँधी को है।

इसलिए प्रेमचन्द हिन्दी कहानी साहित्य के प्रथम युगान्तकारी साहित्यकार हैं। उन्होंने न केवल हिन्दी साहित्य में ालिकता और नवीनता का रस संचार किया बल्कि जन जीवन को प्रबुद्ध शुद्ध और जागरुक बनाने का पूर्ण प्रयास भी किया। ेमचन्द ने अपनी कहानियों में घटनाओं का अत्यधिक वर्णन किया है। पीछे चलकर धीरे - धीरे ये सूक्ष्म और पतली होती गयी ।।

हानीकारों का वर्गीकरण :-

कला के वस्तु और शिल्प विधान इन दोनों रुपों को ध्यान में रखकर आधुनिक कहानियों और कलाकारों का वर्गी करण रें तो वह इस प्रकार है कि -

1. प्रसादस्कूल
2. प्रेमचन्द स्कूल
3. उग्र स्कूल
4. जैनन्द्र स्कूल
5. यशपाल स्कूल

हिन्दी कहानी साहित्य का जिस क्रम में विकास होता गया उसी की रुप रेखा है - उपर्युक्त वर्गी करण।

चन्द स्कूल :-

हिन्दी साहित्य के दूसरे युग प्रवर्तक कहानीकार प्रेमचन्द 1916 में अपनी पहली हिन्दी कहानी पंच परमेश्वर "के साथ दी साहित्य में आये। प्रेमचन्द ने इस स्कूल को अधिकाधिक विकसित किया। इसलिए इनके नाम पर इस स्कूल का करण हुआ। इस स्कूल की कहानियों की विशेषताएँ हैं इनमें घटनाओं की प्रधानता रहती है।

चरित्रों और परिस्थितियों के संबंध पर जोर दिया जाता है।

प्रेमचन्द की कहानी	-	"नशा"
कौशिक जी की कहानी	-	रक्षा बन्धन
सुदर्शन की कहानी	-	हार की जीत

उत्तम उदाहरण हैं।

इस स्कूल की कहानियाँ समाज और जीवन का सर्वाङ्गीण चित्रण करने के कारण सबसे अधिक लोक - प्रिय हई हैं। जनता के बीच में प्रेमचन्द, सुदर्शन, कौशिक की कहानियों का जितना प्रचार और प्रसार हुआ है उतना अन्य कहानीकारों का नहीं। यही कारण है कि - इन लेखकों की कहानी शैली का प्रभाव हिन्दी के अन्य कहानीकारों पर भी बहुत अधिक प्रभाव पडा है। हिन्दी की अनेकानेक कहानियाँ इनके अनुकरण पर लिखी गयी है। 'बिहार" के कुशल कहानी कार "**श्री. राधाकृष्ण**" इसी स्कूल के कहानीकारों में एक हैं।

इस स्कूल की सबसे बडी विशेषता यह है कि - इन कहानीकारों ने भारतीय समाज के विभिन्न वर्गो, प्रधानतः ग्रामीणों का जीता जागता चित्र उपास्थित किया है। ग्रामीण और निम्न वर्ग के जीवन का इतना सूक्ष्म और हृदय ग्राही चित्रण हिन्दी का अन्य कहानियों में नहीं पाया जाता। प्रेमचन्द इसके एक मात्र प्रतिनिधि कलाकार हैं।

इस स्कूल की कहानी कारों ने यथार्थ और आदर्श का अद्भुत समन्वय किया है। इनकी लोक प्रियता का यह भी एक सबल कारण है। इन्होंने भारतीय संस्कृति और सभ्याता की वास्तविक आत्मा को पहचाना था। पाश्चात्य कहानी साहित्य से प्रभावित होने पर भी इनकी कहानियाँ भारतीयता की प्रतिनिधि रचनाएँ हैं। इनमें भारत की आत्मा साकार हो उठी है।

इस स्कूल के कहानीकारों ने कथोपकथन पर अधिक बल दिया है। इनकी कहानियों में जितना सारगभिति सार्थक, सजीव और स्वाभाविक कथोपकथन मिलता है उतना हिन्दी के दूसरे कहानी कारों में नहीं मिलता।

इस स्कूल की लोक प्रियता का सबसे बडा कारण "भाषा शैली" है।

कहानीकार का परिचय :-

प्रेमचन्द लेखक के नाते तो महान है ही, मनुष्य के नाते और भी महान हैं। हिन्दी के उपन्यास सम्राट श्रीयुत प्रेमचन्द के जीवन की कहानी अंग्रेजी उपन्यासकार "**डिकेन्स**" और "**गोल्डस्मिथ**" की तरह जर्जर गरीबी की कहानी है। प्रेमचन्द की कहानियों में गरीबी का चित्रण जों इतना सजीव और मर्मस्पर्शी हो सका है उसका कारण उनकी अद्भुत कल्पना शक्ति नहीं बल्कि उनकी आप बीती आत्मानुभूति है।

प्रेमचन्द का जन्म 31 जुलाई 1880 को बनारस के निकट "**लमही**" नामक गाँव में मध्यश्रेणी के एक गरीब कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री अजायब राय बहुत ही मामूली आदमी थे। प्रेमचन्द की माता का नाम आनन्दी देवी था। प्रेमचन्द के घर के दो नाम थे। पिता "**धनपत राय**" कहते थे और चाचा पुकारते थे "**नवबराय**"। प्रेमचन्द की पढाई 1885 में पाँच वर्ष की आयु में शुरु हुई। पढने में बहुत तेज थे। इनका बचपन घोर गरीबी में कटा।

प्रेमचन्द बचपन से ही भावुक, सत्यवक्ता, स्वाभिमानी और निष्कपटी थे। गरीबी ने प्रेमचन्द का कभी पीछा नहीं छोडा। पेशे से वे अध्यापक थे। बढते - बढते डिप्टी इन्सपेक्टर हो गये। और 1920 में गांधीजी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर सरकारी नौकरी छोड दिया।

किस्से, कहानी सुनते सुनाते थे। लिखने की प्रवृत्ति प्रेमचन्द में बचपन से ही थी। सैकडों उर्दू उपन्यास पढे कि - दिल उसमें रंग गया था।

1907 में रवीन्द्र नाथ की कहानियाँ, अंग्रेजी से उर्दू में अनुवाद करके छपवायी।

1909 में "सोजे वतन" नाम पर पाँच मौलिक कहानियों का प्रकाशन किया।

हिन्दी में कहानी रचना करने की प्रेरणा **श्रीयुत मन्नन द्विवेदी** और **महावीर प्रसाद** पोद्दार से मिली। हिन्दी साहित्य सेवा करना ही उनका एक मात्र लक्ष्य बना। 1915 में पहला कहानी संग्रह निकला। 20 वर्ष हिन्दी में कहानियाँ और उपन्यास लिखकर अक्षय कीर्ति को अपनाया।

मर्यादा, माधुरी, हँस, जागरण आदिउच्च कोटि की पत्रिकाओं का संपादन किया।

उन्होंने अपना अंतिम भाषण लिखा जिसमें महान लेखक मैक्सिम गोर्की जिसे वे बराबर प्यार करते थे, जिसके साहित्य की प्रशंशा करते थे उस महान लेखक की स्मृति में श्रद्धांजलि समर्पित की गई थी। उस अद्भूत व्यक्ति के नामोल्लेखन पर ही प्रेमचन्द की आँखें भर आई - जिसके समान वे अपने जीवन में ख्याति प्राप्त न सके। मैक्सिम गोर्की की मृत्यु के दो महीने बाद 8 अक्तूबर 1936 को 56 साल की आयु में यह महान भारतीय लेखक सुख की नींद सो गया।

कहानीकार की रचनाएँ :-

प्रेमचन्द का साहित्य कितना विशद है, विपुल है, विभिन्न है उनकी रचनाओं की तालिका ही स्पष्ट करती है -

कहानियाँ :-

सप्तसरोज

नवनिधि

प्रेम पूर्णिमा

प्रेम द्वादशी

प्रेम तीर्थ

प्रेम पीयूषा

प्रेम कुञ्ज

प्रेम चतुर्थी

पंच प्रसून

सप्त सुमन

मान - सरोवर (1 - 8 = 8 भाग)

प्रेम प्रतिमा

प्रेरणा

प्रेम प्रमोद

प्रेम सरोवर

कुत्ते की कहानी

जंगल की कहानी

अग्नि समाधि

प्रेम गंगा

पाँच फूल

उपन्यास :-

प्रेमा, वरदान, प्रतिज्ञा (1906)

रंगभूमि (1915)

सेवा सदन (1916)

प्रेमाश्रम (1922)

निर्मला (1923)

कायाकल्प (1928)

गबन (1931)

कर्म भूमि (1932)

गोदान (1936)

मंगल सूत्रं(1936 अधूरा)

नाटक :-

प्रेम की वेदी

कविता

संग्राम

अनुवाद :-

सृष्टि का आरम्भ

फिसाने आजाद

सुखदास

अहक्ङःर

हडताल

चाँदी की डिबिया

न्याय

बालोपयौगी :-

मन मोदक

कुत्ते की कहानी

जंगल की कहानियाँ

टालस्टाय की कहानियाँ

दर्गादास

राम चर्चा

निबंध :-

कुछ विचार

कलम, तलवार और त्याग

पत्र - पत्रिकाएँ :-

जागरण

हँस

माधुरी

मर्यादा

मूल कहानी - "ठाकुर का कुआँ" :-

जोखू ने लोटा मुँह से लगाया तो पानी में सरव्त बदबू आयी। गंगी से बोला - यह कैसा पानी है ? मारे बास के पिया नहीं जाता। गला सूखो जा रहा है। और तू सडा पानी पिलाया देती है।

गंगी प्रतिदिन शाम को पानी भर लिया करती थी। कुआँ दूर था, बार - बार जाना मुश्किल था। कल वह पानी लायी, तो उसमें बू बिलकुल न थी। आज पानी में बदबू कैसी। लोटा नाक से लगाया, तो सचमुच बदबूथी। जरुर कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा ; मगर दूसरा पानी आवें कहाँ से ?

ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? दूर से लोग डाँट बताएँगे। साहू का कुआँ गाँव के उस सिरे पर है परन्तु वहाँ भी कौन पानी भरने देगा ? कोई कुआँ गाँव में नहीं है।

जोखू कई दिनों से बीमार है। कुछ देर तक तो प्यास रोके चुप पडा रहा, फिर बोला - आब तो मारे प्यास के रहा ही नहीं जाता। ला थोडा पानी नाक बन्द करके पी लूँ।

गंगी ने पानी न दिया। खराब पानी पीने से बीमारी बढ़ जाएगी - इतना जानती थी परन्तु यह न जानती थी कि पानी को उबाल देने से खराबी जाती रहती है। बोली - यह पानी कैसे पियोगे ? न जाने कौन जानवर मरा है कुएँ में। मैं दुसरा पानी लाये देती हूँ।

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा - दूसरा पानी कहाँ से लायेगी ?

"ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं। क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे ?"

"हाथ - पाँव तुडवा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राम्हन देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू जी एक के पाँच लेंगे - गरीबों का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई द्वार पर झाँकने नहीं आता, कन्धा देना तो बडी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे ?"

इन शब्दों में कडवा सत्य था। गंगी क्या जवाब देती ; किन्तु उसने वह बूदार पानी पीने को न दिया।

रात के नौ बजे थे। थके - माँदे मजदूर तो सो चुके थे, ठाकुर के दरवाजे पर दस - पाँच बेफिक्रे जमा थे। मैदानी बहादरी का तो न अब जमाना रहा है न मौका। कानूनी बहादरी की बातें हो रही थी। कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक खास मुकदमे में रिश्वत दे दी और साफ निकल गये। कितनी अकलमन्दी से एक मर्कि के मुकदमे की नकल ले आये। नाजिर और मोतिमिम, सभी कहते थे, नकल नहीं मिल सकती। कोई पचास माँगता कोई सौ। यहाँ बेपैसे - कोडी नकल उडा दी। काम करने का ढङ्ग चाहि।

इसी समय गंगी कुएँ से पानी लेने पहुँची।

कुप्पी की धुँधली रोशनी कुएँ पर आ रही थी। गंगी जगत की आड में बैठी मौके का इन्तजार करने लगी। इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है। किसी के लिए रोक नहीं, सिर्फ ये बदनसीब नहीं भर सकते।

गंगी का विद्रोही दिल रिवाजी पाबन्दियें और मजबूरियों पर चोटें करने लगा - हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँचे हैं ? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं ? यहाँ तो जितने हैं एक - से - एक छटे हैं। चोरी ये करें, जाल फरेब ये करें, झूठे मुकदमे ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गडेरिये की भेड चुरा ली थी और बाप को मारकर खा गया। इन्हीं पण्डित के घर में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम कर लते हैं। मजूरी देते नानी मरती है। किस - किस बात में हैं हमसे ऊँचे ? हाँ मुँह से

हमसे ऊँचे हैं। हम गली - गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊँचे हैं, हम ऊँचे से कभी गाँव में आ जाती हूँ तो रस - भरी आँखों से देखने लगते हैं। जैसे सबकी छाती पर साँप लोटने लगता है, परन्तु घमण्ड यह कि हम ऊँचे हैं।

कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई। गंगी की छाती धक - धक करने लगी। कहीं देख ले तो गजब हो जाय। एक लात भी तो नीचे न पडे। उसने घडा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई एक वृक्ष के अंधेरे साये में जा खडी हुई। कब इन लोगों को दया आती है किसी पर। बेचारे महँगू को इतना मारा कि महीनों लहू थूकता रहा। इसीलिए तो कि उसने बेगार न दी थी। इस पर ये लोग ऊँचे बनते हैं ?

कुएँ पर दो स्त्रियाँ पानी भरने आयी थीं। इनमें बातें हो रही थीं।

"खाना खाने चले और हुक्म हुआ कि ताजा पानी भर लाओ। घडे के लिए पैसे नहीं है।"

"हम लोगों को आराम से बैठे देखकर जैसे मरदों को जलन होती है।"

"हाँ यह तो न हुआ कि कलसियाँ उठाकर भर लाते बस, हुकुम चला दिया कि ताजा पानी लाओं, जैसे हम लौंडियाँ ही तो है।"

"लौंडियाँ नहीं तो और क्या हो तुम। रोटी - कपडा नहीं पाती ? दस - पाँच रुपये भी छीन झपटकर लेही लेती हो और लौंडियाँ कैसी होती हैं।"

"मत ले जाओ, दीदी। छिन - भर आराम करने की जी तरसकर रह जाता है। इतना काम किसी दूसरे के घर कर देती, तो इससे कहीं आराम से रहती। उनपर से वह एहसान मानता। यहाँ काम करते - करते मर जाओ, पर किसी का मुँह ही सीधा नहीं होता।"

दोनों पानी भरकर चली गयीं, तो गंगी वृक्ष की छाया से निकली और कुएँ के जगत के पास आयी। बेफिक्रे चले गये थे। ठाकुर भी दखाजा बन्दकर अंदर आँगन में सोने के लिए जा रहे थे। गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली। किसी तरह मैदान तो साफ हुआ। अमृत चुरा लाने शायद इतनी सावधानी के साथ और समझ बूझकर न गया हो। गगी दबे पाँव कुएँ के जगत पर चढ़ी। विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले कभी न हुआ।

उसने रस्सी का फंदा घडे में डाला। दाएँ - बाएँ चौकन्नी दृष्टि से देखा जैसे कोई सिपाही रात को शतृ के किले में सुराख कर रहा हो। आगर इस समय वह पकड ली गयी, तो फिर उसके लिए माफी या रियायत की रत्ती - भर उम्मीद नहीं। अन्त में देवताओं को याद करके उसने कलेजा मजबूत किया और घडा कुएँ में डाल दिया।

घडे ने पानी में गोता लगाया, बहुत ही अहिस्ता। जरा भी आवाज न हुई। गंगी ने दो - चार हाथ जल्दी - जल्दी मारे घडा कुएँ के मुँह तक आ पहुँचा। कोई बडा शहजोर पहलवान भी इतनी तेजी से उसे न खींच सकता था। गंगी झुकी कि घडे को पकडकर जगत पर रखे कि एकाएक ठाकुर साहब का दरवाजा। खुल गया। शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा।

गंगी के हाथ से रस्सी छूट गयी। रस्सी के साथ घडा धडाम से पानी में गिरा और कई क्षण तक पानी में हलकोरे की आवाजें सुनाई देती रहीं।

ठाकुर "कौन है, कौन है ?" पुकारते हुए कुएँ की तरफ जा रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी।

घर पहुँचकर देखा कि जोखू लोटा मुँह से लगाये वही मैला गंदा पानी पी रहा है।

कुछ शब्दार्थ :-

गंगा - (गंगी)	=	उत्तर भारत में बहने वाली पवित्र नदी का नाम है गंगा। इस कहानी में स्त्री का नाम है। नाम तो गंगा है परन्तु प्यासे को बुझाने का गंगा (पानी) मिलना असंभव बना। पानी पंचभूतों में एक है। जो भगवदत्त है। इस पर सब अधिकार है।
पाबन्दियाँ	=	बन्धन, नियम
मजदूर	=	मोटिया, कमेरा
अकलमन्दी	=	बुद्धिमान
मुकदमा	=	नालिश
गजब होना	=	नाराज होना
गोता लगना	=	डुबकी लगाना
बेगार	=	अनमने काम करना
लौडियाँ	=	नौकरानि याँ
चौकन्नी	=	सजग होशियार
कलेजा	=	हृदय

कथानक :-

"ठाकुर का कुआँ" कहानी का नायक कोई नहीं। कहानीकार ने कई पीढ़ियों से हमारे भारतीय समाज में आ रही कुरीति, जाति व्यवस्था का संपूर्ण वर्णन कर युव - पीढ़ी को सचेत करना और समाज - सुधार उनका लक्ष्य बनाया।

प्रेमचन्द के पूर्व कथाकार नागरिक जीवन के उच्च वर्ग से ही कथानक चुनते थे। परन्तु प्रेमचन्द ने समाज के निम्न स्तर के व्यक्तियों को अपने साहित्य में स्थान दिया। अछूत और हरिजनों की करुण जीवन गाथाएँ इनके साहित्य के बहुत बडे भाग पर छायी हुई।

कहानी का सारांश :-

एक छोटा गाँव था। उस गाँव का अधिकारी ठाकुर था। जो उच्च जाति का था। साथही ब्राह्मण, सहुकार आदि उच्च श्रेणी के लोग भी रहते थे। उस गाँव के एक छोर पर निम्न जाति के लोग बसते थे। इन लोगों के लिए जीवन अलग था और कुआँ भी अलग। ठाकुर के घर में और साहू के घर में दो ही कुएँ थे। वहीं से सारे उच्छ जाति के लोग पानी ले जाया करते थे।

जोखू और गंगा निम्न जाति के पति पत्नी थे। उनका जीवन बहुत कष्ट के साथ काटना पडताथा। उनके लिए लायक पानी उस गाँव से बहुत दूर स्थित निर्धारित कुएँ से गंगी लाती थी। वह कल शाम को भी पानी लाया। उनके पति कुछ दिनों से बीमार पडे। काटपर पडे कराह ले रहा था। वह बहुत प्यासा था। अपने प्यासे को बुझाने के लिए पानी माँगा। गंगा उसे पानी पिलाने के लिए लोटे से पानी निकाला। लिकालते ही उसमें से बदबू आयी। इसलिए वह पिलाने की चेष्टा नहीं कर पायी।

वह सोच में पडी। पानी खराब होने का कारण शायद इस कुएँ में कोई जानवर पडकर मरी होगी। कारण जो भी हो अपने बीमार पति से वह पानी पिलाना नहीं चाहती। उस समय पानी की जरुरत थी। उनके लिए निर्धारित कुएँ तक नहीं चल सकती। क्यों कि अंधेरा हुआ। दूसरे कोने में स्थित साहुकार के कुएँ तक जाना चाहती थी। परन्तु उच्च जाति के लोग थे वे। इसलिए गंगी को नहीं आने देंगे। वह गाँव जहाँ ठाकुर का कुआँ था वह गंगी की झोंपडी से थोडी दूर पर है। जोखू भी जानता है कि - वह पानी पीने लायक नहीं। कुछ देर तक चुप सोया। परन्तु प्यासे को नहीं रोक पाया। सो वही पानी पीने का निश्चय कर गगी को बुलाया।

पत्नी गंगी अनपढ़ थी। इसलिए वह नहीं जानती थी कि - पानी खराब होने पर उसे उबाल कर पी सकते हैं। रात लगभग नौ बजेगा। सारा गाँव सो गया। सारा संसार सुन्न हुआ। परन्तु ठाकुर साहब के घर पर कुछ लोग बैठे और चर्चा कर रहे थे।

सारे धैर्य को बटोर कर गंगा ठाकुर के कुएँ से पानी लाने के लिए उस अंधेरे को चीरकर घडा और रस्सी के साथ चली। उस कुएँ की ओर किसी का आवागमन न था। ठाकुर के घर से दीये की धुंधली रोशनी कुएँ तक पड रही थी। एक पेड की आड में सदवकाश के लिए खडी थी। उस समय गंगी के मन में विद्रोही भाव पैदा हुए जैसे - भावना की दृष्टि में सब समान हैं। परन्तु ऊँची जाति और निम्न जाति इस समाज के द्वारा बनाये गये हैं। निम्न जाति के लोग समाज की दृष्टि में बदनसीब वाले हैं। ऊँची जाति के ब्राह्मण लोग आशीर्वाद ठाकुर लाठी से मारेगा और साहुकार एक का पाँच वसूल करेगा। गरीब आदमी मर जाने पर इस लाश को देखने के लिए भी नहीं आयेंग। ये लोग चोरी करें, खुद की भलाई के लिए दुसरों को धोखा करें झूठी कार्रवाई करें। परन्तु ये सभी उनको शोभा देनेवाली विशेषताएँ हैं। गरीब और निस्सहायी गडरिये के भेड को चुराकर ठाकुर खा चुका जो काम उनके गले में हार जैसा है। अर्थात् बडे लोग जो भी काम करें वह समाज - सम्मत होगा। कहने की बात है - ऊँच और निम्न दोनों के बीच हस्ति मशकांतर है - "जीवन"। जुआ खेलना, घी में तेल मिलाकर व्यापार करना उनके लिए ही शोभित हैं।

दिन भर काम करवाकर शाम को मजूरी देने में किर किरी करते हैं ? जब कभी गंगा उस गाँव को किसी काम पर आया करती थी। उस समय बहुत सारे उच्च श्रेणी के लोग मदमत्त आँखें से बुरी दृष्टि से देख रहे थे। कारण - उनका मन उच्च जाति के गर्व से भरा हुआ था। गाँव में निम्न जाति की नारी जाति को सामन्त लोग अपने उपयोग की सामग्री समझते थे। खिलौने की तरह खेलकर छोडदेना इनका स्वभाव था।

इस प्रकार भाव - सागर में गंगा का मन लग गया।

इस समय कुएँ के पास दो स्त्रियाँ आने का आहट सुनकर गंगी पेड के आंड में सरकगयी। उन दोनों की संवाद शैली का सारांश इस प्रकार है -

पति भोजन के लिए आ बैठे। उस समय पीने के लिए ताजा पानी माँगा। इसलिए वह स्त्री पानी के लिए कुएँ तक आयी। उसने आदमी लोगों को कोसना आरंभ किया। एक स्त्री दूसरी स्त्री से कह रही थी कि - आदमी लोग स्त्री आराम से बैठना नहीं देख सकते। उनका मन जल जायेगा। इसलिए कोई न कोई काम कराना चाहते थे। स्त्री घर पर एक नौकरानी है ?

उस पर दूसरी स्त्री ने उत्तर दिया - हाँ बाबा हाँ घर पर स्त्री एक मजदूरनी है। दो - एक रोटी कपडे के लिए और दस - पाँच

रुपये (मरदों से) छीन लेने पर मिलते हैं। और पूरा का पूरा दिन घर पर काम में डूब जाती हैं। घर पर जाने का मन नहीं लगा। इसलिए कुछ देर वहीं बैठीं। एक स्त्री ने दूसरी स्त्री से कहती थी कि - घर पर सुबह से देर रात तक जो काम करते हैं वही काम यदि दूसरे घर करें - मन और शरीर के लिए कहीं ज्यादा आराम और एहसान मिलेगा। घर पर कितना काम करने पर भी घरवालों को कोई विश्वास न होता। कुछ देर बाद पानी लेकर ये दोनों गये।

गंगी बाहर आयी और धीरे - धीरे जगत के पास पहुँची। वे देनों स्त्री अंदर जाने पर ठाकुर दरवाजा बाहर से बंद करके आँगन में सोने की तैयारी कर रहे थे। घडे को रस्सी से बाँधकर दैव - स्मरण करके हिम्मत के साथ घडे को कुएँ में डालकर मुश्किल के साथ पानी भरा। अहिस्ते - अहिस्ते उसे खींचने की चेष्टा की। घडा लगभग ऊपर तक आगया।

ठाकुर का दरवाजा खुल गया। ठाकुर उस गाँव का शेर था। उसे देखते देखते डर के मारे अनजाने गंगी ने रस्सी को छोड दिया। भरा धडा गिरा और पानी में आवाज के साथ साथ हिलकोरें निकले।

रात के कारण अंधेरे में कोई नहीं दिखाते। ठाकुर "कौन" आवाज देते ही कुएँ की ओर आ रहा था। इस दृश्य को देखते ही गंगी थर - थर काँपी और भय के कारण उस जगत से उछलकर कुटिये की ओर भाग दौडी। फाटक तक आ पहुँची।

गँगी ने देखा - उसके पति जोखू उसी बदबूदार पानी को पी रहा था। कहानी की समाप्ति यहीं पर हुई।

निष्कर्ष :-

वे अपने भीतर घायल हृदय ि .ते थे जो मनुष्य की पीडा को देखते ही वह निकलता था। उन्होंने उस पीडा को दूर करने के लिए जनता में उसके विरुद्ध सामाजिक चेतना जाग्रत करने की चेष्टा की। अपने जीवन और कला में मानवता वादी थी।

प्रेमचन्द नई समाज - व्यवस्था के लिए क्रांति की अपेक्षा सामाजिक विकास के मार्ग को पसंद करते थे। उनका आदर्श समाज वह था, जिसमें सबको समान अवसर मिले। इस स्थिति तक विकास के मार्ग के द्वारा ही पहुँचा जा सकता था। जब तक मनुष्य व्यक्ति गत रुप से उन्नत न होगा, कोई समाज व्यवस्था समृद्ध नहीं हो सकती।

नारी के प्रति प्रेमचन्द का दृष्टिकोण :-

समाज में व्याप्त अभागी स्त्रियों की मुक्ति ईश्वर द्वारा ही होगी। वास्तव में उनका विश्वास था कि - सामाजिक नियम मनुष्य ने बनाया है। और वह इनमें संशोधन भी कर सकता है। उसमें ईश्वर का हस्तक्षेप न तो अनिवार्य है और न आवश्यक।

कहानी के तत्वों के आधार पर प्रस्तुत कहानी का विचार :-

कथावस्तु :-

कथावस्तु कहानी की रीढ़ होती है। कथानक संवेदना को अपने लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ाकर प्रभावोत्पादक ढङ्ग से प्रस्तुत करता है। कहानी की रचना सामाजिक, धार्मिक, एतिहासिक, मनोवैज्ञानिक किसी भी विषय को लेकर की जा सकती है। कथानक में रोचकता, कल्पना, स्वाभाविकता, भावुकता और कलात्मकता के समावेश की और ध्यान देना अत्यंत

आवश्यक है। कहानी को सुंदर और प्रभावशाली बनाने के लिए कथा - विकास की चार स्थितियाँ मानी गयी हैं - प्रारंभ, विकास, चरमोर्त्क, और अंत।

कहानी का प्रारंभ - जिज्ञासा मूलक, विकास - पात्रों के मनो विज्ञान पर, चरमोत्कर्ष - कहानी के मूल बिन्दु का उदूघाटन और कथा के अंत में उद्देश्य की पूर्णता होती है।

प्रस्तुत कहानी "ठाकुर का कुआँ" में कहानी का आरंभ बदबू पानी से नाटकीय शैली में होकर, विकास - गंगी पानी के लिए ठाकुर के कुएँ तक जाना और वहीं चरमोत्कर्ष - ठाकुर के कुएँ से पानी को निकालकर ठाकुर के आगमन को देखकर अनजान हाथी से रस्सी को छोड देना है। उद्देश्य है - उच्च श्रेणी के लोगों का अधिकार। निम्न जाति की औरत गंगा भयभीत होकर असंपूर्ण इच्छा के साथ झोंपडी की ओर भागकर पति जोखू गंदे पानी को पीना जो करुणा जनक दृश्य है।

चरित्र - चित्रण :-

कहानी में पात्रों का चरित्र या तो लेखक की ओर से स्पष्ट किया जाता है अथवा पात्रों की शक्तियों में एक दूसरे के व्यक्तित्व का उद्घाटन रहता है। उसमें मानव - चरित्र की चर्चा न करके मानव व्यक्तित्व की किसी एक विशेषता को मनो विज्ञान के अनुसार स्पष्ट किया जाता है। इस दृष्टि से कहानी के पात्रों को सजीव होना चाहिए। कहानी के पात्रों की संख्या पर कोई बन्धन नहीं है।

पात्र दो प्रकार हैं - 1. आदर्श और यथार्थ वादी।

आदर्श और भावना की प्रधानता जिसमें होती है उन्हें आदर्श पात्र कहते हैं।

जो यथार्थ को मुख्य मानते हैं वे यथार्थ वादी हैं। कथावस्तु के आधार पर कुछ पात्र चरित्र - प्रधान हो तो कुछ वर्ग प्रधान होते हैं।

प्रस्तुत कहानी "ठाकुर का कुआँ" में गंगी निम्न वर्ग की प्रतिनिधि है। चरित्र - चित्रण के अंतर्गत पात्र के रुप, स्वभाव, प्रकृति, गुण, अवगुण आते हैं। गंगी के गुण आधी रात - पानी के लिए ठाकुर के कुएँ के पास पहुँचने का विधान, "पति की रक्षा करना ही सती का धर्म है" - यह भारतीय नारी - का धर्म है जिसका जीता जागता चित्रण गंगी के चरित्र के द्वारा स्फुरित है।

कयोपकथन :-

कथा गत चरित्र चित्रण को गति प्रदान करने के लिए कहानी में कथोप कथन अथवा संवाद शैली की योजना की जाती है। पात्रों के बीच की बातचीत - कथोप कथन या संवाद शैली कहा जाता है। संवादों में रोचकता, सजीवता, स्वाभाविकता और संगति लाने के लिए पात्र, वातावरण, स्थान और समय की अनुकूलता अत्यंत आवश्यक है। कथोप कथन के लिए रोचकता, संक्षिप्तता कहानी में सजीवता और यथार्थता के लिए आवश्यक है। यह कहानी की जान है। पात्र और Plot दोनों का सुन्दर विकास होता है। और कलात्मकता अनिवार्य है।

प्रस्तुत कहानी "ठाकुर का कुआँ" में प्यासे को बुझाने के लिए गंदे पानी को पीने की तैयारी बीमारी जोखू और गंगा के बीच सडे पानी के बारे में कथोपकथन हृदय स्पर्शी और संक्षिप्त है।

देर रात ताजा पानी लिए कुएँ तक आयी दो ठाकुर वंश की औरतों के बीच पुरुषाधिक्यता की संवाद शैली, जन्मतः नारी के कारण उनकी मनोव्यथा कथोपकथन के द्वारा अच्छी तरह प्रकट कर प्रेमचन्द ने सफल बना।

देशकाल :-

देश काल के निर्वाह से अभिप्राय यह है कि - कहानीकार सामाजिक कहानियों में अपने युग का उचित ध्यान रखें। कहानी लेखक को समकालीन अथवा तत्कालीन देश - काल के अनुसार घटनाओं, स्थानों और वातावरण की योजना करना है।

प्रेमचन्द की "कहानी ठाकुर का कुआँ" देशकाल की दृष्टि से एक ऐसे समय की कहानी है - जिसमें स्त्री खुद चार दीवारों के बीच पुरुषाधिक्य के अधिकार में बंदी बन गयी। निम्न जाति के लोगों की जीवनी तथा उस समय समाज में व्याप्त ठाकुर लोगों के शासन के लिए यह कहानी एक आइना है।

देशकाल परिस्थिति को वातावरण कहते हैं। वातावरण कहानी में इस प्रकार है जैसे दावत में पकवानों के रखने के बर्तन और भोजन शाला। हमारा ध्यान खाद्य - पदार्थों पर अधिक होगा - बर्तनों पर कम परन्तु खाद्य पदार्थों के अनुरुप ही पात्र और भोजनशाला होना है। इस विषय में प्रस्तुत कहानी सोलह आणा सच बन बैठी है।

उद्धेश्य :-

कहानी में जीवन की मार्मिक अनुभूतियों की सहज व्याख्या की जानी है। इस दृष्टि से लेखक की विचार धारा प्रगतिवादी, सुधारवादी और मनो विश्लेषणात्मक किसी प्रकार की होनी है। उसकी भावनाएँ आदर्श और यथार्थ में से किसी भी चिन्ता धारा की और प्रेरित रह सकती है और उनके विचार लोक के लिए कल्याणकारी हो।

प्रस्तुत कहानी "ठाकुर का कुआँ" उस समय के लिए ही नहीं प्रस्तुत परिस्थितियों में जाति, धर्म से भरपूर समाज के कल्याण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

कहानी का उद्देश्य संक्षिप्त रहता है। कहानी हमारी अनुभूतियों को उकसाती हुई अंत में अपने उद्देश्य को प्रकट करता है। प्रस्तुत समाज में व्याप्त अंतर के भयंकर दुष्परिणामों का विश्लेषण है।

भाषा शैली :-

प्रेमचन्द उर्दू से होकर आये हैं। उर्दू की मुहावरे दार शैली, भाषा की सरलता, सरसता और उसका प्रवाह इनकी भाषा की

विशेषताएँ हैं। महात्मा गाँधी जो हिन्दुस्तानी भाषा का आदर्श था, उसका जीता जागता नमूना इस कहानी में सुरक्षित है।

भाषा की दृष्टि से प्रेमचन्द महत्वपूर्ण है। उनकी भाषा उनकी इतनी अपनी है कि उसका नाम ही प्रेमचन्दी भाषा पड गया है। उनकी भाषा चुस्त, मुहावरों से सजी और परुष है। गाँव का वातावरण उपस्थित करने के लिए प्रांतीय और प्रादेशिक शब्दों का प्रयोग किया। उनकी भाषा में लोच है, प्रवाह है और प्रसाद गुण है। प्रेमचन्द की देन यही भाषा है जिसे हिन्दू भी समझ सकता है और मुसलमान भी।

शीर्षक :-

कहानी का शीर्षक किसी उद्देश्य का सूचक होना चाहिए। शीर्षक की उपयुक्तता पर कहानी की सफलता बहुत कुछ निर्भर है। शीर्षक है क्या ? जिस दृष्टि कोण से लेखक कहानी की रचना करता है उसी मार्ग का द्वार मानों उस कहानी का शीर्षक है। इसलिए शीर्षक ऐसा होना चाहिए जो कहानी की सांकेतिक कुञ्जी हो।

इस विषय में पाश्चात्य लेखक Donald Maconochie लिखता है -

Keep the title in its proper proportion to the nature and interest of the story.

प्रस्तुत कहानी ''ठाकुर का कुआँ'' शीर्षक के रुप में उपर्युक्त सारे गुणों से परिपूर्ण हुआ है।

कुछ नमूने प्रश्न :-

1. ''ठाकुर का कुआँ'' कहानी का सारांश लिखिए।
2. प्रेमचन्द प्रगतिशील कहानीकार थे - स्पष्ट कीजिए।
3. निम्न जाति के लोगों के जीवन की आइना है - ''ठाकुर का कुआँ'' - स्पष्ट कीजिए।

उपयोगी पुस्तकें :-

हिन्दी कहानी और कहानीकार - प्रो . वासुदेव

ग्राम्य जीवन की कहानियाँ - प्रेमचन्द

कुछ विचार - प्रेमचन्द

हिन्दी की आदर्श कहानियाँ - प्रेमचन्द

हिन्दी कहानी और कहानी कार - प्रो. वासुदेव

हिन्दी निबन्ध - राजहंस प्रकाशन

Dr. K. Vasantha Kumari

Lesson - 2 (2)

उसने कहा था

इकाई की रुपरेखा :-

2.1 उध्देश्य

2.2 लेखक परिचय

2.3 प्रस्तावना

2.4 उसने कहा था - कहानी

2.5 कहानी कला के आधार पर कहानी की समीक्षा

2.6 चरित्र - चित्रण

2.7 कहानी का उद्धेश्य

2.8 शीर्षिक की उपयुक्तता

2.9 कुछ स्मरण रखने योग्य बातें

2.10 बोध प्रश्न

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.1 उद्धेश्य :-

इस इकाई में आप श्री चंद्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखित प्रसिद्ध कहानी 'उसने कहा था' का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप

1. श्री चंद्रधर शर्मा गुलेरी जी का परिचय और उनकी रचनाओं के बारे में जान सकेंगे।
2. युगीन परिवेश में मानवीय मूल्यों की महानता को जान सकेंगे।
3. मानव जीवन के आदर्श के बारे में आप जान सकेंगे।
4. युध्द की वांस्तविक पृष्ठभूमि के बारे में जान सकेंगे।
5. इसमें एक प्रेमी के निस्वार्थ प्रेम, आत्मत्याग, शौर्य तथा बलिदान के बारे में पढ सकेंगे।
6. कहानी का सारॉंश और विशेषताओं के बारे में जान पायेंगे।
7. प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण, कहानी का उद्धेश्य और शीर्षिक की सार्थकता के बारे में जान सकेंगे।

2.2 लेखक - परिचय :-

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म काँगडा जिले के गुलेर नामक गाँव में हुआ था। आपने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। आपने अजमेर के मेयो कॉलेज में बारह वर्ष संस्कृत पढ़ा था। इसके बाद आप बनारस के कालेज ऑफ ओरियण्टल लेर्निग के प्रधानाचार्य बने।

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता, भाषा तत्व विशारद तथा भारतीय साहित्य के प्रकांड पंडित हैं। आपने केवल तीन कहानियाँ लिखी हैं - 1. सुखमय जीवन, 2. बुध्दू का काँटा और 3. उसने कहा था। केवल तीन कहानियाँ लिखकर ही आपने हिन्दी कहानी जगत् में विशेष नाम कमाया है। संसार की किसी भी भाषा में ऐसे कहानीकार नहीं मिलते, जिन्होंने केवल तीन कहानियाँ लिखकर इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की है। आप हिन्दी में यथार्थवादी कहानियों का आरम्भ करनेवाले कहानीकारों में प्रमुख हैं।

गुलेरी की 'सुखमय जीवन' कहानी का प्रकाशन सन् 1911 में 'भारतमित्र' में हुआ। बुद्धू का काँटा 'सन् 1911 और 1915 के बीच लिखी गयी। 'उसने कहा था' 'सरस्वती' मासिक पत्रिका में सन् 1915 में प्रकाशित हुई। ये भावमूलक यथार्यवादी वातावरण प्रधान कहानियाँ हैं। ये प्रेम प्रधान कहानियाँ हैं। इन में प्रेम की अविरल धारा यथार्थवादी वातावरण के बीच निरन्तर प्रवाहित रहती है। इनकी कुतूहल प्रधान घटनाओं से भी अधिक इनके पात्र पाठका के मन कों अपनी ओर आकर्षित करते हैं तथा कोई भाव विशेष जगाते हैं। परस्पर विशेधी परिस्थितियों द्वारा कथाओं का विकास होता हैं। कथानकों में देव तथा संयोग की प्रधानता है। पात्र यथार्थवादी हैं। चरित्र चित्रण सजीब, नाटकीय तथा मनोवैज्ञानिक है। कथोपकथन कथानक को आगे बढ़ानेवाले हैं। उद्देश्य संयमित प्रेम की अभिव्यंजना हैं। आरम्भ आकर्षक तथा वर्णनात्मक है। अन्त प्रभावपूर्ण, मर्मस्पर्शी तथा मनोवैज्ञानिक है। शीर्षक आकर्षक हैं। अन्यपुरुष प्रधान, संवादात्मक और व्यंग्यात्मक शैलियों का प्रयोग किया गया है। भाषा सरल तथा स्पष्ट है। वह तत्सम प्रधान है। उसमें व्यावहारिक और प्रसंगानुकूल शब्दों, उर्दू, पंजाबी तथा अंग्रेजी के शब्दों, मुहावरों आदि का प्रयोग मिलता है। काव्यात्मकता का प्रभाव है।

2.3 संकलित कहानी - प्रस्तावना :-

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' कहानी का संकलन इस संग्रह में किया गया है। इस कहानी में युद्ध का वास्तविक पृष्टभूमि अपनी यथार्थता के साथ उभरी है। यह चरित्र प्रधान कहानी है। इसमें एक प्रेमी के निःस्वार्थ प्रेम, आत्मत्याग, शौर्य तथा बलिदान का चित्रण अनूठे ढंग से किया गया है जिस में पर्याप्त कलात्मक सौष्ठव परिलक्षित होता है।

यह कहानी 'फ्लैश बैक शैली' में आगे बढ़ती है। कहानी का नायक लहनासिंह है। वह युद्ध भूमि में घायल है। उसे पच्चीस वर्ष पुरानी घटनाओं की याद आने लगती है। उस समय उसका उम्र बारह वर्ष था। वह मामा के घर अमृतसर गया था। एक दिन अचानक उसकी मुलाकात एक लडकी से हुई थी। उस लडकी का उम्र आठ वर्ष का था, दोनों की मुलाकात कई बार हुई थी। लहना सिंह के मन में उस लडकी के प्रति प्रेम उत्पन्न हो गया था। एक दिन उस लडकी ने बताया था कि उसकी सगाई हो गयी। इससे उसे बडा दुःख हुआ। वह लडकी फिर नहीं दिखायी पडी। फिर भी उसके मन में उसके प्रति प्रेम बना हुआ था।

एक बार लहनासिंह सूबेदार हजारासिंह से मिलने गया था। सूबैदारनी ने उस समय कहा था कि वह उसके पति हजारासिंह तथा पुत्र बोधासिंह की रक्षा करता रहे। उसने लहनासिंह को बताया कि वह वही लडकी है जो पच्चीस साल पहले अमृतसर की गलियों में उससे मिलती थी। युद्ध - भूमि में लहनासिंह ने बीमार बोधासिंह को अपनी जरसी दी और स्वयं उसके पहरे का काम करने लगा। उसने नकली लपटन साहब की सूचना भेजकर सूबेदार हजारा - सिंह को शत्रुओं के हाथों में मरने से बचाया . वह स्वयं जर्मन शत्रु को हाथों में घायल बन गया। उसने हजारा सिंह और बोधासिंह को गाडी में बिठाकर सुरक्षित स्थान को चले जाने केलिए सुबेदारनी से शपथ ली। कहानी का अन्त उसकी मृत्यु से होता है। इस प्रकार वह कर्तव्य निबाहने में अपने प्राणों का परवाह नहीं करता। कर्तव्य - पालन में उसके बचपन के प्रेम से प्रेरणा मिलती है। शुक्ल जी ने ठीक ही कहा है गुलेरी जी ने भावुकता का चरम उत्कर्ष अत्यन्त निपुणता के साथ संपुटित किया है। इस कहानी में पात्र नहीं बोलते, बल्कि घटनायों।

2.4 उसने कहाथा - कहानी :-

बडे - बडे शहरों के इक्के - गाडी वालों के कोडो से जिनकी पीठ छिल गई है और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बम्बूकार्ट वालों की बोली का मरहम लगावें। जब बडे - बडे शहशें की चौडी सडकों पर घोडे की पीठ को चाबुक से धुनते हुए, इक्केवाले कभी घोडे की नानी से अपना निकट सम्बन्ध स्थिर करते हैं कभी राह चलते पैदलों की आँखें के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अंगुलियों के पौरों को चीचकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं और संसार - भर की गलानि निराशा और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीध चले जाते है, तब अमृतसर में उनकी बिरादरी वाले तंग चक्करदार गलियों में हर एक लडढ़ी वाले के लिए ठहरकर सब का समुद्र उमडाकर 'बचो खालसजी', 'ठहरना भाईजी', 'आने दो लालाजी', 'हचे बाछा (बादशाह)!' कहते हुए सफेद फेंटों, हुए सफेद फेंटों, खुच्चरों और बत्तख्नें, गन्ने और खोमचे और भारेंवालों के जंगल में से राह खेते हैं। क्या मजाल है कि 'जी' और 'साहिबा' बिना सुने किसी को हटना पडे। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती ही नहीं चलती है, पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती हुई। यदि कोई बुढ़िया बार - बार चेतावनी देने पर भी लीक से नहीं हटती, तो उनकी वचनावाली के ये नमूने हैं - 'हट जा जीणे जोगिये, हट जा करमांवालिये, हट जा पुंत्ता प्यारिये, बच जा लम्बी वालिए!' समष्टि में इनके अर्थ हैं कि तू जीने योग्य है, तू भाग्यों वाली है, पुत्रों को प्यारी है, लम्बी उमर तेरे सामने है, तू क्यों मेरे पहिये के नीचे आना चाहती है! - बच जा।

ऐसे बम्बूकार्टवालों के बीच में होकर एक लडका और एक लडकी चौक की एक दूकान पर आ मिले। उसके बालों और इसके ढीले सुथने से जान पडता था कि दोनों सिक्ख हैं। वह अपने मामा के केश धोने के लिए दही लेने आया था, और यह रसोई के लिए बदियां। दुकानदार एक परदेशी से गुंथ रहा था, जो सेर - भर गीले पापडों की गड्डी को गिने बिना हटता न था।

"तेरे घर कहां है ?"

"मगरे में - और तेरे ?"

"मंझे में - यहां कहां रहती है ?"

"अतरसिंह की बैठक में वे मेरे मामा होते हैं।"

"मैं मामा के घर आया हूँ उनका घर गुरु बाजार में हैं।"

इतने में दुकानदार निटा और इनको सौदा देने लगा। सौदा लेकर दोनों साथ - साथ चले। कुछ दूर जाकर लडके ने मूस्कराकर पूछा - "तेरी कुडमाई (मंगनी) हो गई ?"

इस पर लडकी कुछ आंखे चढ़ाकर 'धत्' कहकर दौड गई और लडका मुँह देखता रह गया।

दूसरे - तीसरे दिन सब्जीवाले के यहाँ, या दूधवाले के यहाँ अकस्मात् दोनों मिल जाते। महीना - भर यही हाल रहा। दो तीन बार लडके ने फिर पूछा। "तेरी कुडमाई हो गई ?" और उत्तर में वही 'धत्' मिला। एक दिन जब फिर लडके ने वैसे ही हँसी में चिढ़ाने के लिए पूछा तो लडकी लडके की सम्भावना के विरुद्ध बोली - "हाँ, हो गई।"

"कब ?"

"कल ; देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू (ओढ़नी)"

लडकी भाग गई। लडके ने घर की राह ली। रास्ते में एक लडके को मोरी में धकेल दिया, एक छाबडीवाले की दिन - भर की कमाई खोई, एक कुत्ते पर पत्थर मारा और एक गोभीवाले के ठेले में दूध उंडेल दिया। सामने नहाकर आती हुई किसी बैष्णवी से टकराकर अन्धे की उपाधि पायी। तब कहीं घर पहुँचा।

"राम - राम यह भी कोई लडाई है। दिन - रात खन्दकों में बैठे हड्डियाँ अकड गई। लुधियाना से दस गुना जाडा मेंह और बकफ, उपर से पिंडलियों तक कीचड में धंसे हुए है। गनीम कहीं दिखता नहीं - घंटें - दो घंटें में कान के परदे फाडनेवाले धमाके के साथ सारी खन्दक हिल जाती है और सौ - सौ गज धरती उछल पडती है। इस गोबी गोले से बचे तो कोई लडे। नगरकोट का जलजला सुना था, यहाँ दिन में पचीस जलजले होते हैं। जो कहीं खन्दक से बाहर साफा या कुहनी निकल गई, तो चटाक से गोली लगती है। न मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए है या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।"

"लहनासिंह, और तीन दिन हैं। चार तो खन्दक में बिता ही दिए, परसों "शिलीफ" आ जाएगी, और फिर सात दिन की छुट्टी। अपने हाथों ढटका (बकश मारना) करेंगे और पेट - भर खाकर सो रहेंगे। उसी फिरंगी (फ्रेंच) मेम के बाग में - मखमल की - सी हरी घास है। फल और दूध की वर्षा कर देती है। लाख कहते हैं, दाम नहीं लेती। कहती है, तुम राजा हो, मेरे मुल्क को बचाने आए हो।"

"चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोडा बिघडता है और बिना लडे सिपाही। मुझे तो संगीत चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जर्मनों को अकेला मारकर न लौटूँ तो मुझे दरबार साहब की दहलीज पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोडे - संगीन देखते ही मुंह फाड देते हैं और पैर पकडने लगते हैं। यों अंधेरे में तीस - तीस मन का गोला फेंकते हैं। उस दिन धावा किया था - चार मील तक एक जर्मन नहीं छोडा था। पीछे जनरल साहब ने हट आने का कमान दिया, नहीं तो ...."

"नहीं तो सीधे बर्लिन पहुँच जाते। क्यों ?"

सूबेदार हजारासिंह ने मुस्कराकर कहा -

"लडाई के मामले जमादार था नायक के चलाए नहीं चलते। बडे - बडे अफसर दूर की सोचते हैं। तीन सौ मील का सामना है। एक तरफ बढ़ गए तो क्या होगा ?"

"सूबेदारजी, सच है," लहनासिंह बोला - "परकरें क्या ? हडिडयों - हडिडयों में तो जाडा धंस गया है। सूर्य निकलता नहीं और खाई में दोनों तरफ में चम्बे की बावलियों के - से सोते झर रहे हैं। एक धावा हो जाए, तो गरमी आ जाए।"

"उदमी उठ सिगडी में कोयले डाल। वजीरा, तुम चार जने बाल्टियां लेकर खाई का पानी बाहर फेंको। महासिंह शाम हो गई है, खाई के दखाजे का पहरा बदल दे।" यह कहते हुए सुबेदार सारी खन्दक के चक्कर लगाने लगे। वजीरासिंह पलटन का विदूब कथा। बाल्टी गंदा पानी भरकर खाई के बाहर फेकता हुआ बोला - "मैं पाथा बन गया हूँ। करो जर्मनी के बादशाह का तर्पण।" इस पर सब खिलाखिला पडे और उदासी के बादल उफ गए।

लहनासिंह ने दूसरी बाल्टी भरकर उसके हाथ में देकर कहा। - 'अपनी बाडी के खरबूजों में पानी दो। ऐसा स्वाद का पानी पंजाब - भर में नहीं मिलेगा।"

"हाँ, देश क्या है, स्वर्ग है। मैं तो लडाई के बाद सरकार से दस गुना जमीन यहाँ माँग लूँगा और फलों के बूटे लगाऊँगा।"

"लाडी होरां (स्त्री) को भी यहां बूला लोगे ? या वही दूध पिलाने वाली फिरंगी मेम ...."

"चुप रह। यहाँ वालों को शरम नहीं।"

दो - पहर रात हो गई। अंधेरा है। सन्नाटा छाया हूआ हैं। बोघासिंह रगली बिस्कुटों को तीन टीनों पर अपने दोनों कम्बल बिछाकर और लहनासिंह के दो कम्बल और एक वरानकोट ओढकर सो रहा है। लहनासिंह पहरे पर खडा हुआ है। एक आख खाई के मुंह पर है और एक बोधासिंह के दुबले शरीर पर बोधासिंह कराहा।

"क्यों बोधा भाई , क्या है ?"

"पानी पिला दे।"

लहमासिंह ने कटोरा उसके मुँह से लगाकर पुछा - कहो, कैसे हो ?"

पानी पीकर बोधा बोला - "कंपनी छूट रही है, रोम - रोम में तार दौड रहे हैं। दांत बज रहे हैं।"

"अच्छा मेरी जरसी पहन लो।"

"और तुम ?"

"मेरे पास सिगडी है और मुझे गरमी लगती है, पसीना आ रहा है।"

"ना मैं नहीं पहनता ; चारदिन से तुम मेरे लिए ...."

"हाँ, याद आई। मेरे पास दूसरी गरम परसी है। आज सबेरे ही आई है। विलायत से मेमें बुन - बुनकर भेज रही है। गुरु उनका भला करें।" यों कहकर लहना अपना कोट उतारकर जरसी उतारने लगा।

"सच कहते हो ?"

"और नहीं झूठ।" यों कहकर नाहीं करते बोधा को उसने जबरदस्ती जरसी रहना दी और आप खाकी कोट और जीन का कुरता - भर पहनकर पहरे पर आ खडा हुआ।

आधा घण्टा बीता। इतने में खाई के मुँह से आवाज आई "सुबेदार हजारा सिंह"।

"कौन लपटन साहब ? हुकुम, हुजूर!" कहकर सूबेदार तनकर फौजी सलाम करके सामने हुआ।

"देखो, इसी समय धावा करना होगा। मील भर की दूरी पर पूरब के कोने में एक जर्मन खाई है। उसमें पचास से ज्यादा जर्मन नहीं हैं। इन पेडों के नीचे - नीचे दो खेत काटकर रास्ता है। तीन - चार घूमात हैं। जहां मोड है वहा पन्द्रह जवान खडे कर आया हूँ। तुम यहाँ दस आदमी छोडकर सबको साथ ले उनसे जा मिलो। खन्दक छीनकर वहीं, जब तक दूसरा हुक्म न मिले डटे रहो। हम यहाँ रहेगा।

"लपटन साहब था तो मारे गए हैं या कैद हो गए हैं। उनकी वरदी पहनकर कोई जर्मन आया है। सूबेदार ने उसका मुंह नही देखा, मैंने देखा है और बातें की हैं। सौहरा साफ उर्दू बोलता है, पर किताबी उर्दू। और मुझो पीने को सिगरेट दिया है।"

"तो अब ?"

"अब मारे गए। धोखा है। सुबेदार होरं कीचड में चक्कर काटते फिरेंगे और यहां खाई पर धावा होगा। उधर उन पर खुले में धावा होगा। उठो, एक काम करो। पलटन के पैरों के निशान देखते - देखते दौड जाओ अभी बहुत दूर न गए होंगे। सुबेदार से कहो कि एकदम लौट आएं। खन्दक की बात झूठ है। चले जाओ खन्दक के पीछे से निकल जाओ। पत्र तक न खडके। देर मत करो।"

पच्चीस वर्ष बीत गए। अब लहनासिंह न. 77 राइफल्स में जमादार हो गया है। उस आठ वर्ष की कन्या का ध्यान ही न रहा। न मालूम वह कभी मिली थी, या नहीं सात दिन की छुट्टी लेकर जमीन के मुकदमे की पैरवी करने वह अपने घर गया। वहां रैजिमेंट के अफसर की चिट्ठी मिली कि फाऐज लाम पर जाती है, फौरन चले आओ। साथ ही सूबेदार हजारासिंह की चिट्ठी मिली कि मैं और बोधासिंह भी लाम पर जाते है, लौटते हुए हमारे घर होते जाना, साथ ही चलेंगे। सूबेदार का गांव रास्ते में पडता था और सूबेदार उसे बहुत चाहता था। लहनासिंह सूबेदार के यहां पहुँचा।

जब चलने लगे तब सूबेदार बेडे में से निकलकर आया। बोला - "लहना सूबेदारनी तुमकों जानती है, बुलाती है। जा मिल आ।" लहनासिंह भीतर पहुँचा। सूबेदारनी मुझे जानती है? कब से ? रेजिमेंट कॉर्टरों में तो कभी सूबेदार के घर के लोग रहे नहीं। दरवाजे पर जाकर मत्या टेकना कहा। असीस सुनी। लहनासिंह चुप।

"मुझे पहचाना ?"

"नहीं।"

"तेरी कुडमई हो गई - छत् - कल हो गई - देखते नहीं रेशमी बूटों वालासालू - आमृतसर में" भावों की टकराहट से मूर्च्छ खुली। करवट बदली। पसली का घाव वह निकला। "वजीरा, पानी पिला।" उसने कहा था।

स्वप्न चल रहा है। सूबेदारनी कह रही है - मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ, मेरे तो भाग फूट गए। सरकार ने बहादूरी का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है, आज नमक - हलाली का मौका आया है। पर सरकार

ने हम तीमियों की एक धधरिया पलटन क्यों न बना दी जो मैं भी सूबेदारजी के साथ चली जाती ? एक बेटा है। फौज में भरती हूए उसे एक ही बरस हुआ। उसके पीछे चार और हुए पर एक भी नहीं जिया। सूबेदारनी रोने लगी। अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग। तुम्हे याद है, एक दिन तगेवाले का धोडा दही - वाले की दूकान के पास बिगड गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाए थे। आप घोडे की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्ते पर खडा कर दिया था - ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यह मेरी भिक्षा है, तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूं।"

रोती - रोती सूबेदारनी औवरी में चली गई। लहना भी सांसू पोंछता हुआ बाहर आया।

"वजीरासिंह पानी पिला" - उसने कहा था

लहना का सिर अपनी गोद में रखे वजीरासिंह बैठा है। जब मांगता है, तब पानी पिला देता है। आधे घंटे तक लहना चुप रहा, फिर बोला - "कौन ? कीरतसिंह ?"

वजीरा ने कुछ समझकर कहा - हाँ

"भइया मुझे और ऊँचा कर ले। अपने पटट पर मेरा सिर रख ले। वजीरा ने वैसा ही किया।

"हां, अब ठीक है। पानी पिला दे। बस अब के हाड में यह आम खूब फलेगा। चाचा - भतीजा दोनों यहीं बैठकर आम खाना। जितना बडा तेरा भतीजा है, उतना ही यह आम है। जिस महीने उसका जन्म हुआ था, उसी महीने मैने इसे लगाया था।"

वजीरासिंह के आंसू टप - टप टपक रहे थे।

कुछ दिन पीछे लोगों ने अखबार में पढा - फ्रांस और बल्जियम - 68 वी. सूची - मैदान में घावों से मारा - नं .77 सिक्ख राइफल्स जमादार लहनासिंह

2.5 कहानी के तत्वों के आधार पर समीक्षा :-

कथावस्तु :-

कथा का आरम्भ अमृतसर के बाजार में एक लडके और लडकी के मिलन से होता है। बारह वर्ष का लहनासिंह और आठ वर्ष की बालिका दहीवाले के यहाँ, सब्जीवाले के यहाँ, हर कहीं मिलते रहते हैं। लहनासिंह के मन में उस लडकी के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है। इस लडकी को छोडने केलिए वह हर दम पूछता रहता है कि तेरी कुडमाई हो गयी। लडकी हर रोज 'धत।' कह कर दौड पडती है। किन्तु एक दिन बोलती है, "हाँ, हो गयी", लडकी भाग जाती है और लहनासिंह के हृदय को ठेस पहुँचाती है।

पच्चीस वर्ष बीत जाते है। लहनासिंह नं 77 राइफल्स में जमादार हो जाता है। अपनी कर्तव्य - परायणता के कारण वह सूबेदार हजारासिंह का स्नेहपात्र बन जाता है। लहनासिंह छुट्टी पर घर आता है तो द्वितीय विश्वयुद्ध चिढ़ जाता है। सरकार उसे वापस बुला लेती है। सूबेदार हजारासिंह से षत्र पाकर वह रास्ते में उसके घर जाता है।

पच्चीस साल के पहले तेरी कुडमाई हो गयी वाली लडकी अब सूबेदार की पत्नी बन कर रहती है। सूबेदारनी लहनासिंह को पहचानती है और पति सूबेदार और पुत्र बोधासिंह को बचाने की भिक्षा माँगती है।

युद्ध - क्षेत्र में बोधासिंह के बीमार होने पर लहनासिंह उसकी सेवा, करता है और युद्ध में जर्मनों के षडयंत्र से सूबेदार हजारासिंह को बचा कर वह स्वयं घायल हो जाता है।

घायल लहनासिंह की अंतिम घडियों में जीवन की सारी स्मृतियाँ साफ हो जाती है। जन्म - भर की घटनाएँ एक - एक करके सामने आती है। वजीरासिंह से वह अमृतसर की दूकानों पर मिलनेवाली लडकी बाद में सूबेदारिनी होकर पति और पुत्र की जान बचाने की भीख माँगने की बात बताता है। छुट्टियों में जाने पर सूबेदारनी को बताने केलिए कहता है जो उसने कहा था लहनासिंह ने कर दिया।

2.6 पात्र तथा चरित्र - चित्रण :-

उसने कहा था कहानी चरित्र - प्रधान है। इसमें लहनासिंह मुख्य पात्र है। उसके बलिदान के द्वारा उसके आदर्श प्रेम के समन्वय पात्र के रुप में लहनासिंह हमारे सामने आता है। बालक, धीर सैनिक, आदर्श प्रेमी के रुपमें लहनासिंह का चरित्र - चित्रण मर्मस्पर्शी है।

देश की रक्षा में सदा तत्पर रहनेवाले वीर सैनिक, पिता और पुत्र की प्राण - भिक्षा माँगनेवाली सूबेदारनी, और अमृतसर वे विविध पात्र कहानी में दर्शाते हैं।

कथोपकथन :-

उसने कहा था 'कहानी के कथोपकथन बिलकुल नाटकीय विधान में चले हैं जैसे -

'तेरा घर कहाँ है ?'

'मगरे में, और तेरा ?'

'माँझे में ; यहाँ कहाँ रहती है ?'

'तेरी कुडमाई हो गयी ?'

'हाँ हो गयी।'

'कब ?'

'कल ; देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू ?

कथोपकथन जिस प्रकार पात्रोचित होकर पात्रों के चरित्र - चित्रण में सहायक होते हैं और कथा को आगे **बढ़ाने म** सहायक होते हैं। सैनिको के वार्तालाप से देश की रक्षा का विषय पता लगता है। लहनासिंह स्वंय **कहता है, "हाँ, देश क्या है**

स्वर्ग है" वार्तालाप के द्वारा ही जर्मनी जासूस को लहनासिंह पहचानता है। कथा अधिकांश कथोपकथनों के द्वारा चलती है फिरंगी मेम की कथा सैनिकों के वार्तालाय के द्वारा पता चलती है। लहनासिंह और सूबेदारनी के बीच और लहनासिंह तथा वजीरासिंह के बीच कथोपकथन कथा को अग्रसर करने में सहायक होते है। कहानी के वातावरण का चित्रण कथोपकथनों के द्वारा भी हुआ है।

वातावरण :-

कहानी में वातावरण का चित्रण सफलता पूर्वक हुआ है। आरम्भ में अमृतसर की गलियों का वर्णन हुआ है। दूसरा स्थान है युद्ध भूमि। युद्ध में मौर्चो को बनाना, खाई में सैनिकों के जीवन, युद्ध की डोलियों के वर्णन आदि में वातावर' का चित्रण सफलता पूर्वक हूआ है। कहानी में वर्णित युद्ध का वातावरण ययार्थ सा लगा है।

भाषा - शैली :-

उसने कहा था कहानी ऐतिहासिंक था वर्णनात्मक शैली में लिखी गयी है। पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है। कहानी केपात्र पंजाबी है। अतः यत्रतत्र पंजाबी भाषा, मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग हुआ है। संवाद की भाषा पात्रों की मानसिक स्थिति को व्यक्त करती है। कथाकार गुलेरीरजी की शैली में पात्र जीते हैं। भाषा - शैली में गुलेरीजी स्वयं आकर पात्रों के द्वारा कहलाते है - हाँ ; देश क्या है, स्वर्ग है।" चुप रह यहाँ वालों को शरम नहीं। एक - एक अकालिया सिख सवा लाख के बराबर होता है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।

उद्धेश्य

उसने कहा था 'कहानी में एक भारतीय सैनिक के प्रेम के नाम पर किये गये बलिदान की कथा है। अपनी बाल्य - प्रेमिका को दिये हुए वचन के पालन में लहनासिंह आत्म - समर्पण करता है। कामना रहित और त्यागमय निस्वार्थ प्रेम का चित्रण करना कहानी का उद्धेश्य है।

सैनिक सादा कर्मरत होता है। वह बलिदान का प्रतीक है। बाल्य प्रेमिका को दिये हुए वचन के पालन में वह प्राणों का बलिदान भी देता है। यही कहानीकार का उद्धेश्य है।

शीर्षक

उसने कहा था अत्यन्त सार्थक है। सिख बालिका आगे चल कर सूबेदारनी बनती है। जो उसने कहा था लहनासिंह निभाता है। सूबेदार हजारासिंह को बताता है, "घर जाओ तो कह देना कि मुझ से जो उसने कहा था वह मैंने कर दिया। इसी प्रकार वजीरासिंह को पूरी कथा बता कर वह कहता है - उसने कहा था।"

उपसंहार :

उसने कहा था एक उत्तम कोटि की कहानी है। इस कहानी की गणना विश्व की श्रेष्ठतम कहानियों में की जा सकती है।

2.6 चरित्र - चित्रण :-

लहनासिंह

लहनासिंह उसने कहा था कहानी का प्रधान पात्र है। श्री. चन्द्रधरशर्मा गुलेरी ने संकेतात्मक तथा कथोपकथन प्रणाली द्वारा लहनासिंह के चरित का स्वाभाविक विकास किया है। आदर्श प्रेमी धीर सैनिक तथा प्रेम के नाम पर वह अपने प्राणों तक बलिदान देता है।

लहनासिंह पहली बार अमृतसर में बारह साल के लडके के रुप में दिखाई देता है। वहाँ वह आठ साल की लडकी पर मुग्ध होता है। कालगति में उस लडकी को भूल जाता है और वह सेना में भर्ती होकर जमादार बनता है।

लहनासिंह सच्चा योद्धा है। वह सजग होकर मोर्चे पर जर्मन जासूस को पहचानता है और दुश्मनों के आक्रमण का सामना करता है। वह स्वयं कहता है - "एक - एक अकालिया सिखा सवा लाख के बराबर होता है।"

बचपन की प्रेमिका सूबेदारनी बनकर लहनासिंह से पति और पुत्र को युद्धक्षेत्र में बचाने की भीख माँगती है। उसी प्रकार वह सूबेदार हजारसिंह को और उनके पुत्र बोधासिंह को बचाकर बताता है कि जो उसने कहा था कर दिया।

लहनासिंह बडा विनोदप्रिय है। बचपन में एक अपरिचित लडकी से मुस्कराकर कुडमाई हो जानी की बात कह कर उसे छेडता है और विनोद करता है।

जीवनभर लहनासिंह आदर्शपूर्ण रहता है। युद्ध क्षेत्र में वह अपने साथियों की सेवा करता है और अपने अधिकारियों की आज्ञा का पालन करता है। मरते समय भी वह अपने भाई को नही भूलता।

2.7 कहानी का उद्धेश्य :-

उसने कहा था - चन्द्रधरशर्म गुलेरी जी की कहानी है। कहानी के प्रमुख तत्वों में उद्धेश्य भी एक होता है। उद्धेश्य के बिना कोई रचना होती ही नहीं हैं। हरेक रचना सोदेधश्य ही होती है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने लहनासिंह के आदर्श चरित्र को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

लहनासिंह के चरित्र की प्रमुख विशेषता यह है कि अपने वादे को पूरा करने के लिए अपने प्राणों तक त्याग देना। बचपन की एक साधारण घटना की याद दिलाकर सूबेदारनी लहनासिंह से प्रार्थना करती है कि तुम ने बचपन में अमृतसर की गलियों में गाडी के घोडे से मेरे प्राण बचाये। अब मेरे पति और अकेले पुत्र बोधासिंह को बचाना। यह मेरी विनती है। लहनासिंह सूबेदारनी से बिदा लेकर चला जाता है।

सूबेदारनी से लहनासिंह का परिचय पच्चीस साल पहले का है। वह केवल एक महीने भर का है। वास्तव में वह भूल भी गया है।

किन्तु उस ने निश्चय कर लिया है कि सूबेदारनी ने जो कहा था। उसे निभाना है। यह मेरा कर्तव्य है। भयानक शीतलता में बीमार बोधासिंह को सर्दी से बचाने केलिए वह अपना कंबल और कोट भी देता है और कांपता हुआ पहरा देता है। जर्मन के

जाल में जब सूबेदार फंस जाता है तब वह सावधानी और वीरता दिखाकर बोधासिंह और हजारासिंह को बचाता है। कई सिक्ख सैनिक भी इस में बच गये। इस कर्तव्य - पालन में लहनासिंह स्वयं घायल होता है और उस के प्राण भी चले जाते है। वादे को पूरा करने केलिए लहनासिंह ने अपने प्राणों का बलिदान दिया। कर्तव्य पालन की महानता और आवश्यकता तथा नैतिक कृत्यों के पालन की विशिष्टता बताना ही लेखक का उद्धेश्य इस कहानी के लेखन में है। इस उद्देश्य - कथन में उन को बडी - सफलता प्राप्त हुई है।

2.8 शीर्षक की उपयुक्तता :-

श्री. चन्द्रधरशार्मा 'गुलेरी' प्रख्यात कहानीकार है। उन्होंने केवल तीन ही कहानियाँ लिखी। परन्तु हिन्दी कहानी - साहित्य में उन का नाम अमर हो गया है। शीर्षक कहानी के प्रमुख तत्वों में एक होता है। शीर्षक से वास्तव में कहानी का आशय अपने आप स्पष्ट हो जाता है। प्रस्तुत कहानी उस ने कहा था बहुत सार्थक प्रमाणित हुआ है। सूबेदारनी ने लहनासिंह से कहा - मेरे पति और पुत्र की रक्षा करना। तुम ने मुझे बचपन में बचाया। अब इन दोनों को बचाओ। उस ने जो कहा था, उसी के पालन में लहनासिंह ने बडी सजगता दियी। उन दोनों को सदा विपत्तियों से बचाने में तत्पर रहा। किसी से इस के बारे में उस ने कुछ भी नही बताया पर मरण के पहले थे बातें उस ने बडबडायी और सूबेदार से कहा कि सूबेदारनी को पत्र लिखकर बताइये कि उस ने जो कहा था मैं ने पूरा किया। इस का आशय सूबेदार जी भी पूरी तरह समझ नहीं सके। किन्तु कहानी के शीर्षक से पाठक बहुत ही प्रभावित होते है। उन पर शीर्षक स्थायी प्रभाव दिखाता है। कहानीकार को शीर्षक को चुनने में सफलता मिली है।

2.9 कुछ स्मरण रखने योग्यबातें :-

1. श्री. चंद्रधर शर्मा गुलेरी 'हिन्दी के प्रसिद्ध कहानी कार" है।
2. केवल तीन कहानियाँ लिखकर भी वे उत्तम कहानी कार के रुप में स्याति प्राति किया।
3. इस कहानी में युद्ध का वास्तविक चित्रीकरण प्रस्तुत किया गया है।
4. एक प्रेमी के निस्वार्थ प्रेम, आत्मत्याग, शौर्य तथा बलिदान का चित्रण अन्ठे ढंग से किया गया है।
5. यह कहानी फ्लैश - बैक शैली में आगे बढती है।
6. यह एक घटना प्रधान कहानी है।
7. इस कहानी में पर्याप्त कलात्मक सौष्ठव परिलक्षित होता है।
8. लहना सिंह इस कहानी का प्रमुख पात्र है।
9. कर्तव्य पालन में लहना सिंह अपने प्राणों का भी परवाह नही करता।
10. कर्तव्य पालने में उसके बचपन के प्रेम से प्रेरणा मिलती है।

2.10 बोध प्रश्न :-

1. उसने कहा था कहानी का लेखक परिचय दीजिए ?
2. उसने कहा था कहानी की कथा वस्तु प्रस्तुत कीजिए ?
3. कहानी के आवश्यक तत्वों के आधार पर उसने कहा था कहानी की समीक्षा कीजिए ?
4. उसने कहा था कहानी का उद्धेश्य क्या है ?
5. कहानी की विशेषताएँ प्रस्तुत कीजिए ?
6. लहना सिंह का चरित्र - चित्रण कीजिए ?
7. कहानी में चर्चित वातावरण को प्रस्तुत कीजिए ?
8. उसने कहा था कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर अपना मत व्यक्त कीजिए ?

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें :-

1. चर्चित कहानियाँ - सँ. गुलाब यम खान - शबनम पुस्तक महल - कटक
2. हिन्दी कहानी और कहानीकार - प्रो. वासुदेव
3. बृहत निबंध भास्कर - वचन देव कुमार

Sri P.S. Datta Prasad
H.O.D. of Hindi
Hindu College
Guntur

Lesson - 2 (3)

हार की जीत

इकाई की रुपरेखा :-

3.1 उध्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 सुदर्शन - कहानीकार का परिचय

3.4 हार की जीत - कहानी

3.5 हार की जीत - कहानी का साराँश - और विशेषताएँ

3.6 कहानी के प्रमुख पात्रों का चरित्र -चित्रण

3.7 कहानी का उद्धेश्य - शीर्षिक

3.8 कुछ स्मरण रखने योग्य बातें

3.9 बोध प्रश्न

3.10 कुछ उपयोगी पुस्त..

3.1 उद्धेश्य :-

इस इकाई में आप श्री सुदर्शन द्वारा लिखित प्रसिद्ध कहानी 'हार की जीत' का अध्ययन करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप -

1. श्री. सुदर्शन जी का परिचय और उनकी रचनाओं के बारे में जान सकेंगे।
2. युगीन परवेश तथा मानवीय मूल्यों की महानता को जान सकेंगे।
3. मानव जीवन के आदर्श के बारे में आप जान सकेंगे।
4. कहानी कासाराँश और विशेषताओं के बारे में जान पायेंगे।
5. प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण और कहानी के उद्धेश्य के बारे में भी जान सकेंगे।

3.2 प्रस्तावना :-

आप इस इकाई में कहानीकार के विशिष्ट व्यक्तित्व के बारे में जानकारी पायेंगें। हिन्दी कहानी जगत में प्रेमचन्द का स्थान सर्वोपरि है। आप आदर्श और यथार्थ का सम्मिश्रण रुप आदर्शोन्मुख यथार्थ वाद का परिचय दिया है। मानव जीवन के

वास्तविक स्थिति के आधार पर कहानियों का सृजन किया। उसी प्रकार श्री सुदर्शन की कहानियाँ भी मानव जीवन के वास्तविक चित्रण करनेवाले होती है। प्रेमचन्द स्कूल की कहानीकारो में सुदर्शन जी का नाम गौरव के साथ लिया जाता है। यह कहानी सुदर्शन जी की नायी शैली का प्रतितिधित्व करती है। इसमें चरित्रों द्ववारा आत्म - कथन की नई पद्धति अपनायी गई है। यह कहानी हिन्दी कहानी इतिहास में अमर है। इसमें बताया गया है कि आदर्श और यथार्थ के बीच चलनेवाले संधर्ष में अंतिम जीत आदर्श की होती है।

3.3 सुदर्शन - कहानीकार का परिचय :-

हिन्दी साहित्य में कहानी के इतिहास में श्री सुदर्शन जी का नाम बडा गौरव के साथ लिया जाता है। सुदर्शन जी का असली नाम 'बदरीनाथ भट्ट सुदर्शन' है। उनका जन्म सन् 1896 ई में स्यालकोट में हुआ। कहानी के प्रति बचपन से ही उनकी दिलचस्पी थी। प्रेमचन्द की ही तरह वे पहले उर्दू में कहानियाँ लिखते थे। बाद में वे भी हिन्दी में कहानियाँ लिखने लगे।

मानव जीवन के चिरंतन सत्य का उद्घाटन करना उनके कहानियों की विशेषता है। सुदर्शन जी ने अपनी कहानियों के द्ववारा प्रेमचन्द की परंपरा को आगे बढ़ाया। मानव के जीवन के शाश्वत सत्य, आदर्श और मल्यों का अन्वेषण और उनका प्रकटीकरण करना उनकी विशेषता है।

सुदर्शन ने सामाजिक जीवन से संबंधित समस्याओं को लेकर अधिकाँश रचनाएँ की है। उनका दृष्टिकोण भी प्रेमचन्दं की तरह मूलतः आदर्शवादी है। उन्होंने आदर्श और यथार्थ का समन्वय किया है। उन्होंने सामजिक सत्यों का अत्यंत प्रभाव शाली और अनूठे ढंग से उद्घाटन किया है। उनकी कहानियाँ शाँत एवं गम्भीर ढंग से विकसित हुई है। उन्होंने आवश्यकतानुसार संयोग तत्वों का आश्रय लेकर कौतूहलपूर्ण प्रवृत्तियों को खूब उभारा है। सरलता और सहजता उनकी कहानियों की विशेषतायें है। वातावरण की सृष्टि और चरित्र - चित्रण में स्वाभाविकता है।

सुदर्शन जी की भाषा वेगभई, परिमार्जित, सुगठित तथा व्यावहारिक है। वाक्य विन्यास सरल है। लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग अधिक हुआ है। उर्दू शब्द तथा बोलचाल के शब्द भी प्रयुक्त हुए है।

श्री. सुदर्शन जी के दस कहानी - संग्रह प्रकाशित हुए है -

1. सुदर्शन सुधा	2. सुदर्शन सुमन	3. पुष्पलता	4. तीर्थयात्र	5. गल्पमंजरी
6. सुप्रभात	7. चारकहानियाँ	8. नगीना	9. परिवर्तन और	10. पनघट

3.4 हार की जीत - कहानी :-

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाकते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोडा देखकर आताथा। भगवद्भजन से जो समय बचता, वह घोडे को अर्पण होजाता। वह घोडा सुन्दर था, बड़ा बलवान इसके जोड का घोडा सारे इलाके में नथा। बाबा भारती उसे सुलतान कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते खुद दाना खिलाते और देख - देख कर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रुपया, माला असबाव, जमीन आदि अपना सबकुछ छोड दिया था, यहाँ तक कि उन्हे नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मै सुलतान के

बिना नही रह सकूंगा", उन्हें ऐसी भ्रांति सी होगई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते ऐसा चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो। जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ दस मील का चक्करन लगालेते उन्हे चैन न आता।

खडगसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते - होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। एक दिन दो पहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा, "खड्गसिंह क्या हाल है ?"

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

"कहो इधर कैसे आगए ?"

"सुलतान की चाह खींच लाई"।

"विचित्र जानवर है ; देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगें।"

"मैने भी बडी प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।"

"कहते है, देखने में भी बडा सुन्दर है।"

"क्या कहना, जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर असकी छवि अंकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।"

बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोडा दिखाया घमण्ड से, खड्गसिंह ने घोडा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोडे देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोडा उसकी आँखें से कभी न गुजरा था। सोचने लगा - भाग्य की बात है। ऐसा घोडा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधू को ऐसी चीजों से क्या लाभ ? कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खडा रहा। इसके पश्चांत उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या देखा ?"

बाबाजी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रसंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोडे को खोलकर बाहर गए। घोडा वायु वेग से उडने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबलथा और आदमी थे। जाते - जाते उसने कहा, "बाबाजी मैं यह घोडा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती थी। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीतगए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाई मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोडे के शरीर को देखते ; कभी उसके रंग को और मन में फूला न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आयी "ओ बाबा इस कँगाले की सुनने जाना।"

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोडे को रोक लिया। दखा, एक अपाहिजवृक्ष की छाया में पडा कराह रहा है। बोले, "क्यों, तुम्हें क्या कष्ट हैं ?"

अपाहिज ने हाथ जोड कर कहा "बाबा। मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया करो। राम बोला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोडे पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।"

"वहाँ तुम्हारा कौन है ?"

"दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। मै उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोडे से उतर कर अपाहिज को घोडे पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड कर धीरे - धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका सा लगा और लगाम हाथ से छूट गयी। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा अपाहिज पीठ पर तन कर बैठा है - और घोडे को दौडाये लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड्गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात कुछ निश्चय के पूरे बल से चिल्लाकर बोले "जरा ठहर जाओ"।

खड्गसिंह ने आवाज सुनकर घोडा रोक लिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा "बाबा जी, यह घोडा अब न दूँगा।"

"परन्तु एक बात सुनते जाओ।"

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसको ऐसी आँखें से देखा जैसे बकरा कसाई की और देखता है और कहा, "यह घोडा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परन्तु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार नकरना नही तो मेरा दिल टूट जायेगा।"

"बाबा आज्ञा दीजिए। मैं आपका दास हूँ। केवल यह घोडा न दूँगा।"

"अब घोडे का नाम न लो। मै तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकटन न करना।"

खड्गसिंह का मुह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोडे को लेकर यहाँ से भागना पडेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा कि "इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।" इससे क्या प्रयोजन सिध्द हो सकता है ? खड्गसिंह बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंन्तु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँख बाबा भारती के मुख पर गदा दी और पूछा, "बाबा जी, इससे आपको क्या डर है ?"

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता लग जाए तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे। यह कहते - कहते उन्होंने सुलतान की ओरसे इस तरह मुँह मोड लिया जैसे उनका उससे कभी संबंध ही नही रहा हो।

बाबा भारती चले गए, परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था कैसे ऊँचे विचार है, कैसा पवित्र भाव है। उन्हें इस घोडे से प्रेम था; इसे देखकर उनका मुख फूल की तरह खिल जाता था। कहते थे "इसके बिना मै न रह सकूँगा।" इसकी रखवाली में कई रात सोए नहीं। भजन - भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक न दिखाई पडती थी। उन्हें केवल यह ख्यालथा कि कही लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नही देवता है।

रत्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नटा था। आकाश में तारे टिम - टिमा रहे थे। थोडी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। वह धीरे - धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पडा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकल कर सावधानी से फाटक बन्द कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परन्तु फाटक पर पहुँच कर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथही घोर निराशा ने पैरों को मन - का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गये।

घेडे ने स्वाभाविक मेधा से स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौडते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोडे के गले से लिपट कर इस प्रकार रोने लगे मानों कोई पिता बहुत दिन के बाद बिछुडे हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार - बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार - बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते और कहते - अब कोई गरीबों की सहायता से मुह न मोडेंगे।

थोडी देरबाद जब वह अस्तबल से बाहर निकले, तो उनकी आँखों से आँसूबह रहे थे। थे आँसू उसी भूमि पर ठीक उसी जगह गिर रहे थे, जहाँ बाहर निकलने के बाद खड्गसिंह खडा होकर रोया था।

दोनों के आँसूओं का उसी भूमि की मिट्टी पर परस्पर मिलाप हो गया।

3.5 हार की जीत कहानी का साराँश :-

बाबा भारती एक संत और साधु - पुरुष थे। वे सहृदय, सरल, और दीन - दुखी लोगों पर दया दिखाने वाले महात्मा थे। उनहें दुनिया के प्रति सच्ची विरक्ति थी। शहर से दूर के एक छोटे मंदिर में भगवान के भजन में जीवन बिता रहे थे। उन्हे अपने घोडे पर बडा प्रेम था। घोडा भी बडा सून्दर और मजबूत था। बाबा उसे सुलतान कहकर पुकारते थे और स्वयं उसकी देख - रेख किया करते थे। हर दिन शाम को सुलतान पर चढ़कर आठ - दस मील चक्कर लगाने की आदत उन्हें थी।

उसी इलाके में खड्गसिंह नामक डाकू था। उसका नाम सुनकर लोग डरजाते थे। उसको जो चीज पसंद होती है। उसे किसी प्रकार हडप लेता था। उसने सुलतान की प्रशंसा सुनी और एक दिन वह बाबा के पास आया। खड्गसिंह ने बाबा से घोडे को देखने की इच्छा प्रकट की। 'सुलतान' को देखकर खड्गसिंह विस्मित होजाता है। खड्गसिंह ने सोचा कि विरक्त साधू को ऐसे उत्तम घोडे की जरुरत क्या है ? उसने बाबा से कहा कि मै यह घोडा आप के पास न रहने दूँगा। बाद वह चला गया।

खड्गसिंह की बातें सुनकर बाबा भारती डर गये। वे अपने घोडे को प्राणों से ज्यादा प्यार करते थे। उन्हें रात को नींद नही आती थी। तब से बाबा अस्तबल की रखबाली करने लगे। कुछ महीने बीत गये और बाबा खड्गसिंह की बाते भूल गये।

एक दिन शाम के समय में बाबा भारती अपने घोडे पर सवार होकर धूम रहे थे। मार्ग में उनको एक अपाहिज दिखाई पडा। उसने बाबा से प्रार्थना की कि, मुझे 'रामबोला' जाना है। वह यहाँ से तीन मील की दूर पर है। मै पैदल नही जा सकता। कृपा करके आप मुझे अपने घोडे पर बिठा करके ले जाइये। मै दुर्गादत्त वैद्य का सौतेला भाई हूँ। मुझ पर कृपा कीजिए।

बाबा के दिल में दीन दुखी लोगों पर करुणा थी। उन्होंने उस अपाहिज को घोडे पर बिठाया और स्वयं लगाम पकड कर धीरे - धीरे चलने लगे। कुछ ही क्षणों के बाद वह अपाहिज घोडे पर तनकर बैठा और घोडे को दौडाते लिए जा रहा था। बाबा अश्चर्य चकित होकर देखता है। वह डाकू खड्गसिंह था। बाबा जी खड्गसिंह से बोले - मैं फिर तुम से अपना घोडा नही माँगूँगा। किन्तु यह बात किसीसे मत कहना। क्योंकि लोग गरीबों पर विश्वास नही करेंगे।

बाबा भारती की बातें सुनकर खड्गसिंह अवाक् रह गया। बाबा की धर्म - बुध्दि और करुणा से वह प्रभावित हो जाता है। बाबा को देवता समझने लगा। डाकू को अपनी हीनता मालूम होजाती है। उसी दिन रात को डाकू खड्गसिंह घोडे को लेकर बाबा के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। उसने अस्तबल के फाटक को खोलकर घोडे को उसके स्थान पर बाँध देता है। फाटक को बंद करके वह चुपचाप वहाँ से चला जाता है। उसमें मानसिक परिवर्तन आया था।

रात के चौथे पहर में बाबाजी अपनी झोंपडी से बाहर आये। स्नान करने के बाद किसी दैवी प्रेरणा से वे अस्तबल की ओर बढे। घोडे ने अपनी सहज मेधा से मालिक के चरणों की ध्वनी पहचानी और जोर से हिनहिनाया। बाबा विस्मय से अंदर गये तो घोडा दिखाई पडा। उनको बिछुडे हुए पुत्र से मिलने का सा आनंद प्राप्त हुआ। बाबा कहने लगे कि अब लोग गरीबों की सहायता करने से मुँह नही मोडेंगे। उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। खड्गसिंह की आँसू भी वही गिरे थे। इनकी आँसूओं से वह भूमि पवित्र होगयी।

3.6 कहानी की विशेषताएँ :-

श्री. सुदर्शन जी की यह कहानी कला की दृष्टि से उत्तम मानी जाती है। इसकी कथा - वस्तु सरल और संक्षिप्त है। उत्तम आदर्श से यह पावन बनगई है। आदि से अंत तक कथा - वस्तु में रोचकता भरी पडी है। इसके संवाद संक्षिप्त कथा गमन में सहायक तथा पात्रें के चरित्रों की विशेषताएँ प्रकट करने वाले है। इसमें दो ही पात्र हैं। बाबा भारती और डाकू खड्गसिंह। बाबा भारती धर्मात्मा, सरल हृदय और विरागीथे। संतों के सरल स्वभाव का वे सजीव प्रतिनिधि है। उनकी बातों का प्रभाव भयानक डाकू खड्गसिंह पर भी पडता है। डाकू अपने किये पर पछताकर घोडे को फिर बाबा के अस्तबल में बाँधकर चला जाता है। दोनो पात्रों का चरित्र - चित्रण एक उत्तम आदर्श पर आधारित है। भाषा और शैली भी कहानी के विषय - प्रतिपादन में अनुकूल रहे

है। सरल संस्कृत तत्सम शब्दों से पूर्ण भाषा कहानी के प्रभाव को बढ़ाती है। आदर्श जीवन और सिध्दाँतों के द्ववारा दुष्टों को भी बदलना और सन्मार्ग पर लाना सज्जानों का लक्ष्य होता है। बाबा भारती का सरल जीवन तथा यह कथन - तुम्हारे आचरण से गरीबों पर लोगों का विश्वास नही रहेगा, भयानक डाकू के मन को भी बदल देता है। हमेशा अधर्म पर धर्म अन्याय पर न्याय की जीत जरुर होती है। संत सज्जनों की हार में भी अंत में जीत होती है। इस उन्नत आदर्श की प्रतिष्टा कहानी का मूल - उध्देश्य है। इस में लेखक सुदर्शन सफल हुए है। प्रस्तुत कहानी हिन्दी साहित्य की एक उत्तम कहानी है।

3.6 कहानी के प्रमुख पात्रों का चरित्र - चित्रण :-

बाबा भारती का चरित्र - इचत्रण :

बाबा भारती हार की जीत नामक कहानी का प्रधान पात्र है। वे सारे सद्गुणों के प्रतिरुप है। बाबा भारती एक सज्जन, विरागी, साधुपुरुप और कृपालू है। हमेशा दीन, दुःखी, गरीब लोगों की रक्षा करने में तत्पर रहते है। लेखक स्वयं गरीब लोगों की रक्षा करने में तत्पर रहते है। लेखक स्वयं बाबा के बारे में कहते है - उन्हे नगर के जीवन में भी धृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे से मंदिर में रहते थे। और भगवान के भजन में अपना समय बिताते थे। परंतु बाबाजी को भी एक कमजोरी थी कि वे अपने घोडे सुलतान को अत्यधिक प्यार करते थे।

वे अपने घोडे सुलतान को अपने पुत्र के समान प्यार करते थे। वे उसे खुद दाना खिलाते और देख - देखकर प्रसन्न होते थे। उनमें एक भ्रॉंति पैदा हो गई कि मैं सुलतान के बिना रह नही सकता। हर दिन संध्या - समय उस पर सवार होकर आठ - दस मील चक्कर लगाया करते थे। उस इलाके का डाकू खड्गसिंह ने सुलतान को देखकर उसे अपना बना लेने का निश्चय करता है। इस विषय को बाबा के सामने भी प्रकट करता था। तब बाबा बहुत डर गये और रात को नही सोते थे। उस की रखवाली में राते बिताने लगे। सुलतान पर बाबा का प्रेम इतना अधिक था।

यही बाबाजी अपने मन को एक ही क्षण में बदल लेते है। अपाहिज के रुप में जब खड्गसिंह उनके घोडे को लेजाता है तब वे उस पर विरक्त हो जाते है। खड्गसिंह से वे कहते है कि अब यह घोडा तुम्हारा हो चुका है। केवल एक प्रार्थना करता हूँ कि इस घटना को किसी से नही कहना। इसे वे जानते तो गरीबों पर उनका विश्वास नही रहेगा। इन शब्दों से बाबा भारती की उदात्तता मालुम होती है।

बाबा भारती के कथन का प्रभाव डाकू खड्गसिंह पर भी पडता है। वह स्वयं घोडे को फिर बाबा के अस्तबल में बाँधकर चला जाता है। डाकू खड्गसिंह पश्चात्ताप से आँसू बहाता है। अपने को पाकर बाबा भारती बहुत प्रसन्न होते है। जैसे बिछुडे हुए पुत्र को फिर पा लिया हो। अब उन्हें मानवता पर विश्वास पहले से दृढ हो गया।

बाबा भारती का चरित्र उज्वल, भव्य तथा सब के लिए आदर्श है। इस प्रकार श्री सुदर्शन जी प्रस्तुत कहानी हार की जीत में बाबा भारती के चरित्र के द्ववारा मानवता पर प्रकाश डाला है।

खड्गसिंह का चरित्र - चित्रण .

'हार की जीत' नामक कहानी में खड्गसिंह एक प्रधान पात्र है। उस इलाके में वह एक प्रसिद्ध डाकू था। उसका नाम सुनकर लोग डर से काँप जाते थे। जिस इलाके में बाबा भारती रहते थे। खड्गसिंह भी उसी इलाके में रहता था। अपने इलाके की सभी अच्छी चीजों पर वह अपना अधिकार जमाना चाहता था।

बाबा भारती का घोडा सुलतान बहुत सुन्दर तथा मजबूत था। उसकी प्रशंसा लोगों के द्वारा सुनकर डाकू खड्गसिंह बाबा भारती के आश्रम में पहुँचता। सुलतान को देखकर खड्गसिंह आश्चर्य चकित हो गया। ऐसा घोडा उसने कभी नही देखा। उसने बाबा से स्पष्ट कहा बाबाजी, यह घोडा मै आपके पास रहने नही दूँगा। बुराई कहने में उसे संकोच होता ही नही था। यह उसकी बातों से स्पष्ट हो जाता है।

खड्गसिंह वंचक और कपटी था। एक दिन वह अपाहिज का अभिनय करते हुए एक पेड की छाया में पडा कराहने लगा। उसी समय बाबा भारती उसी मार्ग से गुजर रहे थे। खड्गसिंह (अपाहिज) ने हाथ जोडकर बाबा से कहा मुझे रामबोला तक जाना है। मैं पैदल जा नही सकता। मैं वैद्य दुर्गादत्त का सौतीला भाई हूँ। मुझ पर कृपा करके अपने घोडे पर विठाकर वहाँ तक ले जाईये। भारती सरल स्वभाव के थे। उसकी बातों को सच मानकर अपाहिज को घोडे पर बिठाकर स्वयं लगाम पकड कर पैदल जाने लगे। कुछ ही क्षणों में वह घोडे पर ठीक बैठकर उसे दोडाकर ले जाने लगा। इस घटना से डाकू खड्गसिंह की वंचकता और कपट व्यक्त होती है।

इस दुनिया में कोई भी आदमी जन्म से ही वंचक और कपटी नही होता। कारणों के द्वारा मानव ऐसा बन जाता है। इसी प्रकार खड्गसिंह के दिल में भी मानवता के बीज थे। घोडे को लेजाते समय बाबा ने उससे कहा - यह घोडा अब तुम्हारा हो चुका है। परंतु खड्गसिंह केवल एक प्रार्थना करता हूँ कि इस घटना को किसी और के सामने प्रकट न करना। इसका पता लोगों को लग जायेगा तो वे गरीबों पर विश्वास करना छोड देंगे।

बाबा की बातों का प्रभाव खड्गसिंह पर पडा। डाकू बाबा को देवता समझने लगा। उसका दिल बदल गया। उसी रात अंधेरे में उस घोडे को ले जाकर बाबा के अस्तबल में बाँधकर चला गया। तभी उसके दिल को शाँति मिली। वह डाकू भी मानवता से परिपूर्ण आदमी बनगया।

खड्गसिंह के चरित्र में हुए परिवर्तन को लेखक ने बडी सावधानी एवं सहजता से चित्रण किया।

3.7 हार की जीत कहानी का उद्धेश्य :-

हार की जीत श्री सुदर्शन जी की प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी में आदर्शवाद को प्रधानता मिली है। भारतीय साहित्य में हमेशा धर्म, नीति, न्याय और सत्य की विजय की प्रतिष्ठा होती है। मानवीय दुर्ब लताओं के यथार्थ चित्रण के साथ साथ अंत में धर्म, नीति न्याय और सत्य की जीत को अंकित करना ही भारतीय साहित्य की विशेषता रही हैं। प्रस्तुत कहानी में भी आदर्म और मानवीय गुणों को महत्व दिया गया है।

बाबा भारती अपने घोडे को अपने पुत्रवत् प्यार करते थे। विरक्त साधू होने पर भी घोडे पर ममता दिखाते है। उस पर सवार होकर प्रसन्न होते थे। इस घोडे को उनके हाथों से डाकू खड्गसिंह चुराकर ले गया। बाबा भारती के दिल को भारी धक्का लगा। एक प्रकार बाबा हार गये। परंतु कुछ ही क्षणों में अपने दुःख को भूल गये। उन्हें और एक चिंता सताने लगी की खड्गसिंह ने अपाहिज की भाँति अभिनय करके उन्हें धोका दिया। यह सचाई सब को विदित होगी गरीबों और अपाहिजों पर दया दिखाने में संकोच करेंगे और उन पर उनका विश्वास नही रहेगा। इसी को बाबा खड्गसिंह को बताकर इस घटना को छिपाने की प्रार्थना करते है।

खड्गसिंह पर बाबा की बातों का प्रभाव पडा। वह उन्हें मानव के रुप में देवता समझने लगा। डाकू धर्म के सामने हार गया। एक रात अंधकार में बाबा के अस्तबल में चुपचाप घोडे को बाँध कर वह चला गया। डाकू को अपने पराजय में भी प्रसन्नता का अनुभव प्राप्त हुआ। इस कहानी का प्रधान उद्धेश्य हार में भीजीत अर्थात् अधर्म और अन्याय पर धर्म तथा न्ययाय की जीत को दिखाना है। लोगों में अन्याय क्रे प्रति जुगुप्सा और न्याय के प्रति आस्था की प्रतिष्ठा इस कहानी के द्वारा लेखक ने की है। इसमें कहानीकार पूरी तरह सफल हुए है।

शीर्षिक :

हिन्दी साहित्य में कहानी के इतिहास में श्री सुदर्शन जी का नाम अत्यंत गौरव के साथ लिया जाता है। सुदर्शन जी बडे अनुभवी कहानीकार है। कहानी कला की दृष्टि से उनकी कहानियाँ श्रेष्ट समझी जाती है। कहानी के आवश्यक तत्वों में शीर्षिक का भी अपना विशिष्ट स्थान है। प्रस्तुत कहानी हार की जीत में बाबा भारती अपने घोडे की रक्षा डाकू खड्गसिंह से करने में विफल होते है। इसमें बाबा भारती हार जाते है। वे औरैक प्रकार से डाकू खड्गसिंह पर विजय पाते है। बाबा की धार्मिकता और सत्य - निष्टता डाकू खड्गसिंह पर अमिट प्रभाव डालता है। भयानक डाकू अपनी बुराई के प्रति दुःखी होता है। बाबा के कथन को तुम्हारे आचरण से लोगों के दिल में गरीबों पर विश्वास नही रहेगा। वह सत्य ही है। घोडे को फिर अस्तबल में बाँधकर वह चैन लेता है। तभी वह प्रसन्नता का अनुभव करता है। वह भी धर्म के समक्ष हार जाता है। पर इस हार में भी उसे जीत सा संतोष मिलता है। इस प्रकार यह शीर्षिक हार की जीत सभी दृष्टियों से सफल है। इसमें भी लेखक सुदर्शन जी ने अपनी चतुरता दिखाई है।

3.8 कुछ स्मरण रखने योग्य बातें :-

1. सुदर्शन हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानीकार है।
2. उनका पूरानाम श्री बद्रीनाथ भट्ट "सुदर्शन" है।
3. सुदर्शन ने समाजिक जीवन से संबधित सम्स्याओं को लेकर अधिकाँश रचनाएँ की है।
4. उनका दृष्टिकोण भी प्रेमचंद की तरह मुलतः आदर्शवादी है।
5. हार की जीत में बाबा भारती और डाकू खड्गसिंह की कहानी है।
6. बाबा भारती एक साधु सज्जन था।
7. बाबा जी अपने घोडे सुलतान को अपने पुत्र के समान प्यार करते थे।

8. उस इलाके का डाकू खड्गसिंह ने सुलतान को देख कर उसे अपना बना लेने का निश्चय किया।
9. डाकू खड्गसिंह एक दीन अपाहिज रुप ने बाबा भारती को धोका देकर घोडे को लेजाता है।
10. बाबा के उन्नत और उदार ष्यक्ति त्व के कारण डाकू खड्गसिंह में परिवर्तन आजाता है।
11. आधी रात के समय डाकू खड्गसिंह घोडे को बाबा के आश्रम में बाँधकर चुपचाप चला जाता है।
12. इससे बाबा भारती को मानवता विश्वास पहले से दृढ होगया और सोच लेता है कि अब कोई भी गरीबों की सहायता से मुह न मोडेंगे।
13. इस कहानी के द्वारा श्री सुदर्शन जी ने यह साबित किया था कि अधर्म और अन्याय पर धर्म और न्याय की जीत जरुर होती है।

3.9 बोध प्रश्न :-

1. 'हार की जीत' कहानी का लेखक परिचय दीजिए।
2. 'हार की जीत' कहानी की कथावस्तु प्रस्तुत कीजिए।
3. 'हार की जीत' कहानी की विशेषताएँ लिखिए।
4. 'हार की जीत' कहानी का उद्धेश्य क्या है।
5. कहानी कला के आवश्यक तत्वों के आधार पर हार की जीत कहानी की समीक्षा कीजिए।
6. बाबा भारती का चरित्र - चित्रण कीजिए।
7. डाकू खड्गसिंह का चरित्र - चित्रण कीजिए।
8. हार का जीत कहानी की शीर्षिक की सार्थकता पर अपना मत व्यक्त कीजिए।

3.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें :-

1. चर्चित कहानियाँ - गुलाम यम खान शबनम पुस्तकमहल , कटक
2. हिन्दी निबंध - राजहंस प्रकाशन
3. हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास - ए. गुलाबराय

Sri R. Bhaskara Rao

Lesson - 2(4)

चीफ की दावत

- भीष्म साहनी

इकाई की रुपरेखा :-

4.1 उद्धदेश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 भईष्म साहनी - लेखक का परिचय

4.4 चीफ की दावत - कहानी का सारांश

4.5 चीफ का दावत - कहानी की विशेषताएँ

4.6 कहानी के प्रमुख पात्रों का चरित्र - चित्रण

4.7 कहानी का उद्धेश्य

4.8 कुछ स्मरण रखने योग्य बातें

4.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.1 उद्धदेश्य :-

'चीफ की दावत' कहानी संबंधित इस इकाई को पढकर छात्र नवीन कहानी के प्रमुख कहानीकार श्री भीष्मसाहनी जी के बारे में जान सकेंगे।

'चीफ की दावत' कहानी के सारंश का परिचय इस इकाई में आपको मिलेगा।

'चीफ की दावत' कहानी की विशेषताओं का समग्र विवरण आपको इस इकाई में मिलेगा।

'चीफ की दावत' कहानी में प्रमुख पात्र शामनाथ और उसकी माँ का चरित्र - चित्रण और विशेषताओं के बारे में विवरण पूर्वक जान सकेंगे।

चीफ की दावत कहानी के उद्धदेश्य के बारे में समग्र विवरण आप इस इकाई के द्वारा परिचित होंगे।

4.2 प्रस्तावना :-

'चीफ की दावत' कहानी मध्यवर्गीय परिवार की एक सजीव कहानी है। नवीन युग के हिन्दी कहानी - कार के रुप में प्रसिदध श्री भीष्म साहनी पात्रों का यथार्थ वादी चित्रण और मानवीय सम्बन्धों को प्रस्तुत करते हैं। भीष्म साहनी जी और

उनकी प्रमुख कहानी 'चीफ की दावत' दोनों ही हिन्दी में बहु - चर्चित हुए। इस कहानी में आधुनिकता के नाम पर मनुष्य का स्वार्थ दीख पडता है। मनुष्य का स्वार्थ उसे नीच इन्सान बना देता है। इस कहानी में भीष्म साहनी जी ने बेटे की स्वार्थपरता और माता के विशाल हृदय का परिचय दिया है। भीष्म साहनी मध्य वर्ग के लोगों के प्रति सहानुभूति रखते हैं। इसलिए इस कहानी में मध्यवर्गीय की आशा के व्दारा पात्र चित्रण किया। माँ के प्यार को न समझने वाले शामनाथ के स्वार्थ की कहानी ही 'चीफ की दावत'।

इस इकाई को पढने से आप को 'चीफ की दावत' कहानी की संपूर्ण आलोचना प्राप्त हो जायेगी।

भीष्म साहनी - कहानी कार का परिचय :-

हिन्दी साहित्य जगत में सुप्रसिद्ध्ध कहानीकार भीष्म साहनी प्रेमचन्द की परंपरा में आनेवाले प्रमुख लेखक हैं। आप अपने साहित्य में आस्था ईमानदारी और प्रामाणिकता के साथ यथार्थ को व्यक्त करनेवाले हैं। प्रगतिवादी रचनाकार भीष्म साहनी की कहानियाँ हिन्दी साहित्य की स्वर्ण निधि है। इनकी कहानियाँ मानव की समस्याओं और सामाजिक विलम्बनाओं से युक्त होती है।

प्रगतिशील लेखक संघ और अन्य संस्थाओं से जुडे होते हुए भी भीष्म साहनी की कहानियाँ मुक्त विचारों से और स्वतन्त्र चिंतन से युक्त हैं।भीष्म साहनी की कहानियों की परिस्थितियाँ घटनाओं, पात्र, सबकुछ वास्तव जीवन का संचा चित्र उपस्थित करते हैं। भीष्म साहनी की कहानी 'नीली आँखे प्रेमचन्द के हंस पत्रिका में मुद्रित होते ही ये बहु चर्चित हुए। उसके बाद हिन्दी साहित्य में 'चीफ की दावत' द्वारा साहनी जी बहुचर्चित हुए।

भीष्म साहनी का जन्म 8 - 8 - 1915 को रावलपिंडी में हुआ था। आपने लाहौर के गवर्नमेंट कालेज से अंग्रेजी में एम. ए. पास किया। कुछ वर्ष दिल्ली में अध्यापन का काम किया। आप आफ्रो - एशियाई लेखक संध और साहित्य अकादमी के शीर्ष पदों पर रहे। उनके प्रमुख कहानी संग्रहों में 'भाग्यरेखा' 'पहला पाठ', 'पटरियाँ', 'भटकती राख', 'शोभायात्रा' और वाङ्चू आदि प्रसिद्ध हैं। यादें सागभीट, मौका परस्त, कुछ और साल इनकी लोकप्रिय कहानियाँ है।

'तमस' भीष्म साहनी की अद्वितीय उपन्यास है। तमस को 1975 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। साहनी जी की कहानियों में आस्था, ईमानदारी, यथार्थ और जीवन मूल्यों में विश्वास स्पष्ट रुप में देखने को मिलते हैं। यथार्थ परक कहानियों में भी आदर्श का प्रोत्साहन साक्षात्कार होता है। भारतीय समाज में बदलते हुए मानवीय सामाजिक और आर्थिक संघर्षों को सहज रुप से प्रस्तुत किया है। 'चीफ की दावत' अंग्रेजी में 'The Boss Came to Dinner' नाम से अनुवाद किया गया है।

4.4 'चीफ की दावत' - कहानी का सारांश :-

चीफ की दावत कहानी में शामनाथ और उसकी माँ प्रमुख पात्र हैं। मिस्टर शामनाथ बहुत बडे अफसर हैं। शामनाथ के घर में आज बडी दावत होनेवाली है। नाथ जी के बडे अमेरिका साहब और उनके मेम के साथ और भी प्रमुख प्रतिष्टित साहब आनेवाले हैं। पति और पत्नी मेहमानों के स्वागतार्थ अत्यन्त उत्साह से व्यक्त हैं। उस दिन सुबह से ही घर में सब तरह की साज - सज्जा चलरही है। शाम को होने वाले दावत में शराब पीना - पिलाना भी चलनेवाला है। उनके घर में बेकार पडे सामान

अल्मरियों और खटियों के नीचे छिपाये जा रहे हैं। शाम होते होते नाथ जी और उसकी पत्नी का तनाव बढ़ जाता है। सारी तैयारियों के बाद अचानक उनके सामने सब से बडी समस्या आती है।

वह समस्या है कि शामनाथि जी के माताजी के बारे में। माँ तो बूढी है वे बडे लोगों के प्रत्येक - पद्धतियों को नही जानती। प्राचीन खयालातों की माँ कहीं उन मेहमानों के सामने कुछा गडबड न कर बैठे। इसी बात के विचार से शामनाथ व्याकुल हो रहे हैं। लेकिन माँ ने अधिक परिश्रम करके और गहने बेचकर शामनाथ की पढ़ाई पूरी करवायी है। शामनाथ और उनकी पत्नी माताजी को कहीं बाहर भेजने की बात सोचते हैं। और ये भी आलोचना करते हैं कि - कमरे में रखकर बन्द करेंगे। उन्हे इस प्रकार डर लगता है कि माँ सो जाकर खर्राटें लेने लगी और साहब ने उन्हे सुन लिया तब क्या होगा ?

अनेक आलोचनाओं के बाद सोच - विचार कर यह निश्चय लिया है कि माँ तब तक बरामदे में बैठी रहे जब तक बैठक में शराब का दौर चले और तब गुसलखाने के रास्ते से बैठक में चली जाए जब साहब लोग बरामदे में खाना खाने आएँ। इसी आलोचना में सफलता पाने केलिए शामनाथ माताजी के वस्त्रों को बदलवाता है। माता जी को कुर्सी पर टांगे नीची करके बैठने की हिदायतें देता है। दावत चलते समय माताजी को नींद और खर्राटों से बचने केलिए समय समय पर सावधान करता है। सफेद सलवार और सफेद कमीज पहनी हुयी माताजी स्वयं खर्राटों से भयभीत और लज्जित होकर कुर्सी पर बैठ जाती है।

माताजी के दिलका धड़खन धक धक कर रहा था। इसके मन में अनपढ होने का भय है। वह भी अपने घर में होनेवाली दावत अच्छी तरह होने केलिए चाहती है। दावत अब शुरु होनेवाली है। बडे साहब, उनकी पत्नी और सारे मेहमान आ पहुँचते हैं। दावत में पीते पिलाते साढे दस बज जाता है। शामनाथ जिस बात पर डर रहा था वही हुआ। माताजी अपनी कुर्सी पर बैठे ही खर्राटे ले रही थी। बडे साहब ने इतने में माता जी को देख ही लिया। बडे साहब शामनाथ जी की माता से सभ्यता और संस्कृति के अनुसार प्यार से हाथ मिलाते हैं। शामनाथ जी के मन में जो शंका है, उसके विपरीत बडे साहब माताजी को देखकर उससे मिलकर बहुत खुश होते हैं।

माताजी से प्राचीन गीत सुनते हैं। माताजी के हाथ की बनी हुयी दस्तकारी देखकर उसको खूब प्रशंसा करते हैं। शामनाथ जी ये सब देखकर बहुत प्रसन्न हो जाता है। शाम जी को बहुत विश्वास है कि बडे साहब उसकी आशा जरुर पूरा कर देंगे। अमेरिका अफसर दावत के समय ही माता से फुलकारी चाहता है। शामनाथ अफसर को उसे सौंप देने का वचन देता है। सारे मेहमनों और अतिभियों की बिदाई के बाद माताजी अपनी कोठरी में बैठ जाती है। दीर्घ आलोचना के साथ उसकी आंखों से आंसू बहने लगते हैं। माता पुत्र केलिए और उसकी भलाई केलिए भगवान से अनेक प्रार्थनाऐं करती है। शामनाथ माताजी के कारण से बहुत खुश हैं। माता के कमरे में आकर उसे गले में लगा लेता है। माता ने आज उसके जीवन में और घर में एक नया उत्साह को भर दिया था।

माता अपने को हरिद्वार भेजने केलिए विनती करती है। लेकिन वह माता को हरिद्वार भेजने केलिए इनकार कर देता है। तुम इस प्रकार हरिद्वार जाती है तो संसार कहे कि बेटा माता को अपने पास रख नही सकता। दुनिया यह भी कहता है कि माता के चले जाने से फुलकारी कौन बनाएगा ? साहब को दिया हुआ वचन कौन और कैसा पूरा कर सकेंगे ? इसी के साथ मेरी तरक्की भी जरुर होगी। बेटे की मुँह से तरक्की की बात सुनते ही माता की आँखें में दिव्य चमक झलकने लगती है। माता बेटे का उज्वलता हमेशा चाहती है। इसलिए माता दिल में ही बेटे के उज्वल भविष्य की कामना करने लगी। और उसी वक्त मता साहब केलिए किसी भी तरह से फुलकारी बनाने का निर्णय लेती है। शामनाथ माता जी को इसके पहले और दावत के समय समस्या के रुप

में चित्रित आलोचना करता है। माताजी पुत्र केलिए कुछ समय के पहले एक परेशानी थी, वही माता इस क्षण में उसकेलिए महत्वंपर्ण बन गयी है।

''चीफ की दावत'' - कहानी की विशेषतायें:-

हिन्दी साहित्य जगत में नवीन युग की कहानी आन्दोलन के प्रमुख कहानीकारों में भीष्म साहनी जी को अग्रगण्य स्थान है। साहनी जी की सभी कहानियों में 'चीफ की दावत' अत्यन्त प्रमुख, प्रसिद्धध और श्रेष्ठ रचना है।

भीष्म साहनी की कहानियों में वथ्य और शिल्प में कही भी बनावटी नहीं दिखाई देता। उनकी कहानियों में सहजता साधारण रुप से दीख पडती है। साहनीजी की कहानियों को पढने से ऐसा लगता है वास्तव में यह घटना घटी है।

कहानी की कथावस्तु को चीफ की दावत शीर्षक रखना सही रुप में घोषित करता है। चीफ (अमेरिका अफसर) एक साधारण भारतीय की दावत को स्वीकार करना ही सम्पूर्ण कहानी का प्राण है।

'चीफ की दावत' कहानी एक कारुणिकं और मर्मस्पर्सी कहानी है। इस कहानी में मानवीय सम्बन्धों और संवेदनाओं की गहरी पहचान का बोध होता है।

'चीफ की दावत' कहानी रचना काल से लेकर अब तक सदुद्देश्य केलिए लिखित यथार्थ परक कहानी है।

चीफ की दावत कहानी में प्राचीन और नयी पीढी की मानसिकता का सुंदर यथार्थ मनो वैज्ञानिक चित्रण हमें इस में देखने को मिलता है। चीफ की दावत कहानी एक वात्सल्य मयी, त्यागशील माता और एक स्वार्थी पुत्र की कहानी है।

धार्मिक दृष्टिकोण की माता की स्थिति पाठक को बहुत आकर्षित करती है।

भारतीयों को विदेशियों के प्रति गलत व्यतिरेक दृष्टिकोण होता है। चीफ की दावत कहानी में साहनी जी ने अमेरिकन चीफ का प्रेमपूर्ण और दयालू स्वभाव को दिखाया। भारतीयों की आलोचनाओं को गलत साबित कर दिया। भीष्म जी ने इस कहानी में कम से कम शब्दों के प्रयोग से अधिक से अधिक व्यजित करने की कोशिश की है।

शामनाथ की माता निराडम्बरता और सहजता का सुंदर प्रतीक है। नाथ की पत्नी आधुनिकता और बनावटीपन का प्रतीक है। नवीन कहानी काप्राणतत्व सांकेतिकता साहनी की कहानी में सहज रुप में दिखाई देता है।

''माता का क्या होगा ?'' एक वाक्य में बिना कुछ कहे ही कहानीकार ने बहुत कुछ कह दिया। बेकार के सामान और पुराने कपडों को अलमारियों में छिपाया जा सकता है लेकिन माता को कहाँ छिपाया जाए ?

चीफ की दावत कहानी की भाषा अत्यन्त प्रभावशाली सीधी और सरल है। कहानी मे कथोपकथन, पात्रों के अनुकूल चित्रण किया है। अप्रयत्न सुंदर सूक्तियों का सृजन और भाषा के प्रयोग में सफलता साहनी जी के व्दारा ही हुयी है।

अफसरों की पार्टी, पीना पिलाना, गपबाजी आदि के द्वारा कहानीकार ने सुंदर वातावरण की सृष्टि की है। शामनाथ उसकी माता, उसकी पत्नी और चीफ सभी पात्र कहानी को आगे बढाते हैं।

चीफ की दावत समग्र रुप से एक सफल श्रेष्ठ और यथार्थ वादी कहानी है।

4.6 कहानी के प्रमुख पात्रों का चरित्र - चित्रण , शामनाथ :-

'चीफ की दावत' कहानी में शामनाथ जी का पात्र प्रमुख और सर्व प्रसिद्ध है। शामनाथ मध्यम वर्गीय परिवार का सदस्य हैं। अपनी माता का इकलौता पुत्र है। शामनाथ अमेरिका अफसर के नीचे काम करनेवाला बहुत आकांक्षीवाला है। शामनाथ मनुष्य की सहज कमजोरियों केलिए हुए आवश्यकता से अधिक स्वार्थी है। शामनाथ अपनी नौकरी में तरक्की पाने के लालच में अपने अमेरिका आफसर एवं कुछ भारतीय उन्नत पदाधिकारियों को अपने घर दावत में बुलाता है। शामनाथ और उसकी पत्नी संस्कृति और पाश्चात्य सभ्यता के प्रति आकृष्ट हैं। घर में दावत होनेवाला है, इसलिए सब कुछ सुंदर और व्यवस्थित दिखाने केलिए प्रयत्न करते हैं। इसी प्रयत्न में अपने धर में पुराने सामान का छिपाने का प्रयत्न करते हैं। पुराने सामान और कपडे को अलमारियों में छिपाते हैं।

घर की सजावट करते समय नाथ जी को अचानक एक समस्या आ पडती है, वह है उसकी माता। शामनाथ पहले पहल माता को घर से बाहर मित्रों के घर भेजना चाहता है। क्यों कि शामनाथ अपनी बूढी माता को किसी के सामने प्रवेश करना नही चाहता। ऐसा करना शामनाथ अपमान और अगौरव समझता हैं। माता को कमरे में रखकर बन्द करने से भी डर लगता है, क्यों कि वह नींद में खर्राटें करती है। शामनाथ ऐसी कुछ आदतों के प्रति क्रोध व्यक्त करते हैं।

शामनाथ माताजी को जल्दी खालेना और ज्लदी सोना नही कहता है। माता को शामनाथ बेकार और झमेला समझता है। इसीलिए पत्नी से कहता है कि - वह भी अंग्रेजी में जिस से माता समझ न जाए कि - यह माता का झमेला तो रहेगा ही। भीष्म साहनी की बातों में शामनाथ को चिन्ता है कि अगर चीफ का साक्षात् माता से हुयी तो वही लज्जित होना पडेगा। इसके व्दारा शामनाथ की नीचकृत्ति और स्वार्थी का पता चलता है। शामनाथ के मन मे माता के प्रति प्यार ही नही है। माता अपनी गहनों को बेचकर पढवायी है, लेकिन बेटा शामनाथ को उसके प्रति कृतज्ञता भाव ही नही है।

अमेरिका अफसर के कहते ही शामनाथ उसे प्रसन्न करने केलिए माता को गाने का आदेश देता है। शामनाथ उसे प्रसन्न करने केलिए माता को गाने का आदेश देता है। शामनाथ एक स्वार्थ पुरुष है। वह अपनी तरक्की और अपने अफसर को खुश करने केसिवा उसके हृदय में और किसी भी बात का महत्व नही है। जिस माता के गंवार होने का क्षोभ उसे कुछ देर पहले तक परेशान कर रहा था, अब वही बात उसकेलिए वरदान बनगयी थी। क्यों कि उसके अमेरिका साहब को गाँव के रहने वाले बेहद पसंद है। दूसरे शब्दों में अफसर की पसन्द और ना पसंद ही उसकेलिए सब से अधिक मायने रखनेवाली बात है। माता के बुढ़ोती की समस्याओं के बारे में उसको कुछ भी परवाह नही है। शामनाथ के स्वार्थ की पराकाष्ठा तब नीचता सी लगती है जब वह नशे में झूमते माता के पास आता है।

शामनाथ उसकी माता को वात्सल्य और प्यार से गले नही लगता बलिक इस खुशी में है कि अब उसकी तरक्की अवश्य होगी। शामनाथ मानवीय संवेदनाओं, भावनाओं, प्यार, सहानुभूति और करुणा से जीवन में दूर रहता है। शामनाथ माता के प्यार को न समझनेवाला स्वार्थी है। मानव सम्बन्धों को कुछ भी मूल्य न देनेवाला निर्दयी और क्रूर हैं। माता के हरिव्दार जाने की बात सुनते ही शामनाथ दुःखित होता है। म ाता को शामनाथ इसलिए हरिव्दार भेजना नही चाहता कि उसके चले जाने से अफसर को फुलकारी कौन बनायेगा ?

माता तुम मुझे धोखा देकर हरिव्दार यूँ चली जाओगी ? मेरा बनता काम बिगडोगी ? तू जानती हो या नही, साहब खुश होगा तो मुझे तरक्की मिलेगी। उसे तरक्की पाना ही अन्तिम ध्येय है। इसलिए सरकारी अफसर को खुश रखना ही उसका अंतिम लक्ष्य है। कहानी में शामनाथ उन भारतीय, चापलूस नौकर पेशे अफसरों का प्रतिनिधित्व करता है, जो काम करके मेहनत करके तरक्की नहीं पाते। इस संदर्भ में शामनाथ की कही यह पंक्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। "तरक्की यूँ ही हो जाएगी ? साहब को खुश रखूँगा तो कुछ करेगा वरना उसकी खिदमक करनेवाले क्या थोडे हैं ?"

शामनाथ के अनेक गुणों को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि वह एक व्यक्ति नही सामाजिक संदर्भों में एक यथार्थ का चित्र है। एक बडे वर्ग का पर्दा फाश इस चरित्र के द्वारा होता है। शामनाथ के बिना कहानी का आगे बढना असंभव प्रतीत होता है।

4.7 शामनाथ की माता :-

हिन्दी साहित्य जगत में सुप्रसिद्धध कहानीकार भीष्म साहनी प्रेमचंन्द की परंपरा में आनेवाले प्रमुख लेखक हैं। प्रगतिवादी रचनाकार भीष्म साहनी की कहानियाँ हिन्दी साहित्य की स्वर्ण निधि है। इनकी कहानियाँ मानव की समस्याओं और सामाजिक विलम्बनाओं से युक्त होती है। भीष्म साहनी पुरानी पीढी के नए कहानीकार हैं। उन्होंने जीवन को सामीप्य से देखा है और उसकी सचाई को समझा है। साहनी जी के साहित्य में सभी पात्र अत्यन्त सहज और बनावटीपन से दूर होते हैं। मनुष्य को मनुष्य के ही रुप में चित्रण करना इनका उद्देश्य है।

चीफ की दावत कहानी में शामनाथ की माता एक प्रमुख पात्र है। माता को कहानी में एक प्रमुख स्थान मिलता है। शामनाथ की माता वात्सल्यमयी और स्नेहमयी लेकिन परम्परावादी पुरानी पीढी की प्रतिनिधि है। फैशन और आधुनिकता के नाम पर मध्यवर्गीय परिवारों में वृद्धों के साथ निर्दयता पूर्ण किये गये व्यवहार पर लेखकने एक करारा व्यंग्य किया है। शामनाथ की माता सरल, अत्यन्त सीधी और वात्सल्यपूर्ण हृदयवाली स्त्री है। माता आधुनिकता को नही जानती है और नही पढी लिखी है। वह कुर्सी पर ठीक से बैठना भी नही जानती। वह अपने अनपढ होने की लज्जा भी महसूस करती है। शामनाथ की माता अत्यन्त धार्मिक और संस्कारोंवाली स्त्री है।

एक समय माता जी स्पष्ट रुप से बेटे से कह देती है - आज मुझे खाना नही खाना है बेटा, तुम जानते हो मांस मछली बने तो मै कुछ नही खाती। शामनाथ की माता अपने इकलौते पुत्र पर आधारित और आश्रित है। उसके हर एक आदेश का उत्तर माता हाँ में देती है। माता अपने पुत्र से बहुत डरती है। बूढी माता अपने पुत्र केलिए अपने सारे जेवर बेच दिए और उसे ऊँची शिक्षा दिलवायी। इन सभी गुणों के साथ माता की सहन - शीलता अत्यन्त प्रशंसनीय है। पुत्र का क्रोध और अविवेक की प्रतिक्रिया के रुप में वह स्वयम को अपराधिनी मानती है। माता अपने अनपढ होने की बात को हमेशा मानती है।

दुनिया की आधुनिकता के इस फैशन में वह फिट नही हो सकती है। वह कहती है - मै न पढी न लिखी बेटा, मै क्या बात करूँगी। तुम कह देना माँ अनपढ है, कुछ जानती समझती नहीं। बेटे के हुकुम को टालने की हिम्मत उसके अंदर नही है। माता गाँव गाँव की रहनेवाली पुराने संस्कारों की और लजीली वृद्धध विधवा है। माता अब बुर्ढोती के कारण क्षीण भी हो गयी है। लेकिन हमेशा किसी की बात को वह नही टाल पाती। माता डरते हुए भी वह सब के सामने एक गीत गा ही देती है। माता के हाथ में सुंदर कारीगिरी भी है।

दावत में अमिरिका अफसर माता की फुलकारी बनाने की कला को देखकर मुग्ध होते हैं। एक ओर प्रेम से भरा हुआ है। दूसरी ओर से आशंका और भय भी कि कही उस से कोई भूल न हो गयी हो। शामनाथ की माता वृद्धधावस्था के कारण दुर्बल हो गयी है। लेकिन अपने बेटे के पदोन्नति की बात सुनते ही वह अत्यन्त आनंद से प्रसन्न होती है।

हरिद्वार जाने की बात भी इस संतोष में भूल जाती है। शामनाथ को खुशी करने केलिए अपनी दृष्टिहीन आँखें और ताकतहीन शरीर से ही फुलकारी बनाने केलिए तैयार हो जाती है। माता अपने बेटे के अफसर बनने और उसके उज्वल भविष्य की बात सुनते ही फिर उसके मन में उत्साह जाग उठता है। चीफ की दावत सारी कहानी में आरंभ से अंत तक शामनाथ की माता पुत्र के उन्नत भविष्यत केलिए ही भगवान से प्रार्थना करती है। माता जी की ममता और निस्वार्थ भाव को साहनी जी ने अत्यंत सुंदर ढंग से निरुपित किया है। माता की सच्छील स्वभाव और सहनशीलता से पाठक का मन उसके प्रति करुणा और सहानुभूति से बरबस भर उठता है।

4.7 कहानी काउद्धदेश्य :-

आज के जीवन में मानव आधुनिकता और फैशन के माहौल में सहज मानवीय गुणों को भी भूलता जा रहा है। मानव की स्वार्थी वृत्ति को मन से दूर करना लेखक का उद्धदेश्य है। इस कहानी में वही माता जी जो बेकार और अवांछित लगती है, पुत्र के स्वार्थ पूर्ति का साधन बन जाती है। भारतीय परिवारों में मुख्य रुप से मध्यवर्गीय परिवारों में वृद्रधों की कितनी दयनीय स्थिति है, इसको कहानीकार ने पाठक का ध्यान आकर्षित करने के जैसे किया है। माता को कुछ भी परवाह न करनेवाला शामनाथ सारे जीवन में उसी की सहायता और ग से आगे बढता है।

वृद्रधावस्था में भी माता बेटे की भलाई ही चाहती है। लेकिन बेटा माता को वृद्रधावस्था में भी अपनी तरक्की का साधन बनाता है। भारतीय परिवारों की सामाजिक जीवन में ऐसे स्वार्थी पुत्रों की कमी ही नही है। कहानीकार कहानी में इस यथार्थ का अत्यंत सुंदर चित्रण दिया है।

भारतीय समाज में शामनाथ जैसे गुणवाले कई लोग हैं। नीच काम करके अपनी तरक्की के अलग अलग गलत रास्ते खोजते रहते हैं। उन्नत अफसरों को खुश करने में ही प्रयत्नशील रहते हैं। साहनी जी यह बात स्पष्ट रुप से कह रहे हैं। भारतीय संस्कार और सभ्यता में जन्म लेकर उसी में पल बढकर आज हम विदेशी और पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षित होते हैं। विदेशियों के विषय में गलत पद्धति से सोचते हैं, यह व्यंग्य तब और भी मुखर हो उठता है जब आशा के विपरीत अमेरिका अफसर बेकार समझने वाली माता को आवश्यकता से अधिक महत्व देने लगता है। पुत्र ये सब देखने के बाद उसी माता को अधिक महत्वपूर्ण से देखने लगता है।

भीष्म साहनी जी की अन्य कहानी 'ढोलक' में भी इसी प्रकार का व्यंग्य दिखाया गया है। कहानी में कहानीकार का उद्धेश्य पुरानी और नवीन पीढी में अंतराल को दिखाना है। भीष्म साहनी जी ने कम शब्दों का प्रयोग करते हुए सहज सरल शब्दावली से कहानी लिखकर सफलता को प्राप्त किया।

4.8 कुछ स्मरण रखने योग्य बातें :-

हिन्दी साहित्य में भीष्म साहनी जी नए कहानीकार हैं।

चीफ की दावत समाज में मानव मूल्यों को, हीन गुणों को दिखानेवाली यथार्थ वादी कहानी है।

समाज की स्वार्थपरता पर लेखक ने गहरा व्यंग्य किया है।

समाज की स्वार्थ परता पर लेखक ने गहरा व्यंग्य है।

भाषा का सुंदर प्रयोग और व्यंजना शक्ति का आधिक्य इस कहानी की प्रमुखता है।

सभी दृष्टियों से चीफ की दावत एक सफल और श्रेष्ठ कहानी है।

4.9 बोध प्रश्न :-

1. कहानी का उद्देश्य लिखिए।
2. शामनाथ और उसकी माता का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. चीफ की दावत कहानी कासारांश लिखिये।
4. विशेषताओं के आधार पर चीफ की दावत कहानी पर पकाश डालिए।

4.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें :-

1.	हिन्दी कहानी और कहानी कार	-	प्रो. वासुदेव
2.	चर्चित कहानियाँ	-	गुलाबयमखान
3.	हिन्दी निबंध	-	राजहंस प्रकाशन
4.	बृहत निबंध भास्कार	-	वचन देव कुमार

Sri. T. Srinivas

J.K.C. College

Lesson - 2(5)

पुरस्कार

इकाई की रुपरेखा :-

5.1 उद्धदेश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 प्रसाद - लेखक का परिचय

5.4 पुरस्कार कहानी का सारांश

5.5 पुरस्कार कहानी की विशेषताएँ

5.6 चरित्र - चित्रण

मधूलिका — गौण पात्र

अरुण — राजा, सेनापति

5.7 कहानी का उद्धेश्य

5.8 स्मरण रखने योग्य बातें

5.9 बोध प्रश्न

5.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.1 उध्देश्य :-

1. इस इकाई में आप बाबू जयशंकर प्रसाद के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।
2. प्रस्तुत इकाई में पुरस्कार कहानी का सारांश दिया गया है।
3. श्रेष्ठ कहानी तत्वों के आधार पर कहानी की विशेषताएँ आप जान सकेंगे।
4. पुरस्कार कहानी के प्रभाव, पात्रों का चरित्र - चित्रण आप इस इकाई में प्राप्त कर सकेंगे।
5. कथा कार का उद्धेश्य आप समझ सकेंगे।
6. प्रस्तुत इकाई के अंत में स्मरणीच बातों के साथ - बोध प्रश्न दिए गए है।

5.2 प्रस्तावना :-

बाबू जयशंकर प्रसाद आधुनिक हिन्दी साहित्य के आधार स्तंभ है। वे श्रेष्ठ कवि प्रसिद्ध नाटक - कार कुशल कथाकार और अच्छे निबंधकार है। इनके कथा नक मानव जीवन की सच्चाई को चित्रित करते हैं। पुरस्कार इनकी एक श्रेष्ठ आदर्श वादी कहानी है। मधूलिका और अरुण के चरित्र के आधार पर ही पूरी कहानी आगे बढती है। पाठक के मन में करुणा सहानुभूति, ममता, घृणा आदि विविध भावों का मिला हुआ रुप उत्पन्न होता है।

प्रेम और कर्तव्य को सामने रखते हुए कहानीकार ने कहानी को सुंदर कलात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। इस अध्याय में आप कहानी की वस्तु, विशेषताएँ, चरित्र - चित्रण, उद्धेश्य आदि प्राप्त कर सकेंगे।

कथाकार - श्री जयशंकर प्रसाद (लेखक परिचय) 1890 - 1937 :-

छायावादी काव्यधारा के चार प्रमुख आधार स्तंभोंमें से एक तत्कालीन संक्रमण परिस्थितियों में हिन्दी साहित्य केलिए एक वरदान स्वरुप प्रसाद जी का जन्म 30 जनवरी 1890 ई.मे. काशी के गोवर्धन सराय मुहल्ले में प्रसिद्ध सूँघनी साहू परिवार में हुआ। साहित्य के प्रति अनुराग इन्हें अपने पिती श्री देवी प्रसाद से अत्तराधिकार में प्राप्त हुआ था। यह परिवार अपनी समृद्ध, उदारता, साहित्य - प्रेम तथा धार्मि क भावना का काशी समाज में विशिष्ट आदर का पात्र थे। अतः काशी दरबार में आने साहित्य और कला प्रेमी इनके घर भी आते थे इस परिवेश का प्रभाव बालक प्रसाद पर पडना सहज ही था। दुर्भाग्यवाश माता - पिता के अकाल देहावसान के कारण प्रसाद जी को विवशतः अपनी शिक्षा अधूरी छोडकर पौतृक व्यवसाय के देख - रेख केलिए बारह - वर्ष की आयु में बडे भाई के साथ दुकान पर बैठना पडा।

प्रसाद ने सातवी कक्षा तक वींस कालेज में शिक्षा ग्रहण की। धर पर ही उन्होंने संस्कृत, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी भाषायें सीख लिया। बारह वर्ष के छोटी आयु में वे समस्या पूर्ति में पद्य लिखते थे।

माता - पिता के बाद शीघ्र ही बडे भाईं, दो, दो पत्नियों का स्वर्ग वास होने से युवक प्रसाद को संबधियों द्वारा संपत्रि के कदद्मों में उलझना पडा। अतः साहित्य - अनुराग, मुकदमें और व्यापार की अनमेल त्रिधारा में उनका संवेदनशील मन बुरी तरह उलझ गया। निरंतर व्यायाम से शरीर को हृष्ट - पुष्ट बनाये रखने के शौकीन प्रसाद जी घर पर संस्कृत साहित्य और बौद्ध - दर्शन का गंभीर अध्ययन किया। परिणामतः उन्हें भारतीय इतिहास, दर्शन, तथा परपरा में आस्था प्राप्त हुई।

शैवागमों के आनंदवाद और बौध्दों के दुःखवाद का समन्वय करते हुए प्रसाद जी ने समरसतावाद का प्रतिपादन किया। उनकी बहुमुखी प्रतिभा ने अतीत गौरव के माध्यम से ही वर्तमान को देखने का प्रयास किया। अतः एक कवि की भावुकता, कलाकार की चमत्कार प्रियता, दार्शनिक की गंभीरता तथा राष्ट्र निर्माता की दूरदर्शिता आदि सभी का समन्वय प्रसाद जी के व्यक्तित्व में उपलब्ध होता है। उन्होंने अपने बचपन में ब्रजभाषा में काव्य रचना की थी। किंतु कालांतर में उन्होने हिन्दी के खडीबोली रुप को अपना लिया। इनकी रचनाओं का ब्यौरा इस प्रकार है -

काव्य संकलन - उर्वशी, वनमिलन, प्रेमराज्य, अयोध्या उद्धार, शोकोच्छवास, बभ्रुवाहन, कानन कुसुम, प्रेम - पथिक, करुणालय, महाराणा का महत्त, झरना, आँसू, लहर तथा कामायनी।

नाटक - सज्जन, कल्याणी, परिणय, प्रायश्चित, करुणालय, राज्यश्री, विशाख, अजातशत्रु, कामना एक घूँट, जनमेजय का नागयज्ञ, स्कंदगुप्त, चद्रंगुप्त, ध्रुवस्वामिनी आदि।

उपन्यास - कंकाल, तितली, इरावती

कहानी - छाया, प्रतिध्वनि, आकशिदीप, आँधी, इंद्रजाल, पुरस्कार

निबंध - काव्य और कला तथा अन्य निबंध इस प्रकार साहित्य की प्रायः सभी प्रमुख विधाओं में अपना योगदान करनेवाले प्रसाद स्वभावतः प्रेम और सौंदर्य के कवि है। उनकी रचनाओं में देश - प्रेम, अतीत प्रेम , पुराण और इतिहास प्रेम सर्बत्र परिलक्षित होता है। इसलिए वर्तमान और अतीत तथा आदर्श और यथार्थ का समन्वय इनकी रचनाओं का प्राणतत्व है। उनके सृजित पात्र भावुक, संवेदनशील और अनुभूति प्रवण होते हैं। गंभीर चितन, इतिहास का स्पष्ट बोध और शाश्वत जीवन मूल्यों के प्रति अटूट आस्था प्रसाद जी के साहित्य में मिलती है।

कामायनी प्रसाद जी के सर्वश्रेष्ठ और अमर काव्यकृति है। इसकी आधार शिला आदि मानव मनुं की कथा है। इसमें श्रध्दा बुद्धिवादिता का और इडा भौतिकवादिता का प्रतीक है। भाव और अनुभूति दोनों दृष्टियों से छायावाद की पूर्ण अभिव्यक्ति कांमायनी में प्राप्त है। अपने अधिकांश ग्रंथों में उन्होंने संस्कृत निष्ठ भाषा का प्रयोग किया। उन्होंने संस्कृत हिन्दी तथा उर्दू के छंदों का सफल निर्वाह किया है। अलंकारों के क्षेत्र में उन्होंने उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा आदि प्रचलित अलंकारों के अतिरिक्त मानवीकरण, विशेषण, विपर्यप आदि पाश्चात्य अलंकाओं का भी सुंदर प्रयोग किया।

कहानी के श्रेत्र में प्रसाद का योगदान महत्वपूर्ण है। उनके कहानियों में आदर्शवाद के साथ जीवन की वि भिन्न समस्याओं का चित्रण मिलता है। उनके नारी पात्र पुरुष की वासना का शिकार होकर प्रवंचना का जीवन बितानेवाले नहीं है। परिस्थितियों से संघर्ष करने हुए कर्तव्य मार्ग पर आगे बढ़नेवाली हैं। उनकी अधिकांश कहानियाँ चरित्र - प्रधान है। कुतूहलता, संक्षिप्त कथोपकथन, माटकीयता आदि उनकी कहानियों की विशेषताएँ है। आपकी मृत्यु 1937 को हुआ। कहीं कहीं भाव परिचालित होने के कारण गद्य में काव्यात्मकता का लालित्य आ जाता है।

पुरस्कार - कहानी का मूल यथार्थ है और समापन तो आदर्श से होता है। यह आदर्शवादी कहनी है।

कथावस्तु - कोशल राज्य में हर साल कृषि उत्सव धूम - धाम से मनाया जाता है। उस दिन कोशल महाराज किसान बनकर उर्वर भूमि जोतने केलिए आता है। उस साल राष्ट्रीय नियम के अनुसार मधूलिका का खेत राजा को अर्पित करने केलिए चुना जाता है। महाराज हल चलाते है तो मधूलिका बीजों का थाल लेकर राजा की सहायता करती रहती है। उत्सव के सामाप्ति के बाद पुरस्कार के रुप में चौ गुना मूल्य स्वर्ण मूद्राएँ मधूलिका को देना चाहता है। लेकिन मधूलिका पितृ - पितामहों की भूमि बेचना अपराध मानकर स्वर्ण मूद्राओं का तिरस्कार करती है। उस कृषि उत्सव में मगध का राजकुमार अरुण भी आता है। उस, सुंदर मधूलिका को देखकर मुग्ध - होता है।

दूसरे दिन प्रातः काल ऊरुण मधूक वृक्ष के नीचे बैठी हूई मधूलिका के पास जाकर प्रेम की याचना करता है। लेकिन मधूलिका उसे किसी राजकुमारी से प्रेम करने की सलाह देकर उसके प्रेम को ठुकरा देती है। इस प्रकार तीन साल गुजर गये। मधूलिका निर्जन वन में एकाकी जीवन बिताने लगती है। मधूक वृश्र के नीचे छोटी सी पर्ण कुटीर बनाकर उसी में जीवन बिताती रहती है। वह दूसरे किसानों के खेतों में जाकर काम करती थी। आस - पास के कृषक उसका आदर करते हैं। वह आदर्स

बालिका थी।

एक दिन भीषण वर्षा में मधूलिका अपनी झोंपडी में बैठी सोच रही थी - मैं ने एक राजकुमार अरुण के प्रेम का तिरस्कार किया हूँ। आज मधूलिका उस बीते हूए क्षण को लौटाने केलिए विकल थी वर्षा ने भीषणा रुप धारण किया। उसी समय राजकुमार अरुण आजीविका खोजते हुए मधूलिका के पास आता है।

एक दिन शीत काल की निरब्ध रजनी, के चाँदिनी भत में अरुण और मधूलिका पहाई गहूवर के द्वार पर कट वृक्ष के नीचे बैठे हुए बाते कर रहे हैं। अरुण अपने साथ सौ सैनिक लाया है। अरुण एक ओर कौशल राजा के दुर्ग पर आक्रमण करने का षडयंत्र बनाता है। दूसरी ओर मधूलिका को कौशल समाज्य की राजरानी बनाने का वादा करता है। मधूलिका की आँखों के आगे बिजलियाँ हसँने लगीं। मधूलिका मंत्रमुग्ध सी अरुण की षड यंत्र योजना के साथ देने का वादा करती है।

योजना के अनुसार मधूलिका महाराजा के पास जाकर इस प्रकार कहती है - दुर्ग के दक्षिणी नाले के समीप जंगली भूमि वहीं मैं खेती करुँगी, मुजे एक सहायक मिल गया। इस प्रकार मधूलिका उस भूमि को प्राप्त कर लेती है।

दुर्ग के दक्षिण, भयावने नाले के तट पर घना जंगल है। अरुण के सैनिक स्वतंत्रता से इधर - उधर घूमते थे। झाडियों को काटकर पथ - बना रहा था। अब तो महाराजा की आज्ञा से वहाँ मधूनिका का अच्छा - सा खेत बन रहा था।

एक घने कुंज में अरुण और मधूलिका एक दूसरे को हर्षित नेत्रों से देख रहे थे। उसी समय अरुण अपने षडयंत्र के बारे में मधूलिका से बता रहा है - मैं सौं सैनिकों को लेकर श्रावस्ती दुर्ग पर आक्रमण करुँगा। प्रभात में राष्ट्र की राजधानी श्रावस्ती में तुम्हारा अभिषेक होगा। और मगध - से निर्वासित मैं एक स्वतंत्र राष्ट्र का अधिपति बदूँगा।

मधूलिका प्रसन्न थी। किंतु अरुण केलिए उनकी कल्याण कामना सभेंक थी। सहसा कोई संकेत पाकर अरुण ने कहा - रात बहुत हो गया। तुझे दूर जाना है। मुझे भी प्राण पण से इस अभियान के प्रारंभिक कार्यों को आधीरात तक पूरा कर लेना चाहिए।

मधूलिका अपनी झोंपडी की ओर जा रही थी, पथ अंधकारमय था। उसका मन विचलित हो गया। मधुरता नष्ट हो गई। वह भयभीत थी। पहला भय उसे अरुणा केलिए उत्पन्न हुआ। यदि वह सफल न हूआ तो ? फिर सहसा सोचने लगी - वह क्यों सफल हो ? श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाय ? मगध - कोशल का चिर शतृ है। कोशल नरेश ने क्या कहा था - 'सिंहमित्र की कन्या'। सिंहमित्र कोशल का रक्षक वीर, उसी की मन्या आज क्या करते जा रही है ? उसके पिता अंधकार में मधूलिका को पुकार रहे थे। मधूलिका पगली की चिल्ला उठी और रास्ता भूल गई। वह सेना पति के पास जाकर मिलती है और उसे चेतावनी देती है। सेनापति पहले मधूलिका की बातों पर विश्वास नहीं किया। लेकिन बाद में सेनापति ने अस्सी सैनिकों को नाले की ओर बढ़ने की आज्ञा दी। मधूलिका को महाराजा के सामने उपस्थित किया गया। मधूलिका धृणा और लज्जा से राजा को सत्य बताती है। राजा सेनापति से सैनिकों को एकत्र करते केलिए कहा। सेनापति के चले जाने पर राजा मधूलिका की प्रशंसा करते हुए कहा - सिंहमित्र की तुमने एक बार फिर कौशल का उपकार किया।

अरुणा को बंदी बनाया गया। और उसे मृत्यु दंड मिलता है। राजा मधूलिका से पुरस्कार माँगने केलिए कहते हैं। मधूलिका अरुण के साथ अपने को भी मृत्युदंड देने केलिए कहती है।

9)

कहानी की विशोषताए

1. पुरस्कार कहानी राष्ट्रीय 'नवजागरण' से जुडी हुई सर्वश्रेष्ठ कहानी है।
2. कहानी ऐतिहासिक घटना पर आधारित है।
3. इस कहानी में नारी हृदय के प्रेम और कर्तव्य परायण के अतंर्द्वंद का मार्मिक चित्रण मिलता है।
4. भारतीय संस्कृति और इतिहास के प्रति प्रसाद जी की अनुरक्ति इस कहानी में स्पष्ट रुप से दिखाई देती है।
5. कर्तव्यके आगे प्रेम झुक जाता है।
6. स्वार्थ और सामाजिक भलाई के बीच अंतर्द्वंद्ध का सुंदर चित्रण किया गया।

पुरस्कार कहानी के प्रमुख पात्र -

इस कहानी में दो ही प्रमुख पात्र है -

1. मधुलिका 2. अरुण

मधूलिका - मधूलिंका पुरस्कार कहानी की नायिका है। वह वीरसिंह मित्र की एक मात्र कन्या है। उसमें नारीगत सभी लक्षण विद्यमान है - ममता, सहानुभूति, प्रेम और आत्म समर्पण।

मधूलिका कृषक कन्या है। वह सुंदरी है उसके सौंदर्य को देखकर लोग दंग रह जाते हैं। कृषि उत्सव में कौशेय वसन पहनकर राजा को बीज देने का सम्मान पाती है। कोशल देरा के नियमानुसार मधूलिका का खेंत कृषि उत्सव केलिए चुन लिया गया।

मधूलिका में आत्म - गौरव कूट - कूटकर भरी हुई है। उत्सव समाप्त होते ही महाराज ने कुछ स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार के रुप में दिया। लेकिन मधूलिका उन स्वर्ण मुद्राओं को स्वीकार करना नहीं चाहा इसलिए राजा से सविनय इस प्रकार कहा - देव यह मेरे पितृ पितामहों की भूमि है। इसे बेचना अपराध है।

कृषि उत्सव में मधूलिका की सुंदरता को देखकर मगध का राजकुमार अरुण मुग्ध होता है। एक दिन मधूलिका मधूक वृक्ष के नीचे बैठकर सो रही थी। अरुण वहाँ पहुँचकर प्रेम की याचना करता है। लेकिन मधूलिका किसी राजकुमारी से प्रेम करने की सलाह देकर उसके प्रेम को ठुकरा देती है।

मधूलिका राजा का पुरस्कार स्वीकार नहीं करके दुर्भर दारिद्रय का अनुभव करने लगी। वह दूसरे खेतों में जाकर काम करती थी। मधूक वृक्ष के नीचे छोटी पर्ण कुटीर में रहने लगी। आस - पास के कृषक उसका आदर करते हैं। वह एक आदर्श बालिका थी।

आज मधूलिका उस बीते हुए क्षण को लौटा लेने केलिए विमल थी। वह इस प्रकार सोचने लगी - मैं ने एक दिन मगध - का राज कुमार अरुण के प्रेम प्रस्ताव को ठुकरा दिया। उसी समय मगध - का राजकुमार अरुण आजीविका के खोज में मधूलिका के पास आता हैं। मधूलिका सहर्ष उसे स्वागत करती है।

एक दिन अरुण और मधूलिका वट वृक्ष के नीचे बैठकर बाते कर रहे हैं। उसी समय अरुण अपने षडयत्र के बारे में मधूलिका से बताता है। मधूलिका उसके साथ देने का वादा करती है। दारुण भावना से उसका मन विकृत हो उठा।

अरुण के षडयंत्र के अनुसार मधूलिका कौशल नरेश के पास जाकर दुर्ग के दक्षिणी नाले के समीप जंगली भूमि को प्राप्त कर लेती है। अरुण अपने सैनिकों की सहायता से नाले के समीप जंगल में पेडों को काटकर रास्ता बनाने लगता है। अपने सौ सैनिक की सहायता से दुर्ग पर आक्रमण करने का षडयंत्र रचता है।

लेकिन उसी समय मधूलिका में अतंर्द्वद्व मचलने लगता है। उसकी आँखों के सामने एक ओर पिता का आवाज ग्रँजने लगती है और दुसरी ओर अरुण का दिया हुआ वचन। वह श्रावस्ती दुर्ग एक विदेशी के अधिकार में क्यों चला जाय। वह पागल की तरह चिल्लाती है। सेनापति के पास जाकर उसे चेतावनी देती है और महाराज से सत्य बताती है।

अरुण को मृत्य - दंड मिलता है। महाराज मधूलिका से पुरस्कार माँगने केलिए कहता है। मधूनिका मुझे भी प्रांण - दंड दीजिए कहकर अरुण के पास जाकर खडी होती है। इस प्रकार मधूलिका अपने राज्य की भलाई केलिए अपने आप को प्रियतम के प्राणों तक बलिदान देने केलिए तैयार होती है। एक ओर वह ममता, प्रेम और मानवता की प्रतिमर्ति है। दूसरी ओर कर्तव्य परायणा आत्म समर्पण करने वाली है।

अरुण - अरुण पुरस्कार कहानी के नायक है, वह मगध के राजकुमार है कोशल राज्य के कृषि उत्सन देखने केलिए शतृराजा होकर भी उसमें भाग लेता है। वह मधूलिका की सुंदरता को देखकर मुग्ध हो जाता है। जब वह मधूक वृक्ष कें नीचे बैठकर विश्राम ले रही है, उसी समय वहाँ जाकर अपने प्रेम के बारे में बताता है। मधूलिका उसे किसी राज कुमारी से प्रेम करने की सलाह देती है। इसलिए उसे निराश लौटना पडता है।

तीन साल के, बाद अरुण मगध राज्य के निर्वासित राजकुमार के रुप में मधूलिका को ढूँढते उसकी कुटिया के सामने आ पहुँचता है। अपनी प्रेयसी के दुःख से दूर करने का प्रयत्न करता है। और अपने षडयत्र के बारे में बताता है। अरुण कौशल दुर्ग पर आक्ररण करके मधूलिका को वहाँ की राजरानी बनाना चाहता है। मधूलिका उसके साथ देने का वाढ़ा करती है। लेकिन मधूलिका के मन में अंत र्युध्द्र मचलने के कारण वह सेनापति और राजा से सत्य बताती है। अरुण को मृत्यु दंड मिलता है। मधूलिका भी राज से मृत्युदंड पुरस्कार के रुप में माँगती है। इस प्रकार अरुण एक ओर नायक और दूसरी ओर खलनायक के रुप में चित्रण किया गया है। अरुण में सच्चा प्रेम, अपने देश के प्रति भक्ति, शतृ देश पर आक्रमण करके उसे हस्तगत करने का कौशल भी है।

उद्धेश्य - प्रसाद की कहानियों में आदर्शवाद भावना के साथ जीवन की विभिन्न समस्याओं का चित्रण मिलता है। मानव को व्यक्ति - निष्ठ नही राष्ट्र - निष्ठ बनना चाहिए। स्वार्थ से ऊपर उठकर देश केलिए अपने प्राणों की बलि देना मानव का कर्तव्य होना चाहिए। पुरस्कार कहानी इसी उद्धेश्य से लिखी गयी ऐतिहासिक कहानी है। सस्कृत शब्दों से भरी हुई प्रौढ और प्रांजल भाषा का प्रयोग किया गया है।

मधूलिका वीर सिंहमित्र की एक मात्र कन्या है। राज के निश्च के अनुसार कौशल राज्य कृषि उत्सव मधूलिका अपना खेत

राजा को समर्पित करती है। इसके बदले में राजा से वह कुछ नहीं लेती। उसी समय मगध - का राजकुमार अरुण मधूलिका को देखकर मुग्ध हो जाता है। एक दिन मधूलिका मधूप वृक्ष के नीचे विश्राम लेते समय उसके पास जाकर प्रेम की याचना करता है। परंतु मधूलिका उसके प्रेम को ठुकरा देती है। मधूलिका वन प्रदेश में एकाकी जीवन बिताती रहती है। वह दूसरों के खेतों में जरुर काम करती रहती है। जो रुखी सूखी मिलती है उससे तृप्त हो जाती है। इस प्रकर तीन साल बीत गये हैं।

अरुण विद्रोही राजकुमार के रुप में कौशल राज्य में आकर मधूलिका से मिलता है। वह अपने पडयंत्र के बारे में मधूलिका से बताता है। मधूलिका इस षडयंत्र में अरुण के साथ देने का वादा करती है। इसके अनुसार मधूलिका राजा के पास जारुर दक्षिणी नाले के पास की उर्वर भूमि माँगती है। राजा सहर्ष उसे दे देता है। वहाँ से अरुण कौशल राज्य पर आक्रमण करना चाहता है। अरुण अपने सैनिकों की सहायता से नाले के समीप जंगल में पेडों को काटकर वहाँ रास्ता बनाने लगता है।

लेकिन मधूलिका में अंतर्द्वंद मचलते लगता है। पिताजी की आवाज उसके कानों में प्रति ध्वनित होने लगती है। वह सोचने लगी है - श्रावस्ती का दुर्ग एक विदेशी के हाथों में क्यों चला जाय। वह पगली की तरह चिल्लती है। कौशल के सेनापति से मिलकर अरुण के षडयंत्र के बारे में बताती है। वह राजा को सत्य बताकर देश के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करती है। अरुण बंदी बनाया जाता है और उसे मृत्यु - दंड मिलता है। राजा मधूलिका से पुरस्कार माँगने केलिए कहते हैं। मधूलिका मृत्यु - दंड पुरस्कार के रुप में माँगती है। वह प्रेम केलिए प्राणों की बलि देने केलिए तैयार होती है। वह एक ही साध देश के प्रति और अपने प्रेम के प्रति कर्तव्य का पालन करती है। इसप्रकार कहानीकार प्रसाद जी ने पुरस्कार कहानी के माध्यम से देश या समाज की भलाई केलिए नायिका किस प्रकार आत्म समर्जण करती है उसका सुन्दर चित्रण किया।

गौण पात्र - किसी भी कहानी में द्रो प्रकार के पात्र होते हैं। प्रधान पात्र और गौण पात्र। गौण पात्र कथा को आगे बढ़ने में सहायक होता है। पुरस्कार कहानी में दो गौण पात्र भी है महराजा और सेनापति।

महाराज - वे कौशल देश के राजा है। लेकिन नाम का विवरण तो नहीं दिया। हर साल कोशल राज्य में कृषि उत्सव मनाया जाता है कौशल समृद्धशाली और सुविशाल राज्य है। उस उत्सव में स्वयं महाराजा को कृषक बनना पडता है। हर रोज राज - काज में व्यस्त रहनेवाला महाराज, राज - प्रासाद में रहनेवाला राजा को आज साधारण किसान की तरह हल चलाना पडता है। आर्द्रा नक्षत्र में एक शुभ दिन महारज हाथी पर बैठ्कर देव दुंदुभी के गंभीर घोषणा के बीच अपने सैनिकों के साथ आया है। महाराज स्वर्ण रंजित हल चलाता है। मधूलिका बीजों का था पाल लिए राजा के साथ - रहकर उसका सह्योग करती है। राष्ट्रीय नियम के अनुसार उस साल मधूलिका का खेत चुन लिया गया। उत्सव के अतंतर महाराज पुरस्कार के रुप ते तौ गुना मूत्य स्वर्ण मुद्राएँ मधूलिका को देना चाहता है। लेकिन मधूलिक उसे स्वीकार नहीं करती है।

एक दिन मधूलिका राजा के पास जाकर दक्षिणी नाले की जँगली भूमि माँगती है। राजा उसे सहर्ष मधूलिका को देता है। मधूलिका वीर सिंहमित्र की कन्या होते के कारण राजा उसे सहायता करते में तत्पर रहता है।

मधूलिका पहले अरुण के षडयंत्र में साथ देने का वादा करती है। लेकिन उसके मन में देश प्रेम की भावना जाग उठती है। परिणाम स्वरुप वह राजा के पास जाकर सत्य बताती है। राजा देश - द्रोही अरुण को मृत्यु - दंड सुनाता है। और मधूलिका को पुरस्कार माँगने केलिए कहता है। लेकिन मधूलिका मुझे भी मृत्यु - दंड दीजिये कहकर अरुण के पास जाकर खडी होती है। राजा मधूलिका की आत्म - समर्पण को देखकर गद् गद् दो जाता हैं। इस प्रकार महाराजा का पात्र तो छोटा है। तीन बार

ही महाराज पाठकों के सामने प्रयक्ष हो जाता है। लेकिन कथा को आगे बढते प्रधान - पात्र की सहायता की है।

सेनापति - सेनापति का पात्र भी बहुत छोटा है। उसके नाम के बार में जिक्र नहीं किया। लेकिन वह वीर, साहसी और सच्चे देशभक्त भी है। इसमें देश - प्रेम की भावना कूट कूट कर भरी हुई है।

मधूलिका पहले अरुण के षडयंत्र में साथ देने की वादा करती है। लेकिन उसके मन में अंतर्द्वंद मचलने के कारण वह भूले भटके पगली की तरह इधर उधर देखने लगी। उसी समय सेनापति अपने सैनिकों के साथ उसी रास्ते से जा रहे हैं। मधूलिका को देखकर इस प्रकार पूछता है - तुम कौन हो, कोसल सेनापति को उत्तर शीघ्र दो। तब मधूलिका उसे चेतावनी देती है दक्षिणी नाले की जंगली भूमि की ओर शतृ राजा राज्य पर आक्रमण करनेवाला है। तब सेनापति असली सौनिकों को नाले की ओर जाने की आज्ञा दी और स्वयं बीस अखारोहियों साथ दुर्ग की और बढे। महाराज के पास जाकर इस षडयंत्र्त्र की सूचना देता है। सेनापति महाराजा की आज्ञा से सैनिकों को एकत्र करने केलिए चला जाता है। अरुण और सौ सैनिकों के साथ बडी कौशलता युद्ध करता है। असंत में सेनापति अरुण को बदी बनाकर राजा के सामने लाता है। अरुण को मृत्यु - दंड मिलता है। इस प्रकार सेनापति अपनी वीरता का परिचय देते हुग राज्य पर आचे हुए विपत्ति कैशल राज्य को बताता है। इस प्रकार सेनापति का पात्र छोटे होते हुए भी इस कहानी को आगे बढाने में सहायता की है।

इस प्रकार पुरस्कार कहानी में हर एक पात्र का चरित्र - चित्रण सुंदर ढंग से किया गया है। मधूलिका एक कृषक बालिका होकर भी अपने देश की भलाई के लिए प्राणों की बलि दे देती है। अरुण मगध राजकुमार होने के कारण समृद्ध कोराल राज्य को भी अपना बनाकर मधूलिका को राजरानी बनाना चाहा है। इसमें वह विफल हुआ। महाराज कोशल राज्य के राजा होकर भी वीर सिंहमित्र की सहायता करने केलिए हमेशा तत्पर रहे। सेनापति अपने देश केलिए प्राणों की बलि तक दने केलिए तैयार हो गया। इस प्रकार पुरस्कार के हर पात्र अपने अपने दायरे में महान है।

5.6 स्मरणीय बातें :-

1. प्रसाद जी मूल रुप से कवि दोने में सच श्रेष्ठ कहानीकार थे।
2. ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर लिखी गयी प्रमुख कहानी है।
3. प्रेम और कर्तव्य के बीच अतंर्द्वद्व इस कहानी की विशेषता है।
4. मानव को व्यकित - निष्ठ नहीं राष्ट्र और समाज निष्ठ बनना चाहिए।
5. एक उत्कुष्ट प्रेम कहानी है।

5.7 बोध प्रश्न :-

1. जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
2. पुरस्कार कहानी की विशेषताएँ लिखिए।
3. पुरस्कार कहानी का उद्धेश्य लिखिए।
4. मधूलिका अथवा अरुण का चरित्र - चित्रण कीजिए।
5. पुरस्कार कहानी की समीक्षा कीजिए।

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें :-

1. चर्चित कहाँनियाँ - (सं) गुलाम यम खान

Lesson - 2(6)

रोज

इकाई की रुपरेखा:-

6.1 उद्धदेश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 अज्ञेय - लेखक का परिचय

6.4 'रोज' कहानी का सारंश (कथावस्तु)

6.5 'रोज' कहानी की विशेषताएँ

6.6 कहानी के प्रमुख पात्रों का चरित्र - चित्रण में - "मालती"

6.7 कहानी का उद्धेश्य

6.8 स्मरण रखने योग्य बातें

6.9 बोध प्रश्न

6.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.1 उध्देश्य :-

अज्ञेय मुख्यत : प्रेमानुभूति के कवि ही नहीं बल्कि कुशल कलाकार है। उनकी कहानी रोज मे मध्यवर्गीय लोगों के जीवन में व्याप्त नीरसता, शुष्कता,. कुंठा आदि का चित्रण करके अज्ञेय जी इस ओर सोचने केलिए हमें बाध्य बनाते है। अज्ञेय जी का साहित्यक महत्व इस इकाई के द्वारा ज्ञात होगा। विविध दृष्टियों से इस इकाई मे कहानी की समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है। यही नही समाज में व्याप्त भयानकता, नीरसता, कुंठा का परिचय इस कहानी में प्राप्त होता है। कहानी का प्रधान पात्र मालती थी। विवाह के पहले मालती का जीवन उल्लास और उत्साह से भरा हुआ है। डा. महेश्वर के साथ विवाह होने के बाद उन्हें एक प्रकार की जडता मानसिक विषाद की छाया घेर लेता है। इससे उनका जीवन यंत्रवत् शुष्क, निष्प्राण बना है। बिना सोच - विचारे वह नीरस - विषाद से भर गयी थी। इस मानसिक परिवर्तन का मूल कारण यही है कि जीवन के दैनिक आचरण में उल्लास और शुष्कता का अभाव इस से ज्ञात होता है। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी का मुख्य उद्धेश्य भी हमें अवगत होता है। क्यों कि मध्यवर्गीय लोगों के जीवन में व्याप्त कुंठा गतिरोध, नीरसता आदि का प्रभाव समाज पर जो होता है इस से स्पष्ठ अभिव्यवत हुआ है। वैसे ही स्मरणीय बाते और बोध - प्रश्न भी दिए गए हैं।

6.2 प्रस्तावना :-

रोज कहानी के द्वारा जीवन में सर्वत्र व्याप्त शुष्कता नीरसता भयानकता, अंधकार की छाया को नयी दृष्टि से देखने की आवश्यकता नई रीति से बताई गयी हैं। समाज में इस की जडें बहुत गहरीं और दाढ़ता से व्याप्त है। क्योंकि मध्यवर्गीय लोगों के जीवन में यांत्रिकता, शुषकता, नीरस्ता , कुंठा आदि को दूर करने की आवश्यकता इस में हमें मालूम होती है। अन्यथा उनका जीवन विषाद पूर्ण बन जाने का खतरा है। अतः मध्यवर्गीय लोगों के जीवन में पूर्ण विकास केलिए शुष्कता, और यांत्रिकता को दूर करने केलिए नयें एंव प्रभावकारी उपायों की आवश्यकताओं पर बल देना है।

यह कहानी हर एक पाठक को इस विषय पर सोचने केलिए विवश बना देती है। लेखक इस उदात्त आशय को इस कहानी में व्यक्त करते हैं। उनकी सामाजिक चेतना और अभिव्यक्तीकरण की नयी शैली सशक्त और तीक्षण प्रमाणित हुई है। इस इकाई में कहानी की समीक्षा और विश्लेषण प्रभावकारी रीति से प्राप्त होती हैं।

लेखक - अज्ञेय :-

'अज्ञेय' प्रेमानुभूति के कवि थे। उनका पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन है। आपका जन्म सन् 1911 ई.में उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के कसियाँ नामक गाँव में हुआ और देहावसान सन् 1987 ई.में . हुआ। आपके पिता पुरातत्व विभाग में काम करते थे। अज्ञेय जी को अपने पिता जी के साथ भारत में भ्रमण करना पडा। आपकी शिक्षा अधिकतर मद्रास और लाहौर में हुई।

आप जीवन में ही क्रांतिकारियों से प्रभावित हुए। यही नही आप अपने जीवन में अनेक बार जेल की यातनाये भी बहुत बाधा से सहनी पडी। आपने साहित्य की सभी शाखाओं में कविता, कहानी, उपन्यास आदि में सफल रचनाएँ की है। आपकी कहानियों में मानव के अंतर्गत के विश्लेषण को प्रधानता मिलती है। बाहरी घटनाओं का सामंजस्य वे मानव के अंतर्जगत में खोजने का प्रयास और प्रयत्न आप अपनी रचनाओं में करते हैं। चिंता, पूर्व आंगन के पार द्वार आदि आपके काव्य है।

प्रस्तुत कहानी 'रोज' उनकी बहुचर्चित कहानी है। इसकी कथावस्तु अत्यंत मार्मिक और लघु हैं। परंतु बहुत ही महत्वपूर्ण है। समाज में मध्यवर्गीय परिवारों में व्याप्त भयानकता, शुष्कता, नीरसता, कुंठा का मूल कारणों को खोज कर उनको दूर करने की आवश्यकता का संदेश इस में लेखक देते है।

6.4 कथावस्तु :-

रोज कहानी के अनुसार लेखक एक दिन अपने दूर के रिस्ते की बहिन मालती को देखने जाते है। क्योंकि लेखक मालती को अपनी सखी के समान देखते है। दोनों में बडी आत्मीयता है। एसी मालती का विवाह डा. महेश्वर से हुआ है। वास्तव में महेश्वर एक पहाडी गाँव में सरकारी डिस्पेंसरी में डाक्टर है। अतः वे हर रोज प्रातः काल सात बजे डिस्पेसरी चले जाते है और दोपहर दो बजे फिर लौटते हैं। वैसे ही शाम को एक - दो घंटे फिर चक्कर लगाने केलिए (घुमक्कड करने) जाते हैं। उन्हें एक पुत्र भी है टिटी। मालती अपने पति और बेटे के साथ एक पहाडी गाँव में सरकारी बंगले में रहती है। लेकिन डा. महेश्वर को दिन में पत्नी और पुत्र के साथ बिताने अधिक समय नही मिलता।

एक रोज लेखक दो पहर के समय डा. महेश्वर और मालती के घर गये। वह अठारह मील पैदल चलकर आता है। क्योंकि बचपन में वे दोनों की पढाई भी बहुत - सी इकट्टे ही हुई थी। उन दोनों के व्यवहार में सख्य और स्वेच्छा और स्वच्छता थी। अतः लेखक जब मालती के घर गये तब उन्हें ऐसा लगा कि वहाँ किसी शाप की छाया मंडरा रही है। आहट सुनकर मालती बाहर आयी। उसे पहले विस्मय हुआ और बाद कहा - अंदर आओ। लेकिन लेखक को संतोष की छाया तक मालती के मुख पर दिखायी नहीं पडा। लेखक ने पूछा कि क्या वे घर में नहीं है ? तब मालती ने बताया कि दफतर में हैं, दुपहर को आजायेगें। कुछ समय के बाद मालती एक पंखा लाकर झेलने लगी। इतने में दूसरे कमरे से टिटी के रोने की आवाज सुनायी पडी तो वह अंदर गयी। मालती की हालत को देखकर लेखक समझने लगे कि यह पुरानी मालती नहीं है, जो प्रसन्न और स्वच्छन्द रहती थी - यह केवल उसकी छाया है।

इतने में महेश्वर अपने घर आते हैं। तब मालती उन्हें लेखक का परिचय कराती है। महेश्वर और लेखक भोजन करते हैं। बातों में महेश्वर ने बताया कि वह पीछे खाती है। इतने में तीन बजने लगते हैं। एक - दो चिंताजनक आपरेशन होने के कारण महेश्वर अस्पताल चले जाते हैं। बाद लेखक कुछ समय आराम केलिए लेट कर विश्रांति करने लगते हैं। इतने में चार बजते है। रात के छः बजे महेश्वर घर आते हैं। केरस पर कुछ चर्चा हुई। अपने पति के व्यवहार पर मालती ने क्रोध प्रकट किया। उसी समय नल से पानी आया तो मालती फिर काम में लग गयी। लेकिन एक ओर टिटी पिता से सटकर बैठा था। तो भी टिटी अभी तक रोता रहता हैं। तब महेश्वर उसे एक पलंग पर सुला देते हैं। महेश्वर और लेखक दोनों भोजन करके सो जाते हैं। मालती भी टिटी को सुलाकर भोजन करने जाती है।

भोजन करके मालती आती है। वह आकाश की ओर देखने लगती है। क्योंकि वह पूर्णिमा की ज्योत्स्ना को देखने केलिए नही, बल्कि समय जानने केलिए। इतने में ग्यारह बज जाते है। ग्यारह सुनकर वह चकित रह जाती है।

इस तरह मालती का जीवन यंत्रवत् बीतने लगता है। हमेशा वह समय की ओर देखती रहती है। समय के अनुसार उसे काम करना पडता है। घर में कोई नौकर नहीं बर्तन माँझनेवाल (साफ करनेवाला) भी नहीं। कुशल समाचार पूछनेवाला भी कोई नही। वहाँ सब्जी नहीं मिलती। पानी भी समय पर नही आता है। वहाँ पुस्तकें भी नहीं मिलती। अखबार के पुराने टुकडे केलिए भी मालती तरस करनी पडती। वास्तव में वह क्या खाती है ? वह कब सोती है ? इसकी चिंता पति को नही हैं।

एक बार बच्चा पलंग से गिरता है तो लेखक दुःख प्रकट करता है कि उसे बहुत चोट लग गयी है। परंतु मालती कहती है कि ''इसको चोट लगती ही रहती है। रोज ही गिर पडता ही रहता है। ये बातें सुनकर लेखक आश्चर्य चकित और स्तब्ध रह जाता है। वह सोचने लगता है कि माँ, युवती माँ, यह तुम्होर हृदय को क्या हो गया है ? जो तुम अपने एक मात्र बच्चे के गिरने पर ऐसी बात कर सकती हो। लेखक इस का कारण समझ नही सका। सचमुच उस परिवार में भयानक गहरी छाया जमकर रह गयी है। अतः सुबह की प्रतीक्षा में रात, रात की प्रतीक्षा में दिन वह समय बिताती रहती है। एक प्रकार की मानसिक कुंठा उन्हें व्यथित कर रही है। इस प्रकार लेखक ने स्त्रियों की मनोभावनाओं का विश्लेषण बडी सहजता से किया है। वास्तव में स्त्रियाँ ही महिलाओं की मनोदशा का वास्तविक अंकन कर सकती है। यह सत्य इस कहानी से खूब प्रमाणित होती है।

मुख्य विशेषताएँ :-

1. अज्ञेय जी की कहानियों में रोज प्रसिद्ध कहानी है। मालती, महेश्वर और टिटी की दिनचर्या के आधार पर मध्यवर्गीय लोगों में व्याप्त विषाद, निराशा, भयानकता आदि का विवेचन, मनोविज्ञान के आधार पर किया गया है। इसकी कथावस्तु घटनाओं पर अधिक निर्भर नही हैं। केवल मनोभावों पर आधारित है।

2. प्रस्तुत कहानी के अनुसार कथोपकथन कथा - भाग को आगे बढानेवाला और पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को सामने लानेवाले है। ये संवाद लेखक की निरीक्षण शक्ति और ज्ञान के परिचायक है।

3. कहानी में डा. महेश्वर सबेरे उठकर अस्पताल जाते हैं। दुपहर को देरी से वापस आ जाते है। फिर शाम को भी उन्हें अत्यवसर काम पर अस्पताल चिकित्सा करने जाना पडता है। बाद थकावट के कारण जल्दी सो जाते है। वास्तव में घर में अकेली मालती ही रहती थी, पुत्र टिटी की देखरेख भी वह लगन के साथ नही करती। यंत्र के समान आवश्यक काम करती है और चुपचाप बैठी रहती है।

4. केवल मालती पर ही नही - उस घर के वातावरण में विषाद की छाया मंडराती हैं। इसका कारण जीवन की एकरसता है। उस में थोडे से परिवर्तन करके हम विषाद या कुंठा को दूर कर सकते है। इसी ओर लेखक अज्ञेय रोज कहानी के माध्यम से हमे सुंदर रुप से संमाज की वास्तविकता को सुझाते हैं।

5. मध्यवर्गीय लोगों के जीवन में यांत्रिकता, शुष्कता, नीरसता भयानकता आदि को दूर करने की आवस्यकता इस कहानी के द्वारा हमें मालूम होती है। अन्यथा उनका जीवन विषादपूर्ण बन जाने का खतरा है। अज्ञेयं की भाषा - शैली वातावरण चित्रण संवाद आदि कहानी के प्रभाव को बढाने में सक्षम बने है। मनोवैज्ञानिक कहानियो में इस रोज कहानी का अपना अलग स्थान है।

6. शीषंक वास्तत में एक शब्दुवाला है। लेकिन यह नया और आकर्षक है। यह शीर्षक तिलमिल गलते जीवन केलिए बहुत सुंदर ष्यंजक प्रतीक है। लेकिन इस कहानी का दूसरा शीषंक रोज है। क्योंकि इस कहानी में मध्यवर्ग के लोगों के दैनिक जीवन उनके कार्यकलापों का वर्णन है।

6.6 मालती का चरित्र - चित्रण :-

मालती अज्ञेय जी की कहानी रोज का प्रधान स्त्री पात्र है। वह लेखक की दूर के रिश्ते की बहिन है। डा. महेश्वर से उसका विवाह हुआ है और उसे "टिटी" नामक बचा भी है। विवाह के पहले मालती का जीवन उल्लास और उत्साह से भरा हुआ है। लेखक से वह मित्र के समान आचरण करती भी। बचपन में दोनों की पढाई भी इकट्ठे हुई थी। यही नही वे दोनों इकट्ठे खेले थे और इकटठे लडे तथा इकट्ठे पिटे भी थे उन दोनों के व्यवहार में सख्य की स्वेच्छा और स्वच्छता थी। ऐसी मालती का जीवन एक निर्दिष्ठ ढर्रे पर चलता है। इसके पति महेश्वर हर रोज यंत्र की भाँति समय का पालन करते हैं। मालती को भी उनका अनुकरण करना पडता है। एक निश्चित समय पर सो जाती है। पति के खाने के बाद ही वह खाती है।

मालती को अनेक अभावों का सामना करना पडता है। पहाडी प्रदेश होने के कारण वहाँ सब्जियाँ नही मिलती। गर्मिमें भी कमरे में सोना पडता। क्योंकि बाहर सोने केलिए चारपाईयाँ नही होती। एक ओर मच्छर भी ज्यादा होते है। घर में कोई

नौकर नही होता। बर्तन मांझनेवाली भी नही मिलती। पुस्तकें भी पढने केलिए नही मिलती। अखबार के पुराने टुकडे केलिए भी इधर उधर तरसना पडता। बाते करने केलिए कोई भी नही होता। डा. महेश्वर कभी भी पत्नी और बच्चे के प्रति कोई श्रद्धा नही लेते। वे कभी इसकी चिंता नही करते कि मालती ने कुछ खाया है कि नही ? वह कब सोनेवाली है ? उसकी क्या आवश्यकता है ?

मालती यंत्र के समान दिनचर्या में पिसकर तथा मन बहलाव के उपाय भी नही पाकर वह पाषण प्रतिमा - सी बन गयी। क्यों कि खाना पकाना बरतन मांझना, कपडे धोने आदि काम तो यंत्रतत् होते रहे। पर कोई नवीनता नही है। वास्तव में पति भी अच्छे है पर दिन भर काम करके थक जाते है और रात को जल्दी सो जाते है। इस आचरण से मालती ऊब गयी थी। बिना सोच विचारे वह नीरस विषाद, से भर गयी। यह उसके चरित्र का परिवर्तन है। वह इतना निर्लिटत हो गयी कि टिटी को चोट - लगने पर भी इलाज केलिए कोशिश भी नही करती और दुःख भी प्रकट नही करती। इस मानसिक परिवर्तन का मूल कारण यही है कि जीवन के दैनिक आचरण में शुष्कता और उल्लास का अभाव।

मध्यवर्गीय दैनिक आचरण में, उनके परिवारों में जो सरकारी नौकरी या व्यापार के कारण घर छोडकर दूर चले जाते हैं, उन्हें जीवन में एक प्रकार की कुंठा और मानसिक विषाद घेर लेना है। उसी के कारण मालती के समान उन्हें भी उत्साह रहित नीरस जीवन बिताना पडता है। मालती के चरित्र मे ही इस विषाद की छाया फैली हुई है। मालती के चरित्र के द्वारा लेखक मध्यवर्गीय लोगों में प्याप्त (जडता) कुंठा, विषाद. निर्लिप्तता, भयानकता आदि दर्शाते है।

डा. महेश्वर :-

अज्ञेय से लिखित रोज नामक कहानी में एक प्रमुख पात्र डा. महेश्वर जी का है। वे पहाडी प्रात के गाँव के सरकारी अस्पताल मे डाक्टर है। उनका जीवन बिलकुल एक निर्दिष्ठ र्ढरे पर चलता है नित्य वही काम उसी प्रकार के मरीज वही हिदायते वही दवाइयाँ। हर रोज एक - दो चिंताजनक आपरेशन होने के कारण महेश्वर अस्पताल चले जाते है। अस्पताल में हर दिन गैंगीन का एक केस आ जाता है। काँटा चुभता है तो लोग बे परवाह रहते है। रोगी को कुछ समय के बाद गैंग्रीन हो जाता है। इसलिए महेश्वर को कभी कभी किसी का टाँग किसी की बाँह काटनी पडती। अतः महेश्वर को अपने पेशे के बगैर किसी बात की चिंता नही रहती। पत्नी क्या खाती है ? वह कब सोती है ? उसकी आवश्यकताएँ क्या है ? इन सब के संबध में महेश्वर कभी सोचते भी नहीं हैं।

इस प्रकार हम देखते है कि महेश्वर मध्यवर्ग के उन लोगों का प्रतिनिधि है, जो सुबह से रात तक यंत्रवत जीवन बिता‌ते है। महेश्वर और मालती के दैनिक जीवन में जो एकरसता यांत्रिकता ऊब औरं टूटन है, उसका मर्मस्पर्शी चित्र लेखक ने इस कहानी में प्रस्तुत किया है।

6.7 कहानी का उद्धेश्य :-

इस रोज कहानी के माध्यम से लेखक मध्यवर्गीय परिवार के यांत्रिक जीवन का परिचय देना चाहते हैं। अर्थात् लेखक उनके दैनिक जीवन में जो एकरसता ऊब उठता है, उसका मर्मस्पर्शी चित्र मालती और डा. महेश्वर पात्रों के द्वारा यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार रोज में मालती महेश्वर और टिटी की दिनचर्या और कुंठा का चित्रण लेखक करते है। उनके जीवन घडी के काटों के समान निश्चित परिधि में दैनिक काम होते हैं। क्यों कि सबेरे जागने से लेकर रात को सो जाने तक उस में कोई व्यक्तिक्रम ही नही दीखता। इससे उनका जीवन यंत्रवत् शुष्क निष्प्राण बना है। चार सालों के बाद आये प्रिय भाई के स्वागत के समय उत्तने विषाद की जरुरत भी नही हैं। मध्यवर्गीय लोग अपने कष्ठों को बढ़ा - चढ़ा कर देखते है और उनसे मुक्त होने के सही उपायों के बारे में भी नहीं सोचते। अपने दैनिक जीवन में थोडे से परिवर्तन लाकर वे सुखी रह सकते है और अपने घरवालों और आत्मीय जनों को सुखी बना सकते हैं। आज्ञेय जी अपनी इस कहानी रोज में मध्यवर्गीय चित्रण (परिवारों का) करके इस ओर सोचने केलिए हमें बाध्य बनाते है। दिशा - परिवर्तन तो वे इससे नही करते। पर समाज को इस विषय पर सावधान रहने की सूचना इस कहानी में वे दे देते है। अतः कहानी का प्रधान उद्धेश्य यही है। इसमें लेखक को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

6.6 स्मरण रखने योग्य बातें :-

1. रोज कहानी हिन्दी की उत्तम कहानियों में भी एक है।
2. पति - पत्नी के भावात्मक संबधों का विवेचन इससे प्रस्तुत किया गया है।
3. कथावस्तु लधु होने पर भी पाठकों पर स्थायी प्रभाव दिखाता है।
4. यांत्रिकता, एकरसता, उब और टूटन के कारण मालती के पारिवारिक जीवन में जड़ता व्याप्त हो गयी थी। क्योंकि उसमें न आनंद, न् उल्लास था। उसमें अभाव ही अभाव थे।
5. मध्यवर्गीय लोगों के जीवन में व्याप्त नीरसता, शुष्कता कुंठा आदि का चित्रण करके इस ओर सोचने केलिए हमें लेखक बाध्य बनाते हैं।
6. कहानी का आरंभ घर के सूनेपन के वर्णन से होता है और कहानी का अंत मालती के शब्दों के द्वारा ग्यारह बज गये से होता है। ये शब्द उसकी मानस्कि स्थि ति को परिचय कराता हैं ।

6.7 बोध प्रश्न :-

1. रोज कहानी का सारांश लिखकर विशेषताएँ बताइये।
2. मालती के चरित्र की विशेषताएँ बताइये ?
3. रोज कहानी में डा. महेश्वर का पात्र स्पष्ठ केलिए।
4. रोज कहानी का उद्धेश्य स्पष्ठ कीजिए।
5. लेखक अज्ञेय जी का परिचय दीजिए।
6. रोज कहानी की समीक्षा कीजिए।

5.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें :-

1. आधुनिक हिन्दी निबंध - सुरेशाचन्द्र गुप्त
2. अपने अपने अजनबी - अज्ञेय
3. चर्चित कहानियाँ - (सं) गुलब यमखान

Sri N. Venkateswarlu

Lesson - 3(1)

तीसरा विभाग

हिन्दी व्याकरण

1. शुद्ध कीजिए, संधि, समास
2. वचन
3. लिंग
4. वाच्य
5. कारक
6. काल
7. वाक्य प्रयोग
8. कार्यालयी हिन्दी
9. पत्र लेखन

वाक्यों का शुद्ध प्रयोग, संधि और समास

इकाई की रुपरेखा :-

1. उद्धेश्य
2. प्रस्तावना
3. शुद्ध कीजिए - अभ्यास
   - (अ) लिंग और वचन संबंधी
   - (आ) ने प्रप्यय संबंधी
   - (इ) अपना प्रयोग
   - (ई) चाहिए प्रयोग
   - (उ) विधि क्रिया संबंधी
   - (ऊ) क्रिया संबंधी
   - (ऋ) विभक्ति - प्रत्यय संबंधी
   - (ए) कृदंत सबंधी
   - (ऐ) वर्तिनी संबंधी
   - (ओ) अभ्यास
4. संधि
   - (अ) स्वर संधि
   - (आ) व्यंजन संधि
   - (इ) विसर्ग संधि
   - (ई) संधिविच्छेद - अभ्यास
5. समास
   - (आ) समास के लक्षण
   - (आ) समास के भेद
   - (इ) विग्रह वाक्य - समास का नाम - अभ्यास
6. कुछ स्मरण रखने योग्य बातें
7. बोध प्रश्न
8. सहायक ग्रन्ध सूची

1.1 उद्धेश्य :-

इस इकाई में आप व्याकरण संबंधी कुछ विषयों की जानकारी प्राप्त करेंगे। व्याकरण की आवश्यकता के बारे में जान लेंगे। व्याकरण वह शास्त्र है जिसमें शब्दों के शुद्ध रुप और प्रयोग के नियमों का निरुपण होता है। व्याकरण (वि + आ + करण) शब्द का अर्थ है भली भाँति समझना।

व्याकरण पढ़ने से लाभ ये हैं।

1. हम अपनी भाषा के नियम जान सकते है और भूलों का कारण समझ सकते हैं। क्या अशुद्ध हुई और क्यों यह अशुद्ध हुई ? व्याकरण पढ़े बिना इस प्रश्न का उत्तर नही मिलता।
2. कभी - कभी कठिन भाषा का अर्थ केवल व्याकरण की सहायता से जाना जा सकता है, अर्थत् व्याकरण जाने बिना भाषा का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नही होता। व्याकरण के ज्ञान से विदेशी भाषा को सीखना भी सरल होजाता है।

इस प्रकार छात्रों को व्याकरण की जानकारी देना इस इकाई का उद्धेश्य है।

1.2 प्रस्तावना :-

आप इस इकाई में हिन्दी भाषा के व्याकरण नियमों के बारे में जान लेंगे। भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए और प्रभावशाली वाक्यों के प्रयोग के लिए सुन्दर वाक्यों के प्रयोग के लिए हमें व्याकरण के परिज्ञान की जरुरत होती है। इस इकाई में आप अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करने की जानकारी प्राप्त करेंगे। इसके साथ - साथ संधि के बारे में संधि के प्रकार और उनके नियमों के बारे में जानलेंगे। कुछ शब्दों के संधि विच्छेद का अभ्यास भी करेंगे।

व्याकरण में समासिक शब्दों का भी एक विशिष्ट स्थान होता है। इस लिए इस इकाई में समास, समास के भेदों के बारे में जान लेंगे और साथ साथ कुछ इने गिने समासों के विग्रह वाक्य और समासों के नामों का परिचय भी प्राप्त करेंगे।

1.3 शुद्ध कीजिए :-

अशुद्ध वाक्य को शुद्ध करने के लिये व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। इसलिए आवश्यकतानुसार व्याकरण के संकेत दिये गये है। परीक्षा में लिखने की व्याकरण नहीं है।

(अ) लिंग और वचन संबंधी :

1. कमला अच्छी घी लाती है। (अशुद्ध)
   कमला अच्छा घी लाती है। (शुद्ध)
   (घी = पुंलिंग)
2. यह दुध अच्छी है। (अशुद्ध)
   यह दूध अच्छा है। (शुद्ध)
   (दूध = पुंलिंग)
3. गोदावरी की पानी मीठी है। (आशुद्ध)
   गोदावरी का पानी मीठा है। (शुद्ध)
   (पानी = पुंलिंग)
4. आज का निथि पंचमी है। (अशुद्ध)
   आज की निथि पंचमी है। (शुद्ध)
   (निथि = स्त्रीलिंग)
5. यह तुलसीदास का रामायण है। (अशुद्ध)
   यह तुलसीदास की रामायण है। (शुद्ध)
   (रामायण = स्त्रीलिंग)

6. वह पुस्तक मेरा हैं। (अशुद्ध)

वह पुस्तक मेरी है। (शुद्ध)

(पुस्तक = स्त्रीलिंग)

7. मैं आपका दर्शन करने आया हूँ। (अशुद्ध)

मैं आपके दर्शन करने आया हूँ। (शुद्ध)

(दर्शन = बहुवचन)

8. उसका प्राण चला गया। (अशुद्ध)

उसके प्राण चले गये। (शुद्ध)

(प्राण = बहुवचन)

9. इस वर्ष देश में गेहूँ खूब हुए। (अशुद्ध)

इस वर्ष देश में गेहूँ खूब हुआ। (शुद्ध)

(गेहूँ = एकवचन)

10. चीन से बहुत प्लासित्क माल आये हैं। (अशुद्ध)

चीन से बहुत प्लास्टिक माल आया हैं। (शुद्ध)

(माल = एकवचन)

11. बैल एवं गायें आदि गये। (अशुद्ध)

बैल एवं गायें आदि गयीं। (शुद्ध)

(बैल = पुंलिंग एकवचन, गायें = स्त्रीलिंग बहुवचन

ऐसे वाक्यों में क्रिया बहुवचन में और उसका लिंग अंतिम कर्ता के अनुसार होगी)

12. बाघ और बकरी एक घाट पानी पीती है। (अशुद्ध)

बाघ और बकरी एक घाट पीते है। (शुद्ध)

(बाघ = पुंलिंग एक वचन, बकरी = स्त्रीलिंग एक वचन

दोनों कर्ता एक वचन में हैं। किन्तु उनके लिंग अलग है। ये दोनों कतो और से जोडे गये है। ऐसे वाक्यों में क्रिया प्रायः बहुचचन र पुंलिंग में होगी)

(आ) 'ने' प्रत्यय सम्बन्धी :

1. मोहन आम खाया। (अशुद्ध)

मोहन ने आम खाया। (शुद्ध)

(खाया = सकर्मक क्रिया)

2. राकेश ने चिट्ठी लिखा। (अशुद्ध)

राकेश ने चिट्ठी लिखी। (शुद्ध)

(चिट्ठी = स्त्रीलिंग, एक वचन)

3. प्रेमचन्द ने उपन्यास और कहानियाँ लिखा। (अशुद्ध)

प्रेमचन्द ने उपन्यास और कहानियाँ लिखीं। (शुद्ध)

(उपन्यास = पुंलिंग बहुवचन, कहानियाँ = स्त्रीलिंग बहुवचन)

4. सरला ने राधा को पुस्तक दी। (अशुद्ध)

सरला ने राधा को पुस्तक दिया। (शुद्ध)

5. मैं ने कल गाँव गया। (अशुद्ध)

मैं कल गाँव गया। (शुद्ध)

(गया = अकर्मक क्रिया)

6. गाँधी जी ने बोले। (अशुद्ध)

गाँधी जी बोले। (शुद्ध)

7. उसने दिखायी दिया। (अशुद्ध)

वह दिखायी दिया। (शुद्ध)

(दिखायी दिया = संयुक्त क्रिया। इस क्रिया का प्रयोग करने पर कर्त्ता के साथ 'ने' प्रत्यय नहीं जुडता)

8. उसने काम कर चुका। (अशुद्ध)

वह काम कर चुका। (शुद्ध)

9. हमने सडक डालने लगे। (अशुद्ध)

हम सडक डालने लगे। (शुद्ध)

10. राम रावण को मारा। (अशुद्ध)

राम ने रावण को मारा। (शुद्ध)

(इ) 'अपना' प्रयोग :-

1. मैं मेरे भाई को प्यार करता हूँ। (अशुद्ध)

मैं अपने भाई को प्यार करता हूँ। (शुद्ध)

(मैं के बाद तत्सम्बन्धी सम्बन्ध कारक (मेरे) का प्रयोग नहीं किया जाता। उसके बदले 'अपने' का प्रयोग होता है।)

2. मैं मेरी कहानी सुनाऊँगा। (अशुद्ध)
   मैं अपनी कहानी सुनाऊँगा। (शुद्ध)
3. तुम तुम्हारा नाम लिखो। (अशुद्ध)
   तुम अपना नाम लिखो। (शुद्ध)
4. हम हमारे देश को प्यार करते है। (अशुद्ध)
   हम अपने देश को प्यार करते हैं। (शुद्ध)
5. आप आपका काम कीजिये। (अशुद्ध)
   आप अपना काम कीजिये। (शुद्ध)
6. राजेश उसका पाठ पढ़ना है। (अशुद्ध)
   राजेश अपना पाठ पढ़ता है। (शुद्ध)

(ई) 'चाहिए' प्रयोग :-

1. अंग्रेजी में Must, Ought to शब्द जिस अर्थ को सूचित करते है, उन्हें हिन्दी में प्रकट करने के लिए 'चाहिए' का प्रयोग किया जाता है।
2. जब वाक्य में चाहिए का प्रयोग होता है, तब कर्त्ता के साथ को प्रत्यय जुडता है।
3. क्रिया सामान्य रुप में रहती है। जैसे : जाना, करना, लिखना आदि।
4. क्रिया के लिंग - वचन कर्म के अनुसार रहते है। कर्म के न होने पर क्रिया पुंलिंग एकवचन तथा अन्य पुरुष मे रहती है।

उपर्युक्त नियमों को दृष्टि में रखकर निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :-

1. हम हिन्दी बोलना चाहिए। (अशुद्ध)
   हमें हिन्दी बोलनी चाहिए। (शुद्ध)
   (हम + को = हमें ; कर्म = हिन्दी (स्त्रीलिंग एकवचन))
2. प्रमीला गाना चाहिए। (अशुद्ध)
   प्रमीला को गाना चाहिए। (शुद्ध)
3. मैं पिताजी की सेवा करना चाहिए। (अशुद्ध)
   मुझे पिताजी की सेवा करनी चाहिए। (शुद्ध)
   (मैं + को = मुझे, कर्म = सेवा (स्त्रीलिंग एकवचन))

4. विधार्थी खूब पढ़ना चाहिए। (अशुद्ध)
विधार्थी को खूब पढ़ना चाहिए। (शुद्ध)
(या)
विधार्यियों को खूब पढ़ना चाहिए। (शुद्ध)

(उ) विधि - क्रिया - संबंधी :-

1. क्रिया के जिस रुप से आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश और प्रश्न का बोध हो, उसे विधि - क्रिया कहते हैं।
उदाः तू पढ। तुम पढो। आप पढिये।
यहाँ रेखंकित शब्द विधि क्रियायें हैं।
2. जब विधि - क्रिया का प्रयोग होता है। तब मध्यम पुरुष में कर्ता का लोप होता है। उदाः जाओ। बैठा।
3. विधि - क्रिया कर्त्ता के अनुसार बदलती है। दिखिये -

कर्त्ता	विधि - क्रिया
तू	धातू (उदाः जा, आ, बोल)
तुम	धातु + ओ (उदाः जाओ, आओ, बोलो)
आप	धातु + इये (उदाः जाइये, आइये, बोलिये)

4. विधि वाचक में निषेध प्रकट करने के लिए 'मत' का प्रयोग होता है।
उदाः तुम मत जाओ। आप मत जाइये।
5. अपवाद : दे - दो , दीजिए। ले - लो, लीजिए। कर - क़रो, कीजिए।

उपर्युक्त नियमों को दृष्टि में रखकर नीचे लिखे गये वाक्यों को शुद्ध कीजिए।

1. तू मुझे मिठाई दो। (अशुद्ध)
तुम मुझे मिठाई दो। (शुद्ध)
2. आप कल जरुर मेरे घर आओ। (अशुद्ध)
आप कल जरुर मेरे घर आइये। (शुद्ध)
3. तुम दूध पीजिये। (अशुद्ध)
आप दूध पीजिये। (शुद्ध)

4. आप वहाँ मत जाओ। (अशुद्ध)

आप वहाँ मत जाइये। (शुद्ध)

5. तू बैठो। (अशुद्ध)

तू बैठ। (शुद्ध)

(ऊ) क्रिया संबंधी :-

1. मैं घर जाता है। (अशुद्ध)

मैं घर जाता हूँ। (शुद्ध)

2. वे करते है। (अशुद्ध)

वे करते हैं। (शुद्ध)

3. उसका यह कहना मेरे लिए बडी बात होगी। (अशुद्ध)

उसका यह कहना मेरे लिए बडी बात होगी। (शुद्ध)

(यहाँ कहना कर्ता है। यह पुंलिंग एकवचन में है। इसलिए क्रिया भी पुंलिंग एकवचन मे होनी चाहिए)

4. राम और सीता जंगल गयी। (अशुद्ध)

राम और सीता जंगल गये। (शुद्ध)

5. मोहन का लडका और गोपाल की लडकियाँ खेलते हैं। (अशुद्ध)

मोहन का लडका और गोपाल की लडकियाँ खेलती हैं। (शुद्ध)

(ऋ) विभक्ति - प्रत्यय संबंधी :-

1. कल मैं गाँव को जाती हूँ। (अशुद्ध)

कल मैं गाँव जाती हूँ। (शुद्ध)

(अप्राणिवाचक कर्म (गाँव) के साथ प्राःय विभक्ति - प्रत्य (को) नहीं जोडते।)

2. महेश का सिर्फ एक हाथ है। (अशुद्ध)

महेश के सिर्फ एक हाथ है। (शुद्ध)

(सम्बन्ध, स्वामित्व, शरीर के अवयव, अचल सम्पति और सम्प्रदान के अर्थ में सम्बन्धकारक का सम्बन्ध क्रिया के साथ होता है। उसकी के विभक्ति है, चाहे वह स्त्रीलिंग और एकवचन का शब्द क्यों न हो।)

3. दशरथ की तीन रानियाँ हैं। (अशुद्ध)

दशरथ के तीन रानियाँ हैं। (शुद्ध)

4. लडका का नाम क्या है ? (अशुद्ध)

लडके का नाम क्या है ? (शुद्ध)

(का विभक्ति के कारण लडका शब्द लडके के रुप में बदल गया है।)

5. वृक्षों पर पक्षी बैठा था। (अशुद्ध)

वृक्ष पर पक्षी बैठा था। (शुद्ध)

(एक पक्षी अनेक वृक्षों पर नहीं बैठ सकता)

(ए) कृदन्त :-

1. प्रिन्सिपाल आते ही विद्यार्थी चले गये।

प्रिन्सिपाल के आते ही विधार्थी चले गये।

(आतें कृदन्त है। कृदन्त के पहले रहनेवाला कर्त्ता सादा के विभक्ति प्रयुक्त होती है।)

2. वह मद्रास जाकर पाँच दिन हुआ।

उसके मद्रास जाकर पाँच दिन हुए।

(पाँच दिन = बहुवचन)

3. रामाराव स्टेशन पहुँचते ही गाडी चली गयी।

रामाराव के स्टेशन पहुँचते ही गाडी चली गयी।

(ऐ) वर्तनी - सम्बंधी :-

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
गुरु	गुरु	बकरि	बकरी
नर्क	नरक	मेग	मेघ
सहस्त्र	सहस्त्र	विधार्यि	विद्यार्थी
नदि	नदी	उन्नती	उन्नति
सक्ति	शक्ति	कुछु	कुछ
श्लेष्ट	श्रेष्ठ	विध्या	विधा
पुन्य	पुण्य	जंजट	झंझट
चिन्ह	चिहन	म्लेक्ष	म्लेच्छ
आर्शीवाद	आर्शीर्वाद	शंसोधन	संशोधन

(ओ) अभ्यास :-

नीचे कुछ वाक्य शुद्ध करके लिखा गया है। पहले अशुद्ध वाक्य दिया गया है। उसके नीचे ही शुद्ध वाक्य भी दिया गया है। दोनो को ध्यान से देखने पर पहला वाक्य गलत है - यह बात खुद मालुम हो जाती है।

1. आपका पिता का नाम बताओ। (गलत)
   अपने पिता का नाम बताओ। (सही)
2. हम वह कहानी पढ़े हैं। (गलत)
   हमने वह कहानी पढ़ी हैं। (सही)
3. वह शाम नहीं खेलते हूँ। (गलत)
   वह शाम को नहीं खेलता है। (सही)
4. वह उससे रुपया पूछा। (गलत)
   उसने उनसे रुपया मांगा। (सही)
5. सीता आम खाई। (गलत)
   सीता ने आम खाया। (सही)
6. मैं कल चार फल खाई। (गलत)
   मैं ने कल चार फल खाये। (सही)
7. मैं मद्रास आ को तीन साल हूई। (गलत)
   मेरे मद्रास आये तीन साल हुए। (सही)
8. क्या तुम मनुष्य का जन्म लिये। (गलत)
   क्या तुमने मनुष्य का जन्म लिया। (सही)
9. मैं बाजर जाना चाहिये। (गलत)
   मुझे बाजार जाना चाहिये। (सही)
10. राम राम का काम करता है। (गलत)
    राम अपना काम करता है। (सही)
11. अब हम स्वतन्त्रता हो गये। (गलत)
    अब हम स्वतन्त्र हो गये। (सही)
12. रहीम को दो किताबें जरुर है। (गलत)
    रहीम को दो किताबों की जरुरत है। (सही)

13. मैं चार गायें देखा। (गलत)
मैंने चार गाय देखी। (सही)
14. दशरथ के तीन रानियाँ थे। (गलत)
दशरथ के तीन रानियाँ थीं। (सही)
15. मुझ से यह काम करना नहीं सकता। (गलत)
मुझ से यह काम नहीं हो सकता। (सही)
16. मैं परीक्षा की अच्छा तैयारी किया है। (गलत)
मैं ने परीक्षा की अच्छी तैयारी की है। (सही)
17. कालेज के पास दो घरे हैं। (गलत)
कालेज के पास दो घर हैं। (सही)
18. कल सीता की भाई की विवाह थी। (गलत)
कल सीता के भाई का विवाह था। (सही)
19. पुलिस आते ही चोर भागी। (गलत)
पुलिस कें आते ही चोर भागा। (सही)
20. तुम अपने माता से एक रुपया पूछो। (गलत)
तुम अपनी माता से एक रुपया माँगो। (सही)
21. मै यह काम नहीं की। (गलत)
मैंने यह काम नहीं किया। (सही)
22. वह उसका काम करेगा। (गलत)
वह अपना काम करेगा। (सही)
23. उस लडकी गा सकी। (गलत)
वह लडकी गा सकी। (सही)
24. उन्होंने क्या बोला ? (गलत)
वे क्या बोले ? (सही)
25. राजा नल ने दमयंती को भूला। (गलत)
राजा नल दमयंती को भूला (सही)
26. उसने काम करने लगा। (गलत)
वह काम करने लगा। (सही)

27.	मैं नहीं सुन्दर हूँ और नहीं धनी।	(गलत)
	मैं न सुन्दर हूँ और न धनी।	(सही)
28.	वह आते नही मैं जाऊँगा।	(गलत)
	उसके आते ही मै जाऊँगा।	(सही)
29.	आप अभी यहाँ से जा।	(गलत)
	आप अभी यहाँ से जाइये।	(सही)
30.	सेना तुद्ध - क्षेत्र से दौड खडी हुई।	(गलत)
	सेना युद्ध - क्षेत्र से भाग खडी हुई।	(सही)
31.	मैं तुम्हें अच्छी कहानी बताऊँगा।	(गलत)
	मैं तुम्हें अच्छी कहानी सुनाऊँगा।	(सही)
32.	कई कालेज के विधार्यियों की गिरफतारी हुई।	(गलत)
	कालेज के कई विधार्यियों की गिरफतारी हुई।	(सही)
33.	रामने ग्रन्थ पढ़ना था।	(गलत)
	राम ग्रन्थ पढ़ता था।	(सही)
34.	पुलिस कहने लगे, घर खाली करे।	(गलत)
	पुलिस कहने लगे, कि घर खाली करो।	(सही)
35.	गौतमी पुस्तक लाई हैं।	(गलत)
	गौतमी पुस्तक लाई है।	(सही)
36.	मोहन अच्छा तरह लिखी है।	(गलत)
	मोहन ने अच्छी तरह लिखा है।	(सही)
37.	राम ने पाठ पढ चुका है।	(गलत)
	राम पाठ पढ चुका है।	(सही)
38.	आप सेलम जाना है।	(गलत)
	आप को सेलम जाना है।	(सही)
39.	राम को बहन चालाकी लडकी हैं।	(गलत)
	राम की बहन चालाक लडकी है।	(सही)
40.	वह काशी जरुरी जाना है।	(गलत)
	उसको काशी जरुर जाना है।	(सही)

41. राधा मयुरा जरुरी जाना चाहिये। (गलत)
राधा को मथुरा जरुर जाना चाहिये। (सही)

42. स्त्रीयाँ पुराना जमाना में बहुत पढता था। (गलत)
स्त्रीयाँ पुराने जमाने में बहुत पढ़ती थी। (सही)

43. मैं चार घोडा देखी था। (गलत)
मैंने चार घोंडों को देखा था। (सही)

44. रामगोपाल मे किताब पड चुका। (गलत)
रामगोपाल किताब पढ चुका। (सही)

45. तुम वहाँ नहीं जाओ। (गलत)
तुम वहाँ मत जाओ। (सही)

46. उनका बहुत भारी सम्मान हुआ। (गलत)
उनका बहुत सम्मान हुआ। (सही)

47. मेरा नाम श्री. रामगोपाल जी है। (गलत)
मेरा नाम रामगोपाल है। (सही)

48. उन्होंने हाथ जोडा। (गलत)
उन्होंने हाथ जोडे। (सही)

49. राम नावों पर सवार था। (गलत)
राम नाव पर सवार था। (सही)

50. वह भगवान की भक्ति व श्रद्धा करता है। (गलत)
वह भगवान पर भक्ति व श्रद्धा रखता है। (सही)

1.4 संधि :-

संधि का अर्थ है जोड या मेल। संधि में दो वर्णो या अक्षरों के मेल से नयी शब्द रचना होती है। इसी तरह दो निरर्थक वर्ण या अक्षर मिलकर सार्थक शब्द में परिवर्तित हो जाते है। इसमें वाक्यों का मेल न होकर केवल वर्णों या अक्षरों का मेल होता है। दो अक्षर मिलकर तीसरे अक्षर में बदल जाते है।

संधि तीन प्रकार की होती है -

(अ) स्वर संधि (आ) व्यंजन संधि (इ) विसर्ग संधि

(अ) स्वर संधि :-

दो स्वरों के मेल से होनेवाले परिवर्तन या विकार को स्वर संधि कहते है। स्वर संधि के पाँच भेद हैं -

(1) **दीर्घ संधि :-**

दो सजातीय या सवर्ण स्वर पास - पास आते, तो उनके बदले सवर्ण दीर्घ स्वर आता है। अर्थात्

अ + अः आ ; आ + अ = आ ; इ + ई = ई ; इ + ई = ई ; उ + ऊ = ऊ ; ऊ + उ = ऊ ; ऋ + ऋ = ऋ आदि

रवि + इंद्र = रवींद्र

भानु + उदय = भानुदय

पितृ + ऋण = पितृण

(2) **गुण संधि :-**

गुण का अर्थ है बढोत्तरी जो विशेष रुप से हो। अ या आ के आगे 'इ या ई' रहे तो दोनों मिलकर 'ए' और ''उ या ऊ' रहे तो 'ओ' और ऋ रहे तो अर् हो जाता है।

उदाः नर + इन्द्र = नरेंद्र

सूर्य + उदय = सूर्योदय

देव + ऋषि = देवर्षि आदि

(3) **वृद्धि संधि :-**

वृद्धि का अर्थ है बढ़ने की क्रिया। इस संधि के फल स्वरुप स्वर की मात्रा या संख्या बढ जाती है। अ के साथ ए या ऐ का मेल होने पर ए बढ़कर ऐ हो जाता है। और अ के साथ ओ या ओ का मेल होने पर औ हो जाना है।

उदा : एक + एक = एकैक

नव + ऐश्वर्य = नवैश्वर्य

परम + औषध = परमौषध

परम + ओ जस्वी = परमौजस्वी

(4) **यण संधि :-**

संस्कृत व्याकरण में य, र, ल, व वर्णों को यण् कहते है। इस संधि में स्वरों का मेल यण अर्थात य, र, ल, व मे परिवार्तन हो जाना है। अर्थात् इ, ई, उ, ऊ, ऋ के आगे कोई असवर्ण स्वर आवे तो इ ई के बदले य आता है। उ, ऊ के बदले 'व' आता है। ऋ के बदले 'र' आता है .

उदा : यदि + अपि = यद्यपि

अनु + अय = अन्वय

मातृ + ऐश्वर्य = मात्रैश्वर्य

(5) **अयादि संधि :-**

स्वरों का मेल जब अय, आय, अया, आयि जैसे रुपों में बदलता है तो उसे अयादि संधि कहते हैं। अर्थात् ए, ऐ, ओ के आगे कोई भिन्न स्वर आवे तो इसके बदले क्रमशः अय, आय, आव आता है।

उदा : ने + अन = नयन

नै + इका = नायिका

श्रो + अन = श्रवण

गै + अक = गायक

पो + अन = पवन

नौ + इक = नाविक

(आ) व्यंजन संधि :-

व्यंजन वर्ण के बाद स्वर या व्यंजन वर्ण के आने से उस मेल से जो परिवर्तन या विकार होता है, उसे व्यंजन सांधि कहते है। ये परिवर्तन कुछ निशिचत नियमों के अनुसार होते है।

(1) **पहला नियम :-**

क, च, ट, त, प के आगे कोई स्वर वर्ण या य, र, ल, व में से कोई वर्ण आये, तो उनके मेल के फल स्वरुप व्यंजन वर्ण अपने ही वर्ण के तीसरे वर्ण में बदल जाता है। (अर्थात्) क > गं ; च > ज, ट > ड ; त > द प > ब)

उदा : वाक् + ईश = वागीश

अच् + अंत = अजंत

तत् + रुप = तद्रूप

दिक् + गज = दिग्गज

षट् + आनन = षडानन

अप + इधन = अभिन्धन

(2) **दूसरा नियम :-**

किसी वर्ग के पंहले वर्ण के बाद (क, च, ट, त, प) उन्हीं वणों का तीसरा या चौथा वर्ण आये तो पहला वर्ण तीसरे वर्ण मे बदल जाता है।

(क, च, ट, त, प > ग, ज, ड, द, ब)

उदः वाक् + जाल = वाग्जाल

सत् + गति = सद्गति

(3) **तीसरा नियम :-**

किसी वर्ग के पहले वर्ण के बाद न या म व्यंजन आये, तो वह पहला वर्ण (अर्यात् क, च, ट, त, प) अपने वर्ण के पाँचवें वर्ण (ड, अ, ण, न, य) में बदले है।

उदः वाक् + मय = वाङ्मय

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

षट् + मास = षणमास

अत् + मत्त = उन्मत्त

(4) **चौथा नियम :-**

यदि 'म' वर्ण के बाद कोई स्पर्श व्यंजन (क से थ तक) आये तो म के बाद वाले स्पर्श व्यंजन के पाँचवे वर्ण (ड, ञ, ष, न, म) में या अनुस्वार में बदल जाता है।

उदः किम् + चित् = किंचित या किञ्चिन

सम् + पूर्ण = संपूर्ण था सम्पूर्ण

(5) **पाँचवाँ नियम :-**

म के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह आदि वर्णों के आने से म् अनुस्वार बन जाना है।

उदाः सम् + विधान = संविधान

सम् + लाप = संलाप

अपवाद : सम् + राट = सम्राट (यहाँ अनुस्वर नहीं होता)

(6) **छठा नियम :-**

यदि स्वर के बाद छ वर्ण आये तो वह च्छा हो जाता है।

उदः स्व + छंद = स्वच्छंद

परि + छेद = परिच्छेद

(7) **सातवाँ नियम :-**

यदि त् या द् के बाद ल आये तो त या द 'ल' में बदल जोते हैं।

उदाः उत् + लास = उल्लास

उत् + लेख = उल्लेख

(8) **आठवाँ नियम :-**

त या द के बाद ज या झ के आने से त या द का ज हो जाता है।

उदा : विपत् + जाल = विपज्जाल

सत् + जन = सज्जन

(9) **नौवाँ नियम :-**

न या द के बाद च या छ आने से त या द च में बदल जाता है।

उदाः उत् + छेद = उच्छेद

शरत् + चंद्र = शरचंद्र

(10) **दसवाँ नियम :-**

त या द के बाद श वर्ण के आने पर त् या द् बदलकर च और श बदल कर छ हो जाता है।

उदा : उत् + श्वास = अच्छावास

उत् + शिष्ट = उच्छिष्ट

(11) **ग्यारहवाँ नियम :-**

च् के पश्चात् 'क' वर्ग त वर्ग प वर्ग के तीसरे और चौथे वर्ण का कोई अक्षर (ग, घ, द, ध, ब, भ) य, र, ल, व या कोई स्वर वर्ण आने पर बदलकर द हो जाता है। त के बाद च होने पर च, ज या झ होनेपर ज, ट या ठ होने पर ट् ड् था ढ होने पर ड तथा ल होने पर ल् हो जाता है।

उदः जगत् + ईश = जगदीश

सत् + भावना = सद्भावना

सत् + जन = सज्जन

उत् + लास = उल्लास

(इ) **विसर्ग संधि :-**

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने से होनेवाला विकार या परिवर्तन विसर्ग संधि कहलाता है। इसके भी कुछ नियम है।

(1) **पहला नियम :-**

यादि विसर्ग के पहले इ या उ हो और विसर्ग के आगे र हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और विसर्ग के पहलेवाला ह्रस्व स्वर दीर्घ बन जाता है।

उदा : निः + रस = नीरस

निः + रज = नीरज

(2) **दूसरा नियम :-**

विसर्ग के आगे च, छ, ट, ठ, त, थ, स आने पर विसर्ग क्रमशः श, ष, स बन जाता है।

उदा: निः + चेष्ट = निश्चेष्ट

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

दुः + तर = दुस्तर

नमः + ते = नमस्ते

(3) **तीसरा नियम :-**

विसर्ग के पहले अ हो और विसर्ग के बाद क, ख, प, या, फ हो तो विसर्ग ज्यों का त्यों बन रहता है।

उदा: अन्तः + करण = अन्तःकरण

अन्तः + पुर = अन्तःपुर

(4) **चौथा नियम :-**

विसर्ग के पूर्व इ कार या उ कार हो और विसर्ग के बाद क, ख, प, था, फ रहे तो विसर्ग ष में परिवर्तित होता है।

उदा: निः + कपट = निष्कपट

चतु + पाद = चतुष्पाद

(5) **पाँचवाँ नियम :-**

यदि विसर्ग लुप्त हो जाता है तो अध्वनि ओ बन जाती है।

उदा : मनः + योग = मनोयोग

पुरः + हित = पुरोहित

(6) **छठा नियम :-**

अ ध्वनि के बाद विसर्ग हो और विसर्ग के बाद अ और क, च, ट, त, प वर्ग के तीसरा चौथा और पाँचवाँ वर्ण (ग, ध, ड, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म) हो तो अ का ओ हो जाना है साथ ही विसर्ग का लोप हो

जाता है।

उदाः मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

सरः + ज = सरोज

पयः + धर = पयोधर

(7) **सानवाँ नियम :-**

यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोडकर कोई स्वर हो तो विसर्ग के बाद कोई स्वर हो, तो विसर्ग 'र' में बदल जाता है।

उदाः निः + आहार = निराहार

दुः + आचार = दुराचार

निः + उपाय = निरुपाय

(8) **आठवाँ नियम :-**

थादि विसर्ग के पहले अ, आ को छोडकर कोई स्वर हो और विसर्ग के बाद य, र, ल, व, ह, था किसी वर्ग का तीसर, चौथा, पाँचवा वर्ण हो तो विसर्ग 'रेफ' अर्यात् र में बदल जाता है।

उदाः निः + गुण = निर्गुण

निः + झर = निर्झर

निः + मल = निर्मल

(9) **नौवाँ नियम :-**

विसर्ग के आगे - पीछे अ हो, तो विसर्ग लुप्त होकर ओ उच्चारण में बदल जाता है।

उदाः यशः + अभिलाषी = यशोभिलाषी

प्रथमः + अध्याय = प्रथमोध्याय

मनः + अनुकूल = मनोनुकूल

(10) **दसवाँ नियम :-**

विसर्ग के पूर्व अ, आ हो और बाद में कोई अन्य हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है।

उदाः अतः + एव = अतएव

(ई) संधि विच्छेद - अभ्यास :-

निम्न लिखित शब्दों के संधि विच्छेद कीजिए

1. अत्यधिक = अति + अधिक
2. अभ्युदय = अभि + उदय
3. अधीश्वर = अधि + ईश्वर
4. अत्यंत = अति + अंत
5. अन्तर्निहित = अंत + निहित
6. आद्यंत = अदि + अंत
7. उच्चारण = उत् + चारण
8. उल्लेख = उत् + लेख
9. तपोवन = तपः + वन
10. तेजोराशि = तेजः + राशि
11. तथापि = तथा + अपि
12. दिग्गज = दिक् + गज
13. देवेश = देव + ईश
14. दावानल = दाव + अनल
15. नारीश्वर = नारि + ईश्वर
16. निष्पाप = निः + पाप, निस् + पाप
17. निर्विवाद = निः + विवाद
18. निरुद्देश्य = निः + उद्देश्य
19. निर्भर = निः + भर
20. पुरुषोत्तम = पुरुष + उत्तम
21. महोत्सव = महा + उत्सव
22. यथोचित = यथा + उचित
23. लोकोक्ति = लोक + उक्ति
24. व्याकुल = वि + आकुल
25. वयोवृद्ध = वयः + वृद्ध
26. सज्जन = सत् + जन
27. सर्वोदय = सर्व + उदय
28. सदैव = सदा + एव

29.	सदानंद	=	सत् + आनंद
30.	अनुपभुक्त	=	न + उपयुक्त
31.	कवींद्र	=	कवि + इन्द्र
32.	सुरेश	=	सुर + ईश
33.	प्रत्युपकार	=	प्रति + उपकार
34.	सदैव	=	सदा + एव
35.	दुश्चरित्र	=	दुः + चरित्र

1.5 समास :-

संक्षिप्त :-

समास शब्द सम + आस इन दो शब्दों से बना हो सम् का अर्थ "संक्षिप्त और सुंदर" तथा आस का अर्थ कथन। अर्तात् सुंदर और संक्षिप्त शब्द (कयन) को समास कहते है। समास दो या दो से अधिक पदों के योग से बनता है। अर्थात् वे पद एक बन जाते हैं। इसीलिए कहा गया है कि "एक पडी भावः समासः" यह भी कहा गया है कि "समसनम् इति समासः" शब्दों को सुंदर - संक्षिप्त रुप देना ही समास है।

संधि में निरर्थक वर्णो के मेल परिवर्तन होता है। लेकिन समास में निरर्थक शब्द अगर हो, तो छोड दिये जाते हैं। शब्दों के बीच से उनकी विभक्तियों के हट जाने पर शंब्द रखनेवाले दो था दो से अधिक शब्दों के मिल जाने से समास बनते है।

(अ) समास के लक्षण :-

1. दो या दो से अदिंक पदों का थोग।
2. वे पद मिलकर एक हो जाते है।
3. समास में पदों की विभक्ति या प्रत्यय लुप्त हो जाते है।
4. विशेषकर संस्कृत शब्दों में संधि की स्थिति में संधि होती है।

(आ) समास के भेद :-

पूर्व पद और उत्तर पद या इन दोनों पदों की प्रधानता के आधार पर समास के चार भेद है।

(1) तत्पुरुष समास (2) बहुव्रीहि समास (3) द्वंद्व समास (4) अव्ययी भाव समास

(1) तत्पुरुष :-

अर्थ की दृष्टि में तत्पुरुष समास में पूर्व पद की अपेक्षा उत्तरपद प्रधान होता है। तत्पुरुष समास दो प्रकार से बनते है।

1. संज्ञा + विभक्ति + संज्ञा = सूर्य का उदय (सूर्योदय)
2. संज्ञा + विभक्ति + विशेषण = अकाल से पीडित (अकाल पीडित)

अर्थात् कारक की विभक्तियों के लोप होने से समास बनते है। अतः विभक्तियों के आधार पर तत्पुरुष के अभेद है।

(1) कर्म या द्वितीय तत्पुरुष :-

इस समास में कर्म कारक चिह्न 'को' लुप्त हो जाता है।

परलोक गमन - परलोक को गमन

गगन चुम्बी - गगन को चूमनेवाला

(2) करण या तृतीय तत्पुरुष :-

इस समास में करण कारक चिह्न 'से' लुप्त हो जाता है।

तुलसी कृत - तुलसी से कृत

मदान्ध - मद से अंध

(3) संप्रदान या चतुर्थी तत्पुरुष :-

इसमें संप्रदान कारक चिह्न "के लिए" लुप्त हो जाता है।

सत्याग्रह - सत्य के लिए आग्रह

रणभूमि - रण के लिए भूमि

(4) अपादान या पंचमी तत्पुरुष :-

इसमें अपादान कारक 'से' का लोप हो जाता है।

भयभीत - भय से भीत

पापमुक्त - पाप से मुक्त

(5) संबंध या षष्ठी तत्पुरुष :-

इसमें संबंध कारक चिह्न का, के, की का लोप हो जाता है।

गंगाजल - गंगा का जल

गुरु सेवा - गुरु की सेवा

(6) **अधिकरण या सप्तमी तत्पुरुष :-**

इसमें अधिकरण कारण चिह्न में और पर का लोप हो जाता है।

गृह प्रवेश - गृह में प्रवेश

शरणागत - शरण में आगत

(आ) कर्मधारय समास :-

इस समास के दोनों पद आपस में विशेषण विशेष्य अथवा उपमान - अपमेय का संबंध रखते है।

पीतांबर - पीत अंबर

नीलगाय - नील गाय

(इ) द्विगु समास :-

इस समास के पूर्व पद संख्यावाचक विशेषण होता है तथा अंतिम पद संज्ञा।

त्रिवेंणी - तीन वेणियों का समूह

शताब्दी - एक सौ वर्षों का समूह

(ई) नञ् समास :-

इस समास में प्रयम पद अ, ना, या अन तथा अंतिम पद संज्ञा होता है।

अनादि - न आदि

अयोग्य - न योग्य

(उ) मध्यम पद लोपी समास :-

तत्पुरुष समास के इस भेद में पदों के बीच से कारक की विभक्तियों का लोप हो जाता है। विभक्तियों के साथ बीच का कुछ अंश भी लुप्त हो जाते हैं। इसी से यह मध्यम पद लोपी समास कहा जाता है।

दही वडा - दहीमें डूबा हुआ वडा

घृतान्न - घृत से मिश्रित या पकाया हुआ अन्न

इस प्रकार कर्मधारय, द्विगु, नञ्, मध्यम पद लोपी समास को तत्पुरुष समास के भेदं ही मानत है। क्योंकि इन समासो में उत्तर पद को प्रधानता है।

(2) **बहुव्रीहि समास :-**

इस समास के दोनों पद अपने समान्य अर्थ छोडकर, साथ मिलने से विशेष अर्थ देते है। अर्थात् इनके दोनों पद से अलग अन्य पद प्रधान हो जाता है।

पंकज - पंक में जन्म लेनेवाला, कमल

नीलकंठ - जिसका कंठ नील है, शिव

(3) द्वंद्व समास :-

इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं। उनके बीच का और शब्द लुप्त हो जाता है।

माता - पिता - माता और पिता

अन्न - जल - अन्न और जल

(4) अव्ययीभाव समास :-

इस समास का पहला पद अव्यय होता है, और दूसरे पद के मिल जाने से समस्त पद अव्यय हो जाता है। ऐसे शब्द लिंग या वचन के कारण परिवर्तित नहीं होते।

प्रतिदिन - दिन - दिन

पलपल - हरपल

आजन्म - जन्म से लेकर

यथा शक्ति - शक्ति के अनुसार

(इ) विग्रह वाक्य - समास का नाम - अभ्यास :-

		विग्रह वाक्य	समास का नाम
1.	महाकवि	महान हो जो कवि	कर्मधारय
2.	पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम	अधिकरण तत्पुरुष
3.	चरित्र - चित्रण	चरित्र का चित्रण	सबंध तत्पुरुष
4.	ईश्वर विमुख	ईश्वर से विमुख	अपादान तत्पुरुष
5.	विधान सभा	विधान बनाने वाली सभा	मध्यम पद लोपी
6.	आत्मनिर्भर	आत्मा पर निर्भर	अधिकरण कारक तत्पुरुष
7.	नीलोत्पल	जो उत्पल नील हो	कर्मधारय
8.	मृगनयन	जिसको मृग के नयनों की तरह सुंदर नयन हो	बहुव्रीहि
9.	सन्मार्ग	जो मार्ग, सत् हो	कर्मधारय
10.	घनश्याम	घन के समान श्याम	कर्मधारय
11.	भवसागर	भव (संसार) रुपी सागर	कर्मधाय

12.	श्रमजीवी	श्रम से जीनेवाला जो है	वह - बहुव्रीहि
13.	स्नानघर	स्नान के लिए घर	संप्रदान कारक तत्पुरुष
14.	सेनापति	सेना का पति	संबंध कारक तत्पुरुष
15.	अनाचार	न आचार	नञ् तत्पुरुष
16.	चरणकमल	कमल के समान चरण	कर्मधारय
17.	त्रिभुवन	तीन भुवन	द्विगु
18.	चतुर्भुज	चतुर (चार) भुजाएँ जिसकी वह	बहुव्रीहि
19.	देवासुर	देवता और असुर	द्वंद्व
20.	घर - द्वार	धर का द्वार	संबंध तत्पुरुष
21.	यथाविधि	विधि के अनुसार	अव्ययीभाव
22.	पंचवटी	पांच प्रकार के वट वृक्ष जहाँ वध्यस्थान	बहुव्रीहि
23.	राम - लक्ष्मण	राम और लक्षमण	द्वंद्व
24.	नील कंठ	जिस का कंठ नील हो वह शिव	बहुव्रीहि
25.	राजपुत्र	राजा का पुत्र	संबंध तत्पुरुष
26.	पीताम्बर	पीत वस्त्र	कर्मधारय

1.6 कुछ स्मरण रखने योग्य बाते :-

1. वाक्य को शुध्द करने केलिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है।
2. पहले हमको यह देखना है - वाक्य में अशुद्धता क्या है ? और क्यों।
3. वाक्य में प्रयुक्त अशुद्धता जानकर उसके शुध्द रुप को प्रस्तुत करना है।
4. जोड या मेल को संधि कहते है।
5. संधि में दो वर्णों या अक्षरों की मेल से नई सब्द रचना होती है।
6. संधि तीन प्रकार की होती है

   (अ) स्वर संधि (आ) व्यंजन संधि (इ) विसर्ग संधि
7. सुन्दर और संक्षिप्त शब्द को समास कहते है।

8. समास दो या दो से अधिक पदों के योग से बनता है।
9. संधिमें निरर्थक वर्णों के मेल परिवर्तन होता है, लेकिन समास में निरर्थक शब्द अगर हो, तो छोड दिये जाते है।
10. समास में पदों की विभक्ति या प्रत्यय लुप्त हो जाते है।

1.7 बोध - प्रश्न :-

1. लिंग और वचन संबंधी अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके दिखाइये।
2. ने प्रत्यय के नियमों को प्रस्तुत कीजिए।
3. अपना और चाहिए का प्रयोग कीजिए।
4. वर्तिनी संबंधी कुछ अशुद्ध शब्दों को प्रस्तुत करके उनको शुद्ध कीजिए।
5. संधि किसे कहते है उसके कितने भेद है सोदाहरण समझाइये।
6. स्वर संधि के कितने भेद है सोदाहरण बताइये।
7. व्यंजन संधिके कितने भेद हैं सोदाहरण समझाइये।
8. विसर्ग संधि किसे कहते हैं और उसके नियमों के बारे में बताइये।
9. समास किसे कहते है और उसके लक्षण क्या है ?
10. समास के भेदों को सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

1.8 सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - डॉ. हरदेव बाहरी
2. हिन्दी का मौलिक व्याकरण - (सं) निगमानन्द परमहंस
3. व्यावहारिक हिन्दी - यन. नागप्पा

Sri R. Bhaskara Rao

Lesson - 3(2)

वचन

ईकाई की रुपरेखा :-

उद्धेश्य

प्रस्तावना

बहुवचन बनाने का नियम

विभक्यिों के प्रयोग में बहुवचन के रुप में

वचन - विषयक कुछ टिप्पणियाँ

स्मरण रखने योग्य बातें

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

1. संज्ञा और विकारी शब्दें के जिस रुप से वस्तु की संख्या का बोध हो ; उसे वचन कहते हैं। मुख्यत संज्ञा के एक वचन से एक वस्तु का और बहुवचन से बहुत सी बस्तुओं का बोध होता है।

2. लेकिन आदर केलिए एक व्यक्ति केलिए भी बहुवचन का प्रयोग किया जा सकता हैं।

   जैसे - बाबाजी आए।

   आप बडे विद्वान है।

   शब्दों के वचन पहचानने बिना वचन बदल कर वाक्यों को फिर से लिखना मुश्किल होगा। किन सूत्रों के आधार पर वचन बदलते हैं यह प्रधान वस्तु नहीं। शब्द एक वचन है या बहुवचन है यह बात प्रधान है।

प्रस्तावना :-

संज्ञा या विकारी शब्दों के जिस रुप से वस्तु की संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते है। हिन्दी में दो वचन है - एक वचन और बहु वचन।

1. शब्दके जिस रुप से एक ही व्यक्ति या पर्दाथ का बोध हो उसे एक वचन कहते हैं।

   जैसे - लडका, कलम, पुस्तक, तोता आदि।

2. शब्द के जिस रुप से अधिक व्यक्तियों अथवा पदार्थों का बोध हो उसे बहुवचन कहते हैं।

जैसे - लडके, कलमें, पुस्तकें, तोते आदि।

वचन के कारण संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रुप विकृत अथवा परिवर्तित होते हैं। किंतु ध्यान देने की बात यह कि सर्वनाम विशेषण और क्रिया के रुप मूलतः संज्ञाओं पर आश्रित हैं अतः वचन में संज्ञा शब्दों का रुपांतर होता है।

हुवचन बनाने का नियम :-

1. **आकारांत :-** शब्द एकारांत करने से बहु वचन में बदल जाते हैं।

   जैसे - घोडा - घोडे ; कपडा - कपडे

   अपवाद - नाना - नाना, पिता - पिता

2. **आकारान्त :-** शब्दों को छोडकर बाकी पुलिंग शब्द बहु वचन में भी वैसे ही रहते हैं।

   जैसे - भाई - भाई

   पेड - पेड

3. अकारन्त और आकारंत स्त्री लिंग शब्दों को बहुवचन मे परिवर्तित करना है तो शब्द के अंत में या, ये जोडना है।

   जैसे - बात - बातें

   माला -मालायें

4. इकारान्त या ईकारन्त स्त्री लिंग शब्दों के अंत में यँा जोडने से बहुवचन में परिवर्तित होते है।

   जैसे - तिथि - तिथियाँ

   नदी - नदियाँ

5. याकारान्त स्त्री लिंग शब्द 'याँ' जोडने से बहु वचन होते है।

   जैसे - बुढ़िया - बुढ़ियाँ

   चिडिया - चिडियाँ

6. अकारन्त या ऊकारान्त स्त्री लिंग शब्द 'एँ' जोडने से बहु वचन में परिवर्तित होते हैं।

   जैसे - वस्तु - वस्तुएँ

   बहु - बहुएँ

कुछ शब्दों के अंत में वर्ग या गण या लोग जोडने से बहु वचन होते है।

जैसे - मित्र - मित्रगण

बन्धु - बंधुगण

नेता - नेता लोग

8. कारक चिह्न जोडने पर प्रप्येक शब्द बहु वचन में ओंकारांत में रहता है।

जैसे - बस्तु को - बस्तुओं के

आँख से - आँखों से

इस प्रकार ऊपर बताये गये विवेचन से यह - स्पष्ट होता है कि एक वचन से बहु वचन किस प्रकार बनाया जाता। ऊपर के नियमों में विभक्तियों का प्रयोग नहीं किया गया है। अब इन विभक्तियों के साथ बहु वचन का प्रयोग भी जानना आवश्यकता है।

विभक्तियों के प्रयोग से बहु वचन के रुप :-

अब हमें देखना है कि हिन्दी की आठ विभक्तियों के प्रयोग से बहु वचन में एक शब्द के कई रुप बन जाते है।

जैसे - स्त्रियाँ, स्त्रियों

स्त्रियों को

स्त्रियों के साथ (के द्वारा)

स्त्रियों केलिए

स्त्रियों से

स्त्रियों का (के, की)

स्त्रियों में (पर)

वचन विषयक कुछ टिप्पपियाँ :-

1. किसी प्यक्ति के प्रति आदर का भाव दिखाने केलिए उसके साथ बहुवचन विशेषणों और क्रियाओं का प्रयोग होता है।

जैसे - अम्बेदकर एक बार हमारे नगर मे पधारे थे।

पिताजी दिल्ली गए हैं।

निम्न प्रसंग में वह सर्वनामक के स्थान पर वें का ही प्रयोग होता है।

युधिष्ठिर बडे धर्मात्मा थे

वे कभी असत्य नहीं बोलते थे।

स्मरण रखनेयोग्य बातें :-

1. हिन्दी अधिकतर शब्द पुंलिंग पाए जाते हैं। उन्हीं में कुछ परिवर्तन करके उन्हें स्त्री लिंग बना दिया जाता है।
2. लिंग परिवर्तन के मुख्य तीन प्रकार हैं
    1. शब्द के अंत में स्त्री प्रत्यय लगाकर
    2. स्त्री वाचक भिन्न शब्द प्रयुक्त करके
    3. पुंलिंग शब्द के पहले कोई वाचक या पुरुषवाचक शब्द लगाकर।
    4. आदर केलिए एक व्यक्ति केलिए भी बहुवचन का प्रयोग किया जा सकता है।

बोध - प्रश्न :-

रेखांकित शब्द का वचन बदलकर वाक्य को फिर से लिखिए।

1. रमेश ने कई पुस्तकें पढ़ी।
2. उमा की आँख अति सुंदर है।
3. आपका दर्शन करने आया हूँ।
4. उसका प्राण चला गया।
5. वह शिक्षित महिला पढ़ रही है।
6. सीता ने कहानी लिखी।
7. राक्षस मुनि को सताने लगा।
8. बगीचे में गौ चर रहें हैं।
9. इसकी बात मत मानो।
10. मेज पर पुस्तक है।
11. आकाश में चिडियाँ है।

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी - डां. नागप्पा
2. हिन्दी का मौखिक व्याकरण - सं. निगम नन्द परम हंस
3. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - एं हरदेवबाहरी

Sri N. Venkateswarlu

Lesson - 3(3)

लिंग

ईकाई की रुपरेखा :-

उद्वेश्य

प्रस्तावना

पुंलिंग शब्द स्त्री लिंग बनाने के कुछ नियम

स्त्री लिंग संबधी कुछ साधारण नियम

लिंग - परिवतंन के नियम और अभ्यास

शब्द के अंत में स्त्री प्रप्यय लगाकर

स्त्री वाचक भिन्न शब्दों के प्रयोग से

पुलिंग या स्त्री लिंग शब्द के पहले

वाचक या पुरुष वाचक शब्द लगाकर

स्मरण रखने योग्य बातें

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

उद्वेश्य :-

संज्ञा के जिस रुप से वस्तु की जाति का बोध हो, उसे लिंग कहते हैं। हिन्दी भाषा में दो ही लिंग है -

1. पुंलिग और स्त्री लिंग

पुरुष जाति का बोध करानेवाले शब्द पुलिंग और स्त्री जाति का बोध करनेवाले शब्द स्त्री लिंग कहलाते है। नपुंसक लिंग का प्रयोग हिन्दी में नहीं है। सजीव वस्तुओं में लिंग का निर्णय आसान है। क्यों कि उसका जोडा होता है और नर व नारी बतलानेवाले शब्दों का प्रयोग भाषा में होता है। लेकिन अन्य वस्तुओं या अप्राणिकायक शब्दों का लिंग भेद कल्पित है, यह केवल प्रयोग के द्वारा जाना जा सकता है। कभी कभी क्रिया या विशेषण के साथ शब्द का प्रयोग करने से लिंग का निश्चय होता हैं। यों संज्ञा शब्दों के लिंग - भेद का ज्ञान प्राप्त करना हिन्दी विधा केलिए आवश्यक है। इस इकाई को पढ कर आप लिंग के स्वरुप और लिंग - निर्णय के कुछ नियमों को अच्छी तरह जान सकेंगे।

प्रस्तावना :-

वास्तव में हिन्दी भाषा में अनेक भाषाओं के शब्द सम्मिलित होने के कारण एक नियम निश्चित नहीं किया जा सकता

कि किस शब्द का कौन - सा लिंग है ? यह बात न समझने के कारण कोई भाई शब्द का स्त्री लिंग भौजाई बताते है, क्योंकि वह भाई का पत्नी है। यह अशुद्ध है। भाई शब्द का स्त्री लिंग बहिन है। अतः लिंग के भेद को पहचानने केलिए मोटे तौर पर निर्धारित कुछ नियमों को जानना अत्यंत आवश्यक है।

पुंलिंग संबंधी कुछ साधारण नियम इस प्रकार है :-

1. देशों, पहाडों, समुद्रों और समय के भागों और ग्रहों के नाम (पृरवी को छोडकर)

   जैसे - भूमध्य सागर, हिमालय, विन्धयाचल, चैत्र, वैशाख सप्ताह, पक्ष दिन, पल, क्षण सूर्य, चंद्र, बुध

2. जिन हिन्दी शब्दों के अंत में अ या आं दो और दिन भाववाचक संज्ञाओं के अंत में पन आव या पा आता है, वे पुंलिंग हैं।

   जैसे - लडका, घडा, लोटा, भोटा, चमडा, पैसा, कपडा, धन, बल, सिर, अनाज, चावल, बचपन, मनुष्यत्व धैर्य गैरव।

3. वर्णमाला के सभी - अक्षर (इ, ई, ऋ को छोडकर) और मौनश्री, इमली आदि कुछ एक को छोडकर सभी वृक्षवाचक शब्द -

   जैसे - अ, आ, उ, ऊ, क, ख, आदि

   आम, कीकर, केला, नारियल आदि

4. आर आप व आस से अन्त होनेवाले और तं, त्र और इत और न से अंत होनेवाले संस्कृत के शब्द।

   जैसे - विकार, विस्तार, परिताप, उल्लास, स्वागत गीत चरित्र, गणित, चित्र, चरित्र नेत्र, क्षेत्र, पात्र पालन पोषण, नयन, वचन, शासन, दमन आदि।

5. धातुओं के नाम (चांदी को छोडकर) और अनाजों के नाम (अरहर, मूंग, मसूर, दाल को छोडकर)

   जैसे - सोना, पीतल, कांसा, मोती नीलम, गेहूँ, चावल मटर, चना आदि

6. द्रव - पदार्थी के नाम (छाछ - लस्सी को छोडकर)

   जैसे - घी, दूध, तेल, दही, पानी आदि

7. उर्दू की जिन संज्ञाओं के अंत में आब आता हो (किताब, शराब को छोडकर) और आर, आत, आन, आता हो। (दुकान, सरकार को छोडकर) पुलिंग है।

   जैसे - गुलाब, जुलाब, हिसाब, जवाब, और बाजार, हाल, सवाल, मकान, सामान, निशान आदि

स्त्री लिंग संबधी कुछ साधारण नियम :-

1. नदियों, झीलों के नाम, तिथियों, न क्षत्रों के नाम स्त्री लिंग है।

   जैसे - गंगा, यमुना गोदावरी (सिंधु - ब्रह्मपुत्र को छोडकर)

2. अंतिम आ को इया करने से पुंलिंग से स्त्री लिंग बना सकते हैं।

जैसे - कुत्ता - कुत्तिया, बूढा - बुढिया

3. पुंलिंग शब्द के अंत में इन या आइन जोडने से स्त्री लिंग में परिवर्तित होते है।

जैसे - भिखआरी - भिखारिन

माली - मालिन

बाबू - बबुआइन

4. कुछ अकारांत पुंलिग शब्द आकारान्त करने से स्त्री लिंग में परिवर्तित होने है -

अध्यक्ष - अध्यक्षा

छात्र - छात्रा

5. कुछ पुंलिंग शब्द में नी या आनी जोडने से स्त्री लिंग में पडिवर्तित होते है।

सिंह - सिंहनी

मैहतर - मैहतरानी

6. कुछ पुंलिंग शब्द अंत में अर्थात् कुछ अकारांःत शब्दों में अ को इका में परिवर्तित करने से पुंलिंग स्त्री लिंग में परिवर्तित होते है।

जैसे - रक्षक रक्षिका, अध्यापक - अध्यापिका, गायक - गायिका

7. कुछ शब्द इन नियमों से परे रहकर पूर्ण रुप से शब्द परिवर्तित करने से पुंलिंग - स्त्री लिंग में परिवर्तित होते है।

जैसे - आदमी - औरत, भाई - बहन

8. कुछ शब्दों के पहले मादा जोडने से वह शब्द स्त्री लिंग बन जाते हैं।

जैसे - नर कौआ - मादा कौआ

नर भेडिया - मादा भेदिया आदि

9. उर्दु की आकारान्त संज्ञाएँ

जैसे - हवा, दवा, सजा

10. संस्कृत की आकारंत नाकारंत, उकारांत संज्ञाएँ -

• जैसे - प्रार्थना, माया, लीला, लज्जा, दया, कृपा, वायु, ऋतु, मृत्यु वस्तु (तरु, तालु, मधु आदि को छोडकर) महिमा, लालिमा, कालिमा, सुन्दरता, मूर्खता, मनुष्यता आदि।

11. तकारांत, सकारांत, तथा - हट, वट, ट से अंत होनेवाली भाववाचक संज्ञाएँ

जैसे - रात, बात, छत, वचन, ताकत लात (भात खेत को छोडकर)

(यास, मिठास, सांस, बकवास आदि (निकास బయటి మార్గం)

(निवास, **उपवास, विलास आदि को** छोडकर) सजावट, झंझट, बनावट आदि।

लिंग परिवर्तन के नियम और अभ्यास :-

हिन्दी में अधिकतर शब्द पुंलिंग पाये जाते हैं। उन्हीं में कुछ परिवर्तन करके उन्हें स्त्री लिंग बना दिया जाता है। लिंग परिवर्तन इस प्रकार है -

(क) संबंधवाचक और प्राणिवाचक अकारन्त पुंलिंग संज्ञाओं के अंतिम 'अ' या 'आ' के स्थान में ई. प्रात्यय लगाने से स्त्री लिंग शब्द बन जाता है, जैसे -

पुंलिंग		स्त्री लिंग
हरिण	-	हरिणी
कबूतर	-	कबूतरी
लडका	-	लडकी
बेटा	-	बेटी
बकरा	-	बकरी

(ख) व्यवसायवाचक संज्ञाओं में इन प्रत्यय लगाने से जैसे -

धोनी	-	धोबिन
माली	-	मालिन
लुहार	-	लुहारिन
तेली	-	तेलिन
जोगी	-	जोगिन

(ग) कई इकारान्त, उकारान्त और एकारंत शब्दों को स्त्री लिंग बनाने केलिए ई, उ और ए को आइन प्रत्यय से बदल देते है जैसे

गुरु	-	गुरुआइन
पंडा	-	पंडाइन
चौधरी	-	चौधराइन

(घ) कई प्राणिवाचक संज्ञाओं के अंत में नी प्रप्यय लगाने से स्त्री लिंग बन जाता है। जौसे -

सिंह	-	सिंहनी
हाथी	-	हाथिन
मोर	-	मोरनी
ऊँट	-	ऊँटनी

(ङ) कई वर्णवाचक और संबंध वाचक संज्ञाओं के अंत में आनी प्रत्यय लगाया जाता है।

जैसे	नौकर	-	नौकरानी
	देवर	-	देवरानी
	जेठ	-	जेठानी
	चौधरी	-	चौधरानी

स्त्री वाचक भिन्न शब्दों के प्रयोग से लिंग परिवर्तन :-

कई ऐसे शब्द है जिन के स्त्री लिंग बनाने का कोई विशेष स्त्री वाचक नियम नहीं। इनके दोनों में भिन्न शब्द होते हैं।

जैसे:	राजा	-	रानी
	भाई	-	बहन
	पुरुष	-	स्त्री
	बैल	-	गाय
	पिता	-	माता
	सुलतान	-	सुलताना

पुंलिंग या स्त्री लिंग शब्द के पहले :-

कई स्त्री वाचक या पुरुषवाचक शब्द लगाकर लिंग परिवर्तन होते हैं। जैसे

पुरुष कवि	-	स्त्री कवि
नर चील	-	मादाचील
पुरुष छात्र	-	स्त्री छात्र
पुरुष सदस्य	-	स्त्री सदस्य

इस प्रकार हिन्दी भाषा में संज्ञा के लिंग - भेद के नियमों को ठीक से पढने से हिन्दी भाषा की शुद्धता और स्पष्टता का परिचय होता है।

लिंग संबधी भूले :-

रेखांकित शब्द का लिंग बदलकर वाक्य फिर से लिखिए :-

1. नौकर आज छुट्टी पर है। - नौकरानी आज छुट्टी पर है।

2.	यह अच्छा विद्वान है।	-	यह अच्छी विदुषी है।
3.	अध्यापक ने पाठ पढ़ा	-	अध्यापिका ने पाठ पढ़ा।
4.	बालक पुस्तक पढ़ता है	-	बालिका पुस्तक पढ़ती है।
5.	यह मोर नाचता हैं	-	यह मोरनी नाचती है।
6.	उसका पति अब नहीं रहा	-	उसकी पत्नी अब नही रही।
7.	राम का नौकर बाजार जाता हैं	-	राम की नौकरानी बाजार जाती हैं।
8.	मेरी माता रोटी बनाती हैं	-	मेरे पिताजी रोटी बनाते हैं।
9.	हाथी जंगल में रहते हैं	-	हाथिनें जंगल में रहती हैं।
10.	हंस पानी में तैर रहा है	-	हंसनी पानी में तैर रही है।
11.	धोबी कपडे धोता है	-	धोबिन कपडे धाती है।
12.	आज पंडितजी ने भाषण दिया है	-	आज पंडिताइन ने भाषण दिया है।
13.	आपका मालिक कौन है ?	-	आपकी मालकिन कौन है ?

स्मरण रखनेयोग्य बातें :-

1. हिन्दी में केवल दो लिंग है - (अ) पुंलिंग, (आ) स्त्री लिंग।
2. नर प्राणियों के सूचित करनेवाली सभी शब्द पुलिंग है, तो मादा प्राणियों सूचित करनेवाली सभी शब्द स्त्री लिंग हैं।
3. प्राय : आकारन्त शब्द पुंलिंग है परंतु इनमे कुछ अपवाद हैं।
4. प्रायः ई कारान्त शब्द स्त्री लिंग हैं। परन्तु इनमें कुछ अपवाद है।
5. अप्राणिवाचक शब्द उनके परिणाम, स्थिति, गुण के अनुसार या तो पुलिंग होते हैं या स्त्री लिंग।

बोध - प्रश्न :-

1. सिंह तेज दैडता है।
2. पंडा पूजा करता है।
3. गुरु पाठ सिखाता है।
4. देवर मुस्कराता है।
5. नौकर काम करता है।

6. बादशाह युद्ध करता है।
7. लेखक लिखता है।
8. धोबी कपडा लाता है।
9. हरिण दौडता है।

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. मानक व्यावहारिक हिन्दी व्याकरणा तथा रचना - श्याम जी गोकुल वर्मा
2. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - डॉ. हरदेवबाहरी
3. व्यावहारिक संरचना और अभ्यास प्रधान संपादक - बाल गोविन्द मिश्रा

Sri N. Venkateswarlu

Lesson - 3(4)

वाच्य

ईकाई की रुपरेखा :-

उद्धेश्य

प्रस्तावना

वाच्य (Voice)

कर्तृ वाच्य

कर्म वाच्य

भाव वाच्य

कर्तृ वाच्य, कर्मवाच्य और भाव वाच्य बनाने की पद्धति

स्मरण रखने योग्य बातें

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

हिन्दी में भाव की प्रधानता को दृष्टि में रखकर कभी कर्तृ वाच्य का प्रयोग होता है, तो कभी कर्मवाच्य का प्रयोग, कभी भाव वाच्य का प्रयोग किया जाता है।

आवश्यकतानुसार कर्तृवाच्य क्रिया को कर्मवाच्य या भाव वाच्य क्रिया में बदल देते हैं तथा कर्म वाच्य या भाव वाच्य क्रिया को कर्तृवाच्य क्रिया में बदल सतते है। अतः इकाई में आप वाच्य के अर्थ भाव की प्रधानता के अनुसार वाच्य परिवर्तन के नियम सीख सकेंगे।

प्रस्तावना :-

हिन्दी में तीन प्रकार के वाच्य (Voice) है।

1. कर्तृवाच्य (Active Voice)
2. कर्म वाच्य (Passive Voice)
3. भाव वाच्य (Imperative Voice)

इन तीनों वाच्यों को ठीक से पढने, समझने और प्रयोग करने से भाव की प्रधानता स्पष्ठ रुप से मालूम होती है। अतः इनके बारे में ज्ञान रखना हिन्दी विद्यार्थी केलिए आवश्यक है।

वाच्य (Voice) :-

वाच्य की परिभाषा :- क्रिया के जिस रुपांतर से यह ज्ञात हो कि वाक्य में क्रिया के विधान का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है, अथवा भाव है। उसे वाच्य कहते है।

1. **कर्तृ वाच्य :-** कर्तृवाच्य वह है जिस में लिंग, वचन आदि कर्ता के अनुसार होते हैं। अर्थात् कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है।

   उदा : गोविन्द फल खाता है। इस वाक्य में गोविंद कर्ता है। उसके अनुसार क्रिया पुंलिंग एक वचन में आती है। याने कर्तृवाच्य में कर्ता प्रधान होता है। वैसे ही कर्म वाच्य में कर्म प्रधान होता है। वैसे ही भाव वाच्य में भाव प्रधान होता है।

2. **कर्म वाच्य :-** कर्म वाच्य में लिंग वचन आदि कर्म के अनुसार बदलते है।

   उदा : गोविंद से फल खाया गया। इस वाक्य में फल कर्म है। कर्म पुलिंग एक वचन में रहने के कारण क्रिया भी पुलिंग एक वचन में रहती है। यहाँ कर्म वाच्य में **कर्ता के बाद** से लगता है। तब क्रिया कर्म के लिंग वचन के अनुसार बदलती है।

3. **भाव वाच्य :-** क्रिया का मुख्य संबंध कर्ता कर्म से न होकर भाव से है उसे भाव वाच्य कहते हैं।

   उदा : गोविंद से दौडा नही जाता। इस वाक्य में दौडा नही जाता। यहाँ क्रिया का मुख्य संबंध भाव से हैं। भाव वाच्य हमेशा अकर्मक क्रिया में ही होता है।

   (सूचना) : सकर्मक क्रियायें कर्म वाच्य में और अकर्मक क्रियायें भाव वाच्य में बदलती है।

कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाव वाच्य बनाने की पद्धति :-

कर्तृ वाच्य की क्रिया को सामान्य भूतकाल के रुप में लाकर उसके साथ काल, पुरुष, वचन और लिंग के अनुसार जो क्रिया के रुप लगाने से कर्मवाच्य क्रिया बन जाती है।

जैसे -	**सर्कमक कर्तृवाच्य**	-	**कर्म वाच्य**
	राम रोटी खाता है	-	राम से रोटी खाई जाती है।
	लक्ष्मण ने मेघनाथ को मारा	-	लक्ष्मण से मेघनाथ मारा गया।
	अकर्मक कर्तृवाच्य	-	**भाव वाच्य**
	मै नही जाता	-	मुझ से जाया नहीं जाता
	घोडा नहीं चलता	-	घोडे से नहीं चला जाता

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य और भाव वाच्य में बदलने की कुछ और प्रयोग :-

1. **उदा:** गोविन्द ने फल खाया। (कर्तृ)
   गोविन्द से फल खाया गया। (कर्म)
   रमेश दौड़ता है। (कर्तृ)
   रमाश से दौडा जाता है। (भाव)

2. कर्मवाच्य में क्रिया के भूतकालिक रुप के पद "जाता है" (र्वतमानकाल)

   गया (भूतकाल) जायेगा (भविष्यत्काल) आता है।

   उदा : उससे सिनेमा देखा जाता है। (वर्तमानकाल)
   वह सिनेमा देखा गया। (भूतकाल)
   उससे सिनेमा देखा जायेगा। (भविष्यत् काल)

3. कर्म वाच्य में लिखते समय काल, लिंग, वचन पर ध्यान रखना होता

4. कर्म के बाद "को आने से क्रिया पुंलिंग एक वचन में होता है।

कर्तृ वाच्य से कर्म वाच्य में बदलिये :-

1. मैं रोटी खाता हूँ। (कर्तृ)
   मुझ से रोटी खायी जाती हैं। (कर्म)
2. वे पानी पी रहे हैं। (कर्तृ)
   उनसे पानी पिया जा रहा है। (कर्म)
3. हम फल खायेंगे। (कर्तृ)
   हम से फल खाये जायेंगे। (कर्म)
4. वह दूध पीता होगा। (कर्तृ)
   उससे दूध पिया जाता होगा। (कर्म)
5. लक्ष्मी हिन्दी सीखती है। (कर्तृ)
   लक्ष्मी से हिन्दी सीखी जाती है। (कर्म)
6. लदके पानी लाये। (कर्तृ)
   लडकों से पानी लाया गया। (कर्म)

7. रमेश ने पत्र लिखा। (कर्तृ)
   रमेश के द्वारा पत्र लिखा गया। (कर्म)
8. गोपाल ने यह चिट्ठी लिखी। (कर्तृ)
   गोपाल से यह चिट्ठी लिखी गयी। (कर्म)
9. आज हम रोटी नही बनायेंगे। (कर्तृ)
   आज हम से रोटी नहीं बनायी जायेगी। (कर्म)
10. ये सूखी रोटियाँ वे नहीं खायेंगे। (कर्तृ)
    ये सूखी रोटियाँ उनसे नहीं खाई जायेंगी। (कर्म)
11. दक्षिण में चावल ज्यादा खाते हैं। (कर्तृ)
    दक्षिण में चावल ज्यादा खाया जाता है। (कर्म)
12. हम अंग्रेजी नहीं बोल सकते । (कर्तृ)
    हम से अंग्रेजी नहीं बोली जाती। (कर्म)
13. रावण ने सीता को चुराया। (कर्तृ)
    रावण से सीता चुरायी गयी। (कर्म)
14. ईश्वर ने यह दुनिया बनायी। (कर्तृ)
    ईश्वर से यह दुनिया बनायी गयी। (कर्म)

स्मरण रखनेयोग्य बातें :-

1. हिन्दी में भाव प्रधानता को दृष्टि में रखकर कभी कर्तृवाच्य का प्रयोग हो तो कभी - कर्म वाच्य का, कभी - कभी भाव वाच्य का प्रयोग किया जाता है।
2. कर्तृ वाच्य में क्रिया द्वारा कर्ता प्रबल दिया जाता अतः क्रिया का प्रधान विषय कर्ता होता है।
3. कर्मवाच्य मे उसी क्रिया का बल कर्म पर विशेष रुप से दिया जाता है। अतः क्रिया का प्रधान विषय कर्म बन जाता हैं।
4. भाववाच्य में क्रिया मुख्य विषय न तो कर्ता है और न कर्म अपितु क्रिया का अपना अर्थ ही गुख्य विषय है। इस में क्रिया सदा पुंलिंग प्रथम पुरुष और एक वचन में रहती हैं और वह निषेधार्थ का प्रतिपादन करती है।

बोध - प्रश्न :-

वाच्य बदलकर लिखिए :-

1. राम ने रावण को मारा।
2. सिपाही ने चोर को पकडा।
3. लक्ष्मी ने पत्र लिखा।
4. सरला ने भोजन किया होगा।
5. गोविन्द ने रोटी खायी है।
6. रमेश ने पुस्तक पढ़ी।
7. मोहन सोया।
8. मैं जाता हूँ।
9. वह नहीं खाता।
10. राधा नहीं बैठती।
11. घोडा नहीं चलता।
12. मैं नहीं जाता।

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - डॉ. हरदेव बाहरी, लोक सभा प्रकाशन, इलाहाबाद
2. व्यावहारिक संरचना और अभ्यास - प्रधान रुंपादक -बालगोविन्द मिश्रा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

Sri N. Venkateswarlu

Lesson - 3(5)

कारक

ईकाई की रुपरेखा :-

उद्धेश्य

कारक प्रस्तावना

कारक के भेद - कर्त्ता कारक
कर्म कारक
करण कारक
संप्रदान कारक
अपादान कारक
संबंध कारक
अधिकरण कारक
संबोधन कारक

कर्म और सम्प्रदान कारक में भेद

करण और अपादान कारक में भेद

का, के, की नियम - 'का' का प्रयोग
'की' का प्रयोग
'के' का प्रयोग

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

इस इकाई में आप कारक संबंधी विषयों की जानकारी प्राप्त करेंगे। हिन्दी भाषा में इसका महत्व आप जान लेंगे, कारक के बारे में जानने के बिना हम अपनी भावनाओं को दूसरों तक अर्थवत् पहुँच नहीं सकते व्याकरण के अंतर्गत इसका महत्व ज्यादा है। कारकों के बारे में सठीक जानकारी देना इस इकाई का उद्धेश्य है।

प्रस्तावना :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से उसका संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं। कारकों का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता, हिन्दी में कारकों का प्रयोग बहुत महत्व पूर्ण है। हिन्दी में कारकों का प्रयोग शब्द के बाद में किया

जाता है। अतः इन्हें परसर्ग भी कहते हैं। इन में 'ने' केवल भूतकाल में ही आता है। इसलिए इस पर ध्यान देना आवश्यक है। इन सब का परिचय इस इकाई में प्राप्त करेंगे।

कारक परिभाषा :-

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रुप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका संबंध सूचित हो, उसे कारक कहते हैं।

कारक के भेद :-

हिन्दी में आठ कारक हैं। कारकों का बोध कराने केलिए संज्ञा के आगे जो प्रत्यय लगाये जाते हैं, उन्हें विभक्तियाँ कहते हैं।

हिन्दी के कारक और उनकी विभक्तियाँ इस प्रकार है।

कारक का नाम	**विभक्तियाँ**
कर्त्ता कारक	ने
कर्म कारक	को
करण कारक	के साथ, के द्वारा, से
सम्प्रदान कारक	केलिए
अपादान कारक	से
सम्बंध कारक	का, के, की
अधि करण कारक	में, पर
सम्बोधन कारक	हे, अरे

1. **कर्त्ता कारक :-**

संज्ञा के जिस रुप से काम करने वाले का बोध होता है, उसे कर्त्ताकारक कहते हैं।

उदा : गोपाल ने फल खाया

यहाँ खानेवाला गोपाल है। अतः गोपाल ने कर्त्ता कारक है।

2. **कर्म कारक :-**

जिस वस्तु पर कर्त्ता या कर्म का फल पडता है, उसे कर्मकारक कहते हैं।

उदा : राम ने रावण को मारा।

यहाँ रावण पर मार पडी है।

अर्थात् मारने की क्रिया का फल रावण (कर्म) पर पडा है।

अतः रावण को कर्मकारक है।

3. **करण कारक :-**

क्रिया के साधन का बोध करानेवाले संज्ञा या सर्वनाम के रुप को "करण कारक" कहते हैं। इसकी विभक्तियाँ से, के द्वारा के साथ है।

जैसे : राम ने श्याम को छडी से मारा

किताबें वी. पी. पी. के द्वारा भेजिए

मैं उसके साथ जाता हूँ

यहाँ छडी से, वी. पी. पी. के द्वारा, के साथ 'करण कारक' हैं।

4. **संप्रदान कारक :-**

जिस केलिए काम निकलता है, जिसकेलिए कुछ किया जाय या जिसको कुछ दिया जाय उसका बोंध कराने वाला रुप 'संप्रदान कारक' कहलाता है, इसकी विभक्तियाँ को और केलिए हैं।

जैसे : गीता को मैं ने सौ रुपये दियें।

माँ बच्चों केलिए खाना बना रही है।

यहाँ गीता को, बच्चें केलिए संम्प्रदान कारक है।

5. **अपादान कारक :-**

संज्ञा के जिस रुप से अलग होने का बोंध होता है - उसे अपादान कारक कहने हैं। इसकी विभक्ति से है।

जैसे : वृक्ष से फल गिरता है।

गीता बजार से आयी।

इन उदाहरणों में वृक्ष से, बाजार से अपादान कारक है।

6. **संबंध कारक :-**

जिससे एक वस्तु या व्यक्ति का दूसरी वस्तु या व्यक्ति से सम्बन्ध ज्ञात हो, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसर्क विभक्तियाँ का, के, की है।

उदा : कृष्ण का भाई बलराम है।

राम के लडके कालेज गये हैं।

विनोद की बहन माधवी है।

यहाँ कृष्ण का, राम के, विनोद की संबंध कारक है।

7. **अधिकरण कारक :-**

संज्ञा के जिस रुप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। में और पर इसकी विभक्तियाँ है,

उदा : (अ) प्रमोद मेज पर बैठा है।

(आ) किताब में चित्र हैं।

किताब में , मेज पर अधिकरण कारक है।

8. **संबोधन कारक :-**

जिस संज्ञा द्वारा किसी को पुकारा जाए, उसे संबोधन कारक कहते हैं।

उदा : हे राम ! श्याम को मत मारो।

हे भगवान ! मेरी रक्षा करों।

यहाँ हे राम, हे भगवान सम्बोधन कारक हैं।

कर्म और सम्प्रदान कारक में भेद :-

द्विकर्मक क्रियाओं के मुख्य कर्म के साथ कर्म कारक की विभक्ति को और गौण (अप्रधान) कर्म के साथ सम्प्रदान कारक की विभक्ति को का प्रयोग होता है।

उदा : नौकर ने बैल को डंडे से मारा। (कर्म कारक)

नौकर ने पानी बैल को पिलाया। (सम्प्रदान कारक)

करण कारक और अपादान कारक में भेद :-

करण कारक की से विभक्ति साथन को सूचित करती है, किन्तु अपादान की से विभक्ति अलग होना सूचित करती है।

उदा : सीता सुई से सीती है। (करण कारक)

उसने पानी से मछली को निकाला (अपादन कारक)

का, के, की नियम :-

ये तीनों सम्बन्ध कारक के चिह्न हैं। इन तीनों विभक्तियों का एक ही अर्थ होता है, अंग्रेजी में 'of' शब्द का जो अर्थ होता है, वही अर्थ इन तीनों विभक्तियों का है।

'का' का प्रयोग :-

यदि पुंलिंग एक वचन संज्ञा का सम्बन्ध सूचित करना है तो उसके पहले 'का' विभक्ति का प्रयोग किया जात है।

जैसे - गोविंद का कपडा

यहाँ कपडा संज्ञा पुंलिंग एक वचन शब्द है। इसलिए उसके पहले 'का' विभक्ति - प्रत्यय का प्रयोग किया गय है।

'की' का प्रयोग :-

यदि स्त्रीलिंग एक वचन / बहुवचन संज्ञा का संबंध सूचित करना है तो उसके पहले 'की' विभक्ति का प्रयोग किय जाता है।

जैसे - मोहन की लडकी (लडकी = स्त्री लिंग एक वचन)

गोपाल की लडकियाँ (लडकियाँ = स्त्री लिंग बहुवचन)

'के' का प्रयोग :-

1. यदि पुंलिंग बहुवचन संज्ञा का संबंध सूचित करना है तो उसके पहले के विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

   जैसे - मोहन के लडके (लडके - पुंलिंग बहु वचन)

2. यदि "का" के बाद विभक्ति युक्त संज्ञा हो तो 'का' के रुप में बदल जाता है, राम का घर के बाद में प्रत्यय जोडते हैं तो 'का', 'के', के रुप में बदला जाता है।

   राम का घर + में = राम के घर में

3. सम्बन्धियों (Relatives), शरीर के अंगों (parts of the body) और स्थिर सम्पत्ति (immovable property) को सूचित करने केलिए हमेशा 'के' प्रयुक्त होता है चाहे वह एक वचन या स्त्रीलिंग की संज्ञा क्यों न हो, 'का' या 'की' का प्रयोग नहीं होता।

जैसे -	दशरथ के तीन रानियाँ थी।	(सम्बन्धी)
	नरेश के एक आँख हैं।	(शरीर का अवयव)
	गोपाल के एक मकान है।	(स्थिर सम्पत्ति)

बोध - प्रश्न :-

रिक्त स्थान में कारक चिह्न लगाइए :-

1.	सरोवर	-	पाती है।	(में)
2.	आप	-	बहन क्या करती है।	(की)
3.	कलम	-	स्याही है	(में)
4.	सीता के पति	-	नाम राम है।	(का)
5.	मोहन	-	पुस्तक कहाँ हैं ?	(की)
6.	मंदिर	-	निकट तालाब है	(के)
7.	देश	-	सेवा करनी चाहिए	(की)
8.	- गोपाल, यहाँ मत आओ	-		(हे)
9.	पिता पुत्र	-	समझाता है	(को)
10.	दाल	-	कुछ काला जरुर है	(में)
11.	राजा कवियों	-	प्रोत्साहन देते थे।	(को)

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी - ओंम प्रकाश सिंहल
2. व्यावहारिक हिन्दी - यन. नागप्पा
3. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - डॉ. हरदेव बाहरी

Sri P.S. Datta Prasad

Lesson - 3(6)

काल

ईकाई की रुपरेखा :-

- उद्धेश्य
- प्रस्तावना
- काल
    - भूतकाल
        - सामान्य भूतकाल
        - आसन्न भूतकाल
        - पूर्ण भूतकाल
        - संदिग्ध भूतकाल
        - अपूर्ण भूतकाल
        - हेतु - हेतु मद भूतकाल
    - वर्तमान काल
        - सामान्य वर्तमान काल
        - संदिग्ध वर्तमान काल
        - अपूर्ण वर्तमान काल
        - हेतु हेतुमद वर्तमान काल
    - भविष्यत् काल
        - सामान्य भविष्यत् काल
        - संदिग्ध भविष्यतं काल
        - हेतु - हेतु मद भविष्यत् काल
- स्मरण रखने योग्य बातें
- बोध - प्रश्न
- सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

हिन्दी में कर्ता, कर्म और क्रिया के रुप को समझने के साथ ही काल भी समझना होगा।

तभी वाक्य रचना ठीक हो सकेगी। नहीं तो जिस काल के वाक्य की माँग होगी, विद्यार्थी इसी काल में वाक्य लिख सकेंगे। काल के भेद को पहचानने से यह पता चलता है कि अमुक विषय या कार्य बीते हुए समय (भूतकाल) में घटित हुआ है या वर्तमान क समय में हो रहा है (वर्तमान काल में) या आनेवाले समय में (भविष्यत्काल) में होनेवाला है। अतः हिन्दी विदयार्थी को काल के भेद को जानना आवश्यक है। इसी इकाई में आप काल के अर्थ तथा हिन्दी के तीन मुख्य काल -

(अ) भूतकाल (आ) वर्तमानकाल (इ) भविष्यत्काल

के बारे में फिर उनसे बननेवाले अन्य काल भेदों के बारे में सीख सकेंगे।

प्रस्तावना :-

काल के भेद से क्रिया भेद का पता चलता है जैसे - जवहरलाल नेहरु नेता थे।

वाजपाई नेता है। न जाने कौन नेता होगा। इस प्रकार होना क्रिया भिन्न - भिन्न रुपों में आई है। जैसे थे, हैं होगा। क्योंकि थे से बीते हुए समय का पता चलता है, है से वर्तमान समय का अर्थ प्रकट होता है और होगा से आनेवाले समय का अर्थ प्रकट होता है।

काल :-

हिन्दी में तीन काल है (अ) भूतकाल (आ) वर्तमानकाल (इ) भविष्यत्काल

1. **भूतकाल :-** क्रिया के जिस रुप से बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के छः भेद हैं।

जैसे :-
1. सामान्य भूतकाल (Past Indefinite)
2. आसन्न भूतकाल (Past Indefinite)
3. पूर्ण भूतकाल (Past Perfect)
4. संदिग्ध भूतकाल (Doubtful Past)
5. अपूर्ण भूतकाल (Past Continuous Tense)
6. हेतु - हेतु मद् भूतकाल (Past Conditional)

1. **सामान्य भूतकाल** (Past Indefinite) :- यह बीते हुए समय का ज्ञान कराता है। इससे यह पता नही चलता कि क्रिया कब समाप्त हुई या उसे समाप्त हुए कितना समय बीत चुका है।

जैसे :- चिडियाँ उडीं।

भूकंप आया।

मैं ने पुस्तक लिखीं।

इन उदाहरणों से यह पता नहीं चलता कि भूकंप आए या चिडिया को उडे बहुत समय बीत चुका है या अभी अभी ये कार्य हुए हैं। सामान्य धातु के अंतिम स्वर को दीर्घ कर देने या ईकारान्त स्वर देने से धातु का सामान्य भूतकाल में रुप बनता है। जैसे - पक्षी उडा, तितली उडीं।

2. **आसन्न भूतकाल** (Past Indefinite) :- जिस भूतकाल में ये पता चले कि क्रिया को समाप्त हुए अभी बहुत काल नहीं हुआ। अतः उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं। यह भूतकाल वर्तमान काल के समीप पडता हैं। अतः इसकी क्रिया के भूतकालिक रुप के साथ वर्तमान काल का चिह्न है भी जाडे देते हैं। जैसे - लडकी गई है। लडका गया है। विमला किताब लाना भूली हैं। गोपाल किताब लाया हैं।

3. **पूर्ण भूतकाल** (Past Perfect) :- यह क्रिया का यह रुप है जिससे यह प्रतीत होता है कि क्रिया को पूर्ण हुए बहुत काल बीच चुका है। सामान्य भूतकाल की क्रिया में लिंगानुसार था, थी, थे जोडने से पूर्ण भूतकाल को क्रिया बनती है।

जैसे :- लडकी गई थी। लडका गया था। विमला किताब लाना भूली थी। रमेश किताब लाया था। आप क्या बोली थी ? आप क्या बोले थे ? आदि।

संदिग्ध भूतकाल (Doubtful Past) :- यह क्रिया का वह रुप है जिस से क्रिया के भूतकाल में होने में संदेह पाया जाए।

जैसे :- लडकी गई होगी। लडका गया होगा।
लडकियाँ गई होंगी। लडके गए होंगे।

ऊपर के वाक्यों को देखने से यह पता चलता है कि सामान्य भूतकाल की क्रिया पर लिंग - वचनानुसार होगी, होगा, होंगी, होंगे आदि जोडने से संदिग्ध भूतकाल की क्रिया बनती है।

अपूर्ण भूतकाल (Past Continuous Tense) :- यह किया का वह रुप है जिस से यह पता चले कि क्रिया का ष्यापार भूतकाल में हो रहा था। लेकिन यह ज्ञान न हो कि वह पूर्ण हुआ था नहीं।

जैसे :- लडका जाता था। लडकी जाती थी।
लडका जा रहा था। नडकी जा रही थी।

ऊपर के वाक्यों को देखने से यह पता चलता है कि धातु पर लिंग - वचनानुसार "ता था ती थी रहा था, रही थी आदि लगाने से अपूर्ण भूतकाल की बनती है।

हेतु हेतु मद् भूतकाल (Past Conditional) :-

जैसे :- (अ) यदि विधार्थी परिश्रम किया होता तो वह अवश्य उत्तीर्ण हुआ होता।
(आ) यदि अच्छी वर्षा हुई होती तो अच्छा अनाज हआ होता।

(इ) अगर तुम वहाँ आते तो मुझे नहीं पाते।

ऊपर की वाक्यों को देखने से यह पता चलता है कि धातु पर लिंग - वचनानुसार **होता**, होती, अथवा "ता, ती, ते" लगाने से हेतु हेतुमद् भूतकाल का रुप बनता है।

वर्तमान काल (Present Tense) :-

क्रिया के जिस रुप से वर्तमान काल का बोध होता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं। फिर वर्तमान काल के चार भेद **बनते** हैं -

जैसे :-
1. सामान्य वर्तमान काल (Present Indefinte)
2. संदिग्ध वर्तमान काल (Doubtful Present)
3. अपूर्ण वर्तमानकाल (Present Continous)
4. हेतु - हेतु मद् वर्तमानकाल (Present Conditional)

1. **सामान्य वर्तमान काल** (Present Indefinte) :-

जिस में कार्य करे सामान्य रुप से होने का पता चले, वह सामान्य वर्तमानकाल है।

जैसे :- मैं जाता हूँ। तुम खाते हो।

लडका जाता है। लडकी जाती है।

धातु के साथ ता है, ते है, ती है - जोडने क्रिया वर्तमानकाल में परिवर्तित होती है।

कर्ता पुलिंग एक वचन में है तो "ता" है धातु के साथ जोडना है।

जैसे :- रमेश सिनेमा देखता है।

कर्ता स्त्री लिंग एक वचन है तो ती है धातु के साथ जोडना है।

जैसे :- सीता राम के साथ जंगल जाती है।

कर्ता पुलिंग बहुवचन मे है तो धातु के साथ ते है जोडना है।

जैसे :- हम पाठशाला जाते हैं।

कर्ता स्त्री लिंग बहुवचन मे है तो धातु के साथ ती है जोडना है।

जैसे :- स्त्रियाँ पानी लाती हैं।

2. **संदिग्ध वर्तमान काल** (Doubtful Present) :-

जिसमे वर्तमान काल की क्रिया होने में संदेह पाया जाता है, वह संदिग्ध वर्तमान काल है। **धातु के सा** कर्ता के अनुसार

"ता होगा (पुं. ए. व.) ती होगी (स्री. ए. व.)"

"ते होगे (पुं. ब. व.) ती होंगी (स्री. ब. व.)

जोड देते तो वह संदिग्ध वर्तमान काल कीं क्रिया के रुप में परिवर्तित होती है -

जैसे :- मैं जाता हूँगा।

गोपाल बाजार जाता होगा।

सरला घर में काम करती होगी।

लडके पाठ पढते होंगे।

लडकियाँ पाठ पढनी होंगी।

ऊपर के वाक्यों को ध्यान से देखने से यह पता चलता है कि सामान्य क्रिया पर पुरुष - लिंग वचनानुसार "ता हुँगा", "ता होगा", ती होगी, ते होंगी आदि लगाने से संदिग्ध वर्तमानकाल की क्रिया बनती है।

3. **अपूर्ण वर्तमान काल** (Present Continous) :-

यह क्रिया का वह रुप है जिस से वर्तमानकाल में क्रिया का होना पाया जाए।

जैसे :- मैं जा रहा हूँ। लडकी जा रही है।

लडका जा रहा है। लडके जा रहे हैं।

ऊपर के वाक्यों तो देखने से यह पता चलता है कि सामान्य क्रिया पर पुरुष लिंग वचनानुसार किसी दूसरी क्रिया के समान होने पर निर्भर हैं।

जैसे :- यदि वह हमें जानता होते, उसे यहाँ आने दो।

भविश्यत्काल :-

क्रिया के जिस रुप से आनेवाले काल का बोध हो, उसे भविष्यत्काल कहते हैं। इसके तीन भेद है - वे हैं -

(अ) सामान्य भविष्यत्काल (आ) संदिग्ध भविष्यत्काल (इ) हेतु - हेतु मद् भविष्यत्काल

1. **सामान्य भविष्यतकाल :-**

यह क्रिया का वह रुप है जिसके द्वारा आनेवाले समय में किसी क्रिया के होने का पता चले।

जैसे :- मैं जाऊँगा। लडकी जाएगी।

लडका जाएगा। लडके जाएंगे।

ऊपर के वाक्यों को देखने से यह पता चलता है कि धातु पर "ऊँगा" एगी एगा, एगे आदि लगाने से सामान्य भविष्यतकाल की क्रिया बनती है।

2. **संभाव्य भविष्यतकाल :-**

क्रिया का वह रुप है जिसके द्वारा आनेवाले समय में क्रिया की संभावना पाई जाए।

जैसे :- मैं जाऊँ। लडकी जाए। लडके जाएँ।

ऊपर के वाक्यों को देखने से यह पता चलता है कि धातु के अंत में पुरुष - लिंग वचनानुसार - ऊँ, ए, और एँ लगाने से संभाव्य भविष्यत् काल की क्रिया बनती हैं।

3. **हेतु - हेतु मद् भविष्यतकाल :-**

यह क्रिया का वह रुप है जिससे भविष्यत्काल में एक क्रिया का दूसरी क्रिया के होने पर निर्भर पाया जाए।

जैसे :- मैं जाँऊ तो वह आए।
लडकी जाए तो लडका आए।

इस प्रकार हिन्दी विध्यार्थी को काल के भेद को पहचानना है जिससे यह पता चलेगा कि अमुक विषय या कार्य भूतकाल मे घटिन हुआ है।

स्मरण रखने योग्य बातें :-

1. क्रिया के जिस रुप से उसके होने या करने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते है।
2. हिन्दी में मुख्य तीन काल हैं - भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यत्काल।
3. भूतकाल के छः भेद हैं - आसन्न भूतकाल, सामान्य, पूर्ण, संदिग्ध भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल, हेतु - हेतु भूतकाल।
4. वैसे ही वर्तमानकाल के भी फिर चार भेद है।
5. यों भविष्यत्काल के भी फिर तीन भेद है।

बोध - प्रश्न :-

1. गोपाल ने रोटी खाई (वर्तमानकाल मे लिखिए)
2. राधा आयगी (वर्तमानकाल में लिखिए)
3. मैं जाऊँगा (भूतकाल में लिखिए)
4. मै रोटी खाता हूँ (भूतकाल में लिखिए)

5. सीता दूध पीती है। (भऊतकाल में लिखा)

6. राम ने रावण को मारा। (भविष्यत्काल मे लिखिए)

7. राम पढ़ता है। (भविष्तकाल में लिखिए)

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - डॉं. हरदेव बाहरी
2. हिन्दी का मौलिक व्याकरण - (सं) निगमानन्द परमहंस
3. मानक व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण - श्याम जी गोकुल वर्मा

Sri N. Venkateswarlu

esson - 3(7)

वाक्य प्रयोग

काई की रुपरेखा :-

उद्धेश्य

प्रस्तावना

शब्दों का वाक्यों में प्रयोग

बोध - प्रश्न

सहायक ग्रन्थ सूची

द्धेश्य :-

वाक्यं रसात्मकं काव्यं - रस रुप वाक्य ही काव्य है। इस से स्पष्ट है वाक्य का महत्व स्वयं सिद्ध है, इस पाठ के अतंर्गत ठिन शब्दों का अर्थ जानकार, उन शब्दों का सही अर्थ में वाक्यों में कैसे प्रयोग किया जाए - विद्यार्थी स्पष्ट समझ सकेंगे। स पाठ में यही काम्य है।

स्तावना :-

हिन्दी राष्ट्रभाषा है, देश भर में हर एक प्रबुद्ध नागरिक हिन्दी जानते हैं, बोलते हैं, समझते है। हिन्दी संपर्क भाषा है, हेन्दी जानते हैं, बोलते हैं, समझते हैं। हिन्दी संपर्क भाषा है, समृद्ध भाषा है, हिन्दी वाङ्मयम में कई ऐसे शब्द है जो संस्कृत र्दू, अंग्रेजी आदि भाषाओं से लिया गया है। इन का सही अर्थ जानने के बिना उसका प्रयोग नहीं कर सकेंगे। कठिन शब्दों का अर्थ जानकर इनका वाक्यों में सठीक डंग से प्रयोग ढङ्ग करें।

ाक्य प्रयोग (Usage of words into sentences) :-

शब्दों का वाक्यों के प्रयोग :-

1. ईश्वर दत्त = भगवान से दिया गया, भगवान से प्रदत्त

ईश्वर दत्त प्रतिभा से साधारण व्यक्ति भी महान बन सकता है।

2. क्रान्तिकारी = भारी परिवर्तन करने वाला

नेताजी सुभाषचन्द्रबोस क्रान्तिकारी थे।

3. आकाश - कुसुम = अनहोनी बात, आकाशों में विकसित पुष्प

मूर्ख लोग आकाश - कुसुमों की आशा से अपने जीवन को बरबाद कर डालते हैं।

4. ख्याति = प्रसिद्धि

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की ख्याति प्राप्त रचना 'गीतांजली' है।

5. वे सिर - पैर की बातें सुनना = बे मतलब की बातें सुनना

मूर्ख बे सिर - पैर की बातें सुनते हैं और उन्हें सत्य मानकर भ्रमित होते हैं।

6. उदीयमान = जिसका उदय हो रहा हो

उदीयमान सूरज को देखने से दिल खुश होता है।

7. पुरानी लकीर पीटना = पुरानी परंपराओं और व्यर्थ आचारों को दोहराना

कुछ कवि अपनी कविताओं में पुरानी लकीर ही पीटते हैं।

8. छान बीन = गहरी खोज

छान - बीन करने पर भी चोरों का पता नहीं चला।

9. काफूर होना = अदृश्य होना

गोपल भीड में काफूर होगया।

10. चित्ताकर्षक = मन को आकर्षित करनेवाला

ताजमहल की शोभा चित्ताकर्षक है।

11. आविष्कार = किसी बात का पहले - पहल पता लगाना

विज्ञान ने असंख्य आविष्कार किये हैं।

12. खतम होना = समाप्त होना

वक्त के पहले ही वह काम खतम होना चाहिए।

13. धक्का लगना = आघात लगना, चोटलगना

बुरे आचरण से उन्नति में धक्का लगता है।

14. संशोधन = सुधार

इस प्रति में मैं ने कई संशोधन किये।

15. असलियत = वास्तविकता

असलियत से रचना सजीव बनती है।

16. जुटना = एकत्र करता

अमूल्य वस्तुओं को जुटाने का प्रयत्न करो।

17. बहस करमा = चर्चा करना, तर्क करना

बडे लोगों से धृष्ट पुरुष ही बहस करते है।

18. फूट फूट कर रोना = बहुत रोना

बुढिया फूट फूट कर रो रही है।

19. भृकुटियाँ तनना = क्रोधित होना

शिष्य के अविनय को देखकर अध्यापक जी की भृकुटियाँ तन गयी।

20. जँचना = अच्छा लगना

मुझे यह साडी जँची है।

21. अजीब = विचित्र

यह अजीब काम है।

22. हस्तामलक = हाथ में रखा हुआ आँवला सारे विषय स्पष्ट मालुम होना

गुरु कृपा से दर्शन के गहन विषय भी हस्तामलक के समान ज्ञात हुए।

23. हँसी खेल = आसान काम

जिलाधीश बनना हँसी खेल नहीं है।

24. इकट्ठा करना = जमा करना

वह एक एक पैसा इकट्ठा करके, आज करोडपति बन गया।

25. आलसी = सुस्त

घीसू आलसी और काम चोर भी है।

26. बाट जोहना = प्रतीक्षा करना

आफत के समय लोग मदद केलिए बाट जोहते हैं।

27. बेहोश होना = मूर्छित होना

चोट लगते ही वह लडका बेहोश होगया।

28. अंगद का पैर बनकर रहना= टस से मस नहीं होना

आलसी आदमी अपने घर में अंगद का पैर बनकर रहते हैं, पर कोई काम नहीं करते।

29. वंचित रह जाना = खो जाना

गरीबी लोग आवश्यक सुविधाओं से भी वंचित रह जाते हैं।

30. उदासीनता = खिन्नता, त्याग, विरक्ति

युद्धभूमि में उदासीनता दिखाना कायरों का काम है।

31. निठल्ल = व्यर्थ, बेकार

गोपाल निठल्ल बना है जिस से उस के पिता दुखी है।

32. शिष्टता = शालीनता

बडों के प्रति शिष्टता दिखाना सब का कर्तव्य है।

33. ठिकाना = स्थान, स्थिरता

आज पढे लिखे युवक भी ठिकाने की खोज में हैं।

34. हँसोड = सदा हँसी की बातें करने वाला

सरकस में हँसोड अपनी बातों से दर्शकों के मन को रंजित करता हैं।

35. अकस्र् = प्रायः

अकस्र् राम बेहोश होता रहता है।

36. सबूत = प्रमाण

अदालत मुकदमा सबूतों पर ही चलती है।

37. अचरज = आश्चर्य

हंपी विरुपाक्ष देवालय की शिल्प कौशल देखकर मुझे बडा अचरज हुआ।

38. सिलसिले = क्रम में

इस सिलसिले में मुझे अब यह काम करना है।

39. आपस में = परस्पर, एक दूसरे से

आपस में झगडा अच्छी बात नहीं है।

40. टिकाऊ = मजबूत

वह अपनी बातें पर टिकाऊ है।

41. पछाड खाता = मूर्छित होना

दुख के मारे वह बूढी औरत पछाड खाती है।

42. उजागर करना = प्रकाशित करना

सुपुत्र वंश को अव

श्य उजागर करता है।

43. बोड़ा पार लगाना = संकट से मुक्त होना

जो व्यक्ति बेडा पार लगाने में सहयता देता है, वही सच्चा मित्र है।

44. ढिंढोरा - पीटना = धोषणा करना

कुछ लोग मामूली बातों को भी गली गली में ढिंढोरा पीटते है।

45. आराम मतलब = आलसी, सुखकांक्षी

आराम मतलब व्यक्ति किसी काम का नहीं होता।

46. शामिल होना = मिल जाना

रहीम की जन्मगाँठ पर सभी मित्र शामिल हुँए।

47. किफायत = कम खर्च, मित व्याय

किफायत से जीवन सुख से बीतता है,

48. खुशामद = प्रशंसा

सच्चाई का खुशामद सर्वत्र होती है।

49. डींना मारना = झूठी बातों या आडंबर से भरी बातों कहता

जो डींग मारता है, वह कभी कोई काम नहीं कर पाता।

50. पियक्कड = पीनेवाला, मदिरा पीनेवाला

पियक्कडों पर कोई विश्वास नही रखता।

51. खिलाफ = विरुद्ध

अन्याय के प्रति खिलाफ बोलना नागरिक का कर्तव्य है।

52. फूट = वैमनस्य के कारण होनेवाला भेद

स्वार्थीनेता लोगों में फूट डालते हैं।

53. तकलीफ = कष्ट

तकलीफों के समय में धीरता के साथ जीवन गुजारना है।

54. जलवायु = वातावरण

गर्मी में ऊटी की जलवायु बहुत अच्छी होती है।

55. मुलाकात = मिलना

प्रधानमंत्री से कल मेरी मुलाकात हुई।

56. विरासत = उत्तराधिकार में मिला हुआ।

विद्या, विनय, गुण संपत्ति उसे विरासत में मिली है।

57. आर - पार = यह और वह किनारा

यमुना नदी के आर - पार वृन्दावन है।

58. समाश्रयता = आधारित, आश्रय लेता

भारतीय काव्यों में पौराणिक काथाओं की समाश्रयता सर्वत्र प्राप्त होती है।

59. अनन्य परता = भिन्नता

इतिहास की अनन्यपरता से लाभ के बदले में हानि होती है।

60. उल्लेखनीय = लिखने योग्य वर्णनीय

देश के नेताओं में अटलबिहारी वाजपेयी जी उल्लेखनीय महापुरुष है।

61. स्थायी = स्थिर, शाश्वत

रामायण, महाभारत और गीता भारत की स्थायी संपत्ति है।

62. प्रस्तुत करना = तैय्यार करना, उपयुक्त करना

नौकर मालिक केलिए सारी चीजें समय पर प्रस्तुत करते हैं।

63. आप्यायित = आनंदित, वर्धित

मधुर गीतों को सुनकर सब के हृदय आप्यायित होते हैं।

64. प्रशस्ति = कीर्ति, श्रेष्ठता

चंदबरदाई ने अपने काव्य में पृथ्वीराज चौहान की प्रशस्ति का गान किया।

65. विभाजित करना = बाँटना

साहित्य लोगों के दिलों को विभाजित नहीं करता।

66. पृथकता = अलगाव, भिन्नता

पृथकता के प्रचार करनेवाले व्यक्तियों से देश की एकता कमजोर बनती है।

67. अनोखा = विचित्र

यह संसार बडा अनोखा है।

68. तडक - भडक = चमक - दमक

वंचक तडक - भडक दिखाकर दगा देते हैं।

69. लाचार होना = विवश होना

आवश्यकता के कारण बुराई भी करने आदमी लाचार होता है।

70. उद्यम करना = प्रयत्न करना

मंजिल तक पहुँचने केलिए हर एक को उद्यम करना चाहिए।

71. ह्रास होना = नाश होना

आलसीपन से संपदाएँ ह्रास होती है।

72. संकीर्ण = संकुचित

संकीर्ण विचार प्रगति केलिए रुकावट सिद्ध होती है।

73. प्रति द्वंद्वी = बराबरी का लडनेवाला, शत्रु

वीर पुरुष युद्ध भूमि में प्रतिद्वंद्वी को पराजित करके प्रसन्न होते हैं।

74. महसूस करना = अनुभव करना

अनुभव से ही गरीबों की यातनाएँ हम महसूस करते हैं।

75. सजा देना = दंड देना

राजा ने दोषी को कडी सजा दी।

76. भलमानसाहत = सज्जनता

भलमानसाहत से मान्यता प्राप्त होती है।

77. चालढाल = आचरण

व्यकित्व का सही परिचय व्यक्तियों को चाल ढाल पर ही निर्भर रहता है।

78. बसर करना = बिताना

जंगल में एक रात बसर करना भी बडी मुश्किल है।

79. गागर में सागर भरता = संक्षेप में संपूर्ण बात कहना

बिहारी लाल गागर में सागर भरनेवाले हैं।

80. घास काटना = बेवकूफी का काम करना

धीसू जीवनभर धास काटता ही रहा है।

81. चूडियाँ पहनना = कायर होना

युद्ध में वीरता दिखाने के बजाय वह चूडियाँ पहनकर घर में बैठा है।

82. फूलों न समाना = अधिक खुश होना

परीक्षाओं में अच्छे अंक मिलने से सुनीता फूलों न समायी।

83. बाट देखना = प्रतीक्षा करना

मैं अपने मित्र की बाट देख रहा हूँ।

84. आग बबुला होना = अत्यन्त क्रोधित होना

गलत काम करने से पिताजी मुझ पर आग बबुला होगये।

85. दाँत तले ऊँगली दबाना = आश्तर्य में पड जाना

ताजमहल की कारीगरी देखकर विदेशी पाँत ऊँगली दबाते हैं।

86. काँटा बोना = हानि पहुँचाना

जो उपकार करता है, उसके मार्ग में काँटा बोना कृत ध्नता है।

87. आकाश पाताल का अंतर= बडा अन्तर

गोपाल और विनोद के स्वभाव में आकाश पाताल का अंतर है।

88. ऊँट के मुँह में जीरा = बहुत कम वस्तु

चार रोटियाँ मेरे दोस्त केलिए ऊँट के मुँह में जीरा है।

89. समेटना = जमा करना

साँप ने चूहे को अपने मुह में समेट लिया।

90. ठोकर खाना = नुकसान उठाना, कष्ट पाना

बिना सोचे विचारे काम करने से ठोकर खाना पडता है।

91. खटकना = बुरा लगना, डर लगता

अनीति सब को खटकती है।

92. चिरस्थायिनी = चिरकाल रहने वाली, शाश्वत

कवियों की कीर्ति चिरस्थायिनी होती है।

93. निरीक्षण करना = देखना, जाँचकरना

अधिकारी गण कार्यालय के काम काज का निरीक्षण करते हैं।

94. आभारी = कृतज्ञ

जो हमारी मदद करता है, उसके प्रति आभारी रहना है।

95. अनिर्वचनीय = बताने अशक्त

सरकस देखने से मुझे अनिर्वचनीय आनन्द मिला।

96. आश्वस्थ होना = सांत्वना पाना

नेता की बातों से पीडित प्रजा आश्वस्थ हुई।

97. अड़िग = स्थिर

तपस्वी नियमों के पालन में अड़िग होते हैं।

98. सरोकार = संबन्ध

दुष्टों से सरोकार कभी वांछनीय नहीं है।

99. ठगना = दगा देना

दुष्ट कपटत्व रखकर सदा दूसरों को ठगता है।

100. बिडंबना = परिहास, कठिनाई

विधि की बिडंबना से गरीब कष्ट सहते हैं।

101. भद्दी = कुरुप

यह बडी भद्दी कविता है।

102. खौफ = चिंता

उसे न जवाबदेही का खौफ था, न बदनामी की फिक्र

103. पाक = पवित्र

मैं तो पाक - साफ हूँ, मुझ में किसी भी व्यक्ति केलिए दुर्भावना नहीं है।

104. उद्भावना = प्रेरणा

उद्भावना के बिना कविता लिखना कठिन है।

105. विस्मृति = विस्मरण

विस्मृति एक वरदान है क्यों कि जिससे दुख को भूल सकते हैं।

बोध - प्रश्न :-

इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करे :-

1. ईश्वर दत्त
2. उदीयमान
3. आविष्कार
4. असलियत
5. अजीब
6. इकट्ठा करना
7. निठल्ला
8. बेहोश होना
9. टिकाऊ
10. बोडा पार लगाना
11. खिलाफ
12. विरासत

13. चालढाल
14. बाट देखना
15. अनिर्वचनीय

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी - ओम प्रकाश सिंहल
2. हिन्दी मुहावरे विश्लेषणात्मक विवेचन - प्रतिभआ अग्रवाल
3. व्यावहारिक हिन्दी - यन. नागप्पा
4. हिन्दी व्याकरण - (सं) डॉ. लीला ज्योति, पी. ओबय्या

Dr. P. Prema Kumar

Lesson - 3(8)

कार्यालयी हिन्दी - प्रशासनिक शब्दावली
(Administrative Terminology)

ईकाई की रुपरेखा :-

- उद्धेश्य
- प्रस्तावना
- कार्यालयों के नाम
- पद नाम
- अधिक उपयोगी एवं सामान्य शब्दावली
- कार्यालयी सामान
- बोध - प्रश्न
- सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

इस इकाई में आप अंग्रजी से हिन्दी में अनुवाद करने केलिए उपयुक्त प्रशासनिक शब्दावली का भली भाँति परिचित होगे। यह विद्यार्थियों केलिए जरुरी है। देश की भाषा हिन्दी है। फिर भी देश भर में अंग्रेजी का प्रभाव भी कम नहीं। दोनो भाषाओं को जानना आज हर एक केलिए आवश्यकं बन गया है। इस उद्धेश्य से यहाँ इस इकाई में कार्यालयों के नाम, पद नाम, अधिक उपयोगी एवं सामान्य शब्दावली, कार्यालयी सामान आदि शीर्षकों के अंतर्गत अंग्रेजी से हिन्दी में कुछ प्रशासहनिक शब्दों को अनुवाद रखा है। इसका सठीक जानकारी विद्यार्थियों को देना इस इकाई का उद्धेश्य हैं।

प्रस्तावना :-

इस इकाई में विधार्थी प्रशासनिक शब्दावली का भली भाँति परिचित होंगे, जिससे कार्यालयों में काम करने कराने वालों को आसान होगा। विद्यार्थियों केलिए इस इकाई अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी -

कार्यालयों का नाम :-

All India Radio	=	आकाशवाणी
Accounts Section	=	लेखा अनुभावा
Administrative Reforms Commission	=	प्रशासनिक सुधार आयोग

Administration Section	=	लेखा अनुभाग
Anti - Corruption Branch	=	भ्रष्टाचार निरोध शाखा
Branch Office	=	शाखा कार्यालय
Board of Higher Secondary Education	=	उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
Broad Casting Station	=	पॅसारण केन्द्र
Budget Section	=	बजट अनुभाग
Building Division	=	निर्माण प्रभाग
Cabinet Secratariate	=	मंत्रिमंडल सचिवालय
Camp Office	=	सिबिर कार्यालय
Cardiology Department	=	हृदय - रोग विभाग
Cash Section	=	रोकड अनुभाग
Cental Hindi Directorate	=	केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
Central Institute of Education	=	केन्द्रीय शिक्षा संस्थान
Central Jail	=	केन्द्रीय जेल
Central Secretariat	=	केन्द्रीय सचिवालय
Civil Court	=	सिविल न्यायालय
Cсllectorate	=	कलक्टरी
Committee Room	=	समिति कक्ष
Community Centre	=	समुदाय केन्द्र
Complaint Office	=	शिकायत कार्यालय
Computer Centre	=	कंप्यूटर केन्द्र
Court	=	न्यायालय, कोर्ट
Criminal Court	=	दंडन्यायालय
Customs House	=	सीमा शुल्कालय
Defemce Division	=	रक्षा प्रभाग
District Board	=	जिला बोर्ड
Election Commission	=	निर्वाचन आयोग
Embassy	=	राजदूतावास

Employees Provident Fund Organisation	=	कर्मचारी भविष्य निधि संगठन
Employement Exchange	=	रोजगार कार्यालय
Enquiry Office	=	पूछताछ कार्यालय
External Affairs Ministry	=	विदेश मंत्रालय
Family Planning Centre	=	परिवार नियोजन केन्द्र
Finance Commission	=	वित्त आयोग
First Aid Centre	=	प्रथमउपचार केन्द्र
Flying Squad	=	उडन दस्ता
Food Corporation of India	=	भारतीय खाद्य नियम
Forest Department	=	वन विभाग
Geological Survey of India	=	भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षष
Guest House	=	अतिथि गृह
Head Office	=	प्रधान कार्यालय
High Commission	=	उच्चायोग
High Department	=	गृह विभाग
Hospital	=	अस्पताल
Indian Administative Service	=	भारतीय प्रशासन सेवा
Indian Agricultural Research Institute	=	भरतीय कृषि अनुसंधान संस्थात
Indian Foreign Service	=	भारतीय विदेशी सेवा
Intelligence Bureau	=	आ सूचनांब्यूरो
Laboratory	=	प्रयोग शाला
Labour Office	=	श्रम कार्यालय
Law Commission	=	विधि आयोग
Library	=	पुस्तकालय
Legislative Council	=	विधान परिषद्
Mail Office	=	डाक कार्यालय
Maternity Centre	=	प्रसूति केन्द्र

Mental Hospital = मानसिक चिकित्सालय
Municipal Corporation = नगर निगम
Municipality = नंगर पालिका
National Cadet Corps = राष्ट्रीय कैडेट कोर
News Services Division = समाचार सेवा प्रभाग
Operation Theatre = शल्यशाला
Pension Payment Office = पेंशन भुगतान कार्यालय
Planning Commission = योजना आयोग
Police Station = थाना
Post Office = डाकघर
Power House = बिजलीघर
Primary Health Centre = प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
Public Works Department = लोक निर्माण विभाग
Regional Office = आदेशिक कार्यालय
Scheduled Caste and Scheduled Tribe Commission = अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आयोग
Secondary Education Board = माध्यमिक शिक्षाबोर्ड
Secretariat = सचिवालय
State Government = राज्य सरकार
Supreme Court = उच्चतमन्यायालय
Surgical Department = शल्यविभाग
Tourist Office = पर्यटक कार्यालय
Union Public Service Commission = संघलोक सेवा अयोग
University Grants Commission = विश्वविद्यालय अनुदान
Vigilance Section = सतर्कत अनुभाग
Water Works = जल कल विभाग
Welfare Section = कल्याण अनुभाग
Zonal Office = आंचलिक कार्यालय
Zone = आंचल

14)

पद नाम (Designations) :-

सरकारी कार्यालयों में काम करनेवालों को, वहाँ काम करने वाले अधिकारियों और कर्मचारियों के पदनामों की जानकारी आवश्यक है। वैसे असंख्य पदनाम होते हैं। यहाँ कुछ विशेष प्रचालित पदनाम दिये गये हैं। जैसे -

Accountant	=	लेखाकार
Accountant General	=	महालेखाकार
Accounts Officer	=	लेखा अधिकारी
Administrative Office	=	प्रशासन अधिकारी
Administrator	=	प्रशासक
Advocate	=	अधिवक्ता
Agriculture Officer	=	कृषि अधिकारी
Announcer	=	आख्यापक
Appointment Clerk	=	नियुक्ति लिपिक
Appraiser	=	मूल्य निरुपक
Armoury Officer	=	शस्त्रागार अधिकारी
Associate Professor	=	सह आचार्य
Attesting Officer	=	अनु प्रमाणन अधिकारी
Audit Officer	=	लेखा - परीक्षा अधिकारी
Auditor	=	लेखा परीक्षक
Ballot Officer	=	मतमत्र अधिकारी
Book Binder	=	जिल्द साज
Booking Clerk	=	टिकट बाबू
Bus Driver	=	बस चालक / ड्राईवर
Business Manager	=	व्यवसाय प्रवंधक
Cabinet Secretary	=	मंत्रिमंडल सचिव
Cash Clerk	=	रोकद लिपिक
Cashier	=	रोकड़िया
Central Vigilance Commissioner	=	केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त
Chairman	=	अध्यक्ष, सभापति

Dental Surgeon	=	दंत - सर्जन
Dentist	=	दंत चिकित्सक
Deputy Minister	=	उपमंत्री
Despatch Clerk	=	प्रेषण क्लर्क
Director	=	निदेशक
Distributor	=	वितरक
District Development Officer	=	जिला विकास अधिकारी
District Judge	=	जिला न्यायाधीश
Drug Inspector	=	औषध निरीक्षक
Economic Advisor	=	आर्थिक सलाहकार
Editor	=	संयादक
Educational Advisor	=	सिक्षा सलाहकार
Election Commissioner	=	निर्वाचन आयुक्त
Electrical Engineer	=	बिजली इंजनीयर
Employment Officer	=	रोजगार अधिकारी
Examiner	=	परीक्षक
Executive Engineer	=	कार्यपालक इंजीनियर
Family Welfare Officer	=	परिवार कल्याण अधिकारी
Financial Adviser	=	वित्त सलाहकार
Fire Inspector	=	अग्निशमन निरीक्षक
Foreign Secretary	=	विदेश सचिव
Forest Guard	=	वन रक्षक
General Secretary	=	महा सचिव
Geologist	=	भू विज्ञानी
Govemor	=	राज्यपाल
Hand Writting Expert	=	हस्तलेख विशेषज्ञ
Head Accountant	=	प्रधान लेखाकार
Head Master	=	प्रधान अध्यापक

Hindi Officer	=	हिन्दी अधिकारी
Home Secretary	=	गृह सचिव
Incharge	=	प्रभारी
Incom Tax Officer	=	अयकर अधिकारी
Inspector	=	निरीक्षक अनुदेशक
Instructor	=	अनुदेशक
Insurance Officer	=	बीमा अधिकारी
Investigator	=	अन्वेषक
Issue Clerk	=	निर्गम लिपिक
Joint Director	=	संयुक्त निर्देशक
Journalist	=	पत्रकार
Judge	=	न्यायाधीश
Junior Lecturer	=	कनिष्ठ प्राध्यापक
Justice	=	न्यायमूर्ति
Labour Officer	=	श्रम अधिकारी
Lorry Driver	=	लौरी चालक
Male Nurse	=	पुरुष नर्स
Managing Director	=	प्रबंध निदेशक
Mayor	=	महापौर
Medical officer	=	चिकित्सा अधिकारी
Meteorologist	=	मौसम विज्ञानी
Militaary Officer	=	सैनिक अधिकारी
Minister	=	मंत्री
News Editor	=	समाचार संपादक
Officer Incharge	=	प्रभारी अधिकारी
Operator	=	प्रचालक
Opposition Leader	=	विरोधीदल का नेता
Patents Officer	=	वेतन मास्टर

Payment Clerk	=	बेतन बिल सहायक
Peon	=	चपरासी
Physician	=	चिकित्सक
Pilot	=	विमान चालक
Postman	=	डाकिया
Registarar	=	कुलसचिव
Rent Controller	=	किराया नियंत्रक
Relieving Clerk	=	एवजी कलर्क
Reporter	=	प्रतिवेदक
Rural Development Officer	=	ग्रामविकास अधिकारी
Salesman	=	बिक्रीकर्ता
Sales Tax Officer	=	बिक्री - कर - अधिकारी
Sanitary Inspector	=	सफाई निरीक्षक
Scientific Officer	=	वैज्ञानिक आधिकारी
Senior Assistant	=	वरिष्ठ सहायक
Senior Translator	=	वरिष्ठ अनुवादक
Superintendent	=	अधीक्षक
Supervisor	=	पर्यवेक्षक
Sweeper	=	सफाई वाला
Teacher	=	शिक्षक, अध्यापक
Telecommunication Engineer	=	दूर संचार आभियंता
Upper Division Clerk	=	उच्च श्रेणी लिपिक
Veterinary Doctor	=	पशु चिकित्सक
Vice Chairman	=	उपाध्यक्ष
Vice Chancellor	=	उपराष्ट्रपति, अपाध्यक्ष
Vice President	=	उप सभापति
Visiting Professor	=	अभ्यागत आचार्य
Watch Man	=	चौकीदार, प्रहरी

Welfare Officer	=	कल्याण अधिकारी
Wild Life Preservation Officer	=	वन्य जीव परिक्षण अधिकारी
Wireless Operator	=	बेतार प्रचालक
Youth Welfare Officer	=	युवक कल्याण अधिकारी
Zoo Supervisor	=	चिड़ियाघर पर्यवेक्षक
Deputy Sales Manager	=	उप विक्रय प्रबंधक
Store Keepar	=	भण्डारी
Typiest	=	टंकक
Steno Graffer	=	आसुलिपिक
Legal Advisor	=	कानूनी सलाहकार

अधिक उपयोगी एवं सामान्य शब्दावली :-

Accept	=	स्वीकार करना
Account	=	लेखा, खाता, हिसाबा
Acknowledgement Due	=	पावती सहित
Act	=	अधिनियम्
Agree	=	सहमति
Appoint	=	नियुक्त करना
Approve	=	अनुमोदित
Abbreviation	=	संक्षेपाक्षर
Abolition	=	अन्मूलन
Absence	=	अनुपस्थिति
Abstract	=	सार
Academic	=	अकादमिक
Academic Year	=	शिक्षा वर्ष
Accident	=	दुर्घटना, संयोग
Accommodation	=	आवास
Achievement	=	उपलब्धि
Acknowledgement Card	=	प्राप्ति पत्र

Address	=	संबोधन
Administration	=	प्रशासन
Admission	=	प्रवेश
Allegation	=	आभिकथन
Applicant	=	आवेदक
Application	=	आवेदन
Article	=	अनुच्छेद, वस्तु
Back Ground	=	पृष्ठभूमि
Balance	=	शेष, बाकी
Behaviour	=	आचरण
Cash	=	नकद, रोकड
Claim	=	दावा
Claint	=	दावादार
Co - Ordinating Officer	=	समन्वय अधिकारी
Copy	=	प्रतिलिपि
Cancel	=	रद्द करना
Character Certificate	=	चरित्र प्रमाण पत्र
Charge	=	कार्य - भार
Charge - Sheet	=	आरोप पत्र
Citizen	=	नागरिक
Criticism	=	आलोचना
Deduction	=	कटौती
Defact	=	त्रटि, दोष
Document	=	दस्तावेज
Duty	=	कर्तव्य
Deputation	=	प्रतिनियुक्त
Dividend	=	लाभांश
Document	=	दस्तावेज

Earn	=	कमाना
Efficiency	=	दक्षता
Explanation	=	व्याख्या, स्पष्टीकरण
Eye Witness	=	प्रत्यक्ष साक्षी
Fact	=	वास्तविकता
Family Allowance	=	कुटुंब भत्ता
Fitness Certificate	=	आरोग्य प्रमाण पत्र
Hard	=	कठोर
Hindi Version	=	हिन्दी अनुवाद
Identity Card	=	पहचान पत्र
Industrialist	=	उद्योग पति
License	=	अनुज्ञप्ति
Literacy	=	साक्षरता
Movement	=	आंदोलन
Native Language	=	देशीय भाषा
Party	=	दल, पक्ष
Straight	=	सीधा
Straight Forward	=	स्पष्ट वादी
Support	=	समर्थन
Ultimate	=	अंतिम, चरम
Unemployment	=	बेरोजगारी
Vacation	=	अवकाश
Victory	=	विजय
Vulgar	=	अश्लील
Yield	=	पैदावर
Zeal	=	उत्साह
Abovecited	=	ऊपर दिया हुंआ
As Before	=	यथा पूर्व

As Directed	=	निदेशानुसार
As May be necessary	=	यथावश्यक
By order	=	के आदेश से
Come into Force	=	लागू होना
Copy Enclosed	=	प्रतिलिपि संलग्न
During the Period	=	इस अवधि में
So for as possiable	=	यथा संभव
Under consaltation	=	विचाराधीन
Actual Cost	=	वास्तविक मूल्य
Advance Payment	=	अग्रिम राशि, पेशगी
Audit Repert	=	लेखा परीक्षा रिपोर्ट
Pay Bill	=	वेतन बिल
Book Value	=	अंकित मूल्य
Section	=	अनुभाग
As Follows	=	निम्न लिखित
As Soon as	=	यथाशीघ्र
Above said	=	ऊपर कहा गया
Overtime	=	समयोपरि
President	=	राष्ट्रपति
Vice President	=	उपराष्ट्रपति
Prime Minister	=	प्रधानमंत्री
Deputy Prime Minister	=	उपप्रधानमंत्री
Govemor	=	राज्यपाल
Minister of State	=	राज्यमंत्री
Cabinet Secretary	=	सचिव मंत्रिमंडल
Chief of Air Staff	=	वायुसेनाध्यक्ष
Chief of Naval Staff	=	नौ सेनाध्यक्ष
Commissioner	=	आयुक्त

Dy. Commissioner	=	उपायुक्त
Office Supertintendent	=	कार्यालय अधीक्षक
Head of the Department	=	विभागीय अध्यक्ष
Implementation	=	कार्यान्वयन
Per Annum	=	प्रतिवर्ष
Review	=	समीक्षा
Record	=	अभिलेख
Pay Commission	=	वेतन आयोग
For Favour of Guidance	=	मार्गदर्शन केलिए
For Reminder	=	अनुस्मारकार्थ
For Approval	=	स्वीकृति केलिए
Examiner	=	परीक्षक
Educational	=	शैक्षणिक

कार्यालयी सामान (Office Stationary Etc) :-

Pin	=	आलपीन
Paper Culter	=	कागज़ तराश
Easy Chair	=	आराम कुर्सी
Paper Weight	=	कागज दाब
Black Ink	=	काली स्याही
Tag	=	कीलदार डोरी
Register	=	खाता
File	=	गड्डी, फाइल
Gum	=	गोंद
Clip	=	चिमटी
Punch	=	छोदने की सँडसी
Office Tray	=	तार की टोकरी
Ink Pot	=	दावात
Calling Bell	=	पुकारते की घंटी

Tape	=	फीता
Seal	=	मोहर
Sealing Wac	=	मोहर करने की लाह
Eraser	=	रबर
Packing Paper	=	लपेटन का कागज
Writting Pad	=	लिखने की पट्टी
Envelope	=	लिफाफा
Ledger	=	लेखाबाही

बोध - प्रश्न :-

निम्न लिखित अशासनिक शब्दों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

1. Accountant (लेखाकार)
2. Clerk (लिपिक)
3. Officer (अधिकारी)
4. Reporter (प्रतिवेदक)
5. Assistant (सहायक)
6. Co - ordinator (समन्वयकर्ता)
7. Plumber (नलसाज)
8. Prime Minister (उप प्रधानमंत्री)
9. Allowance (भत्ता)
10. High Court (उच्चन्यायालय)
11. Chief minister (मुख्यमंत्री)
12. Democracy (लोक तंत्र)

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. Hindi Grammer & Translation - C. Ramaswamy
2. मानविकी परिभाषिक कोश - सं. डा. नगेन्द्र
3. अखिल भारतीय शब्दावली - (प्र) मानव संसाधत विकास मंत्रालय, भारत सरकार

Dr. P. Prema Kumar

Lesson - 3(9)

पत्र लेखन

(LETTER WRITING)

ईकाई की रुपरेखा :-

- उद्धेश्य
- प्रस्तावना
- पत्र के भाग
- सरनामा तालिका
- व्यक्ति गत पत्र
- बधाई पत्र
- आदेश पत्र
- नौकरी केलिए आवेदन पत्र
- शिकायती पत्र
- विविध पत्र
- बोध - प्रश्न
- सहायक ग्रन्थ सूची

उद्धेश्य :-

पत्र लिखना एक कला है। आधुनिक युग में पत्र व्यवहार मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। प्रस्तुत पाठ के द्वारा पत्र कैसे लिखा जाए, पत्र लिखने में किन किन अंशों के प्रति ध्यान देना चाहिए, पत्र कितने प्रकांर के है इन सभी अंशों से विद्यार्थी सठीक ढंग से परिचय प्राप्त कर सकता है। इस पाठ का यही उद्देश्य है।

प्रस्तावना :-

एक समय था जब दूर रहनेवाले बन्धुओं, मित्रों आदि से संपर्क बनाये रखने का एक मात्र साधन पत्र था। व्यापारी लोग पत्रों के बिना व्यापार नहीं कर सकते थे। कार्यालयों को समाचार भेजने केलिए भी पत्र लिखना आवश्यक था। आजकल टेलिफोन, सेलफोन, इंटरनेट, फैक्स आदि के विस्तृत प्रचार से पत्रों के सामने एक नयी चुनौती खडी हुई है। फिर भी पत्रों के महत्व का नजर - अंदाज नहीं किया जा सकता।

पत्र लिखना एक कला है। आधुनिक युग में पत्र व्यवहार मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। यह व्यक्तिगत भेंट के अवकाशों को कम करके समय तथा धन की बचत करता है।

एक अच्छा पत्र तभी लिखा जा सकता है जब कि लेखक को पत्र के विषय का स्पष्ट तथा पूर्ण ज्ञान हो तथा जिस भाषा में पत्र लिखा जाने उसका अच्छा ज्ञान है। व उस भाषा में अपने भाव तथा विचार स्पष्ट तथा सफलता पूर्वक व्यक्त कर सकता हो।

एक अच्छे पत्र में स्पष्टता, यथार्थता, पूर्णता, शालीनता, संक्षिप्तता, प्रभावशीलता, मौलिकता, स्वच्छता आदि गुण होने चाहिए।

पत्रों के कई प्रकार होते हैं - व्यक्तिगत, व्यावहारिक, प्रार्थना संबंधी, व्यापारी, पूछताछ के, शिकायती, सरकारी आदि

साधारणतः पत्र के ये भाग होते हैं :-

1. **स्थान** (Station) :- यह पत्र के ऊपरी भाग में दायी ओर लिखा जाता है।

2. **दिनांक** (Date) :- यह स्थान के नीचे लिखा जाता है।

3. **पत्र लिखने वाले का पता** :- स्थान तथा दिनांक लिखने के बाद पत्र के बायीं ओर पत्र लिखनेंवाले का पता 'प्रेषक' (Sender) के शीर्षक के अन्तर्गत दिया जाता है। कुछ कम्पनियों और कार्यालय कागज पर अपना पता मुद्रित करते हैं। ऐसे समय 'प्रेषक' का पता लिखने की जरुरत नहीं होती।

4. **पत्र पाने वाले का पता** :- यह प्रेषक के पते के नीचे "सेवा में" शीर्षक के अन्तर्गत लिखा जाता है।

5. **संबोधन** :- आदमी के साथ जो संबंध है, उसके अनुसार संबोधन होगा, कुछ संबोधन शब्द इस प्रकार हैं - पूज्य पिताजी ; पूज्य माताजी ; प्रिय भाई साहब, प्रिय मित्र, प्यारे दोस्त, प्रिय महोदय, माननीय महोदय, श्रीमान् जी, श्रीमती जी, प्रिय महोदया, माननीय महोदया आदि। पत्र पाने वाले के पते के नीचे संबोधन शब्द लिखे जाते हैं।

6. **पत्र का मुख्य भाग** :- पत्र के मुख्य भाग में भिन्न भिन्न विषयों को सुविधानुसार अनुच्छेदों (paragraphs) में विभक्त कर देना चाहिए।

7. **शिष्टाचार के शब्द** :- पत्र लिखने के तदुपरांत इन शब्दों को अंत में दाहिनी ओर लिखा जाता है, अधिक प्रचालित शब्द "भवदीय"। इसके अतिरिक्त आप का, शुभाकांक्षी, कृपाभिलाषी, भवनिष्ठ शब्दों का भी प्रयोग किया जा सकता है।

8. **हस्ताक्षर** (Signature) :- इसके पश्चात् हस्ताक्षर किये जाते हैं। हस्ताक्षर टाईप अथवा रबर के मोहर नहीं होने चाहिए। वरन् हाथ से ही तथा स्याही से होने चाहिए। हस्ताक्षर के नीचे अपना पद (Designation) होतो लिख देना चाहिए।

9. **संलग्न (Exclosures) :-** मूलपत्र के साथ यदि अन्य कागज जैसे प्रमाण पत्र, चेक, बिल, बीजक आदि भेजे जाएँ तो उनका विवरण पत्र की बाईं ओर "संलग्न" शीर्षक के नीचे दिया जाता है।

10. **पुनः या पुनश्च :-** पत्र लिखने तथा हस्ताक्षर होने के बाद यदि कोई आवश्यक बात ज्ञात हो आवे तोपुनः अथवा पुनश्च शब्द लिखकर यह बात लिख देनी चाहिए। इसके नीचे संक्षिप्त हस्ताक्षर (Initials) कर देनी चाहिए।

सर नामा तालिका :-

पद	**सम्बोधन**	**अभिवादन**	**समापन / सिष्ठाचार**
बडे लोगों केलिए	पूजनीय, पूज्य, आदरणीय, मान्यवर	सादर प्रणाम, नमस्कार,	आज्ञाकारी विनीत आर्दि
बराहर वालों को	प्रियवर, प्रिय भाई, प्रिय मित्र	सप्रेम नमस्ते	तुम्हारा
छोटों केलिए	प्रिय, चिरंजीवी	आशीर्वाद प्रसन्न हो	शुभ चिन्तक तुम्हारा हितैषी
परिचितों केलिए	प्रिय बन्धु	नमस्ते	भवदीय, आपका
अपरिचितों केलिए	महोदय, श्रीमान्	नमस्ते	भवदीय, आपका

MODEL - 1 : PERSONAL

व्यक्तिगत पत्र :-

1. **रुपये माँगते हूए पिता के नाम पर पत्र लिखिए।**

गुंटूर,

ता. 25-4-05।

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम,

मैं यहाँ कुशल हूँ आशा है कि आप सब वहाँ आनन्द से हैं। आज ही मेरी अर्धवर्षीय परीक्षाएँ पूरी हुई है। मैं ने सभी प्रश्न अच्छे किये हैं। आशा है कि मुझे अपने वर्ग में प्रथम स्थान अवश्य मिलेगा। यहाँ अच्छे प्राध्यापक हैं। वे हमारी पढाई पर विशेष श्रद्धा ले रहे हैं।

हमें इस महीने के अन्त तक कालेज की फीस भरनी है, इसलिए आप यथाशीघ्र दो हजार रुपये भेजने की कृपा करे। इतना ही नहीं यहाँ मैं दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा मद्रास की ओर से 'प्रवीण' परीक्षा की तैय्यारी कर रहा हूँ। इसकी भी फीस भरनी है। अतः आप मेरा पत्र मिलते ही पैसे भेज दे। माता की याद सदा आती रहती है। दशहरे की छुट्टियों में मैं घर आऊँगा।

माताजी को सादर प्रणाम। भाई - बहन को आशीर्वाद।

आपका आज्ञाकारी पुत्र,
आर. केशव कुमार।

पता :-
आर. विश्वनाथ,
प्राध्यापक,
हिन्दू कालेज - गुंटूर।

2. **आपने किसी स्थान की यात्रा की। उस स्थान की विशेषताओं का वर्णन करते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए -**

गुंटूर,
ता 26 - 4 - 05।

प्रिय मित्र गोपाल,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा है कि तुम वहाँ प्रसन्न हो। मैं कल ही तिरुपति की यात्रा से लौट आया। इस पत्र में उस स्थान की विशेषताओं का वर्णन कर रहा हूँ।

तिरुपति चित्तूर जिले में हैं। तिरुमलै में श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर है। उत्तर हिन्दुस्तान के लोग इसे बालाजी का मंदिर कहते हैं। देश - विदेश के हजारों यात्री आते हैं। इस मंदिर की यह विशेषता है कि हिन्दू ही नहीं मुसलमान, ईसाई भी बालाजी के दर्शनार्थ आते हैं। यहाँ की प्राकृतिक शोभा देखने लायक है। यात्री बालाजी की मूर्ति के दर्शन से विशेष आनन्द और शांति प्राप्त करते हैं। तिरुमलै में और एक प्रासिद्ध मंदिर है - वराह स्वामी जी का। भक्त गण पहले पहल वराह स्वामी जी का ही दर्शन करके बाद में बालाजी का दर्शन करते हैं। यहाँ यात्रियों को रहने केलिए धर्मशालाएँ और काटेज हैं। यहाँ एक बगीचा है। उसमें हजारों प्रकार के फूलों के पौधे हैं। यहाँ के फूलों से बालाजी की मूर्ति को अलंकृत किया जाता है।

तिरुपति में गोविंदराजुलु मंदिर और तिरुचानूर में पद्मावती का मंदिर मैं ने देखे। तिरुपति में विश्व - विद्यालय भी है। आकाश गंगा और पापनाशनम जल - प्रपात दर्शनीय है। तुम भी एक बार तिरुपति देख आओ।

तुम्हारा,

डी. गोपी नाथ

पता :-

आर. श्रीधर राव,

प्रथम. बी. काम,

शेल नंबर - 42,

जे. के. सी. कालेज,

गुंटूर - 522 002।

3. **विद्यालय के वार्षिकोत्सव का वर्णन करते हुए - अपने मित्र को पत्र लिखिए -**

गुंटूर,

ता 1 - 5 - 2005।

प्रिय मित्र विनोद,

मैं यहाँ कुशल हूँ, आशा है कि तुम भी वहाँ प्रसन्न रहे। बहुत दिनों के बाद पत्र लिख रहा हूँ। कारण यह है कि मैं अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव की तैयारियों में लगा हुआ था। आज मुझे उसका वर्णन करते हुए प्रसन्नता हो रही है।

यह उत्सव तीन दिन चला। पहले दिन भाषण प्रतियोगिता हुई। विषय था "सह शिक्षा", कई लडकों ने भाग लिया। मुझे प्रथम पुरस्कार मिला।

दूसरे दिन खेल - कूद स्पर्धा का कार्यक्रम रहा। उस दिन विभिन्न प्रकार के खेल खेले गये। मैं 200 मीटर की दौड में प्रथम आया।

तीसरे दिन वार्षिकोत्सव का अंतिम दिन था। शाम को विद्यालय रंग - बिरंगी रोशनी से जग मग उठा। लोग उत्साह और आनन्द से भाग लेने लगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया। नगर के प्रतिष्ठित लोगों का स्वागत किया गया। ज्योति - प्रज्वलन से कार्यक्रम का आरंभ हुआ। हमारे प्रधानाचार्य ने कालेज की प्रगति का वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया। जिलाधीश मुख्य अतिथि के रुप में आये थे। उन्होंने विद्यार्थियों को मूल्यवान संदेश दिया। जिलाधीश की पत्नी ने परीक्षाओं में अधिक अंक पाये हुए विद्यार्थियों को तथा विविध प्रतियोगिताओं को पुरस्कार दिये। इसके बाद "महा राणा प्रताप" का एकांकी नाटक खेला गया। लडकियों ने नृत्य प्रदर्शन किया। अध्यक्ष के प्रासंगिक वचनों के बाद वन्दन समर्पण हुआ। अंत में "जनगणमन" के मधुर गुन्जन के साथ वार्षिकोत्सव समाप्त हुआ।

तुम्हारे माता - पिता को मेरे सविनय प्रणाम। तुम्हारी छोटी बहन को प्यार।

तुम्हारा प्रिय मित्र,

यम. केशव।

पता :-

यस. विनोद,

घर का नंबर : 6 - 3 - 71,

नाजर पेट,

तेनाली।

4. **हिन्दी सीखने की आवश्यकता बताते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए -**

विजयवाडा,

ता 12 - 8 - 2005

प्यारे भाई सुमन,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा है कि तुम भी वहाँ कुशल हेंगे। मैं यहाँ अच्छी तरह पढ़ रहा हूँ। मै ने द्वितीय भाषा के रुप में हिन्दी ली है। हमें आज कल हिन्दी पढ़ने की बडी आवश्यकता है। हमारे प्रधानाचार्य ने बताया है कि हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। उसका समृद्ध साहित्य है। श्रेष्ठ कवि, लेखक आदि है। देश में अधिक संख्या के लोग हिन्दी बोलते हैं। उत्तर भारत की प्रधान भाषा तो यही है। आज दक्षिण भारत में ही हर एक प्रसिद्ध नागरिक हिन्दी बोलते है, लिखते हैं और जानते हैं। हिन्दी सीखना हर एक नागरिक का कर्तव्य है। दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा का प्रचार जोरों पर है। इस प्रचार का श्रेय दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा - मद्रास की है। आज सैकडों विद्यार्थी द. भा. हि. प्रचार सभा - मद्रास से आयोजित परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर अच्छी तरह हिन्दी बोल रहे हैं, लिख रहे हैं। इसलिए तुम भी हिन्दी सीखो। तुम दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की किसी परीक्षा में बैठो।

माँ - बाप को प्रणाम। शांति को प्यार।

तुम्हारा प्रिय भाई,

किशोर।

पता :-

के. सुमन,

गृह का नंबर - 10 ,

नल्लकुंटा,

हैगदराबाद।

5. हास्टल जीवन के अनुभव बताते हुए अपनी माता जी को एक पत्र लिखिए।

नेल्लूर,

दि 6 - 9 - 2005।

पूज्य माता जी,

सादर प्रणाम।

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा है कि वहाँ तुम सब कुशल होंगे। मुझे तुम्हारा पत्र प्राप्त है। मैं यहाँ अच्छी तरह पढ़ रही हूँ। मुझे छात्रवास का नया अनुभव हो रहा है। आरम्भ में मुझे सब कुछ नया लगता था। अब यहाँ के लोगों और परिस्थितियों की आदी बन गयी।

वार्डेन बहुत अच्छी महिला है। वे छात्रवास में रहने वाली सब विद्यार्थिनियों के प्रति अच्छा व्यवहार करती है। वे हमारे सुख - दुख में भाग लेती है। हमें अच्छी सलाहें देती है। यहाँ स्वादिष्ट खाना बनता है बिलकुल तुम्हारे हाथों में पकाई जैसी। रात के भोजन के बाद एक केला दिया जाता है।

हमारे कमरे में पंखा, मेज, कुर्सियाँ आदि है। स्नान घर सुन्दर है। सादा पानी रहना है। कमरा विशाल है। चार विद्यार्थिनियाँ रहती हैं। मेरी सब सहेलियाँ मिलनसार हैं। वे मुझे अच्छा सहयोग देती हैं। यहाँ डाकटर की सुविधा भी है। मैं अच्छी तरह पढ़ रही हूँ। तुम मेरे स्वास्थ्य और पढाई के बारे में निश्चिन्त रहो।

पिताजी को प्रणाम। छोटे भाई को प्यार।

तुम्हारा,

अंजनी।

पता :-

श्रईमती यम. पद्मावती देवी,

स्टोन हाउस पेट,

घर का नंबर : 6 - 2 - 11,

कर्नूल।

6. व्यायाम का महत्व बताते हुए अपने छोटे भाई को पत्र लिखिए।

गुंटूर,

ता 6 - 10 - 2005।

प्रिय भाई रवि,

तुम्हार पत्र मुझे आज ही मिला। तुम्हारी अस्वस्थता का समाचार पढ़कर दुःख हुआ।

यह तो ठीक ही है कि तुम अच्छी तरह से पढते हो। लेकिन इसके साथ स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना चाहिए। प्रतिदिन तुम को नियमानुसार व्यायाम करना चाहिए। मानव जीवन में व्यायाम का विशेष स्थान है। व्यायाम से सारा शरीर सुडौल, सुगठित एवं दृढ़ बन जाता है। रक्त संचार ठीक तरह तीव्र गति से होता हैं। व्यायाम द्वारा मस्तिष्क का विकास होता है। व्यायामशील पुरुष संयमी होता है और संयम चरित्र का भूषण है। व्यायम के द्वारा मनुष्य में धैर्य, सहनशीलता एवं क्षमा आदि गुण स्वाभाविक रुप से उप्रन्न हो जाते हैं।

एक बार व्यायाम की महत्ता बतलाते हुए स्वामी विवेकानन्द जी महराज ने कहा था - व्यायाम करने और गीता पढने - इन दोनों बातों में यदि तुम्हें एक ही चुनना हो तो मैं कहूँगा, व्यायाम को चुन लो। इन शब्दों में व्यायाम की महत्ता स्वयं ही प्रकट हो जाती है।

भारत वर्ष में व्यायाम के विभिन्न भेद हैं। भिन्न भिन्न प्रकार के आसन, दण्ड - बैठक, खुले मैदान में दौडना, घूमना, प्राणायाम करना, तैरना, हाकी, फुटबाल, क्रिकेट, कबड्डी खेलना आदि सभी को व्यायाम के अंतर्गत रख सकते हैं। बहुत से विद्वानों का कथन है कि प्रातः और सायंकाल के घूमने से बढ़कर कोई व्यायाम नहीं है। वैसे तो उपर्युक्त बताये सभी व्यायाम मानव - जीवन में महत्व पूर्ण है। स्वास्थ्य रक्षा की एक मात्र कुंजी व्यायाम है। सदा याद रखो कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है।

मैं आशा रखता हूँ कि अपना स्वास्थ्य सुधारने का अवश्य प्रयत्न करोगे।

तुम्हारा भाई,

ईश्वर।

पता :-

यम. रामाराव,

द्वितीय वर्ष - बी. एस. सी,

आन्ध्रा लयोला कालेज,

विजयवाडा।

7. **ग्रीष्मावकाश अपने घर में बिताने केलिए मित्र को पत्र लिखिए।**

नेल्लूर,

ता 1 - 3 - 2005।

प्रिय मित्र शेखर,

तुम अपने पत्र में लिखा था कि वार्षिक परीक्षायें सम्पन्न हो रही है। बाद में ग्रीष्मावकाश मिलेगा। तुम छुट्टियाँ मिलते ही यहाँ आ जाओ, यहाँ के दर्शनीय स्थल भी तुम को दिखायेंगे। यहाँ के पेन्ना नदी के तट पर विराजमान श्रीरंगनायक स्वामी मंदिर है जो सुप्रसिद्ध है। आसपास में जोन्नवाडा कामाक्षी मंदिर, नृसिंह पहाड पर नृसिंह मंदिर पेंचलकोना में विराजमान स्वामी लक्ष्मी नारासिंह मंदिर सुप्रसिद्ध हैं। यहाँ से सौ किलोमीटर दूरी पर "भैरव कोना" भी है। वहाँ तीसरी शताब्दी में निर्मित पुरातन शैव मंदिर है। इतना ही नहीं राजराजेश्वरी मंदिर, स्वामी अय्याप्पा मंदिर भी यहाँ देखने लायक है। इसलिए छुट्टियाँ मिलते ही तुम जरुर आओ।

आपके माता - पिता को मेरा नमस्कार कहना, छोटे भाइयों को शुभ कामनाएँ बताओ।

तुम्हारा,
फणि शंकर

पता :-

के. शेखर,
अरंडल पेट,
घर का नंबर : 6 - 27 - 16,
गुंटूर 2।

MODEL - 2 बधाई पत्र

8. **अपने मित्र के परीक्षोत्तीर्ण होने पर बधाई पत्र लिखिए।**

नरसराव पेट,

ता 25 - 5 - 2005।

प्रिय मित्र सलाम,

मैं यहाँ कुशल हूँ। कल मैं ने ईनाडु प्रत्रिका में तुम्हारे परीक्षा - फल देखे। मुझे यह जानकर बडी खुशी हुई कि तुम इन्टर में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हो। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार करो। तुम्हारा अगला कार्यक्रम क्या है ?

तुम्हारे माँ - बाप को मेरे प्रणाम। तुम्हारी बहन को मेरी शुभ कामनाएँ। तुम यथाशीघ्र पत्र लिखो।

तुम्हारा प्यारा,
खादर खान

पता :-
षेक सलाम,
घर का नंबर - 11 / 338,
सुलतान बाजार,
हैदराबाद।

9. **मानलीजिए आप का मित्र आपके जन्म दिन पर कोई उपहार भेजता है, उसे धन्यवाद देते हुए एक पत्र लिखिए।**

ऐलूरु,

ता 3 - 6 - 2005।

प्यारा मित्र कालिदास,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा है कि वहाँ तुम भी कुशल हो। मैं अच्छी तरह पढ़ रहा हूँ।

मेरा जन्म दिन 13 - 5 - 2005 को धूम धाम से मनाया गया, मेरे अध्यापक भी आये। मेरे कई मित्रों ने आकर समारोह की शोभा भी बढ़ायी। उन्होंने शुभ कामनाएँ प्रंकट की। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में था। मुझे खेद है कि तुम नहीं आ सके। परंतु तुम ने जा पेन - सेट का उपहार भेजा है उस केलिए मेरे धन्यवाद स्वीकार करो। वह पेन सेट बहुत सुन्दर है। जब कभी मैं उसका उपयोग करता तुम्हारी याद होती है। सौभाग्य वश मेरा जन्म दिन शंकर जयंति के पर्वदिन पर आया है। मैं ने तुम से भेजे गये पेन सेट को आचार्य शंकर के पदचिन्हों पर रखकर स्वीकार किया।

तुम्हारे माँ - बाप को मेरे प्रणाम। तुम्हारी बहन को मेरी शुभ कामनाएँ।

पत्र की प्रतीक्षा में -

तुम्हारा प्रियमित्र,
रवि किशोर।

पता :-
के. कालिदास,
घर का नंबर : 2/12,
नाजर पेट,
तेनाली।

MODEL - 3

[ORDERS - आदेश पत्र]

10. अपनी पाठ्य - पुस्तकों का आर्डर देते हुए किसी पुस्तक विक्रेता के नाम एक पत्र लिखिए।

तिरुपति,

ता 4 - 2 - 2005।

प्रेषक :-

के. सांबशिव राव,

प्रथम बी. काम,

घर का नंबर : 2 - 4 - 3

स्टेशन रोड,

तिरुपति।

सेवा में :-

व्यवस्थापक,

गणेश बुक डिपो,

पुस्तक विक्रेता,

सुलतान बाजार,

हैदराबाद।

प्रिय महोदय,

नीचे लिखी प्रथम बी. ए. की अंग्रेजी माध्यम की पाठ्य पुस्तकों को वी. पी. पी. के जरिए उपर्युक्त पते पर यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें। उचित कमीशन भी दें। मैं अग्रिम (Advance) तीन सौ रुपये एम. ओ. द्वारा भेज रहा हूँ।

संख्या	पुस्तक का नाम	प्रतियाँ
1.	गणित (प्रथम वर्ष)	2
2.	अर्थशास्त्र (प्रथम वर्ष)	2
3.	इतिहास (प्रथम वर्ष)	2
4.	हिन्दी - व्याकरण (प्रथम वर्ष)	2

सधन्यवाद,

आपका,

के. सांबशिव राव।

11. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (आंध्र) हैदराबाद - 500 004 को राष्ट्र भाषा परीक्षा में बैठने की इच्छा प्रकट करते हूए उक्त सभा की इस परीक्षा की पाठ्य पुस्तकें भेजने केलिए एक पत्र लिखिए -

नायुडु पेट,

ता 6 - 6 - 2005 ।

सेवा में,

व्यवस्थापक,

पुस्तक बिक्री विभाग,

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (आन्ध्र)

हैदराबाद 500 004

प्रिय महोदय,

मैं आपकी राष्ट्र भाषा परीक्षा में अगस्त 2005 में बैठना चाहता हूँ। अतः आप राष्ट्रभआषा परीक्षा की सब पाठ्य पुस्तकों को यथाशीघ्र वी. पी. पी. के जरिए भेजने की कृपा करें। मैं अग्रिम एक सौ रुपये एम. ओ. द्वारा भेज रहा हूँ। मेरा पता नीचे दिया गया है।

भवदीय,

पी. निर्मला।

मेरा पता :-

पी. निर्मला,

घर की संख्या : 2/1/12,

स्टेशन रोड,

नायुडु पेट।

12. अपने ग्रंथालय केलिए आवश्यक पुस्तकों केलिए हिन्दी साहित्य भंडार, लखनऊ - 3 के नाम पत्र लिखिए।

गुंटूर,

ता 3 - 3 - 2005 ।

प्रेषक :-

प्रिन्सिपाल,

हिन्दू कालेज,

गुंटूर - 2।

सेवा में :-

व्यवस्थापक

हिन्दी साहित्य भंडार,

लखनऊ - 3

प्रिय महाशय,

आप से निवेदन है कि निम्न लिखित पुस्तक रेल्वे पार्सल के द्वारा यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें ये पुस्तकें हमारे कालेज के ग्रंथालय के उपयोग केलिए हैं। अतः पर्याप्त कमीशन देने की कृपा करें। कमीशन काट कर बाकी रकम केलिए बीजक तथा रेल की रसीद वी. पी. पी. के जरिए भेजिए।

क्र. सं.	पुस्तक	लेखक	प्रतियाँ
1.	गोदान (उपन्यास)	प्रेमचन्द	4
2.	चन्द्रगुप्त (नाटक)	जयशंद्कर प्रसाद	4
3.	यामा (काव्य)	महादेवी वर्मा	4
4.	रामचरित मानस (काव्य)	तुलसीदास	4
5.	ऊर्वशी (काव्य)	दिनकर	4

भवदीय,

हस्तक्षर --------।

13. **मदन दफ कंपनी, दादा भाई नौरोजी रोड, बम्बई के नाम कमानी गद्दे को सवारी गाडी में भेजने की प्रार्थना करते हुए पत्र लिखिए।**

विजयवाडा,

ता 1 - 6 - 2005।

प्रेषक :-

यम. सुनीता देवी यम. यस. सी.

मेनेजर,

आंन्ध्र बैंक,

विजयवाडा।

सेवा में,

मेजर्स मदन दक एण्ड कंपनी,

दादाभाई नौरोजी रोड,

बंबई।

प्रिय महाशय,

आप का ता 12 - 5 - 2005 का पत्र तथा मूल्य - सूची प्राप्त हुए, जिस केलिए आप को धन्यवाद। कृपा करके आप सवारी - गाडी (Passenger Train) से सथाशीघ्र $12^{11} \times 12^{11}$ बाले कमानी (स्प्रिंग) गद्दे को भेजने का कष्ट करें।

माल का समावेष्टन उचित रुप में करावें ताकि मार्ग में माल को क्षति न पहुँचे, सम्बन्धित बीजक (Invoice) तथा रेल की बिल्टी (R. R.) आंन्ध्रा बैंक द्वारा भेजने का कष्ट करें।

मुझे आशा है कि आप मेरे क्रयादेश पर शीघ्र ध्यान देकर अनुग्रहीत करेंगे।

भवदीय,

यम. सुनीता देवी।

14. **गीता प्रेस, गोरखपुर की पुस्तकों की एजन्सी की शर्तों केलिए पत्र लिखिए।**

गुंटूर,

ता। 2 - 5 - 2005।

प्रेषक :-

व्यवस्थापक,

कुमार बुकडिपो,

गुंटूर - 2

सेवा में,

व्यवस्थापक,

गीता प्रेस,

गोरख पुर।

प्रिय महोदय,

सादर प्रणाम।

सेवा में निवेदन है कि हम दस साल से गुंटूर में पुस्तकों की थोक और फुटकर बिक्री करते हैं। हम आप की पुस्तकों की ऐजेंसी भी लेना चाहते हैं। हम रोजाना एक हजार रुपयों की बिक्री करते हैं। हम अमानत भरने केलिए भी तैयार हैं।

हमारे सबंध में विशेष जानकारी केलिए आप निम्नलिखित से पूछ सकते हैं -

1. मारुती बुक डिपो, गुंन्द्र।
2. वेंकटेश्वरा बुक ड़िपो, गुंटूर।
3. आंध्रा ब्रदर्स, विजयवाडा।

यदि आप हमें अपना एजेंट नियुक्त करना चाहते हैं तो कृपया एजेंसी की शर्तें शीघ्र सूचित करें।

भवदीय,

व्यवस्थापक।

MODEL - 4 EMPLOYMENT

(नैकरी केलिए)

15. **लिपिक (Clerk) पद केलिए आवेदन पत्र भजिए।**

तिरुपति,

ता 8 - 6 - 2005 ।

प्रेषक :-

के. रमेश,

9 - 7 - 1314,

स्टेशन रोड,

तिरुपति,

सेवा में,

प्रधान आचार्य,

रवि ट्युटोरियल,

तिरुपति।

महोदय,

विषय - लिपिक पद केलिए आवेदन पत्र

संदर्भ - दैनिक ईनाडु 4 - 6 - 2005 के प्रकाशित विज्ञापन।

4 जून 2005 के दैनिक ईनाडु से पता चला कि आप के यहाँ एक लिपिक का पद रिक्त है। इस संदर्भ में मैं अपना आवेदन आप की सेवा में भेज रहा हूँ।

मेरी योग्यताएँ और अनुभव निम्न लिखित प्रकार से हैं -

योग्यता :-

(अ) बी.एस.सी. (कम्प्यूटर साइन्स) में प्रथम श्रेणी - (वेकटेश्वर विश्व विद्यालय)

(आ) हय्यार हाइपराइटिंग में उत्तीर्ण

(इ) संकेत लिपि में गति 120 शब्द प्रति मि निट

अनुभव :-

लिपिक, नव्या ट्रान्सपोर्ट, चित्तूर - एक वर्ष।

मैं तिरुपति वासी हूँ। मुझे बूढे माँ - बाप की देखभाल करनी है। इसलिए मैं आपके यहाँ काम करना चाहता हूँ। विश्वास है कि आप मेरे आवेदन पत्र पर सहानुभूति पूर्वक विचार करेंगे। यदि आप मुझे नौकरी देंगे तो मैं अपनी सेवा से आप को संतुष्ट करूँगा।

सधन्यवाद ।

भवदीय,

के. रमेश।

16. **अनुवादक की नौकरी केलिए प्रबन्धक के नाम पर पत्र लिखिए।**

विशाखपट्टणम्,

ता 7 - 3 - 2005।

प्रेषक :-

यम. भास्कर,

6 - 27 - 16,

सीतम्मधारा,

विशाखपट्टणम।

शिक्षा :-

(अ) एम. ए (अंग्रेजी)

(आ) एम. ए. (हिन्दी)

(इ) एम. ए. (तेलुगु)

अन्य :-

(1) मुझे अंग्रेजी, हिन्दी और तेलुगु भाषाओं का अच्छा ज्ञान है। मैं ने कई हिन्दी कहानियों का तेलुगुमें अनुवाद

किया। मैं ने अंग्रजी के अनेक निबन्धकारों के निबन्धों का हिन्दी तथा तेलुगु में अनुवाद किया। इनका विविधि साप्ताहित पत्रिकाओं में प्रकाशन हुआ है।

(2) स्वस्थ मत और प्रगतिशील प्रवृत्ति।

अनुभव :-

मैं समाचार पत्र में एक साल से अनुवादक का काम कर रहा हूँ।

एम. भास्कर

(आवेदक के हस्तगक्षर)

17. **बुक स्टाल के मेनेजर पद केलिए पास्ट बाक्स** 11/12 C/o हेराल्ड, बडे कुंज, वृन्दावन, मधुरा - 3 के नाम एक आवेदन पत्र भेजिए।

नेल्लूर,

ता 13 - 2 - 2005।

प्रेषक :-

बी. सुकुमार बी.ए,

एम. 37,

आनंदराव पेट,

नेल्लूर - 3।

सेवा में,

प्रबन्धक,

ईनाडु - दैनिकी,

सीतम्मधारा,

विशाखपट्टणम।

प्रिय महाशय,

ता 4 - 3 - 2005 की आपकी दैनिकी से मुझे मालुम हुआ कि आपकी पत्रिका केलिए एक अनुवादक की आवश्यकता है। मैं उक्त नौकरी केलिए आवेदन पत्र आप की सेवा में भेज रहा हूँ। आशा है कि आप मुझे अनुवादक की नौकरी देंगे। यदि आप मुझे वह नौकरी देंगे तो मैं अपने काम से आप को संतुष्ट करूँगा।

आपका,

यम. भास्कर

संलग्त :- आवेदन पत्र

अनुवादक के लिए आवेदन पत्र

नाम :- यम. भास्कर,

पता :- यम. भास्कर,

6 - 27 - 16,

सीतम्मधारा,

विशाखपट्टणम।

उम्र :- 25 वर्ष

सेवा में,

पी. बी 11/12 मार्फत (C/o)

हेराल्ड,

बडेकुंज,

वृन्दालन,

मथुरा - 3।

प्रिय महोदय,

मैं ने 10 - 2 - 2005 के हेराल्ड दैनिक समाचार पत्र में आपका विज्ञापन देखा। उससे मालुम हुआ कि एक नयी पुस्तक - शाला चलाने केलिए एक व्यवस्थापक की आवश्यकता है। मैं उस पद केलिए अपना आवेदन पत्र भेज रहा हूँ। मेरी योग्यताएँ इस प्रकार हैं -

1. मैं सन् 2001 आंन्धा विश्वविधाल्य की बी. ए. परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हूँ।
2. मैं ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की प्रवीण परीक्षा पास की है।
3. मेरी मातृ भाषा तेलुगु है।
4. मैं दो वर्षों से स्टेशन रोड में स्थित एस. चंद अंड कंपनी में व्यवस्थापक के रुप में काम कर रहा हूँ।

अतः आप से निवेदन है कि आप मुझे उक्त पद पर नियुक्त करें तो मैं अपनी सेवा के द्वारा आप को संतुष्ट करूँगा।

भवदीय,

बी. सुकुमार।

18. हिन्दी प्राध्यापक की नौकरी केलिए प्रधानाचार्य के नाम पर पत्र लिखिए।

तेनालि,

ता 6 - 3 - 2005।

प्रेषक :-

पी. राधिका,

नाजर पेट,

घर. नं. 6 - 27 -160,

तेनालि - 500 721।

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

लयोलाकालेज,

विजयवाडा।

सन्दर्भ :- आपका विज्ञापन, दिनांक : 3 - 2 - 2005.

विषय :- हिन्दी प्राध्यापक पद केलिए आवेदन पत्र।

महोदय,

आपके उक्त विज्ञापन के उत्तर में मैं अपना आवेदन पत्र आप की सेवा में विचारार्थ भेज रही हूँ। मेरे सबंध में विवरण संलग्न हैं।

भवदिय,

पी. राधिका।

संलग्न :-

आवेदन पत्र

प्रमाण पत्रों की नाकलें सहित

हिन्दी आध्यापक पद केलिए आवेदन पत्र

नाम	:	जी. राधिका
पता	:	ऊपर दिया गया है।
अवस्था	:	24 वर्ष
शैक्षिकी योग्यताएँ	:	(1) एम. ए. (आन्ध्रा विश्वविधालय)
		(2) राष्ट्र भाषा प्रवीण (द. भा. हि. प्र. सभा)

अनुभव : मैं स्थानीय नलंदा विद्यालय में तीन वर्ष से हिन्दी अध्यापिका का काम कर रही हूँ। आवश्यकता के अनुसार मैं हिन्दी पाठों को अंग्रजी में भी समझा सकती हूँ।

अन्य : उतत्म स्वास्थ्य तथा हसमुख प्रवृत्ति

आवेदक के हस्ताक्षर,

xxxxxxxx,

(पी. राधिका)।

MODEL - 5 COMPLAINT LETTER

शिकायती पत्र

19. **कल रात को आप के धर में चोरी हुई थी। विवरण देते हुए पुलिस इनत्स्पेक्टर के नाम शिकायती पत्र लिखिए -**

गुंटूर,

ता 22 - ६ - 2005।

प्रेषक :-

यस. रविकुमार,
घर का नंबर : 3 - 1 - 13,
अरंडेल पेट,
गुंटूर - 2।

सेवा में,

पुलिस इन्स्पेक्टर,
पुलिस थाना - 2,
अरंडेल पेट,
गुंटूर।

महाशय,

सेवा में निवेदन है कि कल रात के बारह बजे हमारे घर में चोरी हुई। जब हम सिनेमा देखकर एक बजे घर लौटे तो देखा कि घर का दरवाजा खुला पडा है। अलमारी में से दो हजार रुपये और एक सोने की अंगूठी, एक सोने का हार चुराकर लेगये। आप से प्रार्थना है कि चोरों का पता लगावें और हमारी चीजों को वापस दिलाने की कृपा करें।

आपका,

यस. रविकुमार

20. आपके मुहल्ले में सफाई का ठीक प्रबंध नहीं है। उसकी शिकायत करते हुए स्वास्थ अधिकारी के नाम पर पत्र लिखिए -

विजयवाडा,

ता 18 - 1 - 2005 ।

प्रेषक :-

के. सुधीर कुमार,

12/1 गवर्नर पेट,

विजयवाडा ।

सेवा में,

स्वास्थय व्यवस्थापक,

नगर पालिका,

विजयवाडा ।

प्रिय महोदय,

सेवा में निवेदन है कि नगर पालिका के स्वास्थ्य कर्मचारी हमारे मुहल्ले में अच्छी तरह सफाई नहीं कर रहे हैं। नालों में गंदगी जमी हुई है। गंदा पानी सडकों पर बहता है। सडकों पर कूडा - करकट के ढेरे लगे हुए हैं। इसलिए मच्छर लोगों को तंग कर रहे हैं। मलेरिया, हैजा जैसी बीमारियाँ फैल जाने की संभावना है। इसलिए आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप यथाशीघ्र सफाई का उचित प्रबन्ध करें।

धन्यवाद।

भवदीय,

के. सुधीर कुमार

MODEL - विविध पत्र

21. बहन की शादी में भाग लेने केलिए तीन दिन की छुट्टी माँगते हुए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।

गुंटूर,

ता 3 - 2 - 2005 ।

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

जे. के. सी. कालेज,

गुंटूर।

मान्य महोदय,

सेवा में निवेदन है कि मेरी बहन की शादी विशाखपट्टणम में 5 - 2 - 2005 को होने वाला है। हम परिवार सहित कल विशाखपट्टणम खाना हो रहे हैं। इसलिए आप से प्रार्थना है कि आप मुझे तीन दिन की छुट्टी (4 - 2 - 2005 से 6 - 2 - 2005 तक) देने की कृपा करें।

धन्यवाद सहित

आपका विनम्रछात्र,
यस. के. मूर्ति
यम. पी. सी.
बी.यस्.सी. प्रथम वर्ष,
क्रमांक - 118।

22. **छात्र वृत्ति हेतु अपने कालेज के प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।**

भीमावरम,
ता 8 - 7 - 2005।

सेवा में,
प्रधानाचार्य,
ए. एन. आर. कालेज,
भीमवरम।

मान्यवर,
सादर प्रणाम।

सेवा में निवेदन है कि मैं इंटर मीडियेट प्रथम वर्ष का विद्यार्थी हूँ। मैं ने दसवीं कक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है। मैं ने 570 अंक प्राप्त किया। मैं गरीब परिवार का हूँ। आर्थिक अभाव के कारण मैं पाठ्य - पुस्तकें भी नहीं खरीद सका। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे छात्र वृत्ति प्रदान करें। मेरे पिता जी एक प्रेस में काम करते हैं। महीने भर काम करने पर भी पेट भर खाना मिलना भी मुश्किल हो रहा है। आशा है कि आप छात्रवृत्ति देकर मुझे पढाई जारी रखने में सहायता करेंगे।

धन्यवाद सहित,

आपका विनम्रछात्र,
आर. हैमातंद,
इंटर, प्रथम वर्ष,
बै. पी. सी. क्रमांक - 13

बोध - प्रश्न :-

1. हिन्दी सीखने की अवश्यकता के बारे में बताते हुए मित्र के नाम पर एक पत्र लिखिए।
2. अपने कालेज में मनाये जानेवाले वर्षिकोत्सव के बारे में वर्णन करते हुए अपने भाई के नाम पर पत्र लिखिए।
3. पुस्तक विक्रेता के नाम पर पत्र लिखिए।
4. प्राध्यापक की नौकरी केलिए प्रधानाचार्य के नाम पर पत्र लिखिए।
5. घर में हुई चोरी का विवरण देते हुए पुलिस अधिकारी के नाम पर शिकायती पत्र लिखिए।

सहायक ग्रन्थ सूची :-

1. व्यावहारिक हिन्दी - ओम प्रकाश सिंहल
2. पत्र लेखन - D.B.H.P. सभा, मद्रास

Dr. K. Vasantha Kumari

(DHIN 1 (NR))

B.A./B.Com./B.Sc./B.B.M./B.H.M. DEGREE EXAMINATION, JUNE 2010.

(Examination at the end of First Year)

Part I – Hindi

Paper I – GENERAL HINDI

Time : Three hours	Maximum : 100 marks

1. किन्हीं तीन गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (24)

   (a) वर्तमान जीवन की विकृतियों और विडंबनाओं के वे सच्चे मंत्र-द्रष्टा रचनाकार है।

   (b) भारतीय साहित्य की एकता का आदर्श सदैव हमारी राष्ट्रीय एकता के लिए अक्षय श्रोत रहा है और रहना चाहिए।

   (c) अच्छी कविता अभ्यास से नहीं आती।

   (d) आप दुर्दान्त डाकू के दिल में विनोद प्रियता भर दीजिए वह लोकतन्त्र का लीडर हो जाएगा।

   (e) जिस हाला हल की ज्वाला से चराचर सृष्टि अकुला उठी उसे शंकर सहज ही पी गये।

   (f) नई बातों से घबराना और उनके पक्षपतियों की निंदा करना मनुष्य का स्वभाव हो गया है।

2. किसी <u>एक</u> पाठ का सारांश लिखिए। (15)

(a) कवि और कविता

(b) भारतीय साहित्य की एकता

(c) नील कंठ

3. (a) 'उसने कहा था' अथवा 'ठाकुर का कुआँ' कहानी का सारांश लिखिए। (7)

(b) 'मालती' अथवा 'लहनासिंह' का चरित्र चित्रण कीजिए (7)

(c) 'चीफ की दावत' अथवा 'पुरस्कार' कहानी का उद्देश्य लिखिए

(7)

4. (a) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए। (10)

(i) लडका सिनेमा देखी है।

(ii) रानी अच्छी तरह काम किया।

(iii) उसने खाना खाता है।

(iv) उसका बहन सुंदर है।

(v) राम दशरथ की पुत्र है।

(b) सूचना के अनुसार लिखिए । (10)

(i) मैंने यह काम किया (वाचय बदलों)

(ii) मैं यह कलम नहीं चाहिए । (वचन बदलों)

(iii) घर के बाहर बच्चे खेल रहे हैं (भविष्यत काल में लिखें)

(iv) आज मेरी बेटी की शादी है (लिंग बदलकर लिखिए)

(v) मैदान ---- लड़के खेल रहे हैं (कारक चिह्न लगाइए)

5. (a) अपनी बहन की शादी पर अपने मित्र को आमंत्रित करते हुए एक पत्र लिखिए । (10)

अथवा

(b) नौकरी के लिए आवेदन पत्र देते हुए प्रधान अध्यापक के नाम पर पत्र लिखिए ।

6. निम्नलिखित गद्यांश का शीर्षक देकर लगभग एक तिहाई में संक्षिप्तीकरण कीजिए । (10)

जब जब मैं कलकत्ते के चिड़ियाघर में गया हुँ तब-तब मुझे ऐसा लगता है कि संसार के जीवों में सबसे अधिक गंभीर और चिंतामग्न चेहरा उस चिड़िया घर में रखे हुए एक वनमानुष का है । उसको देखते ही पड़ता है कि संसार की समस्त वेदना की वह हस्तभलक को भाँति देख रहा है और अपनी सुदूरपार्तिनी दृष्टि से इन आनेजाने वाले दर्शकों कि करुण भविष्य केवह प्रायक्ष देख रहा है।

(DHIN1) (NR)

B.A./B.Com./B.Sc./B.B.M./B.H.M. DEGREE EXAMINATION, DECEMBER 2010.

(Examination at the end of First Year)

Part I — Hindi

Paper I — GENERAL HINDI

Time : Three hours Maximum : 100 marks

1. किन्हीं तीन गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (24)

   (a) आप के बिना उसका योजन विष तुल्य हो जायेगा तो
   आप निश्चय जानिये कि उसने कोई भारी दाव सोच रखा है।

   (b) अजी; अब भी तुम्हें काम है? अब तो छुट्टियाँ है, तुम्हें फुरसत ही फुरसत है और फिर जमें वो बेहोश होकर अगंद का पैट बन कर रह गये।

   (c) वह समान जरूरत की तरफ देखकर नहीं आया,
   अपनी "पर्चेजिंग" पावर के अनुपात में आया है।

   (d) जैसे चुम्बक का जादू लोहे पर ही चलता है वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है।

   (e) ईर्ष्या का यही अनोखा वरदान है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या घर बना लेती है, वह उन चीजों से आनन्द नहीं उठाता, जो उस के पास मौजूद है बल्कि उन वस्तुओं से दुःख उठाता है जो दूसरो के पास है।

2. किसी एक पाठ का सारांश लिखिए। (15)

(a) इर्ष्या तू न गई मेरे दिल से

(b) कवि और कविता

(c) भारतीय साहित्य की एकता।

3. (a) चीफ की दाँवत अथवा पुरस्कार कहानी का सारांश लिखिए। (7)

(b) "उसने कहा था" अथवा "रोज" कहानी का उद्देश्य लिखिए। (7)

(c) "ठाकुर का कुआँ" में प्रमुख नारी पात्रा का चरित्र-चित्रण कीजिए। (7)

4. (a) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए। (10)

(i) रमेश घर जा रही है।

(ii) हम बाजार जायेगा।

(iii) मेरा बगीचा में आम है।

(iv) मेरे को मदास जाना है।

(v) राधा कृष्ण का पत्नि है।

(b) सूचना के अनुसार बदलिए। (10)

(i) सीता ने किताब पढ़ी। (वाच्य बदलकर लिखिए)

(ii) बच्चा स्कूल जात है। (रेखांकित शब्द का वचन बदलकर लिखिए।)

(iii) सेठ सब्जी बेचता है। (लिंग बदलिये)

(iv) किताब मेंज ——————— है (कारक चिन्ह लिखिए)

(v) सुरेश कल हैदराबाद जायेगा। (भूतकाल में लिखिए)

5. (a) अपनी पढाई के बारे में बताते हुये अपने बड़े भाई को एक पत्र लिखिये। (10)

Or

(b) कालेज में नैकारी दीलवाने के लिये अपने प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।

6. निम्नलिखित गद्यांश का शीषर्क देकर लगभग एक तिहाई में संक्षिप्ति करना कीजिए। (10)

हमारा आशय भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न भाषाओं की साहित्यिक समक्षयता से होता है। यदि हम आज के हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती अथवा दक्षिणी भाषाओं के साहित्य को देखें तो उनमें थोड़ा-बहुत अन्तर भी दिखेगा परन्तु सार रूप में प्रवृत्तियाँ प्राय : एक सी ही पाई जाती हैं।

विभिन्न प्रदेशों और जनपदों की सांस्कृतिक विशेषताओं की छाप इन साहित्यों में प्राप्त होती है, जो स्वाभाविक है। साहित्य के विविध रूपों में से किसी भाषा में किसी रूप की विशिष्टता भी मिलती है उदाहरण के लिए आज के मराठी सहित्य में नाटकों की स्थिति अपेक्षाकृत अधिक अच्छी है, परन्तु इस वैभिन्न्य जे भीतर एक मूल भूत एकता है।

(DHIN 1 (NR))

B.A./B.Com./B.Sc./B.B.M./B.H.M. DEGREE
EXAMINATION, MAY 2011.

(Examination at the end of First Year)

Part I — Hindi

Paper I — GENERAL HINDI

Time : Three hours Maximum : 100 marks

1. किन्हीं तीन गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (24)

(a) जिस समाज की लोग अपनी झूठी प्रशंसा सुनकर प्रसन्न होते हैं,

वह समाज के प्रशंसनीय नहीं समझा जाता।

(b) ईर्ष्या का काम जलाना है, मगार सब से पहले यह उसी को जलाती है, जिसके हृदय में उसका जन्म होता है,

(c) कालीदास और भवभूति का संपूर्ण प्रदेश भारतीय वस्तु है,

वह किसी प्रदेश का उत्तराधिकारी नहीं।

(d) कालेज का अध्यापक अगर लेखक भी हो, तो उसके लिए अतिथि की आवाज यमदूत के संदेश से कम भयावह नहीं होती।

(e) प्रतिभा ईश्वरदत्त होती है। अभ्यास से वह प्राप्त नहीं होती।

2. किसी एक पाठ का सारांश लिखिए। (15)

(a) ईर्ष्या तु न गई मेरे मन से

(b) नीलकंठ

(c) कवि और कविता।

3. (a) 'उसने कहा था' अथवा 'पुरस्कार ' कहानी का सारांश लिखिए। (7)

(b) लहनासिंह अथवा मालती का चरित्र चित्रण कीजिए। (7)

(c) 'ठाकुर का कुँआ' अथवा 'चीफ की दावत' काहनी का उद्देश्य लिखिए। (7)

4. (a) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए। (10)

(i) तुम फल खाता है।

(ii) मैं रोटी खाया।

(iii) हम देश की सेवा करना चाहिए।

(iv) आप चाय पिओ।

(v) मैं मेरा काम करता हूँ।

(b) सूचना के अनुसार बदलिए। (10)

(i) सीता फल खाती है। (वाच्य बदल कर लिखिए)

(ii) बालक पाठ पढता है। (रेखांकित शब्द का वचन बदलकर लिखिए)

(iii) शेर जंगल मे रहता है। (रेखांकित शब्द का लिंग बदलकर लिखिए।)

(iv) हम आँखों —————— देखते हैं। (सही कारक से खाली भरिए)

(v) राम रोटी खाता है (भविष्यतकाल में बदलिए)

5. (a) किसी यात्रा का वर्णन करते हुए अपने मित्र के नाम पर पत्र लिखिए। (10)

अथवा

(b) आपके मुहल्ले की गंदगी के विषय में नगरपालिका के अधिकारी को पत्र लिखिए।

6. निमलिखित गद्यांश का शीर्षक देकर लगभग एक तिहाई में सक्षिप्तीकरण कीजिए। (10)

लोग राजनीति में प्रवेश कर जाते हैं और बडी बडी बातें करने लगते हैं, किन्तु उनमें से कइयों को राजनीति शब्द का अर्थ भी नहीं आता। वे दो

चार इधर–उधर की सुनी सुनाई कहकर अपने को बडा भारी राजनीतिक मानने लाग्ते हैं। इसके विरुद्ध जो सच्चे अर्थों में राजनीति के तत्व को पहचानते हैं वे बहुत कम बोलते हैं, केवल किसी पार्टी का नेता बन जाने एवं किसी की झूठे प्रशंसा से व्यक्ति राजनीतिज्ञ नहीं बन सकता। उसके लिए राजनीति के गहन सागर में गोता लगाने की आवश्यकता है।

(కత్తిరించి పంపవలెను)

అధ్యాపకుల, విద్యార్థుల సలహాలు, సూచనలు :

అధ్యాపకులు, విద్యార్థులు ఈ స్టడీ మెటీరియల్‌కు సంబంధించిన సలహాలు, సూచనలు, ముద్రణ దోషాలు తెలియపరచినచో, పునర్ముద్రణలో తగు చర్యలు తీసుకొనగలము. తెలియపరచవలసిన చిరునామా : **డిప్యూటీ డైరెక్టర్, దూరవిద్యా కేంద్రం, ఆచార్య నాగార్జున విశ్వవిద్యాలయం, నాగార్జున నగర్ - 522 510.**

Course	Year	Paper No. &Title
B.A./B.Com./B.Sc./B.B.M. Hindi	1st Year	Paper - I : Hindi

(కత్తిరించి పంపవలెను)

(కత్తిరించి పంపవలెను)

(కత్తిరించి పంపవలెను)